मुझे इतिहास का ज़्यादा ज्ञान नहीं। मगर मैंने सुना है कि फ्रान्स की महान् राज्य-क्रान्ति का प्रधान कारण फ्रान्स की रानी की दुश्चरित्रता और सोलहवें लुई की लापर्वाही ही था। लेकिन यह किम्वदन्ती सार्वजनिक दृष्टि-कोण से प्रचलित हुई है—उपन्यासकार सार्वजनिक दृष्टि-कोण को, ग्रहण करने के लिये बाध्य नहीं; उसके हृदय में तो वध्य और वधिक, न्यायी और अपराधी, दुष्ट और सज्जन सब के लिये स्थान है। वह सब बातों को सब के दृष्टि-कोण से देखने की क्षमता रखता है। किम्वदन्तियों के पीछे दौड़ना उपन्यासकार की दुर्बलता है। जिस रानी को प्रजा दुश्चरित्रा कहती है, उपन्यासकार उसमें गुण ढूँढने की चेष्टा करता है; जिस बात को दुनियाँ सत्य समझती है, उपन्यासकार उस पर सन्देह कर सकता है; जिस बात को दुनियाँ सत्य समझती है, उपन्यासकार उस पर सन्देह कर सकता है; जिस ख़बर पर जनता जोश में आकर मिटने-मिटाने पर तुल सकती है, उपन्यासकार शान्त चित्त से उसकी यथार्थता की खोज करता है। दरअसल उपन्यासकार बड़ा भारी निर्णायक है—इसीलिये ड्यूमा श्रेष्ठ उपन्यासकार है।

मैरी अण्टोइनेट (फ्रांस की रानी) की दुश्चरित्रता के सम्बन्ध में इतिहास (प्रजा की दृष्टि-कोण से लिखा हुआ) जो कहता है, इस पुस्तक में परोक्ष रूप से उस सब का उल्लेख है; लेकिन ड्यूमा कहता है, क्या यह सब ग़लतफ़हमी नहीं हो सकती ? क्या यह सम्भव नहीं कि रानी में अनेक सद्गुण हों ? क्या एक साधारण-सी घटना से जनता में असन्तोष का भयंकर बवण्डर नहीं फैल सकता, और अन्त में—क्या रानी होने पर भी, एक स्त्री समझकर, उसकी कोई भूल क्षमा नहीं, की

जा सकती ? अथवा वैभव और विकास के वातावरण में धड़कते हुए दिल का ज़रा डगमगा जाना ही चरित्र की व्याख्या है ?

मनुष्य जान-बूझकर पाप नहीं करता; न पाप मन की स्वाभाविक रुचि है। जब कोई जज पापी के पाप की कथा सुनता है, तो उन समस्त परिस्थितियों पर विचार करना अपना कर्तव्य समझता है, जिनके कारण वह पाप किया गया। मैं समझता हूँ, ड्यूमा ने भी ऐसा ही किया है; और ठीक किया है। अण्टोइनेट को गिराने के लिए, या बदनाम करने के लिए कुचक्र रचे जाने असम्भव नहीं। ड्यूमा खुद मुंसिफ़ है, और दुनियाँ से कहता है कि इन्साफ़ करो; पापी के पाप पर पापी के दृष्टि-कोण से भी तो विचार करो। मेरी समझ में दुनियाँ-भर के क्रोध-पात्र लुई और उसकी रानी की रक्षा करने का प्रयत्न ड्यूमा ने इसीलिए किया है।

इस पुस्तक में रानी से मिलती-जुलती शक्लवाली रमणी का उल्लेख करके ड्यूमा ने अपनी जिस अद्भुत कल्पना-शक्ति का परिचय दिया है, उसको दृष्टि से परे करने पर भी हमें यह बात असम्भव नहीं जचती कि रानी में उदारता, स्नेहशीलता और त्याग का अभाव हो। इसलिए सर्वसाधारण की भाँति उससे घृणा करने का हमें कोई अधिकार नहीं; बल्कि उचित तो यह है कि हम उसकी दुर्बलताओं से सहानुभूति करें।

इन ऐतिहासिक प्रश्नों पर विचार करने का हमें इतना ही हक़ था। हमें तो ड्यूमा की लेखन-कला से मतलब है। उपन्यास के जिन गुणों का उल्लेख मैंने ऊपर किया, उन सब का समावेश इस पुस्तक में है। रोचकता तो जैसे ड्यूमा की बपौती है। चरित्र-चित्रण, उसके पात्रों

का अद्वितीय है। उसके इस उपन्यास में सभी तरह के पात्र काम करते हैं, और उसने आदि से अन्त तक इन पात्रों के विभिन्न प्रकार के चरित्र-चित्रण में कहीं ग़लती नहीं की। कुटिलता की मूर्ति लीन का चरित्र मनन करने में लेखक उतना ही सफल हुआ है, जितना फ़िलिप के स्वच्छ हृदय को खोलकर रखने में, चर्नी और ऐण्ड्री की त्याग-शीलता में, तथा कागलस्तर की चमत्कार-पूर्ण जादूगरी के करिश्मे दिखाने में।

उपन्यास काफ़ी बड़ा है, और घटना बहुत लम्बी है। पात्र काफ़ी हैं, और सभी ऐसे हैं, जिन पर कुछ-न-कुछ लिखा जा सकता है। न इतना समय है, न सुविधा, न स्थान! इसलिए अनुवाद के विषय में एकाध बात कहकर शेष सब पाठकों पर छोड़ दूँगा।

अनुवाद अविकल नहीं है। मेरा मतलब है—प्रत्येक शब्द का अनुवाद नहीं किया गया। पर इससे यह न समझा जाए—कि भाव, भाषा और कथानक में कुछ भी फ़र्क़ आगया है। यों तो असल की अपेक्षा नक़ल में कुछ कमी रह ही जाती है, पर मुझे इसका हर्ष है, कि अनुवाद मेरे मन-माफ़िक़ हुआ है। और मैंने महान् लेखक के साथ विश्वास-घात नहीं किया है। अलबत्ता दो स्थानों पर स्वतन्त्रता बर्ती गई है; वह भी इसलिए कि वैसा करने से न-सिर्फ़ कथानक की उत्तमता में कोई अन्तर नहीं आता था, वरन् बहुत-से विस्तार से छुटकारा मिल जाता था। ओलिवा के प्रेमी ब्यूसर ने, पुर्तगाल के राजदूत का वेश बनाकर हीरों के हार को उड़ाने की कोशिश की थी, लेकिन चर्नी और लीन के झमेले के कारण वह अपने प्रयत्न में असफल रहा। इस घटना के विस्तृत और रोचक वर्णन को मैंने निकाल दिया है। दूसरे मोशिये डि-प्रविन्स

नामक महाराज के एक निकट-सम्बन्धी की उन चालों और शिकायतों का वर्णन् कुछ संक्षिप्त कर दिया है, जो उसने रानी को बदनाम करने के लिए कीं। इसके अतिरिक्त अनुवाद में कोई अपूर्णता नहीं।

मेरी इच्छा है कि ड्यूमा के समस्त उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में होजाय। इस लेखक की रचनाएँ हमारी भाषा के लेखकों और पाठकों के लिए बहुत शिक्षाप्रद सिद्ध होंगी। मैं यह भी चाहता हूँ कि संसार के इस महान् कलाकार की एक बृहद् जीवनी हिन्दी में प्रकाशित हो, हिन्दी के लेखकों और सम्पादकों को मैं इस तरफ़ ध्यान देने का आमन्त्रण देता हूँ। इस प्रकार के आयोजन में मैं सब तरह की सहायता देने के लिए तैयार हूँ।

बाज़ार सीताराम,
दिल्ली।
८-८-३२

ऋषभचरण जैन।

उपक्रमणिका।

(अ)

अप्रैल सन् १७८४ का आरम्भ था, और बारह और एक के बीच का वक़्। हमारे पुराने दोस्त मार्शल-डि-रिशलू ने भौहों पर खुशबूदार ख़िज़ाब लगाकर शीशा परे सरका दिया। तब, कपड़ा पर गिरे हुए पाउडर को झाड़कर उठे, और दो-चार बार कमरे में इधर-से-उधर घूमने के बाद अपने ख़ास ख़िदमतगार को तलब किया।

पाँच मिनट में क़ीमती कपड़ों से लक़-दक़ ख़िदमतगार की शकल दिखाई दी।

मार्शल उसकी तरफ़ घूमे, और गम्भीरतापूर्वक बोले—"मैं समझता हूँ, दावत का ठीक इन्तज़ाम तुमने कर लिया होगा!"

"जी हाँ सरकार!"

"मेहमानों की सूची तुम्हारे पास है?"

"मुझे सब के नाम याद हैं, सरकार, नौ आदमियों के लिये प्रबन्ध किया गया है।"

"दो तरह की दावत होती है," मार्शल बोले।

"जी हाँ सरकार, लेकिन······"

मार्शल ने कुछ व्यग्र होकर उसे रोक दिया।

"देखो, मैं अठासी बरस का हुआ, और अनेक बार यह 'लेकिन' सुनने का मौक़ा मुझे मिला है, परन्तु अन्त में यही देखा, कि उसने किसी-न-किसी मूर्खता का-ही सूत्रपात किया!"

"सरकार......"

"अच्छा पहले यह बताओ, खाना किस वक़ शुरू होगा?"

"सरकार, आज तो पाँच बजे......"

"ओह, पाँच बजे!"

"हाँ, सरकार, ठीक बादशाहों की तरह!"

"बादशाहों की तरह क्यों?"

"क्योंकि आपके मेहमानों की सूची में एक बादशाह का नाम है।"

"नहीं भाई, ऐसा नहीं; आज की दावत में कोई बादशाह शामिल नहीं होगा।"

"सरकार तो मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं। काऊण्ट हागा* का नाम......"

"हाँ, क्या—?"

"काऊण्ट हागा तो बादशाह हैं!"

"मैं तो इस नाम के किसी बादशाह को नहीं जानता।"

"तब तो सरकार मेरी ख़ता माफ़ करें—" ख़िदमतगार ने

---

*इन दिनों स्वेडन का बादशाह काऊण्ट हागा का नाम धरकर फ़्रान्स में घूम रहा था। ख़ास-ख़ास आदमी इस सत्य से परिचित थे।

कहा—"मेरा विश्वास था, मैंने अनुमान किया—"

"विश्वास या अनुमान करना तुम्हारा काम नहीं है जी, तुम्हें तो केवल मेरे फ़रमान ध्यानपूर्वक पढ़ने चाहिये, और अक्षरशः उनका पालन करना चाहिये। जब मैं किसी बात को प्रकट करना चाहता हूँ, तो उसे तुम को बता देता हूँ; जब नहीं बताऊँ, तो समझ लो—कि मैं उसे अप्रकट-ही रखना चाहता हूँ।"

ख़िदमतगार इतना झुका, जितना, शायद किसी बादशाह के आगे भी न झुकता।

"इसलिये, हज़रत" बूढ़े मार्शल ने फिर कहना शुरू किया—"क्योंकि कुछ इज़्ज़तदार नागरिकों के अतिरिक्त कोई यहाँ खाने नहीं आयेगा, तुम रोज़ के वक़्त पर—चार बजे—भोजन की व्यवस्था करना।"

इस हुक्म पर ख़िदमतगार का चेहरा फ़क़ होगया, जैसे मौत की सज़ा सुनी हो! एक बार तो ज़र्द पड़ गया, फिर कोशिश करके सम्हला, और बोला—"ख़ैर, किसी भी हालत में आज सरकार पाँच बजे से पहले भोजन नहीं कर सकते।"

"यह क्यों?" मार्शल ने चीख़कर पूछा।

"क्योंकि यह असम्भव है।"

"देखो जी," मार्शल ने क्षुभित कण्ठ से कहा—"मैं समझता हूँ, तुम्हें मेरे यहाँ रहते बीस बरस हो चुके।"

"बीस बरस और डेढ़ महीना।"

"बस तो, याद रखना, अब इस बीस बरस और डेढ़ महीने

में एक घण्टा भी नहीं बढ़ेगा। समझे ?" उन्होंने भौहें चढ़ाक
ओठ काटते हुए कहा—"आज-ही से तुम्हें किसी नये
की खोज में लग जाना पड़ेगा। मैं नहीं चाहता, कि अपने
किसी के मुँह से 'असम्भव' शब्द सुनूँ; मैं इतना बूढ़ा हो
हूँ, कि नये सिरे से इस शब्द का अर्थ समझने की कोशिश
कर सकता।"

ख़िदमतगार फिर झुका।

"जैसी इच्छा सरकार की" बोला—"आज शाम को
श्रीमान् से छुट्टी ले लूँगा। मगर आखिरी मिनट तक मैं अ
कर्त्तव्य को उसी तरह निबाहूँगा, जैसा उचित है।"—कहकर व
द्वार की तरफ़ दो क़दम बढ़ा।

" 'उचित' का क्या अर्थ ?" मार्शल ने चीखकर व
"यह समझ लो, कि जो-कुछ मेरी इच्छा है, वही उचि
देखो, मैं चाहता हूँ, कि खाने की व्यवस्था ठीक चार बजे
यह बिल्कुल असम्भव है, कि मैं अपनी इच्छा के प्रतिकूल
घण्टे की प्रतीक्षा के लिये मजबूर होऊँ!"

"सरकार," ख़िदमतगार ने उदासी-से उत्तर दिया—"मैं हि
हाइनेस कुमार मायिस और कार्डिनल-डि-रोहन की ख़िदमतगा
कर चुका हूँ। पहले सज्जन के साथ फ्रान्स के भूत-पूर्व महारा
वर्ष में एक बार भोजन ग्रहण किया करते थे; दूसरे सज्जन को
महीने में एक बार ऑस्ट्रिया के महाराज के साथ भोजन करने का
गौरव प्राप्त होता था। इसलिये मैं अच्छी तरह जानता हूँ, कि

ादशाहों का स्वागत-सत्कार किस प्रकार किया जाता है। एकाध बार महाराज पन्द्रहवें लुई कुमार साचित्र के घर नक़ली नाम धरकर आये, इसी तरह एक बार आँस्ट्रिया के महाराज भी छद्म-वेश में कार्डिनल-महोदय के घर आ पहुँचे थे; पर इससे उनकी बादशाहत में कमी थोड़ा-ही आगई? ठीक उसी प्रकार सरकार को भी आज एक बादशाह के सत्कार का अवसर मिला है। मैं जानता हूँ, काऊण्ट हागा स्वेडन के बादशाह हैं। ख़ैर, मैं तो आज शाम को आपकी नौकरी से मुक्त हो जाऊँगा, पर मेरे दिल में यह मलाल न रहेगा, कि बादशाह का सत्कार बादशाह की तरह न किया गया!"

"यही तो बात है," मार्शल ने कहा—"इसी को छुपाने के लिये तो मैं मरा जा रहा हूँ। काऊण्ट हागा नहीं चाहते कि उनकी असलियत सर्व-साधारण में प्रकाशित हो।"

"तो सरकार, मैं भी तो यह नहीं चाहता!"

"बस तो, परमात्मा के लिये ज़िद न करो, और चार बजे खाने की व्यवस्था कर दो।"

"लेकिन जिस चीज़ की मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ, वह चार बजे नहीं पहुँच सकती।"

"क्या चीज़? कोई ख़ास तरह की मछली?"

"क्या सरकार यह चाहते हैं, कि मैं बता दूँ?"

"बेशक, मैं जानना चाहता हूँ।"

"तो सुनिये—मैं एक शराब की बोतल की प्रतीक्षा में हूँ।"

"शराब की बोतल! मैं नहीं समझा—अजब बात है!"

"तो सुनिये सरकार, स्वेडन के महाराज—क्षमा कीजिये मुझे काउण्ट हागा कहना चाहिये—'तोके' के अतिरिक्त किसी शराब को नहीं छूते।"

"वाह! तो क्या मेरे घर में 'तोके' की कमी है?"

"नहीं सरकार; क़रीब ६० बोतलें मौजूद हैं।"

"तो क्या काउण्ट हागा एक बार में इकसठ बोतलें पी जायेंगे?"

"जी नहीं सरकार; सुनिये तो—पिछली बार जब काउण्ट हागा स्वेडन के राजकुमार की शान में फ्रान्स की सैर को आये थे, और भूतपूर्व महाराज लुई के साथ दावत में शरीक हुए तो महाराज ने आस्ट्रिया के राजमहल से 'तोके' की बारह बोतलें मँगवाई थीं। आप तो जानते ही हैं, कि सबसे बढ़िया शराब बादशाहों के लिये रिज़र्व रक्खी जाती है, और बादशाह [illegible] पर ही निकाली जाती है।"

"मालूम है।"

"तो सरकार, इस तरह बोतलों में से इस समय दो बची हैं। एक तो महाराज [illegible] के [illegible] में [illegible] है।"

"और दूसरी?"

"जी, दूसरी" [illegible] ने [illegible] कहा, "दूसरी [illegible]।"

"[illegible]?"

"मेरे एक मित्र ने। वह पिछले महाराज का खिद्
था, और उस पर मेरे अनेक एहसान थे।"

"ठीक! तो वह बोतल उसने तुम्हें दे दी?"

"जी हाँ सरकार।" खिदमतगार ने मुस्कराकर कहा

"तुमने इसका क्या किया?"

"मैंने उसे सावधानी-से अपने मालिक के महल में
रख दिया।"

"अपने मालिक के महल में?—कौन तुम्हारा मालिक

"कार्डिनल-डि-रोहन-महोदय।"

"ओहो! स्ट्रैस्बर्ग में?"

"नहीं सेवराँ में!"

"तो तुमने यह बोतल हमारे लिये मँगाई है?"

"जी सरकार, आपके लिये!" खिदमतगार ने उलहने
से कहा।

ड्यूक-डि-रिशलू ने झपटकर खिदमतगार का हाथ पकड़
और कहा—"क्षमा करना भाई, तुम दुनियाँ-भर के खिद
के बादशाह हो।"

"पर आप तो मुझे नौकरी से अलग कर रहे थे!" वि
गार ने मटककर कहा।

"ओहो,—लज्जित न करो—मैं इस एक बोतल
तुम्हें सौ पिस्तोल* इनाम दूँगा।"

---

* फ्रान्स का एक सिक्का—करीब १४ रुपये दाम का।

"उसके लाने में जो खर्च होगा, उसके अतिरिक्त ?"

"जो कहोगे, सो दूँगा।—और आज से मैं तुम्हारा वेतन डबल करता हूँ।"

"सरकार मुझे किसी पारितोषक की इच्छा नहीं, मैंने तो केवल अपना कर्तव्य-पालन किया है।"

"और, यह बताओ, तुम्हारा आदमी किस वक्त तक आयगा ?"

"सरकार खुद देख लें, जो मैंने पल-भर का समय भी खोया हो। इस दावत का हुक्म मुझे किस दिन प्राप्त हुआ था

"तीन दिन हुए।"

"तेज-से-तेज घोड़े को सेवराँ पहुँचने में चौबीस घण्टे लग हैं, और इतने-ही लौटने में।"

"तब भी पूरे चौबीस घण्टे बचते हैं!"

"अफ़सोस, सरकार, वे व्यर्थ नष्ट हो गये! जिस दिन मेहमानों की सूची मुझे मिली, उससे अगले दिन यह विचार मेरे दिमाग़ में आ सका। अब आप खुद सोच लीजिये, कि पाँच बजे तक समय आपसे माँगने के लिये मैं मजबूर हूँ।"

"तो बोतल अभी तक नहीं आई है ?"

"जी नहीं।"

"ओह!—अगर तुम्हारा सेवराँ-वाला मित्र रोहन-महोदय का वैसा ही सेवक होगा, जैसे कि तुम मेरे हो, तो सम्भव है, वह बोतल देने से इन्कार करदे।"

"क्या सरकार ?"

"क्यों क्या ?—अगर कोई तुमसे ऐसी क़ीमती बोतल माँगने आता, तो मुझे विश्वास है, तुम कदापि उसे न देते !"

"मैं नम्रतापूर्वक आपसे क्षमा माँगता हूँ सरकार, अगर मेरा कोई मित्र, किसी बादशाह के सत्कार के लिये ऐसी वस्तु माँगता, तो मैं तुरन्त दे देता।"

"ठीक !"

"सरकार, दूसरों की सहायता करके-ही हम इस बात की आशा कर सकते हैं, कि वक़्-ज़रूरत पर कोई हमारे काम आ-जायगा।"

"ख़ैर, तो इसका मतलब है, कि बोतल मिल जायगी। लेकिन एक भय और है—अगर बोतल रास्ते में टूट जाये ?"

"वाह सरकार !—भला ऐसी क़ीमती बोतल को कौन टूटने देगा ?"

"मुझे भरोसा नहीं होता ! ख़ैर, तो किस वक़् तक आने की आशा है ?"

"ठीक चार बजे।"

मार्शल रिशलू ने फिर अपनी पहली ज़िद पर आकर कहा—"तो फिर चार बजे-ही क्यों न खाना शुरू किया जाय ?"

"सरकार, बोतल को कम-से-कम एक घण्टा मेरे अधिकार में रहना होगा। और अगर यह मेरी अपनी ईजाद न होती, तो एक घण्टे की जगह पूरे तीन दिन उसे उपयोग में नहीं लाया जा सकता था।"

सब तरह से हारकर काऊण्ट चुप रह गये।

"एक बात और है," बूढ़े ख़िदमतगार ने कहा—"निश्चय
रखिये, आपके मेहमान, यह जानकर कि काऊण्ट हागा
भोजन करना है, साढ़े चार से पहले कभी नहीं आयेंगे।"

"क्यों भला ?"

"देखिये, एक-एक से शुरू कीजिये। महाशय लॉनि तो
के ऑफ़िस से चलेंगे। पेरिस के बाज़ार जिस तरह बर्फ़
ढके हैं......"

"वाह ! और वह क़ैदियों के भोजन का प्रबन्ध करके बा
बजे-ही चल पड़े ?"

"क्षमा कीजिये सरकार, अभी हाल में क़ैदियों के खाने क
समय बदल दिया गया है। अब एक बजे खाना दिया जाता ।"

"वाह भाई, तुम तो अच्छे-ख़ासे सर्वज्ञ हो ! अच्छा; आगे
चलो।"

"मैडम डुबरी भी देर से आयेंगी; उनके सिंगार-पटार से तो
आप भी परिचित-ही हैं।

"देखो, बात यह है, मैं महाशय डि० ला-पिरोज के कारण
दावत की जल्दी मचा रहा हूँ। जानते नहीं, उन्हें आज-ही रात
को यात्रा पर जाना है, इसलिये। खाने में देर होना वे पसन्द
न करेंगे।"

"लेकिन सरकार, महाशय पिरोज इस समय महाराज लुई
के पास हैं, और सम्भवतः इस समय भूगोल अथवा प्रकृति के

विषय में वार्त्तालाप कर रहे होंगे।—वहाँ से उन्हें जल्दी नहीं मिल सकती।"

'सम्भव है।"

"निश्चय है, सरकार, और महाशय डि-फेवरास के साथ यही होगा। वे काऊण्ट-डि-प्रविन्स के साथ रहते हैं, अवश्य-ही किसी नाटक की चर्चा कर रहे होंगे।"

"अच्छा, महाशय डि-कण्डरसेट के विषय में क्या कहते —यह तो ज्यामिति और गणित के पण्डित हैं, वे कैसे देर सकते हैं?"

"हाँ, वे किसी-न-किसी गहन विचार में मग्न हो जायेंगे, जब उन्हें होश आयगा, तो कम-से-कम आध घण्टा देर तो ह चुकी होगी। रहे महाशय कगलस्तर, सो वे अाजनबी आदमं उन्हें वर्सेई के निमय-क़ायदों का ज्ञान नहीं; बस उनके लिये जरूर-ही इन्तज़ार करना पड़ेगा।"

"ठीक! तो तुमने मेरे सारे महमानों का वर्णन कर दिया सिर्फ़ महाशय डि-टेवर्नी रह गये।"

"खिदमतगार ने झुककर कहा—"जी हाँ, मैंने महा टेवर्नी का नाम इसलिये नहीं लिया, कि वे आपके पुराने दोस्त इसलिये शायद ठीक समय पर आजायें। मेरे खयाल में आपके महमानों के नाम हैं।"

"ठीक; अच्छा, खायेंगे कहाँ?"

"खाने के बड़े कमरे में।"

"पर यहाँ तो टण्ढ से अकड़ जायेंगे ?"

"सरकार तीन दिन से उसे गर्म किया जा रहा है
समझता हूँ, खाने के वक़्त आप उसे बहुत आराम-देह पा

"बहुत ठीक, पर देखो घण्टा बज रहा है ! ऐं ! क्य
—साढ़े-चार ?" मार्शल चिल्लाकर बोले।

"हाँ, सरकार, यह देखिये, मेरा आदमी 'तोके' क
लिये हुए चला आ रहा है।"

"ईश्वर करे, मैं इसी ख़िदमतगार के साथ बीस ब
जीता रहूँ।" कहते-कहते मार्शल ने शीशे की तरफ़ रु
और ख़िदमतगार रफ़ू-चक्कर होगया !

"बीस साल !" सहसा किसी की हँसती आवाज़ ने
का विचार-भङ्ग किया—"बीस साल—प्यारे ड्यूक ! मैं
चाहती हूँ, पर तब-तक मैं तो साठ साल की होजाऊँगी-
बूढ़ी !"

"तुम काऊण्टेस !" मार्शल ने चिल्लाकर कहा—"
सब-से-पहली मेहमान हो ! वाह वा ! आज तो तुम बेतर
दिखाई पड़ती हो !"

"ड्यूक, मैं तो ठण्ड से मरी जा रही हूँ !"

"चलो, भीतर चलो !"

"अरे !—क्या अकेले में ले चलियेगा ?"

"ना ! ना !" किसी ने टूटी आवाज़ में कहा।

"... ! ...!" काऊण्ट ने कहा; और तब काउ

कान में बोले—"कम्बख्त ने मजा बिगाड़ दिया ! परमात्म
इसका नाश हो !"

मैडम डुबरी हँस पड़ी, और तब तीनों ने निकट के क
प्रवेश किया।

(आ)

ठीक उसी समय गली में गाड़ियों की खड़खड़ाहट सुना
मार्शल समझ गये—मेहमान-लोग आ पहुँचे। जरा देर
खाने के कमरे की अण्डाकार मेज के इर्द-गिर्द नौ आदमी बै
नौ नौकर, छायाओं की तरह निस्तब्ध, शयन की कुर्सी से मे
के आस-पास घूम रहे थे। क्या मजाल, जो जरा-सी आव
जाय, या खाने-वालों की कीमती रोएँदार पोशाकों से
छू जाय ! कमरा गर्म था, और वायु-मण्डल आराम-देह।
खत्म होने पर था, और किसी विषय को लेकर बात-च
सिलसिला जारी होने-वाला था।

न कमरे के भीतर से, न बाहर से, कोई आवाज
न देती थी। तश्तरियों का उठाना और बदलना भी
सफाई से अमल में आता था, कि कपड़ा तक न सरसरा
मार्शल का खास खिदमतगार भी बुत की तरह निस्तब्ध
आँखों-ही-आँखों में नौकरों को फरमान दे रहा था।

इस अवस्था में मेहमानों को ऐसा अनुभव होने लगा
वे अकेले हों। क़रीब-क़रीब सभी के मन में यह भाव उत्पन्न

कि इतने निस्तब्ध और विकार-शून्य नौकर अवश्य-ही बहरे होंगे।

महाशय डि-रिशलू ने दाईं तरफ़ बैठे हुए मेहमान से — कहकर निस्तब्धता भङ्ग की—"लेकिन मोशिये, आपने तो भी नहीं पिया !"

जिसे सम्बोधित किया गया था, वह कोई अड़तीस बरस गौर-वर्ण पुरुष था। क़द उसका नाटा था, बाल सुन्दर और ऊँचे थे। आँखें साफ़ और नीली थीं, और कभी-कभी एक-बारगी चमककर चिन्ता-मग्न हो जाती थीं।

"मार्शल, पीने के नाम तो मैं सिर्फ़ पानी का उपयोग करता हूँ।" उसने उत्तर दिया।

"सिवा महाराज १५ वें लुई के साथ," मार्शल ने पलटव कहा—"मुझे एक बार महाराज की मेज़ पर आपके साथ भोज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। तब आपने शराब की स्वीकृति दी थी।"

"ओह, मार्शल, आपने एक सुखद स्मृति जागरित कर दी! १७७? की घटना है। राज-महल की 'तोके' का सेवन किया था।"

"ठीक उसी तरह की वस्तु मेरा ख़िदमतगार आपको भेंट करके गौरव प्राप्त करेगा"—काऊण्ट रिशलू झुककर बोले।

काऊण्ट हागा ने गिलास उठाया, और देखा। रोशनी में शराब मोती की तरह चमक रही थी। 'ठीक है मार्शल, धन्यवाद,— रही है।" आख़िर उन्होंने कहा।

ये शब्द कुछ ऐसे सौजन्य-पूर्ण ढङ्ग से कहे गये थे, कि उपस्थित

जन, सब एक-साथ उठ खड़े हुए, और चिल्लाकर बोले—"महाराज चिरञ्जीवी हों!"

"हाँ," काउण्ट हागा ने कहा—"फ़ान्स के महाराज चिरञ्जीवी हों! क्यों महाशय ला पिरोज ?"

"महाराज" कप्तान ला पिरोज ने चापलूसी और आदर के अभ्यस्त भाव से कहा—"मैं सीधा महाराज के पास-से चला आ रहा हूँ, और उन्होंने मेरे साथ ऐसी उदारता का व्यवहार किया है, कि मैं सब-से-ज्यादा उनकी शुभ-कामना करूँगा।"

"तुम्हारे साथ हम भी इस शुभ-कामना में शरीक होंगे।" मार्शल रिशलू के बाँई तरफ़ बैठी हुए मैडम डुबरी ने कहा—"मगर जो हम सब से वयस्क हो, पहला हक उसका है।"

"क्यों महाशय टेवर्नी, आप रहे, या मैं ?" मार्शल रिशलू ने हँसते हुए पूछा।

दूसरी तरफ़ से किसी ने कहा—"मेरे ख़याल में काउण्ट रिशलू सब से बड़े कदापि नहीं हैं।"

"तब आप रहे, टेवर्नी !" ड्यूक बोले।

"ना, मैं आपसे आठ बरस छोटा हूँ, मेरा जन्म सन् १७०४ हुआ था।" उसने उत्तर दिया।

"हो: !" मार्शल ने कहा—"मेरी अट्टासी साल की उम्र से आप कैसे चौंकते हैं !"

"असम्भव, मार्शल, आप हर्गिज़ अट्टासी साल के नहीं हैं !" महाशय कण्डरसीट ने कहा

"असम्भव नहीं, बिल्कुल सही है। सीधा हिसाब है —
लीजिये, मैं १६९६ में पैदा हुआ था।"

"असम्भव !" डि लॉनि चिल्ला उठे।

"अगर आपके पिता जीवित होते, तो कभी 'असम्भव
कहते। जब १७१४ में वे जेल के दारोग़ा थे, उसी समय उ
मेरा परिचय हुआ था।"

"ख़ैर, अगर सच कहा जाय, तो सब से ज्यादा वयस्क
यह शराब है, जिसे काउएट हागा इस समय पी रहे हैं !" महार
डि-फ़ारस ने कहा।

"ठीक कहते हो, मोशिये; यह शराब १२० साल पुरानी है
बस, तो बादशाह की शुभ-कामना करने का पहला हक़ इस
शराब का है।"

"एक मिनिट ठहरें," कगलस्तर ने गम्भीरतापूर्वक कहा—
"पहले-पहल मैंने-ही इस शराब को बोतल में भरा था।"

"आपने ?"

"हाँ, मैंने; सन् १६६४ का ज़िक्र है।"

"इसका अर्थ है, कि आप १३० वर्ष के हैं; क्योंकि शराब
ढालते वक़्त आप कम-से-कम दस वर्ष के तो रहे-ही होंगे।" मैडम
डुबरी ने उपस्थित-जनों की अट्टहास-ध्वनि के बीच कहा।

"जी नहीं, बहुत बड़ा था; जितना बड़ा अब हूँ, उतना-ही……"

कहते-कहते कगलस्तर ने हज़ारों वर्ष पुरानी बातें इस तरह
बतानी शुरू कर दीं, मानों ये कल-ही बीती हों, और अनेक

ऐतिहासिक व्यक्तियों के साथ अपना स्नेह-सान्निध्य भी प्रकट किया।

उसकी एक-एक बात पर सब लोग अचरज करते थे, और दाँतों उँगली काटते थे। तब मार्शल रिशूल ने कहा—"भाई, कगलस्तर, अगर आपका बयान इसी तरह जारी रहा, तो मोशिये टेवर्नी भय से मूर्छित हो जायँगे। असल में वे मौत से बहुत ज्यादे डरते हैं, और आपको अमर समझकर आपकी तरफ़ विचित्र दृष्टि से ताक रहे हैं।"

"अमर तो मैं ख़ैर नहीं हूँ, पर एक बात निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ……"

"क्या?" टेवर्नी, जो सब-से-ज्यादे व्यग्र जान पड़ते थे, चिल्लाकर बोले।

'कि जिन बातों का वर्णन मैंने आपसे किया है, वे सब मेरे जीवन-काल में बीती हैं, और उनमें ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं है।"

मैडम डुबरी ने कहा—"ओहो! काउण्ट, तब तो आप जरूर जादूगर हैं!"

कगलस्तर हँसने लगा।

मैडम डुबरी कहती रहीं—"मालूम होता है, मोशिये, आपके पास काया-कल्प का नुसख़ा है।……आप स्वयं-ही कहते हैं, कि आप की उम्र तीन-चार हज़ार वर्ष की है, जब-कि आप मुश्किल से तीस-चालीस वर्ष के मालूम होते हैं।"

"हाँ, मैडम, मैं उस नुस्खे को जानता हूँ।"

"ओहो! तो मोशिये, कृपा करके मुझे बता दीजिये।"

"आप को, मैडम? बिल्कुल व्यर्थ! आपका तो पहले काया-कल्प हो चुका है। आपकी असली उम्र तो जो है, वह है पर आप मुश्किल-से तीस बरस की जान पड़ती हैं।"

"अरे! आप तो बनाने लगे!"

"न, मैं हमेशा सच-ही कहता हूँ। आप तो पहले-ही मेरे कल्प-रस का अनुभव कर चुकी हैं।"

"कैसे?"

"आपने उस रस का सेवन किया है।"

"मैंने?"

"हाँ, आपने। आप भूली जाती हैं। सेण्ट-लौड के बाजार किसी मकान की आपको याद है? वहाँ आप किसी काम से आ थीं। आपको जोजेफ बाल्सेमो-नामक व्यक्ति की याद है?—जिसे आपने किसी काम में मदद पहुँचाई थी, और उसने बदले में आपको मेरे रस की एक बोतल दी थी, और प्रति दिन तीन बूँद रस का सेवन करने की प्रेरणा की थी? क्या आपको याद नहीं, कि आपने नियम-पूर्वक इस रस का सेवन किया?—आखिर पिछले साल आकर बोतल खत्म हो गई। काउण्टेस, अगर यह सब-कुछ आप भूल गई हैं, तो मैं इसे भूल न कहकर आपकी अकृतज्ञता कहूँगा।"

"ओह! मोशिये कगलस्तर, आप तो मुझसे ऐसी बातें कह रहे हैं ......"

काफ़ी बूढ़े हैं। लेकिन मेरे ख़याल में, ये हद पार कर चुके

कगलस्तर ने बैरन टेवर्नी पर दृष्टि-पात किया, और कह

"जी नहीं।"

"ओह! प्यारे काउण्ट!" मार्शल चीख पड़े—"अगर आ उनकी जवानी लौटा दें, तो मैं आपका मुरीद बन जाऊँ।"

"तो आप लोगों की ऐसी इच्छा है?" मार्शल पर, और फि समस्त उपस्थित-जनों पर नज़र फेंकते हुए कगलस्तर बोला।

सभी कह उठे—"हाँ।"

"और आपकी भी, मोशिये टेवर्नी?"

"मैं? मेरी सब-से ज़्यादे।" बैरन ने जवाब दिया।

"अच्छा, फिर बात-ही क्या है।" कहकर कगलस्तर ने से एक बोतल निकाली, और एक गिलास में बोतल के पदार्थ की कुछ बूँदें टपका दीं। तब आधा गिलास शेम्पेन के मिलाकर उसने गिलास बैरन की तरफ़ सरका दिया।

सब की आँखें उत्सुकतापूर्वक उसकी गति-विधि का निरीक्ष कर रही थीं।

बैरन ने गिलास उठा लिया, पर मुँह के पास पहुँचकर हाथ सहसा रुक गया। सब-के-सब हँसने लगे, लेकिन कगलस्तर ने पुकार कर कहा—"पी जाइये, बैरन, अन्यथा आप ऐसे रस से वंचित रह जायेंगे, जिसका एक क़तरा भी लुई* के लिये भी सस्ता है।"

* फ़्रान्सीसी सिक्का, जो १३वें लुई के समय में प्रचलित हुआ था। —लगभग १५ रुपये के बराबर।

"तोया !" मार्शल रिशलू चिल्लाकर बोले—"इस 'तोके' स
ौ ज्यादे !"

"तो फिर पीलूँ ?" वैरन ने क़रीब-क़रीब काँपकर कहा।

"या, गिलास किसी दूसरे सज्जन को दे दीजिये, जिससे कोई-
कोई तो इन बहु-मूल्य क़तरों से फ़ायदा उठा ले।"

"लाओ, मुझे दो।" मार्शल रिशलू ने हाथ फैलाकर कहा।

वैरन ने गिलास उठा लिया, और एक बार रस-मिश्रित
म्पेन को ताककर झट-से पी गये। पलक-मारते उनके शरीर में
जली-सी दौड़ गई, जमा हुआ मन्द रक्त-प्रवाह खूब तेज़ी-से
नों में दौड़ने लगा, सुकड़ी हुई खाल फैलने-सी लगी, धँसी हुई
खें आप-ही-आप खुलने लगीं, पुतलियाँ चमकने लगीं, काँपते
हाथ स्थिर हो गये, कण्ठ-स्वर में दृढ़ता आगई, और शरीर
अङ्ग-अङ्ग जवानी के-से जोश में आकर भड़क उठा।

क्षण-भर में-ही वैरन की जवानी लौट आई।

आश्चर्य, कौतूहल और प्रशंसा से मिली हुई आवाज कमरे-
में गूँज गई।

वैरन तो मारे खुशी के उछले पड़ते थे, अब सहसा चिल्लाकर
—"ओह! मेरे दाँत निकल आये।"—और झपट्टा मारकर
एक बड़ी-सी रोटी उन्होंने उठा ली। बड़े मजे-से उन्होंने यह
दाँत गड़ा-गड़ाकर खाई, और आध घण्टे तक खुशी-से
चिल्लाकर हँसते रहे। इतनी देर तक और सब लोग आश्चर्य
कौतूहल से उनकी परिवर्त्तित भाव-भङ्गी का निरीक्षण करते

रहे। तब क्रमशः उनका शरीर शिथिल होने लगा, व
पहले का बुढ़ापा आता दिखाई देने लगा।

"ओह !" उन्होंने व्यग्रतापूर्वक चिल्लाकर कहा—"
फिर जवानी को विदा करने का मौक़ा मिल गया !"—
कहते उनके मुँह से एक ठण्डी साँस निकल पड़ी, और ग
दो आँसू लुढ़क आये।

स्वाभाविकतया जो लोग उपस्थित थे, सभी ने इस ब
बूढ़े के दुःख से समवेदना प्रकट की।

"देखिये, साहब, मैं इसका मतलब आपको सम
कगलस्तर ने कहा—"मैंने बैरन को इस रस के पैंतीस क़त
किये थे। अतएव केवल पैंतीस मिनट के लिये-ही उनकी ज
लौटी थी।"

"ओह ! और दीजिये—और !" बूढ़े ने चीख़कर कहा

"न, मोशिये, दूसरी परीक्षा में तो निराश होकर आप
जान दे डालेंगे !"

मैडम डुबरी सब-से-ज़्यादे उत्साहित था। वह एक बार
रस का स्वाद चख चुकी थीं। अतएव टेवर्नी-महोदय को एक
युवक बनते देखकर उसका शरीर हर्ष से रोमांचित हो उठा।
जब सहसा टेवर्नी फिर बूढ़े होगये, तो उसने दुःखित स्व
कहा—"अफ़सोस ! सब धोखा है—सब फ़िज़ूल की बात है !
रस का प्रभाव केवल पैंतीस मिनट तक रहता है।"

"कम-से-कम यह कहा जाय," काउण्ट हागा ने कहा—"

दो वर्ष तक जवान बने रहने के लिये इस रस का एक खासा दरिया पीना पड़ेगा!"

सभी हँस पड़े।

"ओह!" डि-कएडरसेट ने कहा—"हिसाब सीधा है। इकतीस लाख तरेपन हजार क़तरे साल-भर के लिये काफ़ी हैं।"

"अच्छी-खासी याद आजायगी!"

"लेकिन" मैडम डुबरी ने कहा—"यह क्या बात है, कि मेरी जवानी क़ायम रखने के लिये सिर्फ़ एक छोटी शीशी दस वर्ष तक काम देती रही?"

"ठीक है, मैडम। केवल आप-ही इस सत्य की तह तक पहुँच सकी हैं। जो आदमी बूढ़ा हो चुका है, उसे एक-दम जवान बनाने के लिये अधिक रस की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन आपकी तरह कोई बीस वर्ष की औरत, या चालीस वर्ष का मर्द—जब मैंने इसे पीना शुरू किया था, तो मैं चालीस वर्ष का था—अगर क्षय के समय इसके केवल दस क़तरे पी ले तो वह वैसा-का-वैसा-ही बना रह सकता है।"

"क्षय के समय से आपका क्या अभिप्राय है?" काऊन्ट हागा ने पूछा।

"देखिये, साधारण अवस्थाओं में मनुष्य की शक्तियाँ पैंतीस-वर्ष की उम्र तक बढ़ती हैं। चालीस तक वे स्थिर रहती हैं; और इसके बाद क्रमशः घटनी शुरू हो जाती हैं। लेकिन ५० वर्ष की उम्र तक यह घटना अनुभव नहीं होता। इसके बाद मृत्यु-काल

तक इस घटने की गति बढ़ती-ही जाती है। हमने नागरिक ज
में, जब कि हम तरह-तरह की चिन्ताओं, व्याधियों और
के शिकार बने रहते हैं, वृद्धि तीस वर्ष तक पहुँचकर-ही रुक
है, और पैंतीस वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते क्षय आरम्भ हो ज
है। बस, यही समय इस रस को पान करने का होता है।
जो जानता है, कि उस महत्वपूर्ण समय का अनुभव कैसे कि
जाता है, और जिसके पास यह रस विद्यमान है, मेरी तरह
स्वस्थ, प्रसन्न और जवान बना रह सकता है।"

"ओह! मोशिये डि-कगलस्तर!" काऊण्टेस ने चिल्ला
कहा—"जब किसी स्थिर आयु का चुनाव आप पर-ही निर्भर
तो आपने चालीस की जगह बीस साल की अवस्था को क
नहीं पसन्द किया?"

"क्योंकि, मैडम!" कगलस्तर मुस्कराते हुए कहा—"चाली
वर्ष का एक गम्भीर और भरकम आदमी बनना मुझे उपयु
मालूम हुआ—बीस वर्ष का अनुभवशून्य और उच्छृङ्खल नव
युवक नहीं।"

"ठीक! ठीक!" काऊण्टेस कह उठीं।

"देखिये मैडम," कगलस्तर कहता रहा—"बीस वर्ष का युवक
तीस वर्ष की स्त्री का मन आकृष्ट कर सकता है, पर चालीस में हम
बीस की औरतों और साठ के पुरुषों को प्रसन्न कर सकते हैं।"

"मानती हूँ, मोशिये!" काउण्टेस ने कहा—"क्योंकि आप
जो-कुछ कहते हैं, ख़ुद उसके जीते-जागते सुबूत मौजूद हैं।"

"तब कैसे आप चार हजार बरस में समस्त आ
दुर्घटनाओं से बच गये?"

"यह संयोग की बात है मोशिये, लेकिन देखिये, मेरी यु
सुनिये।"

"कहिये, कहिये!"

"जीवन के लिये सब से पहले किस चीज की जरूरत है
उसने दोनों हाथ फैलाकर समस्त उपस्थित-मण्डली पर दृष्टि-प
करते हुए कहा—"स्वास्थ्य की-ही न?"

"अवश्य।"

"तो मेरे कल्प-रस को क्या आप इस योग्य नहीं समझते, कि
यह मेरे स्वास्थ्य को नीरोग और अक्षुण्ण बनाये रहे?"

"यह कौन जाने?"

"आप जानते हैं, काउण्ट"

"हाँ, बेशक; लेकिन......"

"लेकिन और कोई नहीं," मैडम डुबरी ने कहा।

"यह ऐसा प्रश्न है, मैडम, जिस पर हम बाद में विच
करेंगे। यानी, अगर मेरे रस में यह शक्ति हो, तब तो आपक
मानना-ही पड़ेगा, कि उसके नियमित उपयोग से मैं अपना स्वास्थ्य
और जीवन चिरस्थायी रख सकता हूँ।"

"लेकिन सभी पदार्थ नाशवान् होते हैं, एक दिन अच्छे-बुरे
सभी शरीरों का क्षय होना अनिवार्य है।" बैरन टेवर्नी ने कहा।

"देखिये, आपने कहा, कि सभी पदार्थ नाशवान् हैं--सभी

का क्षय होता है। लेकिन आप यह भी अवश्य जानते
प्रत्येक पदार्थ की पुनरावृत्ति होती है, और प्रत्येक वस्तु
परिवर्तन या प्रत्युद्गन होता है। पेड़ों में नये पत्ते आते
वृद्ध पुरुषों के नये सिरे से काले बाल और नये दाँत नि
हैं। ठीक इसी तरह का परिवर्तन मुझमें भी होता
हर साल मेरे रक्त और माँस में नवीन शक्ति का विकार
और जितना क्षय होता है, ठीक उतना-ही संग्रह हो
मतलब यह है, कि भगवान् ने हमें जो अभूत-पूर्व शक्ति
दी हैं, और आजकल के लोग अपनी मूर्खता के कारण
ह्रास कर लेते हैं, मैं उन शक्तियों को अक्षुण्ण बना रखने
हुआ हूँ। मानव-विज्ञान के इस साधारण नियम को हृद
लेने के कारण मेरा मस्तिष्क, मेरा हृदय, मेरी नसें,
पेशियाँ, और मेरी आत्मा अपने-अपने कार्यों में कभी भं
नहीं हुई हैं। यही मेरे जीवन का बड़ा भारी अध्ययन
रही बात आकस्मिक दुर्घटनाओं की, सो आप जा
आदमी हर वक्त एक चीज़ से सतर्क रहता है, साधारण
की अपेक्षा कम दुर्घटनाओं से उसका सामना होता है।
हज़ार बरस मुझे इसी रूप में दुनियाँदारी करते बीते,
ख़याल है, कि अगर आदमी थोड़ी आवश्यक सतर्कत
ले, तो अनेक दुर्घटनाओं से बच जाय; अतएव आप
मान कीजिये, कि इतने अरसे से बराबर इस सतर्कता का

परिचित न हो गया होगा ? आप लोग आश्चर्य करते हैं ! लेकि
नहीं; क्या मैं जीता-जागता, प्रमाण मौजूद नहीं हूँ ? मैं यह न
कहता कि मैं अमर हूँ, मेरा तो यह अभिप्राय है, कि दुनियाँ
साधारण लोगों की अपेक्षा आनेवाली दुर्घटनाओं का मैं क
ठीक अनुमान लगा सकता हूँ, और उनसे सचेत रह सकता
उदाहरणार्थ, मैं अब कभी मोशिये डि-लॉने के साथ अकेला
रहूँगा, जो इस समय इस बात का विचार कर रहे हैं, कि अ
चे मौक़ा पाकर मुझे जेल की हवा खिला सकें, तो भोजन
अभाव में मेरी अमरता की परीक्षा करें !—न मैं मोशिये
कण्डरसेट के साथ रहूँगा; क्योंकि वे अभी-अभी यह सोच
हैं, कि अगर मेरी आँख बचे, तो वे अपनी अँगूठी का बचा हु
विष मेरे गिलास में छोड़ दें।—न, किसी बुरी भावना से न
बल्कि एक वैज्ञानिक परीक्षण के उद्देश्य से, यह देखने के
कि मैं कितना सतर्क हूँ, और इस ज़हर से मैं मरता हूँ या नहीं।

दोनों निर्दिष्ट सज्जनों ने एक-दूसरे को ताका और दोनों का
चेहरा बद-रङ्ग हो गया।

"मान लीजिये, मोशिये लॉने, हम इस वक्त अदालत में नहीं
बैठे हैं;—और फिर विचारों के लिये कोई दण्डित नहीं होता। जो-
कुछ मैंने कहा— बताइये, आप यह नहीं सोच रहे थे ? और आप
मोशिये कण्डरसेट आप क्या अपनी अँगूठी का ज़हर मुझे
चखाने का विचार नहीं कर रहे थे ?"

"बेशक !" मोशिये लॉनि ने हँसते हुए कहा—"मानता हूँ—

-ाप सच कहते हैं; मेरी मूर्खता थी। लेकिन देखिये, आपके दोषा ोपण करने के पूर्व-ही यह मूर्खता मेरे मन से दूर हो चुकी थी।"

"और मैं भी" फगडरसेट बोले—"कायर न रहूँगा। सच-ुच मेरे-मन ऐसा भाव आया था।"

यात्री जितने थे, सब के मुँह से प्रशंसा-सूचक ध्वनि फूट ाड़ी।

"आपने देखा," कगलस्तर गम्भीरतापूर्वक बोला—"मैंने ाभी-अभी दो दुर्घटनाओं से रक्षा पाली। बस, इसी तरह और ाच बातों के लिये समझ लीजिये। इस बहुत-लम्बे जीवन के ानुभव ने मुझे अपने मिलनेवालों के भूत-भविष्य-वर्तमान की ानेक बातों से परिचित बना दिया है। केवल मनुष्यों तक ही ाीं, पशुओं और बे-जान वस्तुओं के विषय में भी मैं बहुत-सी ाय कल्पनाएँ स्थिर कर सकता हूँ। जब मैं किसी गाड़ी में बैठता ाो एक नजर देखकर-ही समझ लेता हूँ, कि उसके घोड़े दौड़ने ावेल हैं, या नहीं; उसका कोचवान गाड़ी उलट तो नहीं देगा। ार मैं किसी जहाज में सवार होता हूँ, तो क्षण-भर में समझ ा हूँ, कि कप्तान नौ-सिखिया, या जिद्दी तो नहीं है, और रस्ते ुझे खतरे में तो नहीं डाल लेगा। बस, यह देखकर मैं उस ाे से या उस जहाज से सफर करने का इरादा त्याग देता हूँ। ाभाग्य को मानने से इन्कार नहीं करता, पर मैं दुर्घटनाओं के ासरों को बहुत-ही कम कर देने की क्षमता रखता हूँ, और ारह मैं अपनी मृत्यु के निन्यानवे-फी-सदी अवसरों को खाली

देता हूँ, और सौंवे के विरुद्ध भी रक्षा पाने का साहस रखता। चार हजार बरस जीवित रहने का ही यह प्रसाद है।"

कगलस्तर की ये आश्चर्य्य-जनक बातें सुनकर सब के निस्तब्ध रह गये। सहसा ला पिरोज ने हँसते हुए कहा—"तब आप मेरे साथ चलें, मैं सारी दुनियाँ की सैर को जा रहा। आप मेरे साथ रहेंगे तो मेरे बड़े-भारी सहायक सिद्ध हो सकेंगे।"

कगलस्तर ने कुछ उत्तर न दिया।

"मोरिये डि-रिशलू" ला पिरोज ने कहना शुरू किया—"क्यों कि मोरिये कगलस्तर इतनी सुन्दर यात्रा के लिये मुझे सहयो देने को तैयार नहीं हैं, मैं अब तुरन्त आप लोगों से विदा ले चाहता हूँ। क्षमा कीजियेगा, काऊएट हागा-महोदय, और अ भी मैडम, क्या बताऊँ—सात बज चुके हैं, और मैंने महाराज वादा किया था, कि ठीक सवा सात बजे रवाना हो जाऊँगा लेकिन हाँ, अगर काऊएट कगलस्तर मेरे साथ चलने के लि राजी नहीं हों, तो कम-से-कम यह तो बताने का कष्ट कीजिये, वर्सेई और ब्रेस्ट के बीच में मेरे साथ क्या पेश आयेगा! ब्रेस्ट ब तक मैं कुछ नहीं पूछता; यह मेरा अपना काम है। मगर कृपा करके मुझे यह बतायें, कि ब्रेस्ट तक मेरे साथ क्या पे आयेगा!"

कगलस्तर ने करुणा और वेदना-मिश्रित नेत्रों से ला पिरो की तरफ ताका। इस दृष्टि में कुछ ऐसा भयानक भाव था, देखनेवाले दहल उठे। मगर ला पिरोज की नजर इधर मा

ते। उसने झट अपना रोएँदार कोट पहना, और चलने को
ार होगया।

उसने उज्ज्वल दृष्टि से सब लोगों को ताका, काउण्ट हागा
प्रति सिर झुकाकर आदर प्रदर्शित किया, और बूढ़े मार्शल
की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया।

मार्शल ने कहा—"विदा भाई, ला पिरोज, विदा!"

ला पिरोज हँसता-हँसता कमरे से बाहर होगया।

उसका पद-शब्द सुनना मन्द होते-ही, सब की नज़र अना-
यास-ही कगलस्तर के चहरे पर जा अटकी।

काउण्ट हागा ने निस्तब्धता भङ्ग की—"मोशिये कगलस्तर,
आपने पिरोज-महाशय के प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं दिया?"

कगलस्तर मानों नींद से चौंका, और बोला—"इसलिये, कि
या तो मुझे झूठ बात कहनी पड़ती, अथवा एक कटु सत्य प्रकट
करना पड़ता।"

"यह क्यों?"

मुझे उनसे यही कहना पड़ता, कि यह विदा अन्तिम
विदा है।"

"अरे!" मार्शल रिशलू ने खड़े होकर कहा—"क्या
मतलब?"

"निश्चय रहिये मोशिये, इस भविष्य-वाणी का आपसे कोई
सरोकार नहीं है।"

"क्या!" मैडम डुबरी चौंककर बोलीं—"यह बेचारा ला

पिरोज, जो अभी-अभी स्नेहपूर्वक मेरा कर-चुम्बन क
था......"

"न-सिर्फ फिर-कभी आपका कर-चुम्बन नहीं करेगा, हम में-से कोई उसे आगे न देख पायेगा।" कगलस्तर ने पानी-भरा गिलास उठाकर और उसकी तह पर ध्यान दृष्टिपात करते हुए उत्तर दिया।

सब-के-सब आश्चर्य-से चिल्ला उठे। सब की मुख-मुद्रा ऐसा प्रकट होता था, कि वे कगलस्तर के जादूगर होने में कुछ शङ्का नहीं करते।

सहसा मोशिये फ़ारस उठे, और पञ्जों के बल चले। बाहर बरामदे में पहुँचे। बाहर और कोई न था, पास के कमरे सिर्फ एक बूढ़ा नौकर ऊँघ रहा था।

आकर मोशिये फ़ारस कुर्सी पर बैठ गये, और सङ्केत-द्वारा सब पर यह प्रकट कर दिया, कि सचमुच कोई सुननेवाला नहीं है।

"तो कृपा करके बताइये मोशिये," मैडम दुपरी ने व्यग्र-भाव से कहा—"अभागे लॉ पिरोज के साथ क्या बीतेगी ?"

कगलस्तर ने सिर हिलाया।

"हाँ, हाँ, बताइये, बताइये!" सब एक-साथ बोल उठे।

"मैं मोशिये ला पिरोज के भविष्य की रेखा साफ देखता हूँ। एक वर्ष तक तो वह विघ्न-रहित है, और पश्चात् ...समाप्त...!"

मिनट-भर सब निस्तब्ध रहे, तब कगलस्तर ने फिर ...

"असम्भव नहीं, बिल्कुल सही है। सीधा हिसाब है, लीजिये, मैं १६९६ में पैदा हुआ था।"

"असम्भव!" डि लौनि चिल्ला उठे।

"अगर आपके पिता जीवित होते, तो कभी 'असम्भव' न कहते। जब १७१४ में वे जेल के दारोगा थे, उसी समय उनसे मेरा परिचय हुआ था।"

"और, अगर सच कहा जाय, तो सब से ज्यादा वयस्क तो यह शराब है, जिसे काउण्ट हागा इस समय पी रहे हैं!" महाराय डि-कारस ने कहा।

"ठीक कहते हो, मोरिये; यह शराब १२० साल पुरानी है। बस, तो बादशाह की शुभ-कामना करने का पहला हक़ इस शराब का है।"

"एक मिनिट ठहरें," कगलास्तर ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"पहले-पहल मैंने-ही इस शराब को बोतल में भरा था।"

"आपने?"

"हाँ, मैंने; सन् १५६४ का ज़िक्र है।"

"इसका अर्थ है, कि आप १२० वर्ष के हैं; क्योंकि शराब डालते वक्त, आप कम-से-कम दस वर्ष के तो रहे-ही होंगे।" [illegible] दूसरों ने उपस्थित-जनों की अट्टहास-ध्वनि के बीच कहा।

"जी नहीं, बहुत बड़ा था, जितना बड़ा अब हूँ, उतना-ही……"

कहते-कहते कगलास्तर ने हज़ारों वर्ष पुरानी बातें इस तरह बतानी शुरू कर दीं, मानों वे कल ही बीती हों, और कोई

"हाँ, मैडम, मैं उस नुस्खे को जानता हूँ।"

"ओहो! तो मोशिये, कृपा करके मुझे बता दीजिये।"

"आप को, मैडम? बिल्कुल व्यर्थ! आपका तो पहले काया-कल्प हो चुका है। आपकी असली उम्र तो जो है, वह है पर आप मुश्किल-से तीस बरस की जान पड़ती हैं।"

"अरे! आप तो बनाने लगे!"

"न, मैं हमेशा सच-ही कहता हूँ। आप तो पहले-ही कल्प-रस का अनुभव कर चुकी हैं।"

"कैसे?"

"आपने उस रस का सेवन किया है।"

"मैंने?"

"हाँ, आपने। आप भूली जाती हैं। सेण्ट-क्लैड के बाजार किसी मकान की आपको याद है? वहाँ आप किसी काम से आ थीं। आपको जोजेफ बाल्सेमो-नामक व्यक्ति की याद है?—जि आपने किसी काम में मदद पहुँचाई थी, और उसने बदले में आपक मेरे रस की एक बोतल दी थी, और प्रति दिन तीन बूँद रस का सेव करने की प्रेरणा की थी? क्या आपको याद नहीं, कि आपने नियम पूर्वक इस रस का सेवन किया?—आखिर पिछले साल आपक बोतल खत्म हो गई। काउण्टेस, अगर यह सब-कुछ आप भूल गई हैं, तो मैं इसे भूल न कहकर आपकी अकृतज्ञता कहूँगा।"

"ओह! मोशिये कगलास्तर, आप तो मुझसे ऐसी बातें कह रहे हैं ......"

"जिन्हें सिर्फ आप-ही जानती थीं; ठीक है, मैं जानता हूँ। लेकिन फिर जादूगर होने से-ही क्या लाभ हुआ, अगर कोई अपने आस-पास के लोगों की बातें पता न रक्खे ?"

"तो आपको तरह जोजेफ बाल्सेमो को भी इस रस की गुप्त शक्तियों का पता था ?"

"नहीं मैडम; वह तो मेरा एक दिली दोस्त था। मैंने उसे तीन-चार बोतलें भेंट दे दी थीं।"

"तो उसके पास से कोई बची भी ?"

"मुझे मालूम नहीं। पिछले दो-तीन वर्ष से बेचारा बाल्सेमो गायब है। पिछली दफा मैंने उसे अफरीका में एक नदी-किनारे देखा था। वह पहाड़ों की यात्रा पर जा रहा था। इसके कुछ दिन बाद मैंने उसके मरने की अफवाह सुनी थी।"

"आइये, काऊण्ट, हम भी अपनी बातें पूछ लें।"—मार्शल ने सहसा उत्साहित होकर काऊण्ट हागा से कहा।

उन्होंने कगलस्तर से पूछा—"क्या यह सब बातें आप गम्भीरतापूर्वक कह रहे हैं ?"

"जी, बिल्कुल गम्भीरतापूर्वक—गुस्ताखी माफ हो !"—कहकर कगलस्तर ने अनोखे भाव से सिर झुका लिया।

"तो" मार्शल ने कहा—"मैडम डुबरी अभी इस-क़ाबिल नहीं हैं, कि उनका काया-कल्प किया जा सके।"

"जी हाँ, मेरा यही ख़याल है।"

"अच्छा तो, मेरे दोस्त टेवर्नी-महाशय को देखिये। ये तो

फारी पूछे हैं। लेकिन मेरे ख्याल में, वे हद पार कर चुके
कगलस्तर ने बैरन टेवर्नी पर दृष्टि-पात किया, और कहा
"जी नहीं।"

"ओह! प्यारे काऊण्ट!" मार्शल चीख पड़े—"अगर उनकी जवानी लौटा दें, तो मैं आपका मुरीद बन जाऊँ।"

"तो आप लोगों की ऐसी इच्छा है?" मार्शल पर, और फि समस्त उपस्थित-जनों पर नजर फेंकते हुए कगलस्तर बोला।

सभी कह उठे—"हाँ।"

"और आपकी भी, मोशिये टेवर्नी?"

"मैं? मेरी सब-से ज्यादे।" बैरन ने जवाब दिया।

"अच्छा, फिर बात-ही क्या है।" कहकर कगलस्तर ने जे से एक बोतल निकाली, और एक गिलास में बोतल के पदार्थ की कुछ बूँदें टपका दीं। तब आधा गिलास शेम्पेन के सा मिलाकर उसने गिलास बैरन की तरफ़ सरका दिया।

सब की आँखें उत्सुकतापूर्वक उसकी गति-विधि का निरीक्षण कर रही थीं।

बैरन ने गिलास उठा लिया, पर मुँह के पास पहुँचकर हाथ सहसा रुक गया। सब-के-सब हँसने लगे, लेकिन कगलस्तर ने पुकार कर कहा—"पी जाइये, बैरन, अन्यथा आप ऐसे रस से वञ्चित रह जायेंगे, जिसका एक क़तरा सौ लुई * के लिये भी सस्ता है।"

* फ्रान्सीसी सिक्का, जो १३वें लुई के समय से प्रचलित हुआ था।
—लगभग १५ रुपये के बराबर।

"तोबा !" मार्शल रिशलू चिल्लाकर बोले—"इस 'तोबे' स ज्यादे !"

"तो फिर पीलूँ ?" वैरन ने क़रीब-क़रीब काँपकर कहा ।

"या, गिलास किसी दूसरे सज्जन को दे दीजिये, जिससे कोई-कोई तो इन बहु-मूल्य क़तरों से फ़ायदा उठा ले ।"

"लाओ, मुझे दो ।" मार्शल रिशलू ने हाथ फैलाकर कहा ।

वैरन ने गिलास उठा लिया, और एक बार रस-मिश्रित म्पेन को ताककर झट-से पी गये । पलक-मारते उनके शरीर में जली-सी दौड़ गई, जमा हुआ मन्द रक्त-प्रवाह खूब तेजी-से सों में दौड़ने लगा, सुकड़ी हुई खाल फैलने-सी लगी, धँसी हुई आँखें आप-ही-आप खुलने लगीं, पुतलियाँ चमकने लगीं, काँपते ए हाथ स्थिर हो गये, कण्ठ-स्वर में दृढ़ता आगई, और शरीर ा अङ्ग-अङ्ग जवानी के-से जोश में आकर भड़क उठा ।

क्षण-भर में-ही बैरन की जवानी लौट आई ।

आश्चर्य, कौतूहल और प्रशंसा से मिली हुई आवाज़ कमरे-भर में गूँज गई ।

बैरन तो मारे खुशी के उछले पड़ते थे, अब सहसा चिल्लाकर बोले—"ओह ! मेरे दाँत निकल आये ।"—और झपट्टा मारकर एक एक बड़ी-सी रोटी उन्होंने उठा ली । बड़े मजे-से उन्होंने वह रोटी दाँत गड़ा-गड़ाकर खाई, और आध घण्टे तक खुशी-में खिला-खिलाकर हँसते रहे । इतनी देर तक और सब लोग आश्चर्य और कौतूहल से उनकी परिवर्तित भाव-भङ्गी का निरीक्षण करते

गई। तब क्रमशः उनका शरीर शिथिल होने लगा, पहले का बुढ़ापा आता दिखाई देने लगा।

"ओह !" उन्होंने व्यग्रतापूर्वक चिल्लाकर कहा—"ए फिर जवानी को विदा करने का मौका मिल गया।"—कहते उनके मुँह से एक ठण्डी साँस निकल पड़ी, और गालों दो आँसू ढुलक आये।

स्वाभाविकतया जो लोग उपस्थित थे, सभी ने इस बदनसी बूढ़े के दुःख से समवेदना प्रकट की।

"देखिये, साहब, मैं इसका मतलब आपको सम कगलस्तर ने कहा—"मैंने बैरन को इस रस के पैंतीस ब्र किये थे। अतएव केवल पैंतीस मिनट के लिये-ही उनकी ज टी थी।"

"ओह ! और दीजिये—और !" बूढ़े ने चीखकर कहा।

"न, मोशिये, दूसरी परीक्षा में तो निराश होकर आप शाय दे डालेंगे !"

मैडम डुवरी सब-से-ज़्यादे उत्साहित थी। वह एक बार इस का स्वाद चख चुकी थीं। अतएव टेवर्नी-महोदय को एक-द चनते देखकर उसका शरीर हर्ष से रोमाञ्चित हो उठा। पर इसा टेवर्नी फिर बूढ़े होगये, तो उसने दुःखित स्वर में "अफसोस ! सब धोखा है—सब फिजूल की बात है ! इस प्रभाव केवल पैंतीस मिनट तक रहता है।"

न-से-कम यह कहा जाय," काउण्ट हा

ों वर्ष तक जवान बने रहने के लिये इस रस का एक खासा हरिया पीना पड़ेगा!"

सभी हँस पड़े।

"ओह!" डि-कएटरसेट ने कहा—"हिसाब सीधा है। इक-तीस लाख तरेपन हज़ार क़तरे साल-भर के लिये काफ़ी हैं।"

"अच्छी-खासी याद आजायगी!"

"लेकिन" मैडम डुबरी ने कहा—"यह क्या बात है, कि मेरी जवानी क़ायम रखने के लिये सिर्फ़ एक छोटी शीशी दस वर्ष तक काम देती रही?"

"ठीक है, मैडम। केवल आप-ही इस सत्य की तह तक पहुँच सकी हैं। जो आदमी बूढ़ा हो चुका है; उसे एक-दम जवान बनाने के लिये अधिक रस की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन आपकी तरह कोई बीस वर्ष की औरत, या चालीस वर्ष का मर्द—जब मैंने इसे पीना शुरू किया था, तो मैं चालीस वर्ष का था—अगर क्षय के समय इसके केवल दस क़तरे पी ले तो वह वैसा-का-वैसा-ही बना रह सकता है।"

"क्षय के समय से आपका क्या अभिप्राय है?" काउण्ट हागा ने पूछा।

"देखिये, साधारण अवस्थाओं में मनुष्य की शक्तियाँ पैंतीस-वर्ष की उम्र तक बढ़ती हैं। चालीस तक वे स्थिर रहती हैं; और इसके बाद क्रमशः घटनी शुरू हो जाती हैं। लेकिन ५० वर्ष की उम्र तक यह घटना अनुभव नहीं होता। इसके बाद मृत्यु-काल

"तब कैसे आप चार हजार बरस में समस्त आ
दुर्घटनाओं से बच गये ?"

"यह संयोग की बात है मोशिये, लेकिन देखिये, मेरी यु
सुनिये।"

"कहिये, कहिये !"

"जीवन के लिये सब से पहले किस चीज की जरूरत है
उसने दोनों हाथ फैलाकर समस्त उपस्थित-मण्डली पर दृष्टि
करते हुए कहा—"स्वास्थ्य की-ही न ?"

"अवश्य।"

"तो मेरे कल्प-रस को क्या आप इस योग्य नहीं समझते कि
वह मेरे स्वास्थ्य को नीरोग और अक्षुण्ण बनाये रहे ?"

"यह कौन जाने ?"

"आप जानते हैं, काऊण्ट "

"हाँ, बेशक; लेकिन......"

"लेकिन और कोई नहीं," मैडम डुबरी ने कहा।

"यह ऐसा प्रश्न है, मैडम, जिस पर हम बाद में विच
रेंगे। यानी, अगर मेरे रस में यह शक्ति हो, तब तो आपव
नना-ही पड़ेगा, कि उसके नियमित उपयोग से मैं अपना स्वास्थ्य
र जीवन चिरस्थायी रख सकता हूँ।"

"लेकिन सभी पदार्थ नाशवान् होते हैं, एक दिन अच्छे-बुरे
शरीरों का क्षय होना अनिवार्य है।" बैरन टेवर्नी ने कहा।

"देखिये, आपने ... कि ...

... हैं--सभी

क्षय होता है। लेकिन आप यह भी अवश्य जानते होंगे, कि प्रत्येक पदार्थ की पुनरावृत्ति होती है, और प्रत्येक वस्तु में नवीन परिवर्तन या प्रस्फुटन होता है। पेड़ों में नये पत्ते आते हैं, अधिक वृद्ध पुरुषों के नये सिरे से काले बाल और नये दाँत निकल आते हैं। ठीक इसी तरह का परिवर्त्तन मुझमें भी होता रहता है। हर साल मेरे रक्त और माँस में नवीन शक्ति का विकास होता है, और जितना क्षय होता है, ठीक उतना-ही संग्रह हो जाता है। मतलब यह है, कि भगवान् ने हमें जो अभूत-पूर्व शक्तियाँ प्रदान की हैं, और आजकल के लोग अपनी मूर्खता के कारण जिनका ह्रास कर लेते हैं, मैं उन शक्तियों को अक्षुण्ण बना रखने में समर्थ हुआ हूँ। मानव-विज्ञान के इस साधारण नियम को हृदयङ्गम कर लेने के कारण मेरा मस्तिष्क, मेरा हृदय, मेरी नसें, मेरी माँस-पेशियाँ, और मेरी आत्मा अपने-अपने कार्यों में कभी भी असफल नहीं हुई हैं। यही मेरे जीवन का बड़ा भारी अध्ययन है। अब रही बात आकस्मिक दुर्घटनाओं की, सो आप जानते हैं, जो आदमी हर वक्त एक चीज से सतर्क रहता है, साधारण आदमियों की अपेक्षा कम दुर्घटनाओं से उसका सामना होता है। तीन-चार हजार बरस मुझे इसी रूप में दुनियाँदारी करते बीते, और मेरा खयाल है, कि अगर आदमी थोड़ी आवश्यक सतर्कता से काम ले, तो अनेक दुर्घटनाओं से बच जाय; अतएव आप स्वयं अनुमान कीजिये, कि इतने अरसे से बराबर इस सतर्कता का अभ्यास करते-करते मेरा मन सभी प्रकार की दुर्घटनाओं से कितना

परिचित न हो गया होगा ? आप लोग आश्चर्य करते हैं ! ले
नहीं; क्या मैं जीता-जागता, प्रमाण मौजूद नहीं हूँ ? मैं यह
कहता कि मैं अमर हूँ, मेरा तो यह अभिप्राय है, कि दुनि
साधारण लोगों की अपेक्षा आनेवाली दुर्घटनाओं का मैं
ठीक अनुमान लगा सकता हूँ, और उनसे सचेत रह सकता
उदाहरणार्थ, मैं अब कभी मोशिये डि-लॉने के साथ अकेला
रहूँगा, जो इस समय इस बात का विचार कर रहे हैं, कि अ
से मौक़ा पाकर मुझे जेल की हवा खिला सकें, तो भोजन
अभाव में मेरी अमरता की परीक्षा करें !—न मैं मोशिये
कण्डरसेट के साथ रहूँगा; क्योंकि वे अभी-अभी यह सोच
हैं, कि अगर मेरी आँख बचे, तो वे अपनी अँगूठी का बचा हु
विष मेरे गिलास में छोड़ दें।—न, किसी बुरी भावना से नहं
बल्कि एक वैज्ञानिक परीक्षण के उद्देश्य से, यह देखने के लि
कि मैं कितना सतर्क हूँ, और इस ज़हर से मैं मरता हूँ या नहीं।

दोनों निर्दिष्ट सज्जनों ने एक-दूसरे को ताका और दोनों क
चेहरा बद-रङ्ग हो गया।

"मान लीजिये, मोशिये लॉने, हम इस वक़्त अदालत में नहं
बैठे हैं;—और फिर विचारों के लिये कोई दण्डित नहीं होता। जो
कुछ मैंने कहा— बताइये, आप यह नहीं सोच रहे थे ? और आप
मोशिये कण्डरसेट आप क्या अपनी अँगूठी का ज़हर मुझे
खिलाने का विचार नहीं कर रहे थे ?"

"बेशक !" मोशिये लॉने ने हँसते हुए कहा—"मानता हूँ,—

आप सच कहते हैं; मेरी मूर्खता थी। लेकिन देखिये, आपके दोषा-रोपण करने के पूर्व-ही यह मूर्खता मेरे मन से दूर हो चुकी थी।"

"और मैं भी" कण्डरसेट बोले—"कायर न रहूँगा। सच-मुच मेरे-मन ऐसा भाव आया था।"

यात्री जितने थे, सब के मुँह से प्रशंसा-सूचक ध्वनि फूट पड़ी।

"आपने देखा," कगलस्तर गम्भीरतापूर्वक बोला—"मैंने अभी-अभी दो दुर्घटनाओं से रक्षा पाली। बस, इसी तरह और सब बातों के लिये समझ लीजिये। इस बहुत-लम्बे जीवन के अनुभव ने मुझे अपने मिलनेवालों के भूत-भविष्य-वर्तमान की अनेक बातों से परिचित बना दिया है। केवल मनुष्यों तक ही नहीं, पशुओं और बे-जान वस्तुओं के विषय में भी मैं बहुत-सी सत्य कल्पनाएँ स्थिर कर सकता हूँ। जब मैं किसी गाड़ी में बैठता हूँ, तो एक नजर देखकर-ही समझ लेता हूँ, कि उसके घोड़े दौड़ने क़ाबिल हैं, या नहीं; उसका कोचवान गाड़ी उलट तो नहीं देगा। अगर मैं किसी जहाज में सवार होता हूँ, तो क्षण-भर में समझ लेता हूँ, कि कप्तान नौ-सिखिया, या जिद्दी तो नहीं है, और रस्ते में मुझे खतरे में तो नहीं डाल लेगा। बस, यह देखकर मैं उस गाड़ी से या उस जहाज से सफ़र करने का इरादा त्याग देता हूँ। मैं दुर्भाग्य को मानने से इन्कार नहीं करता, पर मैं दुर्घटनाओं के अवसरों को बहुत-ही कम कर देने की क्षमता रखता हूँ, और इस तरह मैं अपनी मृत्यु के निन्यानबे-फी-सदी अवसरों को खाली

देता हूँ, और सौत्रे के विरुद्ध भी रक्षा पाने का साहस चार हजार बरस जीवित रहने का ही यह प्रसाद है।"

कगलस्तर की ये आश्चर्य्य-जनक बातें सुनकर निस्तब्ध रह गये। सहसा ला पिरोज ने हँसते हुए कहा- आप मेरे साथ चलें, मैं सारी दुनियाँ की सैर को जा आप मेरे साथ रहेंगे तो मेरे बड़े-भारी सहायक सिद्ध हो

कगलस्तर ने कुछ उत्तर न दिया।

"मोशिये डि-रिशलू" ला पिरोज ने कहना शुरू किया- कि मोशिये कगलस्तर इतनी सुन्दर यात्रा के लिये मुझे देने को तैयार नहीं हैं, मैं अब तुरन्त आप लोगों से वि चाहता हूँ। क्षमा कीजियेगा, काऊएट हागा-महोदय, औ भी मैडम, क्या बताऊँ—सात बज चुके हैं, और मैंने वादा किया था, कि ठीक सवा सात बजे रवाना हो जा लेकिन हाँ, अगर काऊएट कगलस्तर मेरे साथ चलने के राजी नहीं हों, तो कम-से-कम यह तो बताने का कष्ट कीजि वर्सेई और ब्रेस्ट के बीच में मेरे साथ क्या पेश आयेगा! ब्रेस्ट तक मैं कुछ नहीं पूछता; वह मेरा अपना काम है। म कृपा करके मुझे यह बतायें, कि ब्रेस्ट तक मेरे साथ क्य आयेगा!"

कगलस्तर ने करुणा और वेदना-मिश्रित नेत्रों से ला पि की तरफ़ ताका। इस दृष्टि में कुछ ऐसा भयानक भाव था, देखने-वाले दहल उठे। मगर ला पिरोज की नज़र इधर

। उसने झट अपना रोएँदार कोट पहना, और चलने को
र होगया।

उसने उज्ज्वल दृष्टि से सब लोगों को ताका, काऊण्ट हागा
ाति सिर झुकाकर आदर प्रदर्शित किया, और बूढ़े मार्शल
तरफ हाथ बढ़ा दिया।

"मार्शल ने कहा—"विदा भाई, ला पिरोज, विदा !"

ला पिरोज हँसता-हँसता कमरे मे बाहर होगया।

उसका पद-शब्द सुनना बन्द होने-ही, सब की नजर कना-
त-ही कगलस्तर के चहरे पर जा अटकी।

काऊण्ट हागा ने निस्तब्धता भङ्ग की—"मोशिये कगलस्तर,
पने पिरोज-महाशय के प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं दिया ?"

कगलस्तर मानों नींद मे चौंका, और बोला—"इसलिये, कि
तो मुझे झूठ बात कहनी पड़ती, अथवा एक कटु सत्य प्रकट
ना पड़ता।"

"यह क्यों ?"

मुझे उनसे यही कहना पड़ता, कि यह विदा अन्तिम
दा है।"

"अरे !" मार्शल रिशलू ने जर्द होकर कहा—"क्या
तलब ?"

"निश्चय रहिये मोशिये, इस भविष्य-वाणी का आपसे कोई
रोकार नहीं है।"

"क्या ?" मैडम डुबरी चौंककर बोलीं—"यह बेचारा ला

पिरोज़, जो अभी-अभी स्नेहपूर्वक मेरा कर-चुम्बन कर रहा था......"

"न-सिर्फ़ फिर-कभी आपका कर-चुम्बन नहीं करेगा, हम में-से कोई उसे आगे न देख पायेगा।" कगलस्तर ने हाथ में पानी-भरा गिलास उठाकर और उसकी तह पर दृष्टिपात करते हुए उत्तर दिया।

सब-के-सब आश्चर्य-से चिल्ला उठे। सब की मुख-भङ्गी से ऐसा प्रकट होता था, कि वे कगलस्तर के जादूगर होने में कुछ भी शङ्का नहीं करते।

सहसा मोशिये फ़ारस उठे, और पञ्जों के बल चलते हुए बाहर बरामदे में पहुँचे। बाहर और कोई न था, पास के कमरे में सिर्फ़ एक बूढ़ा नौकर ऊँघ रहा था।

आकर मोशिये फ़ारस कुर्सी पर बैठ गये, और सङ्केत-द्वारा सब पर यह प्रकट कर दिया, कि सचमुच कोई सुननेवाला नहीं है।

"तो कृपा करके बताइये मोशिये," मैडम डुबरी ने व्यग्र भाव से कहा—"अभागे लॉ पिरोज़ के साथ क्या बीतेगी?"

कगलस्तर ने सिर हिलाया।

"हाँ, हाँ, बताइये, बताइये!" सब एक-साथ चीख़ उठे।

"मैं मोशिये ला पिरोज़ के भविष्य की रेखा साफ़ देखता हूँ। एक वर्ष तक तो यह विघ्न-रहित है, और पश्चात्...समाप्त...!"

मिनट-भर सब निस्तब्ध रहे, तब कगलस्तर ने फिर कहना

ट किया—"जितने साथ होंगे, सब मरेंगे। हाँ, एक बचेगा—साफ़ खता है। एक बचकर लौटेगा, और दुनियाँ को ख़बर देगा* !"

"लेकिन आपने उन्हें सचेत क्यों नहीं कर दिया ?" सहमा ाउण्ट हागा ने कहा।

"हाँ," मैडम डुवरी भी व्यग्र कण्ठ से बोल उठीं—"क्यों न तौरन् आदमी भेजकर उसे वापस बुला लिया जाय ? प्यारे ार्शल, ला पिरोज़-जैसे आदमियों का जीवन बहुत क़ीमती है।"

मार्शल उठे, और घण्टी बजाने को प्रस्तुत हुए।

कगलस्तर ने हाथ बढ़ाकर रोका। "अफ़सोस !" बोला—'सब बेकार है ! मैं होनहार को जान सकता हूँ, पर उसे बदलने ा अधिकार मुझे नहीं है। मोशिये ला पिरोज़ मेरी बात सुनते तो ँसते, वे-तो-ये—काउण्ट हागा ही मन में हँस रहे हैं।—और भी कई सज्जन मेरी बातों को ऊल-जलूल समझ रहे हैं। न, आप ोग सङ्कोच न कीजिये, मैं तो इन बातों का आदी होगया हूँ।"

"नहीं जी, हमें तो पूरा विश्वास है।" मैडम डुवरी और मार्शल रिशालू ने कहा—"मुझे भी।" बैरन टैवर्नी ने बड़बड़ाकर कहा—"और मुझे भी है।" काउण्ट हागा भी नम्रतापूर्वक बोले।

"हाँ," कगलस्तर ने कहा—"आप इसलिये विश्वास करते हैं, कि मेरी बात ला पिरोज़ के विषय में है। अगर कहीं आपके विषय में कुछ कह डालूँ, शायद आप आसानी-से विश्वास न करेंगे ?"

* वास्तव में केवल एक-दो आदमी इस यात्रा से बचकर जीता-जागता लौट सका था।

"ओहो !"

"मैं जानता हूँ, मैं समझता हूँ।"

"देखिये, मेरा कहना तो यही है, कि आपने जिस का
विश्वासनीयता सिद्ध करने की कोशिश की है, अगर
सा विरोध में इतना भी कह देते—कि 'अमुक जगह' सतर्क रहना !
तो मैं उस पर विश्वास करने को फ़ौरन-जल्दी तैयार होजाता।"

"नहीं, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, अगर मैं ऐसा
देता, और वह कहीं विश्वास कर लेता, तो उसकी जान एक आफ़
में फँस जाती, और हर जगह उसे प्राणों का भय लगा रहता। इ
तरह उसके सारे उत्साह और बल का नाश हो जाता, और व
वीर की तरह न मरकर एक कुत्ते की मौत मरता।"

"सच बात है !"—कई मेहमानों ने हल्की आवाज़ में कहा।

"बिल्कुल ठीक है ! भगवान् ने हमारे और मौत के बीच में
एक पर्दा रक्खा है, वह सचमुच बड़ी-भारी नियामत है।" मोशिये
कण्डरसेट ने टिप्पणी की।

"फिर भी" काऊण्ट हागा बोले—"अगर आप मुझसे कहें,
कि अमुक व्यक्ति से, अथवा अमुक वस्तु से सतर्क रहियेगा, तो
मैं अवश्य ही उसको धन्यवाद दूँगा।"

कगलस्तर के मुख पर एक वेदना-पूर्ण मुस्कान प्रस्फुटित हुई।

"मेरा मतलब है मोशिये क़गलस्तर" काऊण्ट हागा ने पुनः
कहना शुरू किया— "अगर आप मुझे सावधान करेंगे, तो शिष्टा-
चार के नाते मुझे आपका कृतज्ञ होना पड़ेगा।"

"तो आप मुझसे वही कहलाना चाहते हैं, जिसे ला पिरोज कहने में मैंने परहेज किया ?"

"हाँ, मेरी ऐसी-ही इच्छा है।"

कगलस्तर ने ओठ खोले, जैसे कुछ कहना-ही चाहता है। तब इसा रुक गया, और बोला—"ना, काऊण्ट, ना !"

"नहीं; कह-ही दीजिये।"

कगलस्तर ने सिर घुमाकर कहा—"हर्गिज़ नहीं !"

"देखिये," काऊण्ट ने चढ़ते हुए स्वर में कहा—"आप मुझे नाराज़ बना रहे हैं !"

"आप को दुःख देने की अपेक्षा मैं इसे अच्छा समझता हूँ।"

"मोशिये कगलस्तर" काऊण्ट ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"दुनियाँ में असंख्य आदमी ऐसे हैं, जिन्हें भविष्य से अपरिचित रहना चाहिये। पर याद रखिये, ऐसे भी अनेक आदमी हैं, जिन्हें अवश्य-ही इस विषय में ज्ञान रखना चाहिये, क्योंकि उनके भविष्य का सम्बन्ध उनसे नहीं, लाखों दूसरे प्राणियों से होता है।"

"तब," कगलस्तर ने कहा—"आप मुझे हुक्म दीजिये। अगर श्रीमान् हुक्म देंगे, तो मुझे उसे सिर-आँखों से बजा लाना होगा।"

"हाँ, मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ मोशिये कगलस्तर कि मेरे भविष्य के सम्बन्ध में जो-कुछ आप बता सकते हैं, बतायें।"—सहसा शासन के कठोर स्वर में काऊण्ट द्वारा बोले।

इसी क्षण, मार्शल रिशलू उठकर काऊण्ट हागा के पास गये, और आदरपूर्वक बोले—"श्रीमान् का कोटि-कोटि धन्यवाद है। स्वेडन के महाराज ने आज मुझ पर असीम दया की। इस समय से मेरा घर आपका-ही है।"

"हम लोग जैसे हैं, वैसे-ही बने रहें, तो सुन्दर है। सुनना चाहता हूँ, कि मोशिये कगलस्तर क्या कहते हैं!"

"महाराज, बादशाहों से कोई सची बात कहने की धृष्टता कर सकता।"

"छीः! मैं अपने राज्य में थोड़ा-ही हूँ? बैठ जाइये, महोदय। कहिये कगलस्तर-महोदय, कृपया कहिये।"

कगलस्तर ने फिर अपने गिलास में देखा। कहा—"श्री कहिये, आप क्या पूछना चाहते हैं?"

"यह बताइये, मैं कैसी मौत मरूँगा?"

"बन्दूक़ की गोली से, महाराज!"

काऊण्ट की आँखें चमक उठीं। "ओह! लड़ाई में बोले—"सिपाही की मौत! मोशिये कगलस्तर, आपका धन्य है, हजार बार धन्यवाद!"

कगलस्तर ने बिना कुछ उत्तर दिये, सिर झुका लिया।

"ओह!" काऊण्ट हागा व्यग्र होकर बोल उठे—"तो क लड़ाई में नहीं मरूँगा?"

"जी नहीं।"

"किसी राज-द्रोही के हाथों? यह भी सम्भव है।"

'नहीं, राज-द्रोही के हाथों भी नहीं श्रीमान् !"

'तब फिर कहाँ ?"

'एक मौंच में !"

काउएट हागा निस्तब्ध हो गया, और कगलस्तर ने हथेलि
र छुपा लिया।

कगलस्तर और काउएट के अतिरिक्त सभी के चेहरे
ये।

सहसा मोरिये फएडरसेट ने कहा—"मोरियें, मैं भी आप
का हाल जानने को उत्सुक हो उठा हूँ। मैं शक्तिशाली
र हुक्म दे सकता हूँ, और न मेरे भाग्य के साथ ल
मियों का भाग्य ग्वड़ा हुआ है।"

"मोरिये," कगलस्तर ने कहा—"मैं अपनी इच्छा से आप
देता हूँ। आप अपनी अँगूठी के विप से जान खोयेंगे।"

"वाह! अगर मैं इसे फेंक दूँ ?"

"फेंक दीजिये।"

"आप मानते हैं न, कि फेंक सकता हूँ।"

"फेंक दीजिये न!"

"हाँ मार्किस," मैडम दुवरी फिर बोल पड़ीं—"इस
को फेंक दीजिये। इन भविष्य-दर्शी महाशय की
ेत करने के लिये ही इसे फेंक दीजिये। न रहेगा बाँस
गी बाँसुरी !"

"काउण्टेस ठीक कहती हैं।" काउण्ट हागा बोले।

"शाबाश काउण्टेस !" रिशालू भी कहने लगे—"मा
मार्किस, इस ज़हर को फ़ौरन् फेंक दीजिये। अब मुझे
हो गई है, तो जब-कभी चाय का प्याला उठायेंगे, मेरा शरी
कण्टकित हो उठेगा !"

बैरन टेवर्नी ने कहा—"बस, मार्किस, बिना सोचे-विच
फेंक दीजिये।"

"व्यर्थ की बातें हैं !" कगलस्तर ने धीरे-से कहा—"मोरि
उसे कभी नहीं फेंक सकते।"

"नहीं," अब कण्डरसेट ने मुँह खोला—"मैं उसे नहीं
फेंकूँगा। इसलिये नहीं, कि मैं अपने दुर्भाग्य का सहायक बनना
चाहता हूँ, बल्कि इसलिये कि यह विष एक अनुपम औषधि है
और एक बार संयोग-वश मेरे हाथ लग गई थी। मुझे आशा
नहीं है, कि जीवन में फिर वह संयोग उपस्थित हो सके। मोरिस
कगलस्तर चाहें, तो अपनी विजय पर हर्षित हो सकते हैं।"

कगलस्तर ने गम्भीर भाव से कहा—"भाग्य हमेशा कुछ-न-
कुछ रस्ता निकाल-ही लेता है।"

"तो मैं इस विष से जान दूँगा ?" मार्किस ने कहा—"ख़ैर,
होना है, सो हो। यह मृत्यु भी तारीफ़ के क़ाबिल होगी। जीभ पर
ज़रा-सा......रक्खा, कि ख़तम ! मैं इसे मृत्यु नहीं मानता।"

"यह आवश्यक नहीं, कि आप मरने से पहले क्या कष्ट न
पायें !" कगलस्तर ने उदासी-से कहा, और उसके भाव से प्रकट
हुआ, कि वह कण्डरसेट के विषय में अब एक शब्द न बोलेगा

"तब तो साहब," डि-कारस ने कहा—"डूबता जहाज, बन्दूक की गोली, और विष—तीन चीजें हमारे सामने आईं, और मेरे मुँह में भी पानी भर आया है। क्या आप मुझ पर भी यही कृपा न कर सकते हैं?'

"ओह! मार्किस!" कुछ नाराज होकर ताने के स्वर में कगलस्तर ने जवाब दिया,—"इन लोगों से ईर्ष्या न कीजिये; आप फिर भी अच्छे रहेंगे!"

"अच्छे?" मोशिये डि-कारस ने हँसकर कहा—"समुद्र, गोली, और विष से अच्छी क्या चीज हो सकती है।"

"अभी रस्सी जो बच गई!" कगलस्तर ने झुककर कहा।

"रस्सी! क्या मतलब?"

"मेरा मतलब है, कि आप फाँसी पर लटकेंगे!" कगलस्तर ने जवाब दिया।

"फाँसी! धत्!" मेहमान-लोग एक-साथ चीख उठे।

"ये महाशय, यह भूल गये हैं, कि मैं एक सम्मान्य दरबारी हूँ।" मोशिये डि-कारस ने गम्भीरतापूर्वक जवाब दिया—"और अगर उनका मतलब आत्म-हत्या से है, तो मैं बताना चाहता हूँ, कि मैं अपने जीवन का बहुत मोह करता हूँ; और मेरी म्यान की तलवार बनी रहे, मैं अन्त समय-तक रस्सी की कल्पना न करूँगा।"

"मेरा मतलब आत्म-हत्या से नहीं है, भाई साहब!"

"तब क्या—दण्ड?"

"जी हाँ।"

"आप विदेशी हैं, जनाब, इसीलिये मैं आपको
समझे ?"

"क्या ?"

"आपकी अज्ञानता है, महाशय, आप जानते
तन्त्र में हमारी स्थिति क्या है ।"

"आप चाहें, तो यह बात जल्लाद को बता
कगलस्तर ने मुँह-तोड़ जवाब दिया ।

मोशिये डि-फारस फिर नहीं बोले । कई मिनट सब

"आप जानते हैं, कि मेरा दिल भी काँपने लगा है !"
लानि भी अब की बार बोले—'मेरे साथियों का
पने ऐसा भयानक बताया है, कि मैं भी दिल पर हाथ
आपसे प्रश्न करते डरता हूँ ।"

"आपकी बात इन लोगों की अपेक्षा अधिक तर्क-सङ्गत
प्राय में तो भविष्य जानने की कोशिश-ही न कीजिये—
हो, या बुरा—सब परमात्मा के भरोसे छोड़ दीजिये ।"

"ओह ! मोशिये डि-लानि," मैडम डुबरी ने कहा—"मु
है, कि आप और लोगों की अपेक्षा डरपोक सिद्ध न होंगे।

"मुझे भी ऐसी ही आशा है, मैडम," लानि ने कहा । तब
र की तरफ घूमकर बोले—'तो भाई साहब, मुझ पर भी
ये......अगर आप चाहें !"

"बहुत आसान बात है," कगलस्तर ने जवाब दिया—
एक बार हुआ, और सब खतम......"

फिर सब लोगों में एक निराशा की लहर फैल गई। रिशालू
र टेवर्नी ने कगलस्तर से प्रार्थना की, कि वह आगे कुछ न कहे
स्त्री-हृदय की असीम उत्सुकता के आगे सब ने हार मानी।

"आपकी बातों से तो काऊण्ट" मैडम डुबरी बोलीं—"ऐसा
। पड़ता है, कि समस्त विश्व-ही विचित्र और अकाल-मृत्यु को
। होगा। हम लोग आठ हैं, और पाँच के विषय में आपने
या है......"

"ओह! आप जानती नहीं, सब-कुछ पहले की सधी-बदी
है, और हमें डराने-भर के लिये अच्छा-खासा मज़ाक़ है।
समय आयगा, जब हम लोग अपने भोलेपन पर हँसेंगे।"
ये डि-ज़ारस ने हँसने की कोशिश करते हुए कहा।

"हँसेंगे तो हम अवश्य-ही।" काऊण्ट बोला—"चाहे सच
ा झूठ!"

"ओह! तब तो मैं भी हँसूँगी!" मैडम डुबरी ने कहा—
अपनी कायरता प्रकट करके इस मण्डली का अपमान न
ो, लेकिन अफ़सोस हूँ! तो मैं औरत जात-ही—पुरुष का-सा
कहाँ से लाऊँ? ओह! किसी भयानक अन्त की कल्पना
मेरा तो शरीर काँपता है! मुझ दुखिया और तिरस्कृता की
सब से ज़्यादे भयानक होगी। क्यों मोशिये कगलस्तर, ठीक
हूँ न?"

ह रुकी, और अपनी बात की पुष्टि के लिये कगलस्तर की
ताकने लगी।

कगलस्तर कुछ न बोला। अब तो उसकी उत्सुकता, भ...
आगे बढ़ गई, और वह बोली—"क्यों मोशिये कगलस्तर,
आप बतायेंगे नहीं ?"

"बताऊँ कैसे—जब-तक आप पूछें नहीं ?"

"लेकिन......" उसने कहा।

"देखिये," कगलस्तर बोले—"आप कुछ पूछती हैं ? 'हाँ'
'ना' में जवाब दीजिये।"

पहले तो वह हिचकी, तब पूरा ज़ोर लगाकर चिल्लाई—
मैं सहन कर लूँगी। मेरा भविष्य बताइये।"

"वध-स्थान पर—मैडम," कगलस्तर ने जवाब दिया।

"मज़ाक़ करते हैं।—क्यों ?" उसने रुकते गले से पूछा।

कगलस्तर ने उसके भाव पर लक्ष्य न दिया। पूछा—"
ऐसा सन्देह क्यों करती हैं कि मैं मज़ाक़ करता हूँ ?"

"इसलिये कि वध-स्थान तक पहुँचने के लिये कोई
अपराध करना पड़ता है।—किसी की चीज़ चुराई जाय
किसी की हत्या की जाय;—सो मेरे विषय में यह दोनों-ही
असम्भव हैं। क्यों ? कहिये, मज़ाक़-ही था न ?"

"हे भगवान् !" कगलस्तर बोला—"बेशक, मैंने जो
कहा, सब मज़ाक़ था !"

काउण्टेस ने बनावटी हँसी हँसकर कहा—"आइये, मो...
डि-फ़ारस, अपने क्रिया-कर्म का प्रबन्ध कर लें।"

"ओह मैडम ! आप यह न करें," कगलस्तर ने कहा।

"यह क्यों मोरिये ?"

"क्योंकि आप तो वध-स्थान तक सरकारी गाड़ी में जायँगी !"

"ओह ! मार्शल, कैसा भयानक आदमी है ! परमात्मा के लेये आइन्दा अच्छे-अच्छे मेहमानों को निमन्त्रित कीजियेगा, वर्ना मैं फिर कभी आकर नहीं झाँकूँगी।"

"क्षमा कीजिये मैडम," कगलस्तर ने कहा—"लेकिन आप-ही सब ने यह अप्रिय-सत्य कहने के लिये मुझे मजबूर किया था।"

"ख़ैर, और सब ठीक है, पर मैं समझती हूँ, आख़िरी वक़्त मुझे कोई पादरी मिल जायगा ! क्यों ?"

"अगर मैं 'हाँ' कहूँ, तो अतिशयोक्ति होगी।"

"क्यों ?"

"क्योंकि फ़्रान्स में पादरी के साथ वध-स्थान पर पहुँचनेवाले वल फ़्रान्स के बादशाह-ही होंगे।" कगलस्तर ने ये शब्द ऐसी दृढ़तापूर्वक कहे, कि जितने वहाँ बैठे थे, अवाक् रह गये !

कगलस्तर ने हाथ का गिलास ओठों तक उठाया, और अभी आ नहीं था, कि विरक्त होकर रख दिया। उसने मोरिये टेवर्नी की तरफ़ आँखें घुमाईं।

टेवर्नी एक-बारगी चौंक उठे—"मुझे कुछ न बताइये, मैं कुछ ीं जानना चाहता।"

"ख़ैर, उनकी जगह मैं पूछता हूँ," रिशलू ने कहा।

"आप मार्शल !—इन सब में-से आप-ही ऐसे व्यक्ति हैं, जो न्तिपूर्वक घर में पड़े-पड़े प्राण देंगे।"

१

मोशिये हि-रिशलू का मकान तो था गरम और आराम-देह,
लिये हमें अनुभव न हुआ कि बाहर ठण्ड का क्या हाल था।
८४ का जाड़ा था—कि भगवान् का नाम ! गली-कूचे, मकानों
दर्वाज़े और बाग़-मैदान—सब-जगह बर्फ़-ही-बर्फ़ दिखाई देती
। अमीर लोग भले-ही इस ठण्ड में प्रकृति-सौन्दर्य देखें,
ोबों पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा था। सारे देश का क़रीब
ा हिस्सा प्रकृति के इस निर्दय आघात से पीड़ित था, और
केले पेरिस में तीन लाख आदमी भूख-प्यास से तड़पते हुए,
बगार से बेज़ार, कुत्तों की मौत मर रहे थे !

लोगों के पास खाने को दाना न था, ख़रीदने को पैसा न था,
र न शक्ति थी, न साधन था ! फ़्रान्स के महाराज लुई १६ वें
अपने भरसक ग़रीबों को हर तरह की मदद की, लाखों फ़्राङ्क
त बटवा दिये, रोज़ी के लिये साधन पैदा कर दिये, और
ा ख़ज़ाना क़रीब-क़रीब समाप्त होगया। ख़ुद रानी मेरी अन्टो-
ट ने ग़रीबों की मदद से हटा न रक्खा, और सरकारी धर्म-
रियों में चन्दा उगाहा गया था, तो रानी ने भी अपने निजी
ं मेंसे निकाल कर ५०० फ़्राङ्क दिये थे।

यह सब-कुछ होने पर भी लोगों की बुरी अवस्था थी। नदी का पानी एक फ़ीट तक जम गया था। लोग ... तरह बर्फ़ जमी हुई सड़कों पर भूखे-प्यासे मारे-मारे फिर... चारों ओर भयानक 'त्राहि ! त्राहि !' मची हुई थी !

भूखी-मरती ग़रीब जनता में अमीरों के प्रति भयानक ...न्तोष का भाव उत्पन्न होगया था। इधर तो हज़ारों आदमी ... से व्याकुल सड़कों पर घूमते, और उधर अमीर घराने की ... गाड़ियों में बैठी, रङ्ग-बिरङ्गे कपड़ों की बहार दिखाती हुई ... प्रकृति का आनन्द लेती फिरती थीं। इसलिये पुलिस का, ... का, नियम का, कुछ भी ख़याल किये बिना ये लोग सैलानी ... और उनके स्त्री-बच्चों पर हमला कर देते थे, और उनकी ... लेने तक में न हिचकते थे ! अवस्था ऐसी दारुण होगई थी, ... किसी से इन दुर्घटनाओं का जवाब तलब न किया जा सकता।

मोशिये रिशुल के घर पर जिस दावत का उल्लेख हम ... आये हैं, उसके एक हफ़्ते बाद की बात है। एक बढ़िया ... गाड़ी * पेरिस में घूमी। शहर के बाहर बर्फ़ इतनी नहीं ... जितनी भीतर। अतएव गाड़ी के बढ़ने में दिक़्क़त होने लगी। ... भी कोचवान से हण्टर खा-खाकर बेचारे घोड़े किसी-न-किसी ... तरह आगे बढ़ते-ही थे।

इस गाड़ी में दो स्त्रियाँ ऊनी कपड़ों से ढँकी, दबी बैठी ... दोनों आराम से धीरे-धीरे कुछ बातें कर रही थीं, और इतनी

* बिना-पहियों की एक गाड़ी, जो बर्फ़ पर फिसलकर चलती है।

के आस-पास के आश्चर्य-विमुग्ध दर्शकों पर नज़र भी न सकीं। दोनों में-से एक ज़रा लम्बी थी, और भाव-भङ्गी से रोबदार मालूम होती थी।

पाँच बजे थे। रात होने-वाली थी।—और साथ-ही ठण्ड भी लगी थी। थोड़ी देर चलकर गाड़ी एक मकान के आगे गई।

यह जगह बिल्कुल सुनसान थी। कुछ तो वैसे ही लोग इधर डरते थे, क्योंकि मोहल्ला एकान्त में था, और शहर-भर में जकता-सी फैली हुई थी, और दूसरे, अब रात होगई थी। लिये चारों तरफ़ कोई चिड़ी का पूत तक दिखाई न देता था।

लम्बी रमणी ने उँगली कोचवान के कन्धे पर रक्खी, और —"अभी पहुँचने में कितनी देर और है?"

कोचवान ने मुस्तैदी से जवाब दिया—"बस अब पहुँचे कार!"

गाड़ी रुकी, तो दोनों महिलाएँ उतर पड़ीं। बड़ी ने कहा— पर, हम एक घण्टे में लौटेंगी!"

तब छोटी ने मकान की घण्टी बजाई।

एक बदसूरत बुढ़िया ने आकर दर्वाज़ा खोला। बाहर खड़ी महिलाओं में-से एक ने महीन और मोटी आवाज़ में पूछा— डम डि-ला मोट का क्या यही मकान है?"

"जी, मैडम डि-ला मोट वैलुई का।"

"एक-ही बात है, बहन, क्या वे घर में हैं?"

"जी हाँ, हीं: पान यह है, कि वे बेचारी इस हालत में [illegible]
बाहर जा-ही नहीं सकतीं।"

तब दोनों महिलाओं ने भीतर प्रवेश किया।

वृद्धा ने पूछा—"मैं भीतर मैडम को किनके [illegible]
सूचना दूँ ?"

उसी रमणी ने उत्तर दिया—"कहिये, एक [illegible]
मिलने आई है।"

"पेरिस से ?"

"ना, वर्सेई से।"

वृद्धा के साथ दोनों एक कमरे में घुसीं।

जीन डि-वैलुई ने अभ्यागत महिलाओं को देखा, और
कष्ट-से उठने का नाट्य किया।

वृद्धा दासी ने दोनों महिलाओं के लिए कुर्सियाँ ला रक्[illegible]
और इस तरह चुपचाप वापस लौटी, कि अगर [illegible]
देखता, तो तुरत समझ लेता—कि जरूर कमरे के बाहर [illegible]
होकर इनकी बातें सुनने का इरादा रखती है।

जीन डि-ला मोट के मन में जो सब से पहला विचार आय[illegible]
वह यह था, कि किसी तरह इन स्त्रियों के मुँह देखे जायें, जिस[illegible]
उनके व्यक्तित्व के विषय में वह कुछ अनुमान लगा सके। बड़ी
महिला अनिन्द्य सुन्दरी थी, और कोशिश करके रोशनी से दू[illegible]
रहती थी। इससे प्रकट होता था, कि वह अपना चेहरा जीन को
दिखाना नहीं चाहती।

थे; उन्होंने मेरी माँ के असाधारण रूप पर मोहित होकर पाणि-ग्रहण कर लिया। इस प्रकार मेरा जन्म बैलुई-एक सम्भ्रान्त सज्जन के औरस से हुआ।"

"लेकिन इस समय आपकी यह दुरवस्था क्यों है?"

"मैडम, आप जानती होंगी, कि जब फ्रान्स में पिछ क्रान्ति हुई थी, और बैलुई-परिवार के लोग अधिकार-च्यु दिये गये, तो उन असहायों की कैसी विकट दुर्दशा हुई थी! से अनेक ऐसे थे, जो अपने अधिकार-काल में बड़े सम्भ्रान्त गण्य-मान्य नागरिक समझे जाते थे। अब जब उनका नष्ट होगया, तो ये लोग शर्म से मुँह छिपकर देहातों में भा और वहाँ नाम बदलकर रहने लगे। मेरे पिता भी इन्हीं में थे, उसके बाद जब फिर समय ने पलटा खाया, और देश राज्य-तन्त्र की स्थापना हुई, तो मेरे पिता ने अपने आदरणीय का नाम छिपाना व्यर्थ समझा, और उस गरीबी की अवस्था भी उन्होंने अपनी असलियत को प्रकट कर दिया। पर देहाती क्या जानें—वे कौन थे, और राज्य-परिवार के निकट सम्बन्धी थे? अतएव शहर में किसी को उनके यहाँ का पता नहीं लगा।"

मौन क्षण-भर को रुक गई,—मानो देखना चाहती कि उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों का अभीष्ट प्रभाव होता है, नहीं!

"तो आपके पास आपके खान्दान के कागज़ात हैं?—फ़ि

मगन हुई, और कुर्सी की पीठ पर हाथ लटकाकर खड़ी
गई । बड़ी महिला अपने भाव में उसका मुँह ताकती
उसने कुछ ऐसा भोला और निर्दोष मुँह बनाया, कि उ
गुंजायश-ही न थी । इसलिये बड़ी महिला ने द्रवित
कहा—"तो मैडम, जो-कुछ आपने कहा, इससे तो यही
होता है, कि आपके पिता की असामयिक मृत्यु-ही आपकी
दुर्दशा का कारण हुई ?"

"हाय ! अगर आप मेरी सारी कहानी सुनने का कष्ट
तो आपको मालूम होगा—कि पिताजी की मृत्यु तो यथासम
हुई-ही, इससे भी भयानक वेदनाओं का सामना मुझे करना पड़ा

"अरे ! पिता की मृत्यु से भी भयङ्कर कष्ट का
आपको करना पड़ा है ?"

"हाँ, मैडम; मैं आपसे तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कर
हूँ । मैं एक ऐसे पिता की सन्तान हूँ, जो मरते-मरते मर ग
पर जिसने अपनी इज्जत पर हर्फ न आने दिया ! मैं आपसे
कहती हूँ, कि अपने माँ-बाप के मरने का रञ्ज तो किसे
होता, पर मुझे इस बात का सन्तोष रहा, कि अन्त समय
मेरे पिता को किसी के आगे हाथ फैलाना नहीं पड़ा !"

"हाथ फैलाना नहीं पड़ा ?"

"हाँ, मैडम, मुझे यह कहने का गौरव है, कि हजार मुसीबतें
आईं, पर मेरे पिता ने कोई ऐसा कर्म न किया, जिससे हमारे
खान्दान के नाम पर धब्बा लगे !"

"हाँ, तो आप कह रही थीं, कि आप अपनी . .
लज्जित हैं," बड़ी महिला असली विषय की ओर . . .

"हाँ," जीन ने उत्तर दिया—"निस्सन्देह अपनी मा
प्रति मेरा यह विद्रोही भाव आपको अच्छा न लगता हो
लेकिन मेरी कैफ़ियत सुनिये। मैंने पहले-ही आप से कहा,
पिताजी एक भूल कर बैठे, और उन्होंने अपनी दासी से वि
कर लिया। मेरी माँ अपने सौभाग्य के लिये मेरे पिता को
तो होने से रही, उल्टे उनका सर्वस्व-नाश करने पर उतारू
गई। अपनी फ़िज़ूल-ख़र्ची और दुश्चरित्रता के कारण उ
शीघ्र-ही मेरे पिता को कौड़ी-कौड़ी का मोहताज बना दिया
उनसे प्रेरणा की, कि वे पेरिस जाकर महाराज से मदद माँ
मेरे पिताजी महाराज की उदारता से परिचित थे, अतएव उस
बातों में आ गये। मेरे अतिरिक्त उन्हें एक लड़का और ए
लड़की और भी थी। मेरा अभागा भाई तो फ़ौज में एक नौ
नौकरी पर चला गया, और बहन उसके धर्म-पिता के पास, ए
ग़रीब किसान के घर में छोड़ दी गई। तब हम तीनों-जनें सब
कुछ बेच-बाचकर पेरिस आये। यहाँ आकर पिताजी ने बहुतेरी
कोशिश की, पर तक़दीर की बात, कुछ सुनवाई न हुई। मेरी
माता का सारा क्रोध मुझ पर निकलने लगा। मैं दिन-रात रोती
थी, और अक्सर भूखी-ही सो जाती थी। माँ इस पर भी मुझे
बे-दर्दी से मारती थीं। पड़ोसियों ने पिताजी से इसकी शिकायत
की। उन्होंने मेरी रक्षा करने का प्रयत्न किया, पर उनके बीच में

लेकिन मुझे तो अपनी माँ की मार के आगे किसी का भी
था। नतीजा यही हुआ, जिसकी मेरी माँ ने कल्पना की
अक्सर कुछ-न-कुछ पैसे कमा लाती थी, जिससे कुछ सम
हम लोगों का भरण-पोषण होता रहा। लेकिन यह जीवन
दुरूह हो उठा, कि एक दिन मैंने यह वाक्य न कहने का प्रण
लिया। दिन-भर एक दर्वाजे पर भूखी-प्यासी पड़ी रही
शाम को खाली-हाथ लौट आई। मेरी माँ ने मुझे इस बेदर्दी
मारा, कि अगले दिन मैं बीमार पड़ गई। तब मेरे पिताजी,
कर गिरते-पड़ते सरकारी अस्पताल की तरफ़ गये!"

"हाय! कैसी दर्दनाक कहानी है!" दोनों महिलाओं के
से निकल पड़ा।

"तो आपके पिता की मृत्यु के पश्चात् आपके साथ
बीती?"

"भगवान् ने मुझपर दया की। मेरे पिताजी के देहान्त
पश्चात् मेरी माँ एक सिपाही से यारी गाँठकर उसके साथ चल
बनी, और मैं यहाँ अकेली रह गई। मैंने उसके विच्छेद को
भगवान् की अनुकम्पा समझा और तब से मैं लोगों की दान
शीलता के कारण ही जीती रही। हाँ, मैंने कभी अपनी ज़रूरत
से ज्यादे का सवाल किसी के सामने नहीं किया! थोड़े दिन बाद
एक सम्पन्न महिला से मेरी भेंट हुई, और उसने मुझे एक दर्जी के
यहाँ नौकरी दिला दी, जिससे मुझे भर-पेट खाने को मिलने
लगा।"

"फिर ?"

"कुछ दिन बाद उस मेहरबान महिला का देहान्त होगया, और मेरी नौकरी छूट गई। तब से बराबर मैं खाने-पीने तक को मोहताज चली आती हूँ।"

कुछ देर निस्तब्धता रही।

आखिर, "आपके पति कहाँ हैं ?" महिला ने पूछा।

"वह बेचारे भी मुसीबत के दिन बीतने की बाट देख रहे हैं। विदेश में, एक मामूली नौकरी के आसरे पड़े हैं।"

"तो आपने अपनी दुर्दशा का हाल बादशाह तक नहीं पहुँचाया ?"

"सब-कुछ किया था।"

"वैलुई-परिवार का नाम सुनकर तो अवश्य उनके मन में आपके प्रति सम्वेदना का उद्रेक हुआ होगा ?"

"पता नहीं; मुझे तो अपने प्रार्थना-पत्र का कुछ उत्तर मिला नहीं।"

"बादशाह को, रानी को, किसी दरबारी को देखने का मौक़ा भी आपको नहीं मिला ?"

"न, किसी को नहीं; मुझे हर जगह असफलता का सामना करना पड़ा।"

"भीख माँगना तो आपको रुचता नहीं होगा ?"

"नहीं, मैडम, वह आदत, मुद्दत हुई, छुट चुकी ! मैं अपने पिता की तरह भूख से तड़प-तड़पकर मर भले-ही जाऊँ, मगर भीख तो कभी न माँगूँगी।"

"आपको को कोई सन्तान है ?"

"कोई नहीं मैडम।"

"अच्छा, तो क्या आप—बुरा न मानियेगा—वे प्रमाण-पत्र मुझे दिखा सकती हैं—जो आपके पिता आपको सौंप गये हैं ?"

जीन ने उठकर एक दराज़ खोला और काग़ज़ों का एक पुलिन्दा बाहर निकाला। उसे उसने बड़ी महिला के हाथ में देदिया। महिला उठी, और काग़ज़ों का निरीक्षण करने के लिये रोशनी के पास गई। जीन भी पीछे-पीछे चली। महिला ने जब देखा, कि रोशनी के सामने उसकी शक्ल साफ़ दिखाई देजायगी, तो चौंककर पीछे हट गई, और जीन की तरफ़ से पीठ फेरकर काग़ज़ों की परीक्षा करने लगी।

"लेकिन" उसने देख-भालकर कहा—"यह तो सिर्फ़ नक़लें हैं !"

"ओह मैडम, असल सब-की-सब सुरक्षित रक्खी हैं, अगर आप कहें, तो मैं उन्हें भी पेश कर सकती हूँ।"

"अगर हर्ज न हो, तो—" महिला मुस्कराकर बोली।

"ओह मैडम !" जीन ने चिल्लाकर कहा—"मैं आपको अजनबी नहीं समझूँगी, आप मेरी शुभ-चिन्तक हैं।"—कहकर उसने एक गुप्त दराज़ खोला, और मज़बूत मोमजामे में लिपटे हुए कुछ काग़ज़ महिला के सामने रख दिये।

महिला ने ध्यानपूर्वक उनका निरीक्षण किया। तब कहा—"सच कहती हो, मुझे विश्वास   आप इन्हें सुरक्षित रक्खें,

और अगर कभी जरूरत पड़े, तो इन्हें पेश करने के लिये
तैयार रहें।"

"तो आपके खयाल में, क्या मुझे इनकी सहायता
प्राप्त हो सकेगा ?"

"निस्सन्देह, आपके लिये पेन्शन, और अगर मोशिये
प्रमाणित हुए, तो उनकी तरक्की की सम्भावना हो सकती है
"मेरे पति बड़े अध्यवसायी पुरुष हैं, और अपने कर्त्त
पालन में कभी प्रमाद नहीं करते।"

"बस, यह काफी है बहन"—कहकर महिला ने
सम्हाले, मुँह को अच्छी तरह ढँक लिया और तब कागज
लिपटी हुई एक गोल जुट्टी को जीन के हाथ पर धरकर बोली
"हमारी संस्था के खजाञ्ची ने मुझे यह द्रव्य आपको देदेने
आदेश किया था। जब तक हम लोग आपकी भलाई के लि
और-कुछ कर सकें, तब तक यह क्षुद्र सहायता आप ग्रहण करें।

जीन ने एक तेज नजर इस जुट्टी पर फेंकी। सोचा—"तीन
मुइद* का सिक्का है; कम-से-कम पचास और ज्यादे-से-ज्यादे सौ
होंगे!—वाहरे ईश्वर।—बड़ी देर में सुनी!!"

इधर दोनों महिलाएँ झट बाहर निकल आईं। जीन भी
उनके पीछे-पीछे चली।

जब वे दोनों पर से बाहर हुईं, तो जीन ने पूछा—"आपको
धन्यवाद देने के लिये मैं कहाँ उपस्थित होऊँ ?"

* फ्रान्सीसी सिक्का—क़रीब आठ आने के बराबर।

"हम खबर भेज देंगी।" बड़ी महिला ने जल्दी-जल्दी दहलीज़ की सीढ़ियाँ पार करते हुए कहा।

जीन दौड़कर अपने कमरे में आई। देखना चाहती थी, कितना रुपया प्राप्त हुआ! पर मेज़ तक पहुँची भी न थी, कि रास्ते में किसी चीज़ से ठोकर लगी। देखा—बढ़िया चमड़े का एक बटुआ था। उसमें एक तस्वीर थी, जो चेहरे-मोहरे से बड़ी महिला की माँ या उसकी किसी निकट-सम्बध की स्त्री जान पड़ती थी। बाक़ी जगह में कुछ चाकलेट भरे हुए थे। एक तरफ़ एक गुप्त खाना भी था। जिसे खोलने का उसने समय न देखा, और बटुआ हाथ में उठाकर बाहर को तरफ़ दौड़ी। पर दर्वाज़े पर कोई न था। तब वह भागी-भागी खिड़की को तरफ़ गई, पर वहाँ भी कोई दिखाई न दिया।

जब वापस आई, और उसने बटुए का गुप्त भाग खोला, तो खुशी-से चौंक पड़ी,—"ओहो! सौ लुई!—दो हजार चारसौ फ़्राङ्क! ओह! ये स्त्रियाँ बहुत पैसे-वाली हैं, मैं इन्हें तलाश करूँगी, और फिर उनसे मिलूँगी!"

२

जिस गाड़ी में दोनों महिलायें बैठी थीं, उसमें एक बढ़िया
ोड़ा जुता हुआ था, और कोचवान के इशारे पर कनौतियाँ खड़ी
रके सरपट दौड़ चला!

गाड़ी में बैठी बड़ी महिला ने छोटी से पूछा—"क्यों एरडी,
ाउएटेस के विषय में तुम्हारा क्या विचार है?"

"मैं समझती हूँ मैडम" एरडी ने जवाब दिया—"कि बेचारी
ड़ी अभागी है।"

"वैसे थी तो बड़ी शिष्ट और मृदु-भाषिणी!—क्यों?"

"निस्सन्देह!"

"उसके विषय में तुम कुछ उदासीन जान पड़ती हो!"

"बात यह है, कि मुझे उसके मुँह पर कुछ ऐसी धूर्तता का
भाव दिखाई दिया, जिसने मुझ पर अच्छा असर न डाला।"

"ओहो! भई, तुम्हें खुश करना बड़ा दुरूह है। अब तुम्हारे
लिये सर्व-गुण-सम्पन्न आदमी कहाँ मिले?"

"यह उसके लिये सौभाग्य का विषय है, कि वह आपको
प्रसन्न करने में……"

"अरे रे!"सहसा बड़ी महिला ने चिहुँककर कहा। एक आदमी
गाड़ी की झपेट में आता-आता बच गया। वह इस गाड़ी की तरफ
देखकर चिल्लाने लगा। घोड़ा उछलता हुआ आगे बढ़ा, और
मिनट-भर में ही वह चीख-चिल्लाहट सुनाई देनी बन्द हो गई!

अब गाड़ी एक ऐसे बाजार में-से गुजर रही थी, जिसमें
से आदमी आ-जा रहे थे। इस गाड़ी को जो देखता, वही
पीसने और मुट्ठियाँ कसने लगता, और चिल्लाने लगता—
गाड़ियों का नाश हो ! इन गाड़ी-वाले धनियों का नाश हो !'

घोड़ा बड़ा होशियार था, और कोचवान भी एक
इसलिये इतनी भीड़ में भी कोई दुर्घटना होने न पाई, और
तेजी-से बाजार पार करती रही।

गाड़ी में एक तेज लाल्टेन लगी हुई थी, और सामने
पर सफ़ेद रोशनी फैली हुई थी। गाड़ी एक ही रफ़्तार से
पर-बाजार पार कर रही थी। बाजार में जो कोई इस गाड़ी
देखता, क्रोध से चीत्कार कर उठता, कुछ लोगों ने पीछे
भी शुरू कर दिया था; कुछ लोग—'पकड़ो ! जाने न पावे
आवाजें भी लगाते जा रहे थे।

लोभी कोचवान घबराया नहीं, न घोड़े की गति में
पड़ा। पर आस-पास के लोगों का क्रोध उत्तरोत्तर तीव्र
जाता था। कुछ पीछे की चीख-चिल्लाहट, कुछ शरारती लोग
उकसाहट, और कुछ इस राजसी ढङ्ग की गाड़ी के प्रति स्वाभ
विद्वेष-भावना—इन सब ने मिलकर सारे बाजार में एक
विषैला वायु-मण्डल पैदा कर दिया।

आखिर गाड़ी 'सेण्ट-ऑनर'-बाजार में पहुँची। यहाँ
मोड़ था, और बीच में बरफ़ का एक मीनार खड़ा था, इस
कोचवान को गाड़ी की गति मन्द करनी पड़ी। बस, यहीं

या ! गाड़ी का धीमी होना था, कि इधर-उधर से अनेक ड़े-दिल झपट पड़े । दो ने घोड़े की लगाम थामी, दो ने गाड़ी पिछला हिस्सा पकड़कर खींचा, और बहुत-से आदमी चारों क इक होकर चिल्लाने लगे—"इन गाड़ियों का नाश हो ! में बैठनेवाले धनिकों का नाश हो !"

भीतर बैठी महिलाएँ अब तक बात-चीत में व्यस्त थीं । जब ड़ी रुकी, और तरह-तरह की आवाजें सुनाई दीं, तो बड़ी ने टी से कहा—"मामला क्या है ? क्या हमीं को लक्ष्य करके आवाजा-कशी की जा रही है ?"

"निस्सन्देह, मैडम, मेरा यही खयाल है ।"

"क्या कोई झपेट में आगया ?"

"न; मैं समझती हूँ, नहीं ।"

लेकिन चीत्कार-ध्वनि उत्तरोत्तर तीव्र होती जा रही थी। ड़ा हिनहिना रहा था, कोचवान कसकर रास थामे था और ड़ में अजब जोश था ।

"मैजिस्ट्रेट के पास ले चलो—"मैजिस्ट्रेट के पास !" भीड़ में- कुछ लोग चिल्लाये ।

दोनों महिलाओं ने भयभीत होकर एक-दूसरी को ताका । कुछ गों ने कौतूहल-वश भीतर नजर डालनी शुरू की । भीड़ में तरह- ह की टीका-टिप्पणी होने लगी ।

"अरे ! स्त्रियाँ हैं—" कुछ ने कहा—"मालूम होता है, नर्त्तकी थियेटर में काम करती होंगी ! लेकिन अगर वे दस हजार

"लेकिन ये लोग तो जानवर बन रहे हैं," महिला ने कहना
र किया—"समझ में नहीं आता, चाहते क्या हैं!"

सहसा किसी ने जर्मन-भाषा में अत्यन्त कोमल कण्ठ से
ा—"मैडम, आपने पुलीस की आज्ञा का उल्लङ्घन किया है।
सीलिये ये लोग बिगड़ रहे हैं। आज सुबह पुलिस-ऑर्डर
कला था, जिसमें सब तरह की गाड़ियों को सड़क पर चलने
निषेध किया गया था। बात यह है, कि लोग ठण्ढ और भूख
जर्जरित हो रहे हैं, इसलिये गाड़ियों की झपेट से बचना उनके
ये कभी-कभी असाध्य हो जाता था।"

महिला ने पलटकर देखा—एक बेहद सुन्दर युवक-अफ़सर
रोक्त शब्द कह रहा है। उसकी सूरत कुछ ऐसी आकर्षक थी,
देखनेवाले का मन अनायास-ही उधर खिंच जाता था।

"हे भगवान्!" महिला ने परेशान होकर कहा—"सुनिये तो,
ाशिये, मुझे तो इस ऑर्डर का कुछ भी पता नहीं!"

"तो क्या आप कहीं बाहर रहती हैं?"

"जी हाँ; लेकिन यह तो बताइये, मैं करूँ क्या? वे लोग तो
री गाड़ी को चकनाचूर किये दे रहे हैं!"

"करने दीजिये। इस वक़ तो किसी तरह अपनी जान बचाइये।
स समय लोग धनिकों के विरुद्ध विष-भरे भाव रखते हैं। वे लोग
ापके साथ कुछ अनुचित व्यवहार कर बैठें, तो आश्चर्य नहीं।"

तब क्षण-भर देर न करके, दोनों स्त्रियाँ उस युवक के साथ
क तरफ़ को चल दीं।

कुछ मिनट बाद ये लोग एक गाड़ियों के अड्डे के सामने पहुँचे। सिर्फ एक गाड़ी पर कोचवान बैठा था।

यहाँ आकर उस नौजवान अफ़सर ने महिलाओं से पूछा "आप जायेंगी कहाँ ?"

"वर्सेई !" बड़ी महिला ने उत्तर दिया।

"अरे वर्सेई ?" कोचवान ने कहा—"इस तरफ़ में—साढ़े ग मील ! ना बाबा, मैं नहीं जानेका !"

"तुम्हें खुश कर दिया जायगा।" महिला बोली।

"क्या मिलेगा ?—आप देख लीजिये, जाना-ही नहीं, लौटना भी है। यह मौसम, और यह वक्त है,—सोच लीजिये।"

एण्ड्री ने कहा—"एक लुई देंगे।"

"अच्छी बात है, मञ्जूर है। मगर भगवान् खैर करे, र खुशी लौट आऊँ—तब बात है !"

"क्यों बे !—तू क्या समझता है, हम लोग कुछ समझते नहीं, वर्सेई तक आने-जाने का किराया ज्यादे-से-ज्यादे बारह फ़ होता है, और इस वक्त तो तुझे डबल मिल रहा है।"

"अजी, इस वक्त मोल-तोल को रहने दीजिये, अगर यह तुरन्त चल पड़े, तो मैं एक नहीं बीस लुई उसे देते न हिचकूँ।"

"न मैडम, बस, एक-ही काफ़ी है।"

"लेकिन मैं किराया पेशगी ले लूँगा," कोचवान बोला।

"पेशगी ही ले बे, पेशगी !" अफ़सर ने क्रोधित होकर कहा।

"अजी, पेशगी-ही दिये देते हैं।" कहकर बड़ी महिला ने जेब

ने हाथ डाला, और हठात् उसके मुँह का रङ्ग फक़ हो गया !—
'हे भगवान् ! मेरा तो बटुआ-ही ग़ायब है ! तुम देखना एएडी !'

"मेरा भी खोगया !"

दोनों ने परेशान होकर एक-दूसरे को ताका । उधर कोचवान अपनी दूर-दर्शिता पर खुश हो रहा था !

सब खोज-ढूँढ़ बेकार हुई । बटुए न मिलने थे, न मिले । आख़िर बड़ी महिला किराये के बदले में अपनी सोने की ज़ञ्जीर उतारकर देना चाहती थी, कि युवक ने अपनी जेब से एक लुई निकालकर कोचवान को दिया, जिस पर उसने नीचे उतरकर गाड़ी का दरवाज़ा खोला ।

महिलाओं ने इस नवयुवक को धन्यवाद दिया, और गाड़ी में जा बैठीं !

युवक ने कोचवान से कहा—"देखो भाई, इनको बड़ी सावधानी से ले जाना !"

दोनों महिलाओं ने भय-विह्वल होकर परस्पर दृष्टि-विनिमय किया । अपने रक्षक का विच्छेद वे सहन न कर सकीं ।

"ओह मैडम !" एएडी ने कहा—"उन्हें जाने मत दीजिये ।"

"क्यों ? हम उनसे पता पूछे लेते हैं । कल उनका एक लुई धन्यवाद-सहित वापिस लौटा देंगे ।"

"लेकिन अगर कोचवान शरारत करे—तो हम अकेली औरतें क्या कर लेंगी !"

"ओह ! हम उसका नम्बर नोट कर लेंगी ।"

"यह ठीक है कि बाद में आप उसे दण्ड दिला सकती हैं, लेकिन अगर ऐसा हुआ, तो उस समय तो आपको यहाँ पहुँचने मे देर हो-ही जायगी, और लोग न-जाने क्या सन्देह करने लगें!"

"ठीक है !" महिला ने उत्तर दिया।

"मोशिये," एण्ड्री ने युवक से कहा—"आप बुरा न मानें एक कष्ट और देना चाहती हूँ !"

"कहिये ! कहिये !" युवक ने नम्रतापूर्वक कहा।

"मोशिये, आपने हम पर जहाँ इतनी कृपा की है, एक कृपा और कीजिये।"

"आज्ञा दीजिये।"

"हमें इस कोचवान पर विश्वास नहीं है।"

"आप न डरें, मेरे पास उसका नम्बर है, अगर रास्ते में कुछ गड़बड़ करे, तो आप मुझे सूचना दें, मैं उसकी अक्ल दुरुस्त कर दूँगा।"

"आपको !" महिलाने कहा—"हम तो आपका नाम भी नहीं जानतीं। हम लोग इस जगह से परिचित नहीं। आपने हम पर ऐसी दया दिखाई है, इसीलिये आपको कष्ट देने का साहस हुआ!"

"अच्छी बात है, आप जो कहें मैं करने को तैयार हूँ।"

"बस, तो आप कृपा करके हमारे साथ गाड़ी में आ बैठें और हमें वर्सेई छोड़ आयें।

युवक तुरन्त सामने की सीट पर जा बैठा, और कोचवान को गाड़ी हाँकने की आज्ञा दी।

.. सभी चुप थे। युवक इन दोनों महिलाओं के विषय में सो
रहा था, और वे दोनों इसके विषय में विचार-मग्न थीं। युव
रह-रहकर इन दोनों की तरफ ताकता था, मानों मन का उद्वे
छाती फाड़कर बाहर निकला पड़ता है। एक बार बड़ी महिला वे
पैर से उसका पैर छू गया, और दोनों के मुँह लाल हो गये। प
अँधेरे के कारण कोई किसी को न देख सका।

साढ़े-चार मील का फ़ासला-ही क्या? देखते-देखते कट गया
गाड़ी ने वर्सेई में प्रवेश किया।

कोचवान ने पूछा—"किधर चलना है?"

एण्ड्री ने उत्तर दिया—"राज-भवन के पास चलो: उस
मोहल्ले में जाना है।"

"राज-भवन के पास; इतनी दूर?"

"हाँ।"

"इसका अलग किराया होगा," कहकर कोचवान ने घोड़ा
आगे बढ़ाया।

"इनसे कुछ बातचीत करनी चाहिये," नवयुवक ने सोचा—
वर्ना ये मुझे बिल्कुल गधा समझेंगी।"

"श्रीमतीजी," उसने कहा—"अब तो कोई डर नहीं?"

"न, कोई नहीं, आपकी सहायता के लिये अनेक धन्यवाद।"

"हमने आपको बड़ा कष्ट दिया!" एण्ड्री ने अर्द्ध-मनस्क-
भाव से कहा।

"अजी वाह, आप कैसी बात करती हैं!"

"ख़ैर मोशियो, हम आपका उपकार कभी न भूलेंगे। हाँ, आप अपना शुभ-नाम तो बता जाइये।"

"श्रीमतीजी, मेरा नाम फाऊण्ट-हिन्चर्नी है, मैं समुद्र-सेना का अफ़सर हूँ।"

"चर्नी" बड़ी महिला ने दोहराया—"इस नाम को कभी न भूलूँगी।"

"जी, जॉर्ज हि-चर्नी।"

"आपका शुभ-स्थान ?"

"प्रिन्सेस होटल में।"

"धन्यवाद, अब हम जाती हैं।"

"अगर आज्ञा हो, तो आपको आपके घर पहुँचा दूँ ?"

"न बस, अब तो हमारी एक-ही आज्ञा है ?"

"क्या ?"

"कि आप दर्वाज़ा बन्द करके गाड़ी में बैठ जायें, और एक-दम पेरिस लौट जायें।"

"मैं आपकी आज्ञा का अक्षरशः पालन करूँगा।" कहकर युवक तुरन्त गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी वापस चल दी।

युवक जब उस जगह बैठा, जहाँ महिलायें बैठी थीं, तो उसके मुँह से एक लम्बी साँस निकल पड़ी।

महिलायें तब-तक स्तब्ध खड़ी रहीं, जब-तक गाड़ी नज़रों से ओझल न हुई, और तब सतर्क भाव से राज-भवन* की तरफ़ चलीं।

* फ्रान्स की राजधानी उन दिनों वर्सेई थी।

३

अगले दिन सुबह की बात है। हम इस समय महाराज १६ वें लुई के राजभवन में हैं। महाराज लुई ने सुबह की पोशाक पहने आकर रानी मेरी अण्टोइनेट के कमरे का द्वार खटखटाया।

एक दासी ने दर्वाजा खोला।

"रानी कहाँ हैं?" महाराज लुई ने खिंचे हुए स्वर में पूछा।

महाराज ने कमरे में प्रवेश करने का उपक्रम किया, परन्तु दासी टस-से-मस न हुई।

"परे हटो," महाराज बोले—"देखती नहीं, मैं भीतर जाना चाहता हूँ?"

कभी-कभी महाराज में एक शासक की उस स्वाभाविक कठोरता का आविर्भाव हो जाता था, जिसे लोग जुल्म के नाम से पुकारते हैं।

"पर, महाराज, महारानीजी तो अभी सो रही हैं!" दासी ने बड़ा साहस करके कहा।

"क्या कहती हो!—मैं भीतर जाना चाहता हूँ, बस!"

लुई जब रानी के शयन-कक्ष में पहुँचे, तो देखा—वे आराम से सो रही हैं। पैर की आहट सुनकर रानी की नींद खुल गई, और लुई को देखते-ही वे उठ बैठीं।

"अरे! आप हैं?" रानी आश्चर्यान्वित होकर कहने लगीं।

"प्रातःवन्दन, मैडम," लुई विषण्ण भाव से बोले।

"इस असमय मे कैसे आगमन हुआ ?" रानी ने पर्दे उठते हुए कहा ।

सहसा दासी भीतर आगई, और तासी हवा और रोर लिये झटपट तमाम खिड़कियाँ खोलने लगी ।

"अच्छी तरह सोई ?" महाराज ने एक तरफ बैठकर हुए स्वर में पूछा ।

"जी हाँ, खूब अच्छी तरह; बात यह है, कि मैं रात को देर तक पढ़ती रही, और अगर आपका आगमन न हुआ हो तो मैं शायद और कुछ देर सोती रहती ।"

"कल कुछ लोग तुमसे मिलने आये थे, मगर तुमने उ भेंट करना स्वीकार क्यों नहीं किया ?" लुई ने पूछा ।

"आपका मतलब शायद मोशिये डि-प्रोविन्स से है ?" र ने पूछा ।

"हाँ, वह तुमसे भेंट करना चाहता था, पर तुम्हारी अ कृति पाकर बेचारा बड़ा निराश हुआ ।—और मुझे बड़ा आ हुआ ।"

"क्यों ?"

"मुझे खबर मिली थी, कि तुम बाहर गई थीं ।"

"कौन कहता था ?" रानी ने लापर्वाही से कहा—' मैडम······"(अन्तिम सम्बोधन दासी के प्रति किया गया

दासी के हाथ में बहुत-सी चिट्ठियाँ थीं। आगे बढ़कर उसने रानी के सामने रख दिया, और कहा--"जी, क्या आज्ञा है

"क्यों?—क्या किसी ने कल मोशिये डि-प्रोविन्स से यह कहा था, कि मैं बाहर चली गई हूँ? जरा महाराज को बताओ तो।"

दासी क्षण-भर कुछ न बोली। रानी ने कहा—"बताओ बताओ; मुझे तो ठीक शब्द याद नहीं है, तुम जरूर जानती होगी महाराज को बताओ, कि मोशिये डि-प्रोविन्स को क्या उत्तर दिया गया था।"

—कहकर रानी ने पत्र उठा लिये, और दासी ने महाराज से कहा—"महाराज, मैंने मोशिये डि-प्रोविन्स से केवल यही कहा था, कि आज महारानी किसी से भेंट करना नहीं चाहतीं।"

"किसकी आज्ञा से?"

"महारानी की।"

उधर रानी एक पत्र खोलकर पढ़ने लगीं। उसमें लिखा था "कल आप पेरिस में गई थीं; और रात को लौटी थीं; लोगों ने आपको देखा था।"

अब तक रानी आधी दर्जन से ज्यादे पत्र खोलकर इधर-उधर डाल चुकी थी। अब महाराज की तरफ देखकर बोली—"कहिये—सुना आपने?"

"अच्छा, जाओ।" महाराज ने दासी को आज्ञा दी।

दासी चली गई।

"क्षमा कीजियेगा, मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ।" रानी बोली।

"हाँ, हाँ, पूछो।"

"क्या मैं किसी से भेंट करने-न-करने के लिये स्व
नहीं हूँ ?"

"हाँ, क्यों नहीं ?—बिल्कुल स्वतन्त्र हो, परन्तु……"

"बात यह है, कि मुझे मोशिये डि-प्रोवेन्स की लम्बी-चौ
बातें रुचती नहीं, और वह मुझ पर कुछ स्नेह भी नहीं रखत
इसलिये मेरी इच्छा उससे मिलने की नहीं होती। उसके आने
खबर मुझे पहले-ही मिल गई थी, और इसीलिये कल मैं आ
बजे से पलँग पर जा लेटी। लेकिन आप तो कुछ विचलि
दिखाई देते हैं !"

"मेरा विश्वास था, कि कल तुम पेरिस गई थीं !"

"किस समय ?"

"जिस समय के लिये तुम कहती हो, कि पलँग पर जा
लेटी थी।"

"इसमें तो शक नहीं, कि मैं पेरिस गई थी; परन्तु इससे क्य

"असल बात तो यह है, कि तुम लौटीं किस वक्त !"

"अच्छा !—आप मेरे लौटने का ठीक समय जान
चाहते हैं ?"

"हाँ।"

"आसान बात है; मैडम-डि-मिजरी…!"

दासी ने फिर प्रवेश किया।

"कल मैं पेरिस से किस वक्त लौटी थी ?"

"क़रीब आठ बजे शाम को, महारानी।"

"मुझे विश्वास नहीं," महाराज ने कहा—"तुमने कुछ ग़ल्ती
ई होगी, मैडम-डि-मिज़री।"

दासी ने दर्वाजे पर पहुँचकर आवाज दी—"मैडम डूश्रल ?"

"हाँ।" किसी ने जवाब दिया।

"कल भला किस समय महारानी पेरिस से लौटी थीं ?"

"क़रीब आठ बजे।"

"महाराज का विचार है, कि शायद हम लोग भूलती हैं।"

मैडम डूश्रल ने खिड़की से बाहर सिर निकालकर आवाज
—"लोरें !"

"लोरें कौन ?" लुई ने पूछा।

"उस दर्वाजे का पहरेदार, जिससे कल महारानी ने प्रवेश
या।" मैडम-डि-मिज़री ने उत्तर दिया।

"लोरें।" मैडम डूश्रल ने पूछा—"महारानी भला कल किस
मय लौटी थीं ?"

"क़रीब आठ बजे।" लोरें ने उत्तर दिया।

तब दोनों दासियाँ बाहर चली गईं, और केवल राजा-रानी
ह गये। अपने अनुचित सन्देह पर महाराज लज्जित हुए।
नी ने गम्भीरतापूर्वक पूछा—"कहिये, अब तो कोई बात बाक़ी
रही ?"

"ओह, कुछ नहीं," महाराज ने रानी का हाथ पकड़कर व्यग्र
ण्ठ से कहा—"मुझे क्षमा करो। न-जाने मेरे दिमाग़ में क्या
त्व समा गया था ! इस समय मुझे जितना हर्ष हो रहा है,

उतना-ही पश्चात्ताप भी है। आशा है, तुम नाराज न हो
क्यों ? मुझे इस बात का बड़ा-ही खेद है कि, मैंने तुम पर
किया।"

महारानी ने हाथ छुड़ाकर कहा—"महाराज, फ़्रान्स की
रानी कभी झूठ न बोलेगी।"

"क्या मतलब ?"

"मेरा मतलब है, कि मैं कल आठ बजे नहीं आई थी।"

महाराज आश्चर्यित होकर दो क़दम हट गये।

"मेरा मतलब है," रानी उसी भाव से कहती रहीं—"कि
आज-ही सुबह छः बजे लौटी हूँ।"

"मैडम......"

"मेरा मतलब है, कि मोशिये डि-आर्टुई के सगे भाई
सुलूक ने-ही रात-भर मुझे आश्रय दिया, और बेइज्ज़ती
बचाया। वर्ना शायद रात-भर भिखारिनों की तरह मुझे सड़क
पड़ी रहना पड़ता।"

"ओहो !—तो तुम रात को नहीं लौटीं ? तब मेरा ख़य
सही था !" महाराज ने कहा।

"अफ़सोस ! आपने मेरे साथ भले आदमियों का-सा व्यवह
नहीं किया !"

"कैसे मैडम ?"

"ऐसे—कि रात आपने महल के पहरेदारों को कड़ी आ
दे दी, कि कोई चाहे-जो कहे, किसी के लिये दर्वाज़ा न खोल

...य। ऐसे—कि अगर आपको यही जानना था, कि मैं रात को ...स वक्त लौटी, तो दर्वाजे बन्द न कराकर आप सीधे मेरे पास ...ाते, और मुझसे पूछते। अब आपके समस्त सन्देहों का मूलो-...च्छेदन हो गया है। आपके गोयन्दों की आँखों में धूल झोंक दी ...ई, आपकी सतर्कताएँ व्यर्थ कर दी गईं, और आपके सन्देह ... कर दिये गये। अपने व्यवहार के लिये आप लज्जित भी हो ...के।—और इस प्रकार मैं अपनी सर्वतोमुखी विजय पर हर्षित ... सकती हूँ, लेकिन मैं समझती हूँ, कि आपका आचरण एक ...दशाह के लिये लज्जाजनक, और एक मनुष्य के लिये नितान्त ...नीतिपूर्ण था।—और मुझे यह सब-कुछ कहते हुए जरा भी ...य या सङ्कोच नहीं है।"

"बेकार है," महाराज को अपनी कैफ़ियत में कुछ कहने का ...क्रम करते हुए देखकर रानी ने कहा—"आपकी कोई भी बात ...पको दोष-मुक्त नहीं कर सकती।"

"ऐसा नहीं है मैडम," लुई ने कहा—"मेरे अतिरिक्त महल में ...सी को यह गुमान नहीं था, कि तुम बाहर हो, और न यह कि ... आदेश का सम्बन्ध तुमसे था। बात यह थी, कि मैं तुम्हें एक ...त शिक्षा देना चाहता था। और तुम्हारा क्रोध देखकर मैं अनु-...न करता हूँ, कि तुमने उस शिक्षा को ग्रहण किया है। अतएव ...अब तक समझता हूँ, कि मैंने जो-कुछ किया, ठीक किया।"

क्षण-भर ठहरकर रानी ने उमड़ते हुए हृदय को संयत किया, ... तब कहना शुरू किया—"फ़्रान्स की महारानी और फ़्रान्स

के भावी राजा की माता को महल के द्वार पर खड़ा रख
आप धम्य समझते हैं ? कभी नहीं, आपका आचरण
निन्दनीय था ! आपको करतूत के फल-स्वरूप आज फ्रांस की
को एक दरबारी के बँगले में रात-भर रहना पड़ा। यह तो
अपने सगे भाई से बढ़कर मेरे साथ सुलूक किया, और मुझे
छोड़कर खुद तुरन्त बाहर चला गया, पर तो भी यहाँ
आपके और मेरे लिये अपमान की बात है !"

लुई के चेहरे का रङ्ग बदल गया, और बेचैनी के साथ
कुर्सी पर सरककर बैठ गये।

"जी हाँ," रानी ने फिर कहना शुरू किया—"मैं जानती
आप बड़े नीतिज्ञ हैं। लेकिन आपको नीतिज्ञता के अद्भुत
होते हैं। आप कहते हैं, कि मेरे बाहर जाने की बात का कि
को पता नहीं। सच बताइये, आपके जिगरी, और आपको
चढ़ानेवाले मोशिये डि-प्रॉविन्स इस विषय में कुछ जानते हैं
नहीं ? और फिर मोशिये डि-आर्टुई ?—और फिर मेरी दासियाँ
—जिन्होंने मेरी आज्ञा से अभी-अभी आपसे झूठ बोला!—
और फिर लोरें ?—जिसे मेरे और आर्टुई के प्रयत्न और रुपये
जर-खरीद गुलाम बना लिया ? ठीक है महाराज, ठीक है, बड़ा
बढ़िया खेल है। आप तो मेरी गति-विधि पर तेज गोयन्दे लगावें
और मैं अपने पैसे के जोर से उनका मुँह बन्द करती रहूँ! फि
देखिये, एक महीने में-ही फ्रान्स के राज-परिवार, और राज
सिंहासन की इज्जत कहाँ पहुँचती है !"

"क्या कहा ?" सहसा लुई के मुँह से निकला।

"मैं एक घर में गई, और वहाँ एक राज-परिवार की कन्‍ को भूख से तड़पते और ठण्ढ से ठिठुरते देखा। मैंने इस कन्‍ गिनी को सौ लुई दिये, और बादशाही का, ला-पर्वाही का थोड़ बहुत प्रायश्चित्त किया। वहीं मुझे देर लग गई, और पक्ष गाड़ियाँ धीरे-धीरे चलती हैं, इसलिये यहाँ पहुँचते-पहुँचते आध रात बीत गई।"

"मैडम," लुई बोले—"यह मैं जानता हूँ, कि तुम्हारे मन भाव बहुत उदार और उच्च हैं; लेकिन इस तरह की उदारता में दोष मानता हूँ। याद रक्खो, मैंने तुम्हारे विषय में कभी कों अनुचित सन्देह नहीं किया, मैं तो केवल तुम्हारी दुस्साहस प्रकृति से असन्तुष्ट हूँ। निस्सन्देह तुम्हारे सभी कामों में उदार अच्छा होता है, मगर जिस प्रकार तुम काम करती हो, वह तुम्हारे लिये हानिकर है। बस, इसीलिये मैं तुमसे यह सब-कुछ कह रहा हूँ। तुम कहती हो, कि मैंने राज-परिवार की एक कन्या को भुला दिया है। बताओ, वह कौन है!"

"वैलुई-परिवार का नाम तो महाराज को अवश्य-ही या होगा ?"

"ओहो!" लुई ने हँसकर कहा—"अब मैं समझ गए, तुम्हारा मतलब किससे है! ला-वैलुई न ?—पता नहीं, कैसे काउण्टेस कहते हैं—उसे!"

"काउण्टेस दि-ला मोट।"

"हाँ, वही ! वही ! तुम जानती नहीं, यह तो खानगी है ! ोह ! उसके विषय में कुछ सोचने की तुम्हें जरूरत नहीं, यह तो द-ही जमीन-आसमान को फाड़ने की शक्ति रखती है; उसने तो रे कई दरबारियों तक को फँसा लिया है, और एकाध बार मुझ- र भी डोरे डालने का प्रयत्न किया है।"

"अच्छा यह बताइये, है तो वैलुई-परिवार की-ही न ?"

"मेरे खयाल में, है तो।"

"खैर, तो मैं यह चाहती हूँ, कि उसे राज-कोष से पेन्शन ले, और उसके स्वामी की उन्नति हो।"

"ठहरो, मैडम, ठहरो—एक दम इतनी आगे न बढ़ो। यह तो सी हरांक औरत है, कि जरूर अपनी गुजर-बसर का कुछ-न-कुछ ाय निकाल लेगी। ऐसी औरतों को रोटियों का तो घाटा-ही हीं। भला इस वक्त कैसे राज-कोष से ऐसी औरतों को पेन्शन जा सकती है ? इस समय तो राज-दरबार के लोग तक ग़रीबों मदद के लिये अपनी जेब का खर्च कर रहे हैं, इस वक्त तो पाई भी फ़िज़ूल खर्च नहीं की जा सकती।"

"लेकिन यह लड़की बेचारी क्या भूखों मरे ?"

"अभी तो कहती थीं, कि सौ लुई देकर आई हो !"

"तो इसमें क्या ?—मैं तो उसके लिये सरकारी पेन्शन हती हूँ।"

"न, मैं किसी बन्धन में नहीं पड़ सकता। फ़िलहाल तो तुम लुई दे-दो आई हो, बाद अवस्था सुधरने पर मैं भी कुछ रुपया के पास भिजवा दूँगा। बस काफ़ी है।"

—कहकर लुई ने प्यार-से रानी की तरफ हाथ बढ़ाया। ने धीरे-से हाथ परे हटाकर कहा—"अच्छा हटिये, अगर मेरी बात नहीं मानते, तो मैं भी आपसे नाराज हुई जाती हूँ।"

"अरे !—यह क्यों ?"

"क्यों नहीं ?—आप मेरे लिये महल के दरवाजे बन्द देंगे, सुबह साढ़े छः बजे आपके दर्शन होंगे, और उत्तेजित हो जबर्दस्ती मेरे कमरे में घुस आयेंगे······"

"मैं तो उत्तेजित नहीं था।"

"आपका मतलब है, कि इस समय नहीं हैं। क्यों ?"

"अगर मैं यह सिद्ध कर दूँ, कि जिस समय मैं आया उस समय भी उत्तेजित नहीं था, तो मुझे क्या दो ?"

"अच्छा, करिये सिद्ध !"

"बिल्कुल आसान है; मेरी जेब में।"

"ओहो !" रानी ने कहा, और तब हठात् उत्सुक हो बोल उठीं—"जान पड़ता है, मुझे भेंट करने के लिये आप लाये हैं, लेकिन याद रखिये यदि आप उसको तुरन्त मुझे न दिखा देंगे, मैं विश्वास न करूँगी।"

लुई ने मुस्कुराते हुए जेबें टटोलनी शुरू कीं। इधर रानी बच्चे की तरह व्यग्र हो उठीं, जिसे खिलौना मिलनेवाला हो।

आखिर महाराज ने चमड़े का एक सुन्दर बटुआ निकाला।

"ओहो ! जवाहरात।" रानी ने चीखकर कहा।

महाराज ने उसे पलँग पर रख दिया।

रानी ने बटुआ खोल डाला, और एक-साथ चीत्कार किया —
ओह, भगवान् ! कैसा सुन्दर !"

महाराज ने हर्षोत्फुल्ल होकर मुस्कुरा दिया, और कहा —
"क्या सचमुच ?"

रानी उत्तर न दे सकीं, वह तो आनन्दातिरेक से गद्‌गद हो
उठी थीं। उन्होंने बटुए में-से एक हीरे का हार निकाला, जो
इतना सुन्दर, इतना आकर्षक और इतना भव्य था, कि एक बार
कमरे में चकाचौंध-सी छा गई, और रानी के मुँह से फिर एक
चीख निकल पड़ी।

"ओहो ! बहुत सुन्दर !" रानी ने कहा।

"तो पसन्द है न ?" महाराज ने पूछा।

"ओह, महाराज, आपने मुझे हद-से-ज्यादे खुश कर दिया !"

"सचमुच ?"

"पहली लड़ी को देखिये, हीरे कितने बड़े-बड़े हैं, और सब
एक-से हैं।"

"जिन जौहरियों ने इसे बनाया है, वे अपने फ़न के उस्ताद
हैं" महाराज ने कहा।

"तो शायद बोहमर और बोसेञ्ज हैं ?"

"ठीक है।"

"निस्सन्देह, उनके अतिरिक्त किसी का साहस ऐसी मूल्यवान्
वस्तु को तैयार करने का नहीं हो सकता।"

"मैडम, दाम भी इसका कम नहीं है।"

"अरे !"—कहते-कहते रानी की सारी प्रसन्नता लुप्त हो

"इसका दाम यही है, कि मेरे हाथ से इसे गले में प

स्वीकार करो ।"—कहते कहते महाराज लुई दोनों हाथों मे थामे हुए रानी को पहनाने चले ।

रानी ने उन्हें रोकते हुए पूछा—"लेकिन यह बतायें, बहुत क़ीमती है !"

"मैंने क़ीमत बताई नहीं ?"

"ओह ! इसमें मज़ाक न कीजिये । हार को बदले में कर दीजिये ।"

"तो तुम मुझे अपने गले में पहनाने की अनुमति देतीं ?"

"न, न, मैं तो उसे पहनना-ही नहीं चाहती ।"

"क्या ?" महाराज ने चकित होकर पूछा ।

"देखिये, मेरे गले में इस हार का कोई उपयोग न होगा।

"तो, न पहनोगी ।"

"ना !"

"मेरी बात टालोगी ?"

"मैं आपकी बात नहीं टालती, बल्कि एक चीज़ में ल रुपया बेकार फूँकना उचित नहीं समझती !"

"बेशक, यह मैं मानता हूँ।" महाराज ने कहा।

"बस, ऐसे समय में, जब कि प्रजा भूखी मर रही है, राज-कोष खाली पड़े हैं, मैं ऐसी क़ीमती चीज़ ख़रीदना

चाहती। अच्छा हो, अगर इस धन को आप ग़रीबों की उदर-पूर्ति के लिये ख़र्च करें!"

"क्या गम्भीरतापूर्वक कह रही हो ?"

"देखिये, इस हार की क़ीमत से एक जङ्गी जहाज बनाया जासकता है, और इस समय हार की जगह जहाज की ज़्यादे ज़रूरत है!"

लुई ने हर्षोन्मत्त होकर कहा "ओह! तुम्हारी उदारता अलौकिक है। धन्यवाद, तुम्हें पाकर मैं धन्य हुआ हूँ।"

और उन्होंने रानी को गले लगाकर चूम लिया। कहा—सारा फ़ान्स तुम्हारा कितना कृतज्ञ होगा, जब तुम्हारे त्याग की ख़बर लोग सुनेंगे!"

रानी ने ठण्डी साँस ली।

महाराज बोले—"क्यों—क्या पछताती हो? अभी तो अपने हाथ की बात है।"

"जी नहीं, इस बटुए को बन्द करके जौहरियों के पास भेज दीजिये।"

"लेकिन मैंने तो सौदा पक्का कर लिया था।"

"नहीं, मैंने निश्चय कर लिया; अब न लूँगी।"

"तो १६ लाख फ़्राङ्क बच गये!"

"ओहो! इतना दाम?"

"बेशक इतना।"

"ख़ैर, मैं तो सिर्फ़ यह चाहती हूँ, कि आप मुझे एक बार पुनः पेरिस जाने की आज्ञा प्रदान करें।"

"यह तो मामूली बात है।"

"मैं मोरिसे मेगर के पास जाना चाहती हूँ।"

"अच्छी बात है, पर एक शर्त पर जा सकती हो, तुम्हारे साथ कोई उच्च-परिवार की स्त्री रहनी चाहिये।"

"मैडम-डि-फ्रान्जेन्ज ठीक है।"

"हाँ।"

"अच्छी बात है।" महाराज ने कहा—"अब मैं एक न जहाज बनवाऊँगा, और उसका नाम रक्खूँगा—'रानी का हार' बस, अब चला।"

४

बादशाह कमरे से बाहर हुए-ही थे, कि रानी उठ गईं और खिड़की के पास पहुँचीं। सुन्दर प्रभात था, वसन्त आरम्भ था, धूप में हल्की-सी गर्मी थी। ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। पेड़ की पत्तियों से झड़-झड़कर बरफ गिर रही थी।

"अगर बरफ का आनन्द लूटना है," रानी ने आप-ही-आप कहा—"तो जल्दी करनी चाहिये। मैडम डि-मिसरी देखो वसन्त का कैसा सुन्दर आरम्भ हुआ है। आज मेरी इच्छा अपनी सखी-सहेलियों के साथ 'स्विस-लेक' पर सैर के लिये जाने की है। आज न गई, तो कल-तक सारा आनन्द जाता रहेगा।"

"तो श्रीमतीजी किस समय कपड़े बदलेंगी?"

"फ़ौरन् ही बस, खाना खाते-ही चल देना चाहती हूँ।"

"और कोई आज्ञा?"

"देखो, एण्ड्री अभी जागी है, या नहीं। जागी हो, तो कहो— उससे बातें करना चाहती हूँ।"

"वह तो बहुत देर से आपके आदेश की प्रतीक्षा में बाहर खड़ी है!"

"बहुत देर से?" रानी ने चकित होकर पूछा।

"हाँ, कोई बीस मिनट से।"

"बुलाओ।"

आकर्षक वस्त्र पहने हुए एण्ड्री ने मुस्कुराकर कमरे में क़दम रक्खा।

महारानी ने मुस्कुरा दिया, मानों एण्ड्री को आश्वासन दिया।

"जाओ, मिसरी, ल्यूनर और दर्ज़ी को भेज दो।"

जब वह चली गई, तो रानी ने एण्ड्री से कहा—"महाराज का मन अच्छी तरह भर दिया! बात यह थी, कि उन्हें उकसाया गया था, पर मेरी सभी बातें सुनकर उनका सारा सन्देह काफ़ूर हो गया।"

"तो क्या उन्हें पता लग गया?"

"जानती हो एण्ड्री, जो औरत फ़्रान्स की महारानी है, और जिसने कोई अपराध नहीं किया, वह कैसे अपने पति के सामने मिथ्या भाषण कर सकती है?"

"बेशक! बेशक!"

"तो भी प्यारी एण्ड्री, ऐसा जान पड़ता है, कि हमारी रामकी ...।"

"यह कैसे मैडम ?"

"बात यह है, कि मैडम डि-म्ना मांट के विषय में म
अच्छे विचार नहीं रखते । पर मुझे तो यह बहुत म
जान पड़ी ।"

"श्रीमतीजी का जो विचार है, मेरे लिये तो यही सत्य
मान्य है ।"

"यह ल्यूनर आ गया !" मैडम डि-मिज़री ने लौटकर क
महारानी कुर्सी पर बैठ गई, और ल्यूनर ने उनके
सँवारने शुरू कर दिये ।

दुनियाँ-भर में मेरी अण्टोइनेट के बालों की धूम थी,
को अपने बालों का गर्व था । ल्यूनर भी यह जानता था, इसलि
रह-रहकर बालों की तारीफ़ में एकाध विनम्र शब्द कह देता था

उस दिन मेरी अण्टोइनेट की सुन्दरता में जैसे चार चाँद
गये थे । आँखों में आनन्द की रेख थी, और मुँह पर सन्
का उल्लास !

जब बाल सँवर चुके, तो वह एण्ड्री की तरफ़ आक
हुई—"क्यों एण्ड्री, क्या विवाह करने की इच्छा ही नहीं है

एण्ड्री ने शरमाकर कहा—"मैंने प्रण किया है !"

"और यह प्रण निभ भी जायगा ?"

"आशा तो है ।"

"और मैंने सुना है, तुम्हारा भाई लड़ाई पर से लौट
है, और वह जरूरी कहीं-न-कहीं तुम्हारी शादी कर देगा !"

एकदम चुप रही।

"क्यों ? क्या आगया है ?"

"हाँ, कल-ही तो।"

"तो तुम तो अब तक उससे मिली भी न होगी ? कल मेरे
 पेरिस जो चली गई थीं। ओह ! मैं भी कैसी स्वार्थिन हूँ।"

"वाह ! यह आप कैसी बातें करती हैं !"

"तुम्हारा भाई भी माफ़ कर देगा ?"

"कौन ? फ़िलिप ? वह तो मेरी-ही तरह आपका आज्ञाकारी
 आश्रित है।"

"अब कितना बड़ा होगा ?"

"बत्तीस बरस का ?"

"है तो राजी-खुशी ?"

"हाँ, सुना तो यही है।"

"ओहो !" रानी ने अर्द्ध-स्वगत भाव से कहा—"चौदह बरस
ले परिचय हुआ था, और नौ-दस बरस हुए, तब से उसको
 देखा।"

"लेकिन इतना समय बीत जाने पर भी, मुझे विश्वास है,
लिप के दिल में आप की वही श्रद्धा होगी। जिस दिन आपकी
ज्ञा होगी, वह आपकी सेवा में उपस्थित होने में अपना गौरव
नेगा।"

"मैं उसे तुरन्त देखना चाहती हूँ।"

पाकर अत्यन्त हर्षित हुआ ! कहिये अभागे फ़ान्स में र
विचार आपको कैसे हुआ ?"

"बात यह है भाई साहब," फिलिप ने उत्तर दि
अपनी बहन को दुनियाँ में सब से ज्यादे चाहता हूँ, जो
उसकी इच्छा होती है, मैं बिना-सोचे उसे पूरी कर देता हूँ।"

"लेकिन आपके पिताजी तो जीवित हैं ?" काउण्ट ने क

"उनकी बात न करो" रानी ने झट-से कहा—"मेरी र
में एण्ड्री का अपने भाई की देख-रेख में रहना ज्यादे ठीक है
और उसके भाई का अलफी में भाई;—क्यों आर्टुई, इसे आ
स्वीकार करते हो ?"

काउण्ट ने सिर झुकाकर स्वीकार किया।

"आपको पता नहीं," रानी फिर बोलीं—"मोशिये टे
साथ मेरा घनिष्ट स्नेह-सम्बन्ध है।"

"क्या मतलब, मैडम ?"

"जब मैंने नव-वधू के रूप में फ़ान्स में पदार्पण कि
तो मोशिये टेवर्नी पहले फ़ान्सीसी थे, जिनसे मेरी भेंट
और मैंने प्रण किया था, कि जिस पहले फ़ान्सीसी से
होगी, मैं उसके अभ्युदय के लिये कुछ उठा न रक्खूँगी।"

फिलिप का मुँह लाल हो उठा, और एण्ड्री ने उदार
उसे ताका।

रानी बड़ी कृपालु रमणी थीं, आस-पास के सभी प्रा
उसका अतुल स्नेह था, और सभी उसके प्रति श्रद्धा का भाव

पर रानी एएडो से बातें करने लगी, इधर डि-आर्टुई
र की तरफ़ मुड़ा, और बोला—"क्या आप वाशिङ्गटन को
बड़ा सेनापति समझते हैं ?"

"निस्सन्देह; बहुत-बड़ा !"

ब उन दोनों में युद्ध-विषयक बातें होने लगीं।

थोड़ी देर बाद युवक आर्टुई ने रानी के हाथ का चुम्बन
, और एएडो का अभिवादन करता हुआ कमरे से बाहर
ल गया।

तब रानी फिलिप की तरफ़ मुड़ी, और बोली—"आप अपने
री से मिले, या नहीं ?"

"हाँ, अभी, बाहर भेंट हुई थी; एएडो ने उन्हें बुला भेजा था।"

"उनसे मिलने आप घर क्यों नहीं गये ?"

"नौकर के साथ मैंने अपना सामान घर भेज दिया था, पर
ने लौटकर पिताजी का सन्देश मुझे सुनाया, कि मुझे सबसे
महारानी या महाराज के दर्शन करने चाहियें।"

"बड़ा-सुन्दर प्रभात है !" रानी ने सहसा प्रकरण बदलकर
—"कल से बरफ़ पिघलनी शुरू हो जायगी। मैडम डि-मिज़री,
तैयार करने को कहो, और नाश्ता झट-पट यहीं ले
!"

"क्या आप स्केटिंग* के लिये जाना चाहती हैं ?" फिलिप ने
।

* एक ख़ास तरह के जूते पहनकर बर्फ़ पर फिसलने का खेल।

ताब के फूल, मेरे पालतू कबूतर, और स्नेह-शील नौकर-चाकर
र रहे हैं।······लेकिन बात क्या है एएड्री, तुम शर्म से गड़ी जा
हो, और आप मोरिशिये, सहसा ज़र्द पड़ गये हैं ?"

निस्सन्देह भाई-बहनों के मुँह का भाव बदल गया था !
रानी की बात सुनकर दोनों सम्हल गये।

एएड्री ने कैफ़ियत दी—"मेरा मुँह जल गया था।"

फिलिप ने कहा—"मेरा मन इस बात पर विश्वास करने से
ा-पीछा कर रहा था, कि आपने मुझे वह गौरव प्रदान किया,
ायद फ़ान्स के बड़े-से-बड़े आदमी को भी नसीब न होता !"

"अच्छा, अब झटपट इस प्याले को खत्म कर डालिये।"
ने मुस्कराते हुए कहा—"क्योंकि फिर स्केटिंग के लिये जाना

छ देर बाद-ही रानी कपड़े-लत्तों से लैस होकर बाहर चली।
फ़िलिप भी टापी बगल में दबाकर पीछे-पीछे चल दिया।

मोशिए टेवर्नी, मैं आपको साथ रखना-ही चाहती हूँ, मेरी
तरफ़ चलो।"

ढ़ि ज़ीने की राह सब नीचे उतरने लगे। नगारे बज रहे
नाई की मधुर आवाज़ सुनाई देरही थी, और नौकर-चाकर
ो देखते थे और अदब से झुक जाते थे।

दूर भीड़ में हम एक बूढ़े आदमी को सिर-उठाये खड़ा देखते
यता और शिष्टाचार को भूलकर वह स्थिर नेत्रों से महा-
ौर फिलिप की तरफ़ एक-टक ताक रहा है। महारानी जब

गाड़ी में बैठकर चलने को हुईं, तो यह भी अपनी छोटी टाँगों के बल पर तेजी-से एक तरफ को चल दिया।

× × × ×

स्केटिंग जारी था।

रानी खेल में मग्न थी, आस-पास भीड़ जमा थी, फिलिप के सौभाग्य पर सब-लोग अचरज और स्पर्द्धा का प्रकट कर रहे थे।

अपनी सखी-सहेलियों के साथ एक बार रानी थोड़ा बढ़ गई; फिलिप पीछे रह गया। सहसा उपरोक्त बूढ़े आदमी उसके कन्धे पर हाथ रक्खा।

भीड़ हट चुकी थी, जो थे, वे अपने-अपने मनोविनोद मस्त थे।

बूढ़े ने स्नेह-सिक्त स्वर में कहा—"बेटा, तुमने तो मुझे नमस्कार-तक नहीं किया!"

"ओह, पिताजी! क्षमा कीजिये,"—कहकर फिलिप ने पिता का अभिवादन किया।

"बस, जाओ, जल्दी करो।" कहकर बूढ़े ने धीरे-से फिलिप को धकेला।

"कहाँ जाऊँ पिताजी?"

"हे भगवान्! और कहाँ भई—वहीं।"

"कहाँ?"

"रानी के पास।"

में रहकर तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है।......ओ! १
देखो! रानी मुड़कर इधर-ही देख रही है। फिलिप, जानते न
वह तुम्हारे सिवा किसी को नहीं खोजती?"

"ख़ैर, अगर आपकी बात सच भी हो, कि महारानी मे
खोज......"

"हाय!" बूढ़े ने टोककर क्रोधपूर्वक कहा—"यह लड़
मेरा बीज नहीं है; टेवर्नी-परिवार से हर्गिज़ इसका कोई सम्
नहीं है। सुनो मेरे भाई, मानो, रानी तुम्हारी ही खोज में है!"

"आपकी नजर बड़ी तेज़ है!" बेटे ने रुखाई से उत्तर दि

"देखो," बूढ़े ने कुछ संयत स्वर में कहा। "मेरे प्रयोग
भाग्य आज़माई करो; सुनते हो, मर्द-आदमी!"

फिलिप ने उत्तर न दिया।

बाप ने इस दृढ़ और निस्तब्ध प्रतिवाद पर दाँत पीसे; लेकि
एक बार फिर प्रयत्न करने से बाज़ न आया—"फिलिप, बेट
मेरी बात सुनो!"

"देख रहे हैं, पन्द्रह मिनट से 'आपकी बात'-ही सुन
।" फिलिप चिढ़कर बोला।

"अच्छा ख़ैर!" बूढ़े ने मन-ही-मन कहा—"मैं भी न तेरी
अक़्ल दुरुस्त कर दूँ तो नाम नहीं; तूने भी क्या समझा है!" तब
ज़ोर-से बोला—'एक बात पर तुमने ध्यान नहीं दिया फिलिप!"

"क्या बात?"

"जब तुम अमरीका गये थे तो महाराज विवाहित नहीं थे।

"कैसा पागल लड़का है ! अच्छा बेटा, सलाम, तुमने मुझे खूब खुश किया। पहले मैंने सोचा था, कि मैं बाप हूँ, तुम बेटे हो लेकिन नहीं, अब देख रहा हूँ, कि तुम बाप हो, और मुझे बेटा बनना पड़ेगा !" कहकर चल दिया।

फिलिप ने उसे रोका, और कहा—"जान पड़ता है, आप मेरी परीक्षा ले रहे थे। क्यों पिताजी ? मुझे विश्वास नहीं होता, कि आप-सरीखा सत्पुरुष गम्भीरतापूर्वक ऐसे भ्रष्ट वाक्य मुँह से निकालेगा, और राज-परिवार और राज-सिंहासन के शत्रुओं द्वारा फैलाई हुई अनर्गल खबरों को दोहरायेगा !"

"अब तुम मेरी बात पर भला क्यों भरोसा करोगे ?"

"आप भगवान् को साक्षी रखकर इन बातों को कह सकते हैं ?"

"बेशक; बिल्कुल सच-सच।"

"राज आप जिस भगवान् को याद करते हैं ?"

बूढ़ा आगे बढ़ा, और नरमी-से बोला—"देखो बेटा, मैं भी आखिर भलामानस हूँ; तुम्हें मेरी बात पर विश्वास करना चाहिये।"

"तो आपका खयाल है, कि कुछ लोगों से महारानी का अनुचित सम्बन्ध रह चुका है ?"

"निस्सन्देह।"

"लेकिन आपको पता किससे लगा ?—किसी गप्पी इश्तिहार-

"नहीं भाई, विश्वस्त सूत्र से ! तभी तो मैंने भरोसे के साथ
: दिया—'फिलिप, रानी तुम्हारे लिये-ही मुड़-मुड़कर देख
। है !' "

"बस, पिताजी, ज़बान बन्द कर लीजिये, वर्ना मैं पागल हो
ऊँगा।"

"तुम्हारी बातों से मुझे बड़ी हँसी आती है। फिलिप, क्या
नेयाँ में किसी से प्रेम करना पाप है ? प्रेम वही कर सकता है,
सके भीतर दिल हो। क्या तुम इस औरत की बातों में, इसकी
'खों में, इसके स्वर में, इसका दिल नहीं पढ़ सकते ? तुम चाहे
समझो, मैं समझता हूँ, कि इस समय वह किसी के प्रेम में
ती जा रही है; चाहे वह तुम हो, चाहे कोई और।……पर
। तो दार्शनिक ठहरे, महात्मा ठहरे, तुम्हें इन बातों का कहाँ
ा ? खैर, तुम्हारा भाग्य !"

—कहकर अपनी बात का पूरा असर होने देने के लिये बूढ़ा
हाँ से चल दिया।

फिलिप वहीं खड़ा रहा। आँखें उसक लाल थीं, और खून
ल रहा था। आध घण्टे बाद महारानी स्केटिंग समाप्त करके
पेस लौटी, और उसे वहाँ खड़ा हुआ देखकर बोली—"चलिये,
साथ चलिये।"

फिलिप एक-बारग। चौंक पड़ा, और रानी की गाड़ी के पीछे
। रखकर धीरे-धीरे चलने लगा।

सहसा महाराज ने इन लोगों को वार्त्तालाप करते देख लिया,
इस प्रकार इन पर दृष्टि-पात किया, मानो इस बात की
ना दे रहे हैं, कि वे भी इनके मनोरञ्जन में भाग लेना
ते हैं।

सारा हॉल उच्च-पदाधिकारियों और राज-परिवार के लोगों से
हुआ था। सेनापति की आमद की खबर यद्यपि गुप्त रक्खी
थी, तो भी सब तरफ़ उसकी अफ़वाह थी, कि कोई-न-कोई
आनेवाला है।

फ़िलिप और उसकी बहन को भी हॉल में आने की अनुमति
थी। वह बेचारा अपने बाप की बातों का ख्याल कर-करके
न हुआ जा रहा है। बार-बार उसके मन में यह प्रश्न खड़ा
था, कि क्या उसका बाप ठीक कहता था? उत्तर में पक्ष-
की अनेक दलीलें उसके दिमाग़ में आती थीं। उसका
जिसने राज-दरबार में-ही बाल सफ़ेद किये, क्या उसकी बात
होन हो सकती है? यह रानी, जो अनिन्द्य सुन्दरी, अतुल
और उसके प्रति अत्यन्त स्नेह का भाव रखती है, क्या
ारिणी है?—क्या यह अपने प्रेमियों की सूची में एक नाम
जोड़ना चाहती है?

ब उसने एक बार महारानी के चेहरे को ताका, और मन-
कहा—"हर्गिज़ नहीं, यह पवित्रात्मा कभी दुराचारिणी
सकती! पिता जी ग़लत कहते थे.......।"

ब वह इन्हीं गुत्थियों में उलझा हुआ था, तो पौने आठ

...ऊपर उठाकर चुम्बन दिया। तब रानी की तरफ मुड़कर ...राज बोले—"मैडम, आप-ही का नाम सेनापति सफ़्रौं है, ...ने भारतवर्ष में बड़े-बड़े युद्धों में विजय प्राप्त की है, और ...आजकल अँग्रेजों के लिये भय की वस्तु बने हुए हैं।

महारानी ने कहा—"सेनापति, मैंने आपकी वीरता की अनेक ...नियाँ सुनी हैं; आज आपको सामने देखकर मुझे बड़ा ...हुआ!"

...और लोग भी आगे बढ़-बढ़कर सेनापति का दर्शन करने लगे। ...राज ने उसका हाथ अपने हाथ में थाम लिया, और अकेले ...र्तालाप करने के लिये निजी कमरे की तरफ चलने का उपक्रम ...लगे। पर सेनापति ने उन्हें नम्रता-पूर्वक रोका।

"महाराज!" उसने कहा—"अगर आप आज्ञा दें......"

"बोलिये, बोलिये।"

"महाराज बात यह है, कि मेरे एक मातहत-अफसर ने एक ...नियम-विरुद्ध काम किया है, कि मैंने उसका निर्णय आप-ही ...छोड़ रक्खा है।"

"वाह! मैंने तो सोचा था, आपकी पहली प्रार्थना पारितोषिक ...सम्बन्ध में होगी, न कि दण्ड की!"

"अब महाराज स्वयं-ही निर्णय करें, कि क्या होना चाहिये। ...की लड़ाई में यह अफसर 'सिवर'—जहाज पर था।"

"अच्छा जिसका भण्डा टूट गया था!"

"जी हाँ, 'सिवर' के कप्तान ने वास्तव में भण्डा झुका दिया

की नजर फिलिप पर पड़ी। देखते-ही बोली—"मोशिये डि
आप क्यों नहीं खोजते हैं?"

फिलिप का मुँह लाल हो गया। उसने झट इधर-उध
घुमाई। सामने-ही चर्नी खड़ा था। अतएव उसका काम ह
दो अफ़सर मोशिये डि-चर्नी को साथ लिये हुए आये,
रास्ता दे दिया।

अट्ठाईस बरस का तगड़ा और सुन्दर जवान था।
नीली, माथा चौड़ा और चेष्टा उदार थी। आश्चर्य्य की
यह थी, कि बरसों भारतवर्ष में रहने, और युद्ध करने
उसका रँग बेतरह गोरा था।

जब उसकी नजर महारानी और एण्ड्री पर पड़ी
उसने उस दिनवाली रमणियों को पहचान लिया था। प
तरह का विस्मय-भाव प्रदर्शित न करके उसने कमाल
और धैर्य का परिचय दिया। अब जब रानी के बुलाने
उसे मिली, तो भी उसके चेहरे पर चिन्ता अथवा व्यग्रता
दिखाई न पड़ा।

चर्नी ने यह बात उपस्थित लोगों पर तो प्रकट न-ही
रानी को वह किस रूप में देख चुका है, बल्कि स्वयं
यह प्रकट न होने दिया, कि वह उसे पहचान गया है।

जब तक रानी न बोलीं, उसने सिर न उठाया। उसने
"मोशिये, मैं और मेरी सहेलियाँ उस घटना का विस्त
सुनना चाहती हैं, जब आपने वह नियम-विरुद्ध काम किय

रानी के मुँह से कोई रहस्य-पूर्ण गुप्त कथा सुनने की आ
सब लोग और पास को खिसक आये।

"ओह मैडम !" नवयुवक चर्नी बोल उठा। मुँह के
ऐसा प्रकट होता था, कि धरती फट जाय और वह समा ज

"सुनिये," महारानी ने कहना शुरू किया—"मेरी
स्त्रियां हैं। उन्हें शहर में देर होगई, और लोगों की एक
भीड़ ने उन्हें तङ्ग करने का इरादा किया। संयोगवश
डि-चर्नी उस रास्ते से गुज़रे। यद्यपि स्त्रियाँ उनकी परिचि
थीं, तो भी उन्होंने भीड़ को हटा दिया, और उसकी रक्षा
फिर उन स्त्रियों के साथ-साथ पेरिस से वर्सेई तक आने क
उठाया।"

चर्नी हँस पड़ा। अब वह शान्त होगया।

इस कहानी को सुनकर सभी लोग चर्नी की प्रशंसा में
तरह की टीका-टिप्पणी करने लगे।

महारानी ने कहा—"महाराज अवश्य मोशिये चर्नी को
सौजन्य का पुरस्कार देंगे। मैं भी उन्हें कुछ-न-कुछ देना चाहती

कई बार उसने अपना हाथ चर्नी की तरफ़ फैला दिया,
. . . काँपते हुए नौजवान ने ओठों से लगा लिया।
. . किसी दूसरे भाव से दग्ध होता हुआ ताक रहा था,
अलग किसी मनो-व्यथा में पड़कर ज़र्द हुई जा रही थी।
भाई की अवस्था की कल्पना वह न कर सकी।

"सब-कुछ !"

"सब से पहले तो, मेरी समझ में, रसोई की खबर है
क्योंकि पेट तो सब से प्रधान है।"

"देखो !" जीन ने कहा—"कोई दर्वाजा खटखटाता है।"

दासी गई, और एक खत हाथ में लिये हुए वापिस लौटी।

जीन ने पत्र को खोलकर पढ़ा, और पूछा—"क्या किसी
नौकर दे गया है ?"

"जी हाँ।"

जीन ने फिर पत्र पढ़ा। लिखा था—

"मैडम, जिस व्यक्ति को आपने पत्र लिखा है, वह
सन्ध्या-समय आपके मकान पर आकर आपसे भेंट करे
आशा है, आप घर-पर-ही रहेंगी।"

बस, सिर्फ़ इतना-ही लिखा था।

जीन मन-ही-मन बोली—"मैंने तो बहुत-सों को लिख
क्या जाने यह किसका जवाब है !—किसी पुरुष का, या स्त्री
अक्षरों से भी कुछ प्रकट नहीं होता, दोनों-ही का लि
सकता है। पर लिफ़ाफ़े पर जो चिन्ह हैं, वे किसी बड़े दरबा
हैं ! ओह ! याद आगया। मैंने अमीर रोहन को भी तो
था, यह उन्हीं का जवाब मालूम होता है। बस, ठीक है !
गई। वाह ! मोशिये डि-रोहन जिनसे भेंट करने आयेंगे, आ
वह घर पर-ही रहेगी। हाँ, बहादुर रोहन, आओ, जीन
प्रतीक्षा में आँखें, बिछाये बैठी रहेगी। हाँ, अमीर से आ

तक उसने आशा न छोड़ी। किसी ऐरा-गैरा आदमी के ि
ग्यारह बजे का समय देर में शुमार नहीं किया जा सकता।

आख़िर बारह बजे, एक बजा, और इसके बाद कुर्सी
बैठे-बैठे ही कब इस रहस्यमयी रमणी को नींद आगई, यह
कहा जा सकता।

दूसरी सन्ध्या आई। जीन ने हिम्मत न छोड़ी, और
उसी तरह सिंगार-पटार से निबटकर बैठ गई। ठीक सात
एक गाड़ी दर्वाजे पर आकर ठहरी। दासी दौड़कर गई,
मिनट-भर में वापिस लौटकर 'एक अपरिचित सज्जन' के आने
सूचना दी।

एक मिनट बाद ही अमीर रोहन ने प्रवेश किया।

जीन इस बात से नाराज़ थी, कि अमीर ने उससे अप
नाम छिपाने की कोशिश की। इसलिये झट एक क़दम आगे ब
कर तपाक-से बोली—"मुझे किन महानुभाव के दर्शन करने
सौभाग्य प्राप्त हुआ है?"

"नाम तो मेरा अमीर रोहन है।"

यह नाम सुनकर अत्यन्त विचलित-भाव का प्रदर्शन करते
जीन ने झट एक आराम-कुर्सी अमीर के बैठने के लिये सरका
और ख़ुद दूसरी पर बैठी।

अमीर ने टोपी पास की मेज़ पर रख दी, और जीन
भर-नज़र ताकते हुए कहा—"आपने जो लिखा था, उसव
विस्तृत कहानी सुनना चाहता हूँ।"

'एकाकिनी'-शब्द से प्रभावित होकर अमीर ने कहा—"तो आप अकेली रहती हैं ?"

"जी हाँ, अकेली इस कमरे में पड़ी मुसीबत के दिन काटती हूँ।"

"राज-मन्त्रियों ने आपकी प्रार्थना पर कुछ ध्यान न दिया?"

"जी नहीं, कुछ नहीं; भाग्य में होता, तब न।"

"मैडम," अमीर ने द्रवित कण्ठ से कहा—"मेरे योग्य जो सेवा हो, कहिये।"

"कुछ नहीं, आपकी कृपा है।"

"कुछ नहीं ? यह कैसे ? साफ़-साफ़ कहिये।"

"साफ़-साफ़-ही तो कहती हूँ; आप मुझे दान देना चाहते हैं!"

"ओहो ! यह बात !"

"जी हाँ, यह बात ! बेशक, मैंने दान पर गुज़र की है, पर अब आगे न करूँगी।"

"मैडम, आप भूलती हैं, बुरे दिनों में सब-कुछ करना पड़ता है।"

"नहीं, दान लेकर अपने परिवार के नाम को कलङ्क न लगाऊँगी। आप बताइये, क्या आप भीख माँगना गवारा कर हैं ?"

"मैं अपनी बात नहीं कह रहा हूँ।" अमीर ने कुछ विरक्त होकर उत्तर दिया।

"सोचिये, भीख-ही पर गुज़ारा करना होगा, तो सड़कों पर माँगूँगी, या गिर्जाघर के द्वार पर-जा खड़ी होऊँगी। अब जब

"उनमें-से एक ने आप को यह दे दिया ?"

"नहीं; भूल गई थीं !"

अमीर कुछ देर स्तब्ध रहा। फिर पूछा—"इन महिला का नाम क्या था ? इतने प्रश्न करने के लिये मुझे क्षमा कीजिये।"

"हाँ, आपके प्रश्न हैं तो कुछ अद्‌भुत-से।"

"अनधिकार-पूर्ण कहिये; अद्‌भुत नहीं।"

"नहीं, बहुत अद्‌भुत हैं, क्योंकि मैं उनका नाम जानती, तो अब तक यह बक्स वापिस भेज देती।"

"तो आप यह भी नहीं जानतीं—वे थीं कौन ?"

"मुझे तो यही मालूम हुआ कि वे किसी परोपकारिणी-संस्था की नेत्री थीं।"

"पेरिस की ?"

"न, वर्सेई की।"

"वर्सेई ?—परोपकारिणी-संस्थाओं का घर !"

"मोशिये, बात यह है, कि मैं स्त्रियों का दिया हुआ स्वीकार कर लेती हूँ। एक स्त्री के लिये यह ज्यादे काम नहीं है। यह महिला जब गईं, तो मुझे सौ लुई दे गईं।"

"सौ लुई ? एक-दम ?" अमीर किसी सोच में पड़ा, फिर तुरन्त बोला—"क्षमा करें, मुझे इसमें कुछ आश्चर्य आपकी दुर्दशा का हाल सुनकर समर्थ लोग जो-कुछ दें थो मैं तो इस महिला के विषय में चकित हूँ। अच्छा, ज़रा रूप-रेखा तो बताइये।"

"यह क्योंकर ?"

"वाह ! यह चित्र जो है।"

"हाँ, यह चित्र···"—अमीर ने कुछ विचलित होकर कहा।

"तो आपको विश्वास है, यह चित्र ऑस्ट्रिया की महारानी का है ?"

"हाँ, मेरा विश्वास है, अवश्य······"

"तब, आपका ख़याल है······?"

"मेरा ख़याल है, कोई जर्मन-महिला थीं, जिन्होंने यह जायदाद बनवाई होगी।"

"वर्सेई की······"

"हाँ, मैडम वर्सेई की।" कहकर चुप होगया।

पर यह स्पष्ट था, कि अमीर किसी गहरे सन्देह में पड़ गया है। उसे इस बात पर बड़ा अचरज था, कि यह बक्स—जिसे वा हज़ारों बार फ़ान्स की महारानी के पास देख चुका था—कैसे वह पहुँचा !

क्या वास्तव में महारानी-ही उससे भेंट करने आई थीं अगर वह आई भी थीं, तो क्या सचमुच जीन ने उसे पहचाना नहीं अगर पहचान भी लिया, तो उससे छिपाया क्यों ? अगर महारा की चरण-रज उसके घर में आचुकी है, तब तो वह साधारण नहीं रही, बल्कि एक राजकुमारी से भी ज्यादे सौभाग्यशालिनी

अमीर इन्हीं विचारों में पड़ा। जीन ने अनुभव किया, यह उस पर अविश्वास कर रहा है। बड़ी परेशान थी—

फिर भी सन्देह दूर करने के लिये पूछा—"अच्छा
महारानी के पास भी प्रार्थना-पत्र भेजा ?"

"जी हाँ, भेजा क्यों नहीं,—पर कुछ जवाब नहीं।"

"कभी उनसे भेंट करने की कोशिश की ?"

"कभी नहीं।"

"यह तो अजीब बात है !"

"बात यह है, कि वर्सेई में मेरे ज्यादे परिचित लोग नह
क तो हमारे पुराने डॉक्टर हैं, और एक वैरन टेवर्नी हैं
भी जाती हूँ, तो इन्हीं दोनों से भेंट करके चली आती हूँ।"

"लेकिन वैरन टेवर्नी आसानी से आपको महारानी
हुँचा सकते थे !"

"मैंने उनसे कहा था। उन्होंने उत्तर दिया, कि ग़रीब आद
ो राजा-महाराजाओं तक पहुँचने की धृष्टता नहीं करनी
योंकि इसमें सङ्कट का सामना करना पड़ जाता है !"

"मैं इस स्वार्थी, वैरन को अच्छी तरह जानता हूँ।" क
प्रमीर सोच में पड़ गया।

मिनट-भर बाद बोला—"यह बड़े-ही ताज्जुब बात है
तने ऊँचे ख़ान्दान की लड़की होकर भी आपने अब तक
ानी से भेंट न की !"

"संयोग की बात है !"

"अच्छी बात है," वह बोला—"मैं आपको अपने साथ
चलूँगा, और महारानी से आपकी भेंट कराऊँगा।"

"मैं यह कहना चाहती हूँ, कि आपका
उस स्त्री के प्रति हो सकता है, जिसे आप
हों, या उसके प्रति, जिससे आप घृणा करते

"काउण्टेस, आपकी बात मे मैं ल
वास्तव में आपके प्रति मैंने कुछ अशिष्ट व्य

"वास्तव में; पर मैं यह आशा नहीं क
इतना-ज्यादे प्यार करने लगे हैं, जो शिष्टता
उठ जाय।"

अमीर ने जीन का हाथ दबाकर कहा—
नाराज होगईं?"

"जी नहीं, नाराजगी की क्या बात है!"

"नहीं, कोई बात होगी भी नहीं; निश्चय र
वादा करता हूँ, कि आज के बाद सदा आपका
रक्षक रहूँगा।"

"ओह! मोशिये, रक्षा की बात मत कहिये

"बेशक, ऐसी बात कहकर मैंने अपनी-ही
दिया है।"—कहकर उसने जीन का हाथ कसकर

जीन ने हाथ खींचने की कोशिश की, पर
से—"देखिये, शिष्टाचार को न भूलिये!" सुनकर

"खैर," वह बोली—"यही बात क्या मेरे लिये
की है, कि मुझ-सरीखी अपदार्थ स्त्री के लिये आप
मन में जरा-सी जगह रहेगी!"

"तब ?……एक तरकीब और है।"

"क्या ?"

"अगर मेरी जगह आप मेरे घर पर आया करें!
मुझे तो जानती है, पर क्षमा कीजिये, आपको नहीं।"

"आपका मतलब है, कि मैं आपके डेरे में आया करूँ
"क्या हर्ज है ? एक राज-मन्त्री से हजारों आदमी
आते हैं !"

"हूँ !" कहकर जीन चुप होगई।

अमीर ने कहा—"बुरा न मानिये, कल सुबह आपके
से एक मकान खरीद लिया जायगा ! आप वहाँ आसकती
दोनों ने दोनों को देखा, और दोनों भिन्न-भिन्न भावों से
ही-मन मुस्करा पड़े।

७

मैस्मिरिज्म का आविष्कर्त्ता मेसमर उन दिनों सारे
की दिलचस्पी की चीज बना हुआ था। पेरिस में तो
बहुत धूम थी। हर वक्त लोगों की भीड़ लगी रहती थी
अमीर, क्या गरीब; क्या स्त्री, क्या मर्द; क्या स्वस्थ और
अस्वस्थ—सभी तरह के मनुष्य मेसमर से मिलने, बात करने
का निदान कराने, गुप्त बात पूछने अथवा केवल दर्शन क
लिये वहाँ जाते थे।

पिछले किसी बयान में हम लिख आये हैं, कि महाराज

पहले तो वह वर्सेई गई, और समस्त दान-संस्थाओं में पूर्वोक्त जर्मन-महिलाओं के विषय में पूछ-ताछ की। मिलने को तो एक-दो नहीं, डेढ़-दो सौ निकल आईं, पर एएड्रो-नामक उस महिला का पता न लगना था, न लगा। अमीर से इस विषय में ज्यादा पूछ-ताछ करना उसने अनुचित समझा, क्योंकि वह उसके मन में यह सन्देह भी पैदा होने देना नहीं चाहती थी, कि वह इस बात के प्रति कुछ दिलचस्पी रखती है।

इन दोनों महिलाओं के विषय में उसकी उत्सुकता उत्तरोत्तर बढ़ने लगी, और जब वर्सेई में कहीं उनका पता न लगा, तो उनका पता लेने के लिये उसने मोशिये मेस्मर के पास जाने की ठानी।

जिस दिन का हम जिक्र कर रहे हैं, उस दिन मेस्मर के मकान पर रोज की-सी असाधारण भीड़ थी। मेस्मर से भेंट करने के लिये जो-जो ज्यादे उत्सुक थे, उनकी मण्डली सबसे आगे थी। इनमें भी एक सुन्दरी युवती बेतरह व्यग्र दिखाई देती थी। वह कुर्सी पर बैठी, सिर लटकाकर व्यस्त-भाव से बार-बार भीतर-बाहर और इधर-उधर ताकती थी और फिर उठकर बैठ जाती थी। न-जाने उसमें क्या विचित्रता थी, कि जो उसे देखता था, स्तम्भित-सा रह जाता था, और दो क़दम पीछे हट जाता था। यहाँ तक कि उसके आस-पास अच्छी-खासी भीड़ लग गई थी, जो उसकी तरफ देख-देखकर कुछ टोका-टिप्पणी कर रही थी।

अब जीन फिर चौंकी।

"महारानी!" बहुत-सी आवाजें एक-साथ निकलीं—"महा
—यहाँ! महारानी—इस अवस्था में! असम्भव!"

"लेकिन देखिये न," उस पुरुष ने फिर कहा—"आप
महारानी को पहचानते नहीं?"

"निस्सन्देह!" बहुत-सों ने कहा—"सूरत तो मिलती है

"मोशिये," जीन ने उस पुरुष के पास जाकर कहा—"
ने महारानी का नाम लिया था?"

"बेशक!"

"तो वे हैं कहाँ?"

"वे बैठी हैं न, गद्देदार कुर्सी पर!"

"लेकिन इसका प्रमाण क्या?"

"बस, यही कि वे महारानी हैं।"—कहता-कहता
स खबर का प्रचार करने के लिये जीन को छोड़कर
ाया।

जीन पीछे हटी, और ज्यों-ही द्वार की ओर मुड़ी, वे
स्त्रियें सामने आ पड़ीं, जिसे उसने भीतर घुसते देखा था
ो लम्बे क़दवाली पर नजर पड़ते-ही उसके मुँह से आर
एक चीख निकल पड़ी।

उस स्त्री ने पूछा—"कहिये, क्या हुआ?"

जीन ने नक़ाब उतारकर विनम्र भाव से कहा—'
मुझे पहचाना?"

स्त्री का भाव बदला, पर तुरन्त सम्हलकर उसने कहा—
नहीं, मैडम।"
"खैर, मैंने आपको पहचान लिया, और एक प्रमाण भी मेरे
पास मौजूद है।" कहकर उसने बक्स निकाला, और कहा—
"आप इसे मेरे घर भूल आई थीं।"
"लेकिन अगर यही बात थी, तो आप मुझे देखकर इतनी
व्यग्र क्यों हो उठीं?"
"मैं उस खतरे के भय से विचलित हो उठी थी, जिससे शीघ्र-
ही महारानी को सामना पड़ेगा।"
"साफ-साफ कहिये।"
"जब-तक आप इस नगीने को न पहन लें, तब तक न कहूँगी।"
पर उसने अपना नगीना महारानी को देना चाही। उन्होंने
स्वीकार किया, तो वह तुरन्त बोली—"महारानी, एक क्षण का
विलम्ब भी घातक है, इसे स्वीकार कर लीजिये।"
जब महारानी ने नगीना पहन ली, तो जीन ने कहा—"और
अब कृपा करके इधर चलिये।"
"यह क्यों?"
"आपको यहाँ अभी तक किसी ने देखा तो नहीं है?"
"मेरा ख्याल है, नहीं।"
"यह बड़ी अच्छी बात है।"
महारानी बच्चे की तरह दरवाजे की तरफ बढ़
चलते-चलते बोलीं—"लेकिन बताओ तो सही, बात"

"हाँ, यह तो ठीक है।......पर देखिये, आप ऊपर की मञ्जिल में चले जायँ, जब वह कमरे में आयेगा, तो मैं भीतर से दर्वाजा बन्द कर लूँगी, और आप तब आराम के साथ जा सकते हैं।"

"अच्छा, तो विदा!"

"कब-तक।"

"आज-ही रात तक।"

"आज-ही रात तक! पागल हुए हैं?"

"बिल्कुल नहीं; बात यह है, कि आज ऑपेरा में नाँच है, मुझे वहीं मिलना।"

"लेकिन अब तो क़रीब आधी रात बीती!"

"कोई बात नहीं।"

"लेकिन नाँच की पोशाक भी तो चाहिये।"

"ब्यूसर ला देगा।"

"ठीक है!" ओलिवा हँसते हुए बोली।

"यह लो दस लुई, पोशाक के लिये।"

"वाह! धन्यवाद! अच्छा नमस्कार। जल्दी कीजिये, वह रहा है!"

आजनबी जब ज़ीने से उतर रहा था, तो प्रेमिक-प्रेमिका की मार-धाड़ और गाली-गलौज की आवाज़ उसके कान में पड़ी।

भीतर कमरे में क्या बीत रही थी, अब वह सुनिये। जब ओलिवा ने कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द किया, तो ब्यूसर

"क्यों भला, अब क्यों नहीं ?"

"क्योंकि अब तुमने मेरी सहायता जो की है !"

"तुम बड़े गन्दे आदमी हो !"

"वाह ! मेरी प्यारी ओलिया···!"

"बस, लाओ, मेरा रुपया वापस !"

"ओ हो ! प्यारी······"

"नहीं दोगे, तो यही तलवार तुम्हारे बदन के पार कर दूँगी"

"ओलिया !"

"क्या, दोगे नहीं ?"

"वाह ! तुम्हें क्या इसे और कहीं लेजाना है ?"

"ओह, कापुरुष ! तुम—तुम मेरी पाप की कमाई को हाथ जोड़ते हो ! वाहरे, पुरुष-जाति ! यहाँ तुम्हारा महल मैंने हमेशा तुम्हारा पेट भरा !"

"लेकिन जब मेरे पास हुआ, तो मैंने भी दिया था, निकल"

"मुझे 'निकल' मत कहो।"

"माफ़ करो ओलिया। बताओ, क्या मेरी बात सच नहीं"

"हाँ, सच है; बहुत भारी भेंट दी थी ! तीन रूमाल, दो रे जोड़े, छः लुई नक़द, और कुछ चाँदी के जेवर···।"

"वाह ! यह क्या कम है ?"

"बस, चुप रहो। जेवर तो तुमने कहीं से चोरी किये थे, सिक्के तुमने उधार लिये थे, और देने के नाम अँगूठा दिखाया, रेशमी जोड़े······"

"न, मैं तो नहीं जाने का !"

ओलिया ने जेब में और सिक्के निकाले, और उसके हाथ दे दिये।

न्यूसर ने उसके सामने घुटने टेक दिये, और कहा—"हुक्म दीजिये, मैं सिर-आँखों से मानूँगा।"

"उस बाजार में जाओ, जहाँ नाच की पोशाकें बिकती हैं और मेरे लिये एक खरीद लाओ।"

"जो आज्ञा।"

"और एक अपने लिये भी—काली, पर मेरी सफ़ेद और देखो, बीस मिनट के भीतर-भीतर लौट आना !"

"तो क्या नाँच में चलोगी ?"

"हाँ, अगर तुमने जाने दिया—तो।"

"वाह ! क्यों नहीं जाने दूँगा ?"

"अच्छा, तो फिर चल दो—देखूँ तो, तुम्हारी फ़ुर्ती !"

"जा तो रहा हूँ, पर रुपया······ ?"

"पच्चीस लुई तो गिनकर जेब में रक्खे हैं !"

"ओहो, मैं समझा—वे तुमने मुझे बख्श दिये थे।"

"तुम्हें फिर दूँगी। अब दूँगी—तो तुम सीधे जुए के अड्डे पर पहुँचोगे, और देर लगा दोगे।"

"ठीक कहती है !" उसने आप-ही-आप कहा—"ठीक, यही मेरे दिल में था !"

—और, वह चल दिया।

"क्यों नहीं ? यह है-ही क्या मैडम ?—मैं तो,और की खोज में था, पर मैंने सोचा, शायद आप स्वीकार करने में फानी करें।"

"ओह ! मोशिये, मेरे लिये तो इसे भी स्वीकार असम्भव है !"

"असम्भव ? क्यों ?—यह शब्द मुझसे न बोलो ! मकान की चाबियाँ ! मकान आपका होचुका ! क्या इसमें लज्जा आती है ?"

"नहीं, लेकिन......"

"न, बस, स्वीकार कीजिये।"

"मोशिये, मैं कह चुकी हूँ।"

"क्यों मैडम ? मन्त्रियों के पास तो आप वर्षों लिखती हैं, एक अपरिचित रमणी का सौ लुई का दान स्वीकार कर लेती हैं, और......"

"जी नहीं, वह दूसरी बात है।"

"नहीं, कुछ दूसरी बात नहीं है। आओ, मैं आपको मकान के कमरे दिखा दूँ।"

"मोशिये, मुझे आप माफ़-ही रक्खें, तो अच्छा है, मैं आभार से दबी जारही हूँ।"—कहते-कहते उसका मुँह लाल हो उठा, फिर किसी तरह सम्हलकर वह बैठी, और "अच्छा, अब पेट-पूजा की फ़िक्र कीजिये।"

अमीर भोजन के लिये तैयार हो बैठा।

हूँ, और दुनियाँ में अपने-आप को किसी से कम नहीं
हूँ। मैं अपने-आप को किसी से कम नहीं समझ
अपने लिये सब-कुछ करने के लिये पूर्ण स्वतन्त्र हूँ। बस,
आप दया करके मेरा थोड़ा आदर कीजिये, और उस प्र
लिये थोड़ा खयाल रखिये, जिससे मेरा और आपका
ही सम्बन्ध है।"

अमीर उठा, और बोला—"समझ गया—आप यह
हैं, कि मैं आपसे गम्भीरतापूर्वक प्रेम करूँ?"

"ना, मैं यह नहीं कहती, मैं तो इस योग्य बनना चा
कि मैं आपको प्यार कर सकूँ। जब-कभी मौक़ा आय
परीक्षा अपने-आप हो जायगी। मैं अपने मुँह से कुछ कहन
चाहती।"

"काउण्टेस, मेरी तरफ़ से भी आप कभी कोताही न पावें

"अच्छी बात है, देखा जायगा।"

"दोस्ती तो हमारी-आपकी पहले-ही हो चुकी है। क्यों

"बेशक!"

"वाह! तब तो हम कम-से-कम अध-बीच में हैं, और
चढ़ना······"

"महारानी के सम्मुख" जीन ने कहा—"आप मेरे साथ......"

अमीर ने लज्जित होकर सिर झुका लिया।

न-जाने जीन को अमीर के सङ्कट पर दया आ गई, या उसे कोई चाल समझी, कि झट-से बोलकर इस विपत्ति से अमीर की रक्षा करली—"आप खुद-ही सोचिये, कि आपके इतने वादे करने के बाद भी अपने प्रति एक रानी से हीन व्यवहार पाकर मुझे दुःख होगा, या नहीं?—और उस अवस्था में, जब कि मैं आपको लबादे और नक़ाब में ले चलना चाहती हूँ। और फिर आपका ऐसा प्रभाव है, कि आप हर जगह आसानी से आ-जा सकते हैं।"

अमीर ने हार मान ली और जीन का हाथ पकड़कर कहा—"आपके लिये मैं अन-होना काम भी करने को तैयार हूँ।"

"धन्यवाद, मोशिये, आप वास्तव में सच्चे प्रेमी हैं। पर अब आपने मेरी बात रख ली है, तो मैं भी आपकी प्रतिष्ठा को खतरे में न डालूँगी; मैं अपना प्रस्ताव वापस लेती हूँ।"

"नहीं, नहीं, कुछ करने के बाद-ही मैं बदले का अधिकारी हूँ। मैं चलूँगा, लेकिन नक़ाब लगाकर-ही।"

"चलिये, रस्ते में-से खरीद लेंगे।"

शीघ्र-ही दोनों एक किराये की गाड़ी में बैठकर ऑपेरा-हाउस की तरफ़ चल दिये।

"तो इसमें अचरज की क्या बात है ? अगर कोई भीतर आयेगा, तो मैं देखूँगी-ही, आई-ही इसलिये हूँ।"

"अच्छा ! इसीलिये आई हो ?"

"तो लोग और किसलिये आते हैं ?"

"हजारों बातें हैं।"

"हाँ, शायद मर्द-लोगों के लिये हजारों बातें होती होंगी, पर औरतों के लिये तो सिर्फ़ यही काम होता है, कि जो कोई आये, उसे ताके, और खुद अपनी छवि उसे दिखाये। औ हाँ, अब तो मैं यहाँ पहुँच-ही गई, अब तुम चाहो तो सकते हो।"

"ओहो ! श्रीमती ओलिवा महोदया......"

"च, ऐसे जोश में न आओ, मैं तुम्हारी भभकी में आने नहीं; हाँ, मेहरबानी करके मेरा नाम न लो, मैं नहीं चाहती यहाँ लोग तुम्हारी असलियत से परिचित हों।"

काली नक़ाबवालें ने क्रोध का प्रदर्शन किया, और कुछ कहना-ही चाहता था, कि सहसा एक नीली नक़ाबवाले ने आकर टोक दिया।

"देखो, मोशिये," उसने कहा—"मैडम को दिल भरकर नाच का लुत्फ़ उठाने दो। यह बेचारी क्या रोज-रोज ऑपेरा की सैर करने आती है।"

ब्यूसर ने रुखाई से जवाब दिया—"अपने रस्ते लगो, तुम्हें पराये झगड़ों से क्या काम ?"

"आहो ! भगवान !"

"शान्त, सोचिये शान्त ! मालूम होता है, आप अपने तक खोज रहे हैं।"

"हाँ, खोज तो रहा हूँ।"

"धन्य भगवान ! मेरा अनुमान सच निकला ! पर देखिये, आप तो अपनी तलवार को घर भूल आये। खैर, अच्छा हुआ! अच्छा, अब एक बात सुनिये। आप थोड़ी देर के लिये एक महिला को मेरे साथ छोड़ सकते हैं ?"

"आपके साथ ?"

"हाँ, हाँ, इसमें अचरज की क्या बात है ? अंधेरा के नातों में तो ऐसा होता-ही है।"

"क्यों, यह बात कोई मर्द की इच्छा पर निर्भर थोड़ा-ही है।"

"लेकिन अगर स्त्री की इच्छा भी हो—तो ?"

"तो क्या आप उन्हें ज्यादे देर तक रखना चाहेंगे ?"

"आप तो बड़े व्यग्र जान पड़ते हैं ! ज्यादा-कम देर का कुछ निश्चय नहीं है, शायद दस-ही मिनट काफ़ी होंगे, शायद घण्टा-भर लग जाय, शायद सारी रात-ही निकल जाय !"

"आप मेरा मजाक़ उड़ा रहे हैं !"

"न, बिल्कुल नहीं; बोलिये—मंजूर है ?"

"ना साहब, नहीं।"

"मान जाइये, नाराज न हूजिये, अभी थोड़ी देर पहले तो आप सौजन्य के पुतले बने हुए थे।"

नीली नक़ाब ने हीरे जड़ी हुई घड़ी जेब से निकालकर देखी,
जिस पर नजर पड़ते-ही ब्यूसर के मुँह में पानी भर आया। नीली
नक़ाबवाले ने घड़ी देखकर कहा—"पन्द्रह मिनट बाद-ही आप
बहादुर साथी एक गहरे माल पर हाथ मारने के विषय पर विच
. . . ।"

ब्यूसर विचार में पड़कर बोला—"तो आप सच कहते हैं!"

"आपका भाग्य-ही खोटा है! मैं तो आपके भले की बात क
रहा हूँ, और आपकी समझ में नहीं आती।"

"और अगर वहाँ जाते-ही मैं पकड़ा जाऊँ, आपकी बात क
क्या भरोसा?"

"पकड़ना ही होता, तो क्या यहाँ नहीं पकड़ सकता था? बस,
आपका दिमाग़ खराब हो गया दिखता है।"

"अच्छा, वो फिर सलाम!" कहता हुआ ब्यूसर उड़ गया।

नीली नक़ाब वाले ने ओलिवा का हाथ थाम लिया।

ओलिवा ने छूटते-ही कहा—"देखिये, ब्यूसर से तो आप
जो जी चाहा, कहा, पर मुझसे अच्छी-अच्छी बातें करना।"

"मुझे तो खुद आपके इतिहास से अधिक अच्छी बात कोई
नहीं लगती, निकल!" कहकर उसने ओलिवा का हाथ धीरे-से
दबाया।

ओलिवा यह नया सम्बोधन सुनकर थर्रा उठी। बोली—
"यह क्या!—यह तो मेरा नाम नहीं है।"

"हाँ, अब नहीं है; पर पहले था। इसमें अचरज की

नीली नक़ाबवाले ने कोई उत्तर न दिया, तो ओलिवा व्यग्र होकर
ली—"यह तो बता दीजिये, वह ट्रायनन से भागा क्यों था!"

"अफ़सोस! मैं कुछ नहीं बता सकता!"

"क्यों?"

"तुमने सुना नहीं—गिल्बर्ट मर चुका?"

"सुना तो—पर विश्वास नहीं हुआ!"

दोनों कई मिनट तक चुप रहे। तब सहसा ओलिवा बोल उठी—"सोशिये, हाथ जोड़ती हूँ, आप एक बार नक़ाब हटाकर अपना मुँह दिखा दें।"

नीली नक़ाब से हँसी की आवाज़ निकली, और दूसरे क्षण एक चेहरा भीतर से निकल आया।

ओलिवा ने ध्यान से देखा—"न, नहीं, गिल्बर्ट नहीं है!"

नक़ाब यथा-स्थान पहुँच गई, तो अजनबी ने कहा—"अगर मैं गिल्बर्ट होता, तो······ब्यूसर······?"

"तो?—तो?" ओलिवा ने हठात् उन्मत्त भाव से कहा—"अगर वह होता, और कहता—'निकल, अपने प्यारे टेवर्नी को पहचानती हो?'—तो फिर ब्यूसर चाहे चूल्हे में पड़ता!"

"लेकिन ख़ैर, अब तो बेचारा गिल्बर्ट मर-ही चुका!"

"ख़ैर, शायद······जो होना था, सो हो गया!"

"हाँ, ठीक-ही हुआ। बात यह है, कि तुम इतनी सुन्दरी हो कि तुम्हें प्यार करना उसके लिये सम्भव-ही न था।"

"तो क्या आपके ख़याल में उसने मुझसे विश्वास-घात किया

...याने वैसा ही किया।
...एक मिनट बाद दो [illegible] नवयुवक के पास से गुज़रे, जिन्हें
...[illegible] से ऐसा मालूम पड़ता था। इस नवयुवक के [illegible]
...एक अत्यन्त सुन्दर युवक जहाँ-तहाँ कुछ बातें करता था।
"यह काली नक़ाबवाला नवयुवक कौन है?" ओलिविया
...पूछा।

"माफ़िये हिज़्हाईनेस, पर कृपा करके अब मत बोलो।"

इसी समय दो नक़ाबवाले पास से गुज़रे, और एक ख़ास जगह पर जाकर खड़े हुए।

"इस खम्भे पर झुककर खड़े रहो," इनमें से एक ने क[हा],
जिसे सुनकर ओलिविया का साथी चौंक पड़ा।

इतने में पीली नक़ाब लगाये हुए एक व्यक्ति ओलिविया के साथी के कान में बोला—"वह है, जो काली नक़ाब लगाये है।"

"बहुत अच्छा।" उस नक़ाबपोश के साथी ने उत्तर दि[या],
और साथ-ही पीला नक़ाबपोश ग़ायब हो गया।

"अच्छा तो," ओलिविया के साथी ने कहा—"अब ज़रा मनोरंजन का कुछ सामान करें। देखो, एक काम करो।"

"क्या?"

"वह काली नक़ाबवाला जर्मन है, और मेरा परिचित है। घर पर मैंने उससे बॉल में आने का प्रस्ताव किया था, तो उसने कहा, मैं नहीं जाऊँगा, तबियत ठीक नहीं है। अब देखता हूँ, हज़रत मौजूद हैं।"

"पूछिये।"

"क्या कुछ गुप्त बात है?" जीन ने पूछा।

"हाँ, ऐसी गुप्त, जिसे आपको नहीं सुनना चाहिये।" कहकर उसने ओलिवा के कान में कुछ कहा। बदले में उसने भी कुछ संकेत किया। तब उसने चुभती हुई जर्मन भाषा में अमीर से पूछा—"मोशिये, जो रमणी आपके साथ है, क्या आप इसे प्यार करते हैं?"

अमीर काँप उठा। बोला—"आपको ऐसी हिम्मत?"

"हाँ।"

"आपने धोखा खाया; मैं वह नहीं हूँ, जो आप समझते हैं।"

"ओह! मोशिये अमीर, इन्कार न कीजिये, मैंने चाहे धोखा खाया हो, पर मेरे साथवाली महिला मुझे विश्वास दिलाती है, कि वे आपको अच्छी तरह जानती हैं।" कहते-कहते उसने ओलिवा के कान में कहा—संकेत से 'हाँ' कहो, और जितनी बार मैं तुम्हारा हाथ दबाऊँ, ऐसा संकेत करती रहना।"

उसने वैसा-ही किया।

"ताज्जुब है! अमीर ने कहा—"यह महिला कौन है?"

"ओह! मोशिये, मैंने सोचा, आप भी इन्हें पहिचान होंगे। बात यह है, उनकी तरफ तो ईर्ष्या......"

"मैडम मुझसे ईर्ष्या रखती हैं।"

"छी:! मैंने यह कब कहा!"

"क्या बातें हो रही हैं?" जीन ने, जर्मन-भाषा का अक्षर न समझकर कहा।

र

अमीर तो इस जर्मन-महिला के विषय में ऐसा तन्मय था
जीन के इस भाव की तरफ़ उसका खयाल भी नहीं गया।
"मैडम," उसने कहा—"आपने जो शब्द मुझसे कहलाये हैं
मैंने किसी मकान की दीवार पर पढ़ा था। शायद श्रीमतो
मकान से......"

अजनबी ने ओलिवा का हाथ दबाया, और उसके संकेत
हाँ' कहा।

अमीर के पैर लड़खड़ा गये। सहारे के लिये उसने एक खम्भा
पकड़ लिया। जीन पास खड़ी, यह अद्भुत दृश्य देख रही थी।
अमीर ने अजनबी के कन्धे पर हाथ रखकर कहा—"देखिये
आपकी बात का यह जवाब है—'जो हर जगह अपनी प्रेमि
की सूरत देखता है, जो एक फूल की सहायता से, किसी सुगन्धि
के कारण, मोटी-से-मोटी नक़ाब के, भीतर, उसे पहचान लेता है
वह यह ताना सुनकर भी चुप रहने का धैर्य रखता है; उसने
दिल की बात दिल-ही में छिपी है, अगर कोई दिल वाला उस बा
को समझ सके, तो उसे सन्तोष होगा।'"

"अरे, ये लोग तो जर्मन बोल रहे हैं!" सहसा किसी तरफ़
से आते हुए झुण्ड में-से एक युवक ने कहा—"आओ, इनकी
बातें सुनें। मार्शल, आप जर्मन जानते हैं?"

"न, मोशिये।"

"तुम, चर्नी?"

"जी हाँ, जानता हूँ।"

"अगर आप कहें, तो अब चला जाय।" अमीर रोहन ने जीन से कहा।

"जैसी आपकी इच्छा।"

अमीर लम्बे-लम्बे डग धरता हुआ चल पड़ा। चारों तरफ रङ्ग-बिरङ्गी नक्शायें नजर आ रही थीं, पर वह जिसकी खोज में था, वह न मिलनी थी, न मिली।

दोनों गाड़ी में बैठे, और गाड़ी चली। जीन ने पूछा- "मोशिये, यह गाड़ी मुझे और आपको कहाँ लिये जा रही है?"

"तुम्हारे घर काउण्टेस—और कहाँ?"

"कौन-सा घर?—नया, जो आपने मेरे लिये खरीदा है?"

"हाँ, काउण्टेस, उसी साधारण कुटिया में।"

गाड़ी रुकी। जीन उतरी। अमीर भी उतरने की तैयारी में था, कि जीन ने उसे रोक दिया। बोली—"रात बहुत बीत चुकी है मोशिये।"

"क्या थोड़ी देर अपने साथ रहने की अनुमति आप मुझे नहीं देंगी?"

"और सोने की भी तो—क्यों?"

"काउण्टेस, इस मकान में तो कई शयन-कक्ष हैं।"

"हाँ, मेरे लिये हैं, आपके लिये न......"

"मेरे लिये कोई नहीं?"

"अभी नहीं," उसने कुछ ऐसे भाव से कहा, जिसमें आ... ...की झलक दिखाई देती थी।

१०

ऑपेरा के नाँच के तीन दिन बाद की बात है। हम अ
पाठकों को एक छोटे, सकरे, गन्दे मकान में ले चलते हैं।
अँधेरी गली में यह घर स्थित है। इस में रिल्यू नामक एक ग
पत्रकार रहता है। हर हफ्ते इसका पत्र प्रकाशित होता है,
हमेशा कोई-न-कोई झगड़ा-बखेड़ा खड़ा हो जाता है। कभी
अमीर के चरित्र पर कुछ टीका-टिप्पणी प्रकाशित हो जाती है, तो
बेचारे को मार सहनी पड़ती है, या कभी किसी राजकीय मामले
में कुछ क़लम निकल गया, तो सरकारी कर्मचारी आकर परेशान
करते हैं।

जिस दिन की बात कह रहे हैं, उस दिन पत्र का नया नम्बर
प्रकाशित हुआ था। सुबह के आठ बजे थे। मोशिये रिल्यू ज्योंही
जागे, नौकर ने ताज़े पर्चे की एक कॉपी प्रेस से लाकर दी। रिल्यू ने
उसे उलट-पलटकर देखा, तो बूढ़ी नौकरनी को पुकारकर कहा—
"एल्डी गोंडे, यह हमारे पत्र का विशेषाङ्क है; तुमने पढ़ा इसे?"

"अभी कहाँ से?—शोरवा तो तैयार हुआ-ही नहीं है।"

"बहुत-ही बढ़िया निकला है!" पत्रकार बोला।

"हाँ, निकला तो बढ़िया होगा," बुढ़िया ने जवाब दिया

"पर मालूम है; छापेख़ाने में लोग क्या कहते हैं?"

"क्या?"

"कि आपको अवश्य-ही जेल जाना पड़ेगा।"

रित्यू ने सादे कपड़े पहने एक सुन्दर युवक को द्वार पर खड़े देखा। द्वार खुलते-ही वह झट भीतर आ गया।

रित्यू ने काँपकर कहा—"कहिये, क्या आज्ञा है ?"

"तुम्हारा ही नाम मोशिये रित्यू है ?"

"हाँ, मोशिये।"

"तुम्हींने यह लेख लिखा है ?" ताजा पर्चा जेब से निकालकर एक लेख पर उँगली रखते हुए युवक ने पूछा।

"लिखा नहीं, प्रकाशित किया है।"

"एक-ही बात है। मैं कहता हूँ जिसने इसे लिखा है, वह पाजी है, और जिसने प्रकाशित किया है, वह बदमाश ! समझे ?"

"यह क्या मोशिये……" रित्यू जर्द पड़कर बोला।

"यही कि अब तक तुमने पैसा पाया है, अब तुम मार पाओगे।"

"ओह ! इसके लिये…देखा जायगा।"

"अच्छा, तो देखो !" कहकर युवक आगे बढ़ा। पर रित्यू तो ऐसी दुर्घटनाओं का अभ्यस्त था, इसलिये उसने अपने मकान में चोर-दर्वाजा बना रक्खा था। अब वह तुरन्त पीछे कूदकर उस चोर-दर्वाजे की राह गायब हो गया, और पलक-मारते बाहर गली में पहुँच गया।

गली के दोनों तरफ लोहे के दर्वाजे लगे थे। आज का दिन जैसे रित्यू के लिये घोर दुर्भाग्य-पूर्ण था। ज्यों-ही वह एक तरफ के दर्वाजे पर पहुँचा, सामने से एक और नवयुवक हाथ में तलवार

चर्नी ने बेत उठाई, और रिल्यू की चिल्लाहट ने भीतर मदाम
एल्बी गोंडे को बता दिया, कि आज उसके स्वामी पर बुरी बीत
ही है। बस, वह भी रोने-चिल्लाने लगी।

आखिर जब चर्नी का हाथ थक गया, तो वह रुका। उधर
फ़िलिप दर्वाज़े के बाहर इस तरह उछल-कूद रहा था, जैसे तारे
मांस की गन्ध पाकर शेर कूदता है।

"कहिये, मोशिये, आप निबट चुके ?" उसने चर्नी से पूछ

"हाँ।"

"तो अब कृपा करके मेरी तलवार लौटा दीजिये,
दर्वाज़ा खोल दीजिये।"

चर्नी ने आगे बढ़कर कहा—"लेकिन मोशिये, इस तरह
आपका आगमन किस प्रकार हुआ ?"

"मैं भी इस बदमाश की खबर लेने आया था। यहाँ आकर
मैंने इसके विषय में पूछ-ताछ की। पता लगा—कि एक चोर
दर्वाज़े की राह यह इस गली में-से निकल भागता है। इसलि
मैंने पहले दोनों दर्वाज़ों को बन्द कर देने का विचार किया था

"मुझे आपको देखकर बड़ा आनन्द हुआ।" चर्नी ने कहा—
"अच्छा जनाब, आप अब हमें अपने प्रेस की सैर कराइये।"

"कॉपियाँ प्रेस में थोड़ा-ही हैं !" रिल्यू ने काँपते हुए कहा।

"झूठ ! अब भी झूठ !"

"न, प्रेस में तो नहीं हैं," फ़िलिप बोला—"कॉपियाँ सब छप
चुकी हैं, और जो एक हज़ार कगलस्तर के यहाँ चली गई हैं

मोशिये," चर्नी ने उत्तर दिया—"वह मेरे सिपुर्द केवल
ये हुआ, कि मैं पहले पहुँचा था।"

"ख़ैर," टेवर्नी बोला—"यहाँ हम लोग एक-साथ पहुँचते
मैं शिकायत करना चाहता नहीं।"

"मैंने आपसे किसी शिकायत के लिये प्रार्थना नहीं की, प
पने अधिकार की रक्षा तो करनी-ही पड़ेगी।"

"यानी?"

"यानी—मोशिये फगलस्तर से भी मैं-ही भुगतूँगा।"

"इसका फ़ैसला तो सीधी तरह हो सकता है। एक सिक्
उछालकर देख लिया जाय।"

"इसके लिये धन्यवाद; पर मैं भाग्यवान् नहीं हूँ, इसलि
मुझे हार जाने का भय है।"

फ़िलिप द्वार की ओर बढ़ा।

चर्नी ने रोककर कहा—"मोशिये, पहले हम लोग आपस
निबट लें।"

"अच्छा?" फ़िलिप रुककर बोला।

"हाँ, मैं चाहता हूँ पहले हम और आप निबट लें; जो
उसी के हिस्से फगलस्तर रहा।"

"अच्छी बात है, ऐसा-ही सही।"

चर्नी ने एक काग़ज़ पर कुछ लिखकर पास खड़े हुए
प्यादे को दिया, और अपने होटल का पता बताकर उसे
भेजा। चर्नी की गाड़ी पास-ही खड़ी थी, दोनों उसमें बैठ

ा -"क्या आप मुझे थकाना चाहते हैं ? यह तो आश्चर्य
चता है। अगर हो सके, तो मुझे मार डालिये, मगर इ
रह व्यर्थ देर न कीजिये।"

"मोशियें," फिलिप ने गम्भीर होकर कहा—"बात यह
कि मैं अपनी भूल पर विचार कर रहा हूँ, लड़ाई मेरी-ही तरफ
से शुरू की गई थी।

"इस वक्त यह सवाल नहीं है। आपके हाथ में तलवार है।
केवल अपनी रक्षा-ही न करके, उसका उचित उपयोग कीजिये।

"मोशियें," फिलिप ने कहा—"मैं एक बार फिर मानता
कि भूल मेरी ही है, जिसके लिये मैं माफ़ी चाहता हूँ।"

लेकिन चर्नी इस समय आवेश से पागल हो रहा था, फिलिप
की उदारतापर उसने ध्यान न दिया। चिल्लाकर बोला—"समझ गया
मैं तुम्हारी चालाकी समझ गया! तुम यह स्वांग रचकर
पर दया दिखाना चाहते हो, और शाम को स्त्रियों में मेरी
उड़ाया चाहते हो, कि किस प्रकार तुमने मेरी जान बख्श
"काऊण्ट," फिलिप बोला—"मुझे भय है, आपका दिमाग
ठीक नहीं है।"

"तुम कगलस्तर को मारकर महारानी के प्रिय-पात्र बनना
चाहते हो, और मुझे रुसवा करने का विचार रखते हो।"

"ओह! अब नहीं सहा जाता! बहुत हुआ!" फिलिप
चिल्लाया—"मालूम होगया, मैंने जैसा समझा था, वैसा
मिल नहीं है।"

"हुआ-ही क्या है ! तलवार से ज़रा-सी खाल छिल गई।
ज़रा देर में ठीक हो जाऊँगा।"

चर्नी ने और कुछ कहने को मुँह खोला, पर बोल न सका,
लड़खड़ा गया। फिलिप ने झट आगे बढ़कर उसे हाथों प
लिया, और अर्द्ध-मूर्च्छितावस्था में उठाकर गाड़ी तक ला

कोचवान दूर से सब देख रहा था। आगे बढ़कर उ
मदद दी, और दोनों ने चर्नी के मूर्च्छित शरीर को गाड़ी

फिलिप ने कहा—"धीरे-धीरे हाँकना।"

गाड़ी वर्सेई की सड़क पर मुड़ गई। फ़िलिप खड़ा
देर उधर ताकता रहा, फिर एक लम्बी साँस लेकर
बोला—"वह उस पर दया करेगी।"

तब वह धीरे-धीरे सदर सड़क की तरफ़ बढ़ा।

११

सदर सड़क पर एक गाड़ी मिल गई, और फ़िलिप कगलस्तर के मकान के सामने जाकर उतरा।

गली में एक बहुत बड़ी गाड़ी खड़ी थी; कोचवान सो रहा था, और दो साईस, वर्दियाँ पहने, इधर-से-उधर घूम रहे थे।

"काऊण्ट कगलस्तर का मकान यही है?" फ़िलिप ने पूछा।

"हाँ; अभी बाहर आनेवाले हैं।"

"तब तो मुझे और भी जल्दी करनी चाहिये। मुझे उनसे ज़रूरी मिलना है। जाकर उन्हें मेरी सूचना दो। फ़िलिप डि-टेवर्नी मेरा नाम है।"

पाँच मिनट बाद फ़िलिप उस आदमी के सामने खड़ा था, जिसे हम पुस्तक के आरम्भ में नोशिये रिशलू की दावत में, फिर मेस्मर के घर पर, फिर ओलिवा के कोठे पर, और उसके साथ ऑपेरा-भवन में देख चुके हैं।

देखते-ही कगलस्तर बोला—"आइये, मैं तो आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था।"

"मेरी प्रतीक्षा?"

"हाँ, मुझे आपके शुभागमन का ज्ञान पहले-ही हो गया था।"

"मेरे आगमन का?"

"हाँ, दो घण्टे पहले। शायद ठीक उस समय, जब आ

अपना विचार कुछ देर का स्थगित करने पर मजबूर हुए

फिलिप विस्मय-विमुग्ध होने लगा।

"बैठ जाइये, मोशिये," कलाकार बोला—"यह मा
मैंने आप-ही के लिये रखवाई थी।"

"अच्छी दिल्लगी है।"

"न मोशिये, मैं दिल्लगी नहीं करता।"

"तो फिर जादू है।   और, अगर आप जादूगर हैं।
जिस प्रकार मेरे आगमन की सूचना आपको पहले मिल गई
उसी तरह मेरे उद्देश्य की सूचना भी मिल गई होगी, और
अपनी रक्षा का बन्दोबस्त भी कर लिया होगा।"

"रक्षा का बन्दोबस्त?" जादूगर ने कहा—"किसने
करनी है मुझे, मोशिये?"

"आपको तो सब-कुछ जान लेने की ताक़त है, जान लो।"

"जान लिया; आप मुझसे लड़ने आये हैं।"

"तो शायद यह भी जान लिया होगा, कि क्यों
आया हूँ?"

"महारानी की बात······। हाँ, तो मोशिये, मैं
बात सुनने को तैयार हूँ।" इसके अन्तिम शब्द प्रतिद्वन्द्वी
कठोरता का प्रदर्शन करते थे।

"आपको उस लेख का तो पता होगा?"

"बहुतेरे लेख आते हैं—किसकी बात कहते हैं?"

"जो महारानी के विरुद्ध प्रकाशित किया गया है?"

कगलस्तर ने लापर्वाही से खवे हिलाये; मानो किसी पागल से पाला पड़ गया है।

फ़िलिप ने क्षुभित होकर कहा—"तो आप ठीक जवाब न देंगे ?"

"ठीक-ही तो दिया है।"

"मालूम होता है, मुझे और तरह पेश आना पड़ेगा।"

"कैसे ?"

"मैं कहता हूँ, यह सब कॉपियाँ इसी दम जला दी जा[illegible]

[illegible]नों पत्रकार की-सी दशा आपकी की जायगी।"

"अच्छा ! मार-पीट !" कगलस्तर हँसकर बोला।

"हाँ, वही; हाँ, चाहे आप नौकरों को बुला लीजिये।"

"जी नहीं, नौकरों को बुलाने की जरूरत नहीं। यह [illegible] निजी मामला है। मैं आपसे अधिक बलिष्ठ हूँ। याद [illegible] अगर आपने हाथ की बेत को हर्कत भी दी, तो मैं बगल में [illegible] कर आपको कोने में पटक दूँगा।"

"हाँ ! यह बात ! अच्छी बात है, मैं आपकी ललक[illegible] स्वीकार करता हूँ।" कहता-कहता फ़िलिप कगलस्तर [illegible] पड़ा। पर उसने पलक-मारते अपने फ़ौलादी पञ्जों में [illegible] गर्दन और कमर जकड़ ली, और बुत की तरह उठाकर [illegible] में बिछे हुए गद्दे पर फेंक दिया।

फ़िलिप का चेहरा पीला पड़ गया। उठकर क्षुभित [illegible]

"[illegible] शारीरिक बल में तुम मुझसे भारी

पर यह तलवार देखते हो—मैं तुम्हे छोड़ूंगा नहीं।"

कगलस्तर हँसा। बोला—"यह आपका लड़कपन है।"

फिलिप ने झल्लाकर कहा—"अच्छा सम्हलो, मैं वार करता हूँ। बच नहीं सकोगे।"

"वाह! बच क्यो नहीं सकता? क्या मुझे भी गिल्बर्ट समझा है?"

"गिल्बर्ट!" फिलिप चिल्ला उठा—"गिल्बर्ट का नाम लेते हो?"

"………पर इस बार आपके पास बन्दूक नहीं, तलवार है।"

"मोशिये," फिलिप फिर चिल्लाया "आपने एक ऐसे आदमी का नाम लिया है ………"

"जिसने आपके हृदय मे एक भयानक हलचल पैदा कर दी है। क्यों? आपको तो यही खयाल था—कि जहाँ आपने उसकी हत्या की वहाँ आपके और उसके अतिरिक्त कोई न था।"

"श्रोफ्!" फिलिप ने परेशान होकर कहा—"तुम तलवार नहीं निकालोगे?"

"आपको शायद पता नहीं, मैं कैसी आसानी से आपको तलवार रखवा सकता हूँ।" कगलस्तर ने कहा।

"अपनी तलवार से?"

"हाँ, अगर मैं चाहूँ, तो तलवार से भी।"

"अच्छा, तो फिर आजमाओ जोर!"

"नहीं, मेरे पास इससे अच्छा उपाय है।"

“बस, हो चुका अब मरने को [illegible]।” फिलि
उसकी तरफ बढ़ते हुए चिल्लाकर कहा।

तब कगलस्तर ने जेब से एक शीशी निकाली और डाट खो
कर उसके भीतर का तरल पदार्थ फिलिप के मुँह पर फेंक दि
पलक-मारते फिलिप लड़खड़ाकर गिरा, तलवार छूटकर दूर
पड़ी, और शरीर बे-हरकत होगया।

कगलस्तर ने मूर्छित शरीर को उठाकर सोफ़े पर रख
और कुर्सी पर बैठकर उसके होश में आने की बाट देखने लगा।

जब फिलिप होश में आया, तो कगलस्तर बोला—“बहादु
तुम्हारी उम्र में मैं भी मूर्खतायें किया करता था। अब मेरी ब
मानकर लड़कपन छोड़ो, और मेरी बात सुनो।”

फिलिप कोशिश करके उठ बैठा, और भर्राई हुई आवा
बोला—“क्यों?—क्या यह भले आदमियों के लड़ने
तरीक़ा है।”

“क्या बन्दूक़-तलवार से लड़ना भले आदमियों का त
है? ना भाई, सब विज्ञान की करामात है। मैंने भी विज्ञा
पर तुम्हें बेबस कर दिया है। बुरा न मानो। बोलो, अ
त सुनोगे या नहीं?”

“तुमने मुझे बेबस कर दिया है, मेरी हड्डियाँ शिथिल प
हैं, मेरा मस्तिष्क विकृत होगया है, और तुम पूछते हो—
तुम्हारी बात सुनूँगा—या नहीं?”

तब कगलस्तर ने सोने की एक शीशी छोटी कि

कि-दृष्टि है, उन पर रहम करो। मैं अत्यन्त नम्र भाव से प्रार्थना
रता हूँ, कि इस निर्दोष महारानी की इज्ज़त पर हमला न करो,
ौर इन पर्चों को इसी दम जला दो। और अगर मेरी यह
ार्थना स्वीकार न हुई, तो मैं इस तलवार की सौगन्ध खाता हूँ, मैं
ीदम आत्म-हत्या कर लूँगा।"

"हाय!" फगलस्तर अर्द्ध-स्वगत भाव से बोला—"वे सभी
ापके जैसे क्यों नहीं हैं? तब मैं उनके साथ मिलकर गौरवान्वित
ा, और उनके नाश का षड़यन्त्र करने की जगह उन्हें सिर
ैठाता!"

"मोशिये! मोशिये! कृपा करके मुझे जवाब दो!"

"जाओ!" फगलस्तर ने कहा—"वे हज़ार पर्चे रक्खे हैं;
हाथ से जला दो!"

ब आग धू-धू करके जल उठी, तो फिलिप ने गद्‌गद कण्ठ
ा—"नमस्कार, मोशिये, इस उदारता के लिये हज़ार
ाद!"

गलस्तर चुपचाप अपनी गाड़ी में जा बैठा।

१२

[illegible] फिलिप और क्रानशा के बीच एक घटना घटित [illegible]
थी, जो फिलिप का पुराना यार [illegible] थाली [illegible]
[illegible]ल रहा था। बाल उसकी [illegible] थी, और साथ में दो प्यादे थे [illegible]
[illegible]नों प्यादे एक दूसरे हाथों में लिए हुए थे, और हर पाँच मिनि[illegible]
उसके सामने आ पेश करते थे, कि शायद यह थक गया हो,
आराम करें।

सहसा दरबान ने फिलिप के आने की खबर दी।

"बेटा!" बूढ़े ने कहा "आओ, फिलिप, तुम ठीक पर आये। मेरा हृदय इस समय आनन्द से भरा हुआ है। यह तो बताओ, तुम इतने गम्भीर से क्यों दिखाई पड़ते हो।"

"क्या सचमुच ?"

"उस मामले का नतीजा तो तुम्हें मालूम ही हो गया होगा!"

"किस मामले का ?"

बूढ़े ने इधर-उधर ताका--कि कोई सुन तो नहीं रहा है। [illegible] धीरे-से कहा—"मेरा मतलब नाच-घर की बात से है।"

"मैं समझा नहीं।"

"अरे! वही नाचघर की बात!"

फिलिप का मुँह लाल हो आया।

"बैठ जाओ," बूढ़े ने कहना शुरू किया—"मैं तुमसे कुछ [illegible] कहना चाहता हूँ। ऐसा जान पड़ता है, तुम जो पहले इतना [illegible]

ौर हिचक रहे थे, अब उस पर सिक्का जमाने में बहुत-कुछ सफल र हो।"

"आप कह क्या रहे हैं ?"

'तोबा है ! अरे, मैं क्या नाच-घर में तुम्हारी और उसकी लाक़ात से अनभिज्ञ हूँ ?"

"मोशिये, देखिये………"

"न मेरा भाई ! नाराज़ न हो। मैं तो तुम्हारे भले के लिये म्हें होशियार किये देता हूँ। देखो, तुमने उस समय काफ़ी उर्कता से काम नहीं लिया। महारानी के साथ तुम्हें लोगों ने यद पहचान लिया।"

"पहचान लिया ? मुझे ?"

"क्यों ? – तुमने नीली नक़ाब लगा रक्खी थी न ?"

फ़िलिप कहने-वाला था, कि बाप की बात उसकी समझ में ीं आई, और वह हर्गिज़ महारानी के साथ नाच-घर में नहीं ा, पर फिर उसने मन-ही-मन सोचा—"यह कहना बेकार है ! मेरी बात पर हर्गिज़ विश्वास न करेगा। इसके अतिरिक्त इस ुभ समाचार के विषय में अधिक खोज-पूँछ भी करनी चाहिये।"

"समझे ?" बूढ़े ने हर्षित होकर कहा—"लोगों ने तुम्हें पह-ा लिया। देखो न, चौरासी बरस का बूढ़ा रिशलू भी तुम्हें ी नक़ाब में पहचान गया ! वह कहता-ही था, कि उसे पहले

"पर देखिये, उन्होंने महारानी कोन्ही कैसे पहचान लिया!"

"अजी, उसने भी भूल से एक बार नक़ाब उतार दी थी।" यह है, कि उस समय तो यह तुम्हारी मोहब्बत के नशे में मस्त थी, कहाँ होश था, उसे नक़ाब वक़ाब का! पर देखो तुम्हारे बहुत-से प्रतिस्पर्धी मौजूद हैं, जो तुमसे जलते हैं। रानी का प्रिय-पात्र बनना कोई मामूली बात नहीं है; क्योंकि का शासन-दण्ड तो असल में महारानी के हाथ में-ही है। देख बुरा न मानना, मैं तुम्हें उपदेश नहीं दे रहा हूँ, पर मुझे इस की शङ्का है, कि जो-कुछ तुमने इतने परिश्रम से प्राप्त किया ऐसा न हो, कि ज़रा-सी लापर्वाही से पलक-मारते उसे पड़े।"

फ़िलिप उठ खड़ा हुआ। इस बातचीत के कारण उसका घृणा से भर उठा था। पर एक पाशविक उत्सुकता उसे यह सुनने को विवश कर रही थी। उसके माथे पर पसीना आया, और गुस्से से उसकी मुट्ठियाँ बँध गईं। तो-भी उस यह न हो सका, कि बुड्ढे की बे-सिर-पैर की, गन्दी बातें सु की बजाय उसका मुँह बन्द करदे।

"लोग हमसे पहले-ही जलते हैं!" बूढ़े ने फिर अपनी कहानी शुरू की—"और यह है भी स्वाभाविक! पर हम उस पद पर नहीं पहुँचे हैं, जिसकी हमें लालसा है। हमारे का नाम ऊँचा करने का सेहरा तुम्हारे-ही सिर बँधेगा। प सतर्क रहना।......"

"बस, हो चुका!" फ़िलिप चिल्लाया। कहकर उसने अपने मोभाव छिपाने के लिये सिर घुमा लिया। उसके मुख पर यानक घृणा और चोभ का ऐसा वीभत्स भाव प्रस्फुटित हुआ, ि यदि बूढ़ा टेवर्नी देखता, तो आश्चर्य से उछल पड़ता।

"नहीं प्यारे, तुम यहीं बस करना चाहते हो, मैं नहीं चाहता। म्हारे आगे अभी लम्बा जीवन मौजूद है। मेरा क्या है—मैं तो ज मरा, कल दूसरा दिन! मगर खैर, मुझे तो भगवान् का-ही रोसा है। मेरे दो सन्तान हुईं। अगर मेरी कन्या मेरे भाग्य-र्माण में सहायक सिद्ध न हुई, तो मुझे विश्वास है, तुम होगे। म्हारे व्यक्तित्व में मुझे एक भविष्यत् महान् पुरुष के दर्शन ते हैं। इसलिये मैं जब तुम्हें देखता हूँ, तो गर्व से मेरी छाती ल उठती है। इसके बाद जब मैं तुम्हारे द्वेष-रहित, विकार-हत विचारों का परिचय पाता हूँ, तो मेरा मस्तक आदर से वनत हो जाता है। पर सब के बाद में, यह कहे-बिना मेरा मन हीं मानता, कि भाग्य-वश इस वक्त जो खेत तुम्हारे हाथ है, सावधानी से उस पर क़ब्ज़ा किये रहो, और किसी दूसरे को स तरफ फटकने तक की आज्ञा न दो।"

"आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं!" फ़िलिप ने चरज में डूबकर कहा।

"अरे भाई, शरमाते क्यों हो?—मैं तो तुम्हारे भले में-ही खैर मैं ...

"जल्दी करो !" बूढ़े ने नौकर को हुक्म दिया—"एक
सवार को इसी दम मोशिये पर्नी के मकान पर भेजो,
उसकी राजी-खुशी का समाचार मँगाओ। सवार मेरी तरफ
उसे सान्त्वना भी दे आवे !" तब उसने घबड़ाकर आप-ही
कहा—"छीः ! पाजी लड़का—फिलिप ! वह भी आखिर इ
बहन-ही का भाई है ! और मेरी मूर्खता देखो—मैंने समझा था
वह सुधर गया।"

—

१३

जब पेरिस और वर्सेई में यह गुजर रही थी, उस समय राज-भवन में लुई नक़्शों से घिरा हुआ काम में व्यस्त था।

सहसा किसी ने दर्वाजा खटखटाया। लुई ने चौंक कर देखा। एक आवाज सुनाई दी—"भाई साहब, मैं भीतर आ सकता हूँ?"

"ओहो! काऊण्ट डी-प्रॉविन्स हैं!" लुई ने विरक्त भाव से आप-ही-आप कहा, फिर बोला—"आओ।"

एक ठिगने क़द का लाल-मुँहा आदमी, अत्यन्त विनम्र भाव से क़दम रखता हुआ भीतर आया, और दाँत काढ़कर बोला—"भाई साहब, आपको तो इस समय मेरे आने की आशा होगी नहीं?"

"नहीं तो।"

"मैंने आपके किसी जरूरी काम में विघ्न तो नहीं डाला?"

"कोई खास बात कहनी है क्या?"

"ऐसी अद्भुत खबर है........।"

"कुछ भेद की है?"

"जी हाँ, बहुत!"

"युद्ध मेरे विरुद्ध ?"

"हे भगवान ! यह कैसे हो सकता है ?"

"फिर ? युद्ध रानी के विरुद्ध ?"

"देखिये भाई साहब, मेरी गुस्ताखी माफ़ कीजिये। उ
विश्वस्त रूप से पता लगा है, कि उस रात को महारानी महल
बाहर सोई थीं।"

"अगर आप की बात सच होती, तो मुझे बहुत अफ़स
होता।"

"तो, आप का ख़याल है, मेरी बात सच नहीं ?"

"हाँ।"

"और यह भी ग़लत है, कि महारानी को बहुत देर तक
के दर्वाज़े के बाहर खड़ी रहना पड़ा ?"

"हाँ।"

"देखिये, मैं उस दिन का ज़िक्र कर रहा हूँ, जब
ग्यारह बजेके बाद महल के दर्वाज़े बन्द करने का हुक्म दि

"इस वक़्त मुझे कुछ याद नहीं।"

"अच्छा, देखिये भाई साहब, मेरी बातों पर तो
यक़ीन नहीं है, पर दुनियाँ जो कहती है, उस पर त
दीजिये।"

"क्या कहा ?"

"मेरा उद्देश्य आपका ध्यान एक पेम्फ़्लेट की तरफ़ दि

"एक पेम्फ़्लेट की तरफ़ ?"

"नहीं" लुई ने कहा—"मत जाओ। हाँ जी, मोशिये क्रोन, बेधड़क होकर बोलो।"

"जी, मैंने गिरफ़्तारी इसीलिये नहीं की, कि मैं आपसे पूछना चाहता था, कि इस पत्रकार को कुछ दे-दिलाकर चुप करना चाहेंगे, या फाँसी दिलाना!"

"दे-दिलाकर······क्यों?"

"क्योंकि महाराज, अगर ऐसे आदमी कुछ झूठ लिखते हैं, तो जनता इन्हें फाँसी चढ़ते देखकर सन्तुष्ट होती है. और अगर संयोगवश सच लिखते हैं, तो उल्टी········"

"सच! यह तो सच-ही है, कि रानी मेस्मर के मकान पर हैं। पर उन्होंने मुझसे अनुमति लेली थी।

"ओहो! पृथ्वीनाथ!" क्रोन चिल्ला उठा।

लुई ने अप्रतिभ होकर कहा—"मैं समझता हूँ, मोशिये, यह कोई पाप नहीं है।"

"नहीं, यह नहीं, परन्तु महाराज, महारानी ने और भी बहुत किया!"

"मोशिये क्रोन, बताइये, आपके जासूसों ने आपको क्या दे दी है?"

"पृथ्वीनाथ, बहुत-सी बातें हैं। महारानी के लिये पूरा आदर-रखते हुए मुझे कहना पड़ता है, कि इस लेख की बहुत-तें सच हैं।"

'क्या-क्या?"

"यही, कि महारानी मामूली पोशाक में, भीड़ में धक्के खा
ई, अकेली गईं।"

"अकेली!" लुई ने चिल्लाकर दोहराया।

"जी हाँ।"

"मोशिये, आपको धोका हुआ है।"

"मेरा ऐसा ख्याल नहीं है, पृथ्वीनाथ।"

"तुम्हारे जासूस ला-पर्वाह हैं।"

"जी नहीं, अगर आपकी आज्ञा हो, तो मैं महारानी
ाक, गति-विधि और चिल्लाहट का पूरा वर्णन क
सकता हूँ।"

"चिल्लाहट का?"

"जी महाराज, उनकी आहें तक सुनी गईं थी!"

"यह असम्भव है! वह मेरी और अपनी प्रतिष्ठा को
दम नहीं भुला सकती।"

"जी हाँ, यह तो ठीक है, लेकिन........"

लुई ने टोककर कहा—"तो तुम अपनी रिपोर्ट की सत्यत
पर दृढ़ हो?"

"दुःख के साथ कहना पड़ता है, हाँ!"

"मैं इस विषय में छान-बीन करूँगा।" लुई ने माथे क
पसीना पोंछते हुए कहा—"वेशक, मैंने रानी को अनुमति दी थ
लेकिन साथ ही यह भी कहा था कि वह अपने साथ कि
विश्वासी और प्रतिष्ठित महिला को ले जायँ।"

"अफसोस!" कोन ने कहा—"अगर ऐसा किया होता······।"

"खैर," लुई ने कुछ उत्तेजित हो कर कहा—"अगर उन्होंने इस प्रकार खुलम-खुला मेरी आज्ञा का उल्लङ्घन किया है, तो मुझे उनको दण्ड देना होगा। पर अभी तक मेरे मन में कुछ सन्देह बाकी है। इस सन्देह से तुम्हारा कुछ सम्बन्ध नहीं; वह तो स्वाभाविक है। तुम अपराधी के पति या मित्र नहीं हो, इसलिये तुम उसकी कल्पना नहीं कर सकते। खैर, मैं इस मामले को बिना छान-बीन के न छोड़ूँगा।" कहकर लुई ने घंटी बजाई। नौकर आया, तो उसे आज्ञा दी—"देखो भला, मैडम डि-लम्बेल कहाँ है?"

"बाग में हैं।"

"उन्हें आदरपूर्वक बुला लाओ।"

सब साँस रोककर खड़े रहे।

मैडम डि-लम्बेल ने कमरे में प्रवेश किया।

लुई ने व्यग्र भाव से उसे ताका। मानों डरता था—जाने क्या सुनना पड़े। सिर झुकाकर आदर-भरे स्वर में—"प्रिन्सेस, बैठ जाइये।"

मेरिये प्रविन्स ने आगे बढ़कर आदरपूर्वक उसका हाथ चूमा।

"महाराज ने किसलिये याद किया?" लम्बेल ने मीठी आवाज में पूछा।

"कुछ पूछना है प्रिन्सेस। बताइये, पिछली बार आप रानी के साथ किस दिन महल से बाहर गई थीं?"

"बुध को श्रीमन !"

"भला किसलिये गईं थीं ?"

"मोशिये मेस्मर के यहाँ जाना था।"

दोनों श्रोता काँप उठे। लुई का चेहरा भी रङ्गीन हो

"अकेली ?"

"न महाराज; महारानी के साथ।"

प्रॉविन्स और क्रोन चाकत हुए।

प्रिन्सेस लम्बेल ने उसी सिलसिले में, कहा—"मह महारानी को अनुमति दे दो थी—ऐसा उन्होंने मुझ किया था।"

"उन्होंने ठीक कहा था बहन ! देखो दोस्तो, मेरी ठीक रही ! प्रिन्सेस लम्बेल हर्गिज़ झूठ नहीं बोल सक

मोशिये क्रोन ने बड़े अदब से कहा—"श्रीमती करके महाराज को बताइये, आपने वहाँ जाकर क और महारानी ने उस दिन कैसी पोशाक पहनो हुई थी

"भूरे रङ्ग का गाऊन था, चुग़ा पतली मलमल का ` गोट का गुलाबी नक़्श था।

क्रोन आश्चर्यित हुआ; जिस पोशाक की रिपोर्ट उ थी, वह इससे बिलकुल भिन्न थी। प्रॉविन्स ने चुि ओंठ काटा, और लुई ने खुशी से हाथ मले।

"अच्छा, भीतर जाने पर आपने क्या किया ?"

"महाराज, हम लोगों ने मुश्किल-से भीतर क

गा, कि एक रमणी हमारे पास आई, और महारानी से प्रार्थना करने लगी, कि वे उसी दम लौट जायँ।"

"तो आप भीतर मकान में नहीं गईं ?" सहसा कोन बोला।

'नहीं।"

"अब कहिये मोशिये कोन !" लुई ने उछलकर कहा।

"अद्भुत है—विचित्र है !" प्रॉविन्स ने निराश होकर कहा।

"कुछ विचित्र नहीं," मोशिये कोन गम्भीर भाव से बोला—प्रिन्सेस-महोदया गलत नहीं कह सकतीं; जरूर-ही मेरे जासूसों गलती खाई !"

"क्या सचमुच ?"

"जी हाँ, अवश्य किसी तरह मेरे जासूस धोखा खा गये। स, अब इस पत्रकार को मैं इसी दम गिरफ़ार रता हूँ।"

"ज़रा ठहरो," लुई ने टोका—"पत्रकार को फाँसी देने की ती नहीं है। हाँ, प्रिन्सेस, आपने एक रमणी का जिक्र किया। जिस ने आपको दर्वाजे पर ही रोक दिया। यह रमणी न थी ?"

"शायद महारानी उसे जानती हैं।"

"मेरा खयाल है, इसी रमणी के द्वारा इस रहस्य का उद्घाटन सकता है।" लुई बोला।

"मेरा भी यही खयाल है।" कोन ने समर्थन किया।

"सब व्यर्थ है !" प्रॉविन्स मन-ही-मन बोला—"यह रमणी

"बुलाने की जरूरत नहीं—वह यहीं मौजूद है।"

"यहीं है!" लुई ने इस प्रकार चौंककर कहा, मानो साँप पर पड़ गया हो।

"आपको याद होगा, कि एक दिन मैं उसके घर उसे देखने थी; वही दिन जिसके विषय में तरह-तरह की बातें कही गईं। उस दिन मैं उसके घर पर अपना एक बक्स भूल आई थी। बक्स को मुझे वापिस देने के लिये वह यहाँ आई है।"

"और" लुई ने जल्दी से कहा—"मुझे सन्तोष होगया; अब से भेंट करने की मेरी इच्छा नहीं है।"

"लेकिन मुझे सन्तोष नहीं हुआ, इसलिये मैं उसे यहाँ ऊँगी। और मेरी समझ में नहीं आता, आप उससे इतने विरक्त हैं? उस बेचारी में खोट क्या है? अगर कुछ आपत्ति-जनक हो, तो मुझे बताइये; मोशिये फ़ौन, आपको सब पता है।"

"इस महिला के विरुद्ध मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"सच?"

"सच; वह ग़रीब है, और उच्च आकांक्षाएँ रखती है, इसके अतिरिक्त मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"बस, अब तो आपको उसे भीतर बुलाने में सङ्कोच न होना चाहिये।" रानी ने कहा।

"न-जाने क्यों," लुई ने कहा—"मेरे मन में ऐसा भाव होता कि यह औरत मेरे दुर्भाग्य का कारण बनेगी।"

तें यहाँ देखने-सुनने में आई। बस, मैंने महारानी से उसी-
न लौट जाने की प्रार्थना की। अगर मेरी यह चेष्टा अधिकार-
त हो, तो मैं उसके लिये क्षमा चाहता हूँ; मैंने जो कुछ किया,
म और श्रद्धा के वश होकर किया।"—कहते कहते उसका
ला भर आया।

लुई के अतिरिक्त सभी प्रसन्न हुए।

मैडम लम्बे, ने मन-ही-मन उस की नम्रता, मेधा और भल-
नसाहत की तारीफ की।

रानी ने आँखों-ही-आँखों में उसे धन्यवाद दिया। मुँह से
हा—"महाराज ने सुना?"

लुई ने बिना हिले हुए कहा—"मुझे उनके समर्थन की जरूरत
हीं थी।"

"मुझे बोलने की आज्ञा दी गई थी," नील ने नरमी से कहा—
मैंने उसका पालन किया!"

"खैर!" लुई बोला—"जब रानी एक बात कहती है, उसकी
ष्टि के लिये और किसी के कुछ कहने की जरूरत नहीं। और
ब मेरा उन पर विश्वास है, तो जन-श्रुति के लिये उन्हें चिन्ता
रने की आवश्यकता नहीं।"

कहकर उसने प्रविन्स और क्रोन पर नजर फेंकी, और
न्सेस लम्बेल और रानी के हाथों का चुम्बन लेकर एक बार
न पर उड़ती हुई नजर डाली।

सब तीनों महिलायें कमरे से बाहर हो गईं।

जब वह भीतर आई, तो जीन ने अपनी दूसरी मेहरबान महिला को पहचानकर लज्जा और संकोच का नाट्य किया।

एएडी के घुसने-ही मैडम लम्बेल ने जाने की इजाजत माँगी उसके जाने पर रानी ने कहा—"एएडी, यह वही महिला जिनसे मिलने के लिये हम लोग उस दिन गईं थीं।"

"जी हाँ, मैं पहचान गई!" एएडी ने झुककर उत्तर दिया।

जीन तो रानी की कृपा-दृष्टि के कारण अहङ्कार से फूल उठी थी, उसे एएडी पर रानी का यह स्नेह अच्छा न लगा, और उसके प्रति उसका मन ईर्ष्या से भर उठा। पर एएडी इस तरफ़ से बिलकुल उदासीन थी।

एएडी का व्यक्तित्व बहुत गहरा था। इस गहराई में उसकी उदारता, उसका बड़प्पन और उसकी देव-तुल्य दयालुता छिपी हुई थी।

"कुछ सुना," रानी बोली—"लोगों ने मेरे विषय में क्या-क्या बातें महाराज से जड़ी हैं?"

"और क्या कहा होगा?—निन्दा-ही की होगी; क्योंकि प्रशंसा करने योग्य, उदारता रखनेवाले तो दुनियाँ में बिरले ही होते हैं।" एएडी ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"इस विषय में मैंने इतनी उच्च-कोटि की टिप्पणी आज से पहले नहीं सुनी। 'उच्च कोटि' की इसलिये, कि वह दिमाग़ पर बिना जोर डाले कही गई थी, जिसे मेरा निर्बल मस्तिष्क कभी प्रकट नहीं कर सकता था।"

"एण्डी, मैं तुम्हें सारी बात बताऊँगी।" रानी बोली—"हाँ तो काउण्टेस, मैं आपके विषय में कुछ कह रही थी। इस समय आपकी देख-भाल कौन रखता है?"

"आप, श्रीमती!" जीन ने हिम्मत करके कहा—"क्योंकि आपने मुझे यहाँ आकर चुम्बन की आज्ञा प्रदान की है।"

"आप बड़ी भावुक हैं!" रानी बोली—"मैं भावुकता को पसन्द करती हूँ।"

एण्ड्री ने कुछ नहीं कहा।

"जब मैं निस्सहाय थी," जीन बोली—"तो कोई मेरे पास आकर भी नहीं फटकता था, पर अब आपका साया मुझ पर पड़ गया है, तो मेरी खबर लेनेवाले बहुतेरे निकल आयेंगे।"

"तो क्या आप पर किसी को दया नहीं आई?"

"हाँ, मैं भूलती हूँ, एक बहादुर दरबारी ने मेरी खबर ली थी।"

"कौन?"

"मोंशिये कार्डिनल डि० रोहन!"

"मेरा दुश्मन!" रानी ने मुस्कराते हुए कहा।

"आपका दुश्मन?"

"जान पड़ता है, आपको यह सुनकर आश्चर्य हुआ, कि रानी का भी कोई दुश्मन हो सकता है। इसका कारण यही मालूम होता है, कि आपको कभी राज-दरबार में रहने का संयोग नहीं हुआ!"

'लेकिन मैडम, यह तो आप पर बड़ी श्रद्धा रखता है।"

"हाँ!" रानी ने ज़ोर से हँसकर कहा—"इसी से तो व
मेरा दुश्मन है!"

जीन चकित हो गई।

"हाँ तो उसने आपकी खबर ली," रानी ने फिर कह
शुरू किया—"खैर, उसके विषय में जो आप कहना चाहें, कहें

"कोई खास बात नहीं, मुझे यही कहना था, कि अमीर
बहुत-ही नाजुक समय में मेरी मदद की थी।"

"ठीक। अमीर भला आदमी है, इसमें शङ्का नहीं। व
एण्डी, जान पड़ता है, अमीर रोहन ने काऊण्टेस से भी
श्रद्धा प्रकट की है। हाँ, काऊण्टेस, आगे कहिये।" कहती-क
फिर खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"यह व्यङ्ग भाव दूर करना होगा!" जीन ने सोचा,
गम्भीर होकर कहा -"मैं पुनः महारानी से निवेदन करती
कि अमीर रोहन·········"

"खैर, आप चूँकि उसकी मित्र हैं, इसलिये उससे पू
कि मेरे सिर के बालों का उसने क्या उपयोग किया था,
चुरवाने के लिये उसने बाल सँवारनेवाली एक दासी को ल
दिया था, और बात खुलने पर उस बेचारी को नौकरी से
धोना पड़ा!"

"महारानी की इस बात ने मुझे ताज्जुब में डाल दिया!
मोशिये रोहन ने ऐसा किया था?"

"हाँ, हाँ, आप कहती हैं, वह श्रद्धा करता है।" विनेना से मैं नफरत करता रहा, मेरी शादी कराने के लिये उसने कोई कोशिश की, और अन्त में यह देखकर शायद पछताया था, कि मैं उसके देश का राजा बन गया, और उसने हमेशा के मुझे अपना दुश्मन बना लिया। अब उसे यह फिक्र हुई है कहीं उसके भविष्य का वारा-न्यारा न कर दूं। फिर तो मुझे अपनी तरफ आकृष्ट करने के लिये तरह-तरह के ढंग दिखाने लगा। यानी, मुझ से नज़रबाज़ी करने और मुझ पर लम्बी साँसें छोड़ने का नाटक उसने शुरू कर दिया,—गोया मेरी मुहब्बत का दम भरने लगा। अब आप कहती हैं, मुझ पर श्रद्धा रखता है। क्यों एण्ड्री ?"

"जी !"

"खैर, एण्ड्री तो बोलेगी नहीं, मैं-ही कहती हूँ। अगर मुझ पर श्रद्धा रखता है, तो उससे कह देना मुझे इसमें कोई आपत्ति है।"

ऐसी औरतें—ऐसी अलभ्य देवियाँ—उन फन्दों से बचने का प्रयत्न नहीं करतीं, जो उनको फँसाने के लिये बिछाये हैं। सच बात यह है कि वे कपट की उस भिल्ली का अनुभव नहीं कर सकतीं, जो सुन्दर शब्द-योजना के रूप में शैतानियत को ढाले रहती हैं।

दुराचार-भ्रष्टा जीन ने उदार-मना महारानी का असली मनो-भाव समझा। महारानी की बातों में अमीर रोहन के प्रति

महारानी के विरक्ति-भाव का अनुमान न करके उसने
रानी मन-ही मन रोहन को प्यार करती है, और भीतरी
छिपाने के लिये-ही बहुत-सी बातें कह गई है। यह
उसने अमीर के बचाव में और भी बहुत-सी बातें कहीं।

रानी धैर्य-पूर्वक सब कुछ सुनती रही।

"बड़े आराम से सुन रही है !" जीन ने मन-ही म
"यह शुभ लक्षण है !" यह उसके दिमाग़ में नहीं आया
अपने उदार-स्वभाव के कारण ही यह सब-कुछ सुन रह
एक ऐसे आदमी के पक्ष-समर्थन में सब-कुछ सुनना
समझती है, जिसके विषय में उसका भाव अच्छा न

न-जाने बातों का सिलसिला कब तक जारी रहता,
किसी की ख़ुशी-भरी आवाज सुनाई दी। रानी ने
और कहा—"काउण्ट डि-आर्टुई !"

जब वह भीतर आया, तो महारानी ने जीन से उस
करा दिया।

जीन जाने को हुई, तो रानी ने उसे रोक लिया।
कहा—"क्या भेड़ियों के शिकार से लौट रहे हो ?"

"हाँ, बहन ! आज का शिकार अच्छा रहा।
की ख़बर लो !" उसने हँसते-हँसते कहा—"मैंने
नहीं, पर साथ के लोग ऐसा-ही कहते थे। और हाँ,
नहीं, मुझे सात सौ फ़्राङ्क इनाम में मिले हैं ?"

"नहीं तो—कैसे ?"

"बेशक !"

"शायद आपने ख़ुद मुझे देखा था ?" रानी ने व्यङ्ग से पूछा।

"हाँ, ख़ुद मैंने।"

"मुझे ?"

"हाँ, आपको।"

"ओहो ! यह बर्दाश्त से बाहर हो गया ! आप मुझसे उसीदम
ं क्यों नहीं ? उसी वक्त सारा सन्देह दूर हो जाता।"

"जीहाँ, मैं आपसे बात करने के लिये आगे बढ़ा-ही था, कि
के रेले ने आपको दूर हटा दिया।"

"तुम पागल होगये हो !"

"मुझे इस विषय में कुछ कहना नहीं चाहिए था। मैं बड़ा
हूँ।"

रानी उठ खड़ी हुई, और उत्तेजित भाव से कमरे में इधर-
घूमने लगी।

ज्हू भयभीत हो गई, और जोन ने मुश्किल से हँसी रोकी।
ब रानी ने ठहरकर कहा—"देखो भाई, मज़ाक़ न करो !
हुआ ! देख ही रहे हो, आज मेरी हालत ख़राब है, और
माग़ ठीक नहीं है। बताओ, यह सब-कुछ तुम मज़ाक़ मे
रहे थे न ?"

हन, अगर आपकी यही इच्छा है, तो ऐसा ही सही।"
मर्स, गम्भीर बनो। बोलो, जो-कुछ तुमने अभी कहा, वह
ारे-ही दिमाग़ की उपज थी, या नहीं ?"

उसने नजर गड़ाकर उपस्थित महिलाओं को ताका और

—"जीहाँ; बेशक !"

"आपने मेरा मतलब नहीं समझा !" रानी ने तेजी से क…
"हाँ कहा—या नहीं। झूठ मत बोलो, मैं सच्चा जवाब चाह…
हूँ।"

एण्ड्री और जीन पीछे को सरक गईं।

"तो बहन, बात यह है," वह धीमे स्वर में बोला—"मैंने …
कहा था, पर मुझे अफ़सोस है, मैंने क्यों कहा !"

"तुमने मुझे वहाँ देखा था ?"

"हाँ, बिल्कुल इस तरह, जैसे इस समय देख रहा हूँ।
आपने भी मुझे देखा था।"

रानी के मुँह से चीख निकल पड़ी। वह दौड़कर एण्ड्री और …
के पास पहुँची, और बोली—"बहनो, मोशिये आर्टुई कहते हैं
कि उन्होंने मुझे ऑपेरा-भवन के नाच में देखा था। अब वे …
बात का प्रमाण देंगे।"

"देखिये," उसने दृढ़तापूर्वक कहा—"जिस समय …
नक़ाब गिर पड़ी थी, तो मैंने, मोशिये रिशलू और …
प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने आपकी सूरत देख ली थी।"

"मेरी नक़ाब !"

'मैं आपके पास आकर यह कहने-ही वाला था—'बड़ी …
सवधानी करती हो बहन !' पर इतने में, आपके साथी ने उन्हों…
आपको परे हटा लिया !"

"ओहो ! तुम तो मुझे पागल बना दोगे ! कौन मेरा साथी !"

"नीली नक़ाब वाला।"

रानी ने अपनी आँखोंपर हाथ फेरा। पूछा—"किस दिनकी बात है ?"

"शनिवार की। अगले दिन ही, मैं सुबह-गजरदम शिकार को
[illegible] दिया !"

"तुमने मुझे कितने बजे देखा था ?"

"दो और तीन के बीच में।"

"अवश्य-ही हम दोनों में-से एक पागल है।"

"मैं हूँ—मैं। यह सब किसी ग़लती के फल-स्वरूप हुआ है।
[illegible]ये नहीं, कोई आपत्ति नहीं है। जब मैंने आपको देखा, तो
[illegible] समझा—आपके साथ ख़ुद महाराज हैं। पर जब उस नीली
[illegible]ब को जर्मन बोलते सुना, तो वह सन्देह दूर हो गया।"

"देखो भाई, शनिवार को मैं ग्यारह बजे सो गई थी !"

काउण्ट सिर झुकाकर विषण्णभाव से मुस्कराया।

"मैं मैडम मिज़रो को बुलाती हूँ, वह तुम्हें बताएगी !" यह-
[illegible]रानी ने व्यस्त भाव से घण्टी बजाई।

"औरों का भी क्यों नहीं बुला लेतीं ?" काउंट ने हँसते हुए
—"यह विष के बीज तो मेरे-ही बोए हुए हैं बहन, मेरी बताई
[illegible]रकीब का उपयोग मुझ पर-ही न कीजिये।"

"हाय !" रानी चिल्ला उठी—"क्या विश्वास नहीं होगा ?"

"प्यारी बहन, मेरे विश्वास कर लेने से-ही क्या होना है—
[illegible]लोग तो विश्वास नहीं कर सकते।"

"और लोग कौन ?"

"जिन्होंने, मेरे साथ-ही-साथ, आपको देखा था।"

"वे कौन-कौन थे ?"

"एक तो मोशिये फ़िलिप ही थे !"

"ओहो ! मेरा भाई !" एण्ड्री चिल्ला उठी।

"जीहाँ, कहिये, तो इनसे पूछा जाय ?"

"इसीदम।"

"हे भगवान !" एण्ड्री आप-ही-आप बोली—"मेरा भाई गवाह !"

उधर रानी ने फ़िलिप को बुलाने के लिये आदमी भेज दिया। कुछ पृष्ठ पहले बाप-बेटों के बीच हम जिस वाद-विवाद का उल्लेख कर आये हैं, उससे निबटकर फ़िलिप मकान के ज़ीने से उतर रहा था, कि रानी का आदमी मिला। सुनते-ही वह तुरन्त वहाँ आ मौजूद हुआ।

"मोशिये," रानी ने छूटते-ही कहा—"क्या आप बिलकुल सच बोल सकते हैं ?"

"सच के अतिरिक्त और कुछ बोल-ही नहीं सकता महारानी।"

"अच्छा, तो साफ़-साफ़ कहिये, पिछले हफ़्ते में आपने मुझे किसी सार्वजनिक स्थानप र देखा है ?"

"जी हाँ।"

सबके दिल इतने ज़ोर से धड़कने लगे, कि आवाज़ सुनाई दे जाय।

"कहाँ ?" महारानी ने भयानक आवाज़ में पूछा।

फ़िलिप चुप हो गया।

"ना, छुपाइये कुछ नहीं मोशिये ! भाई आर्टुई कहते हैं, कि आपने मुझे ऑपेरा-भवन में देखा था।"

"जी हाँ, देखा तो था।"

रानी एक सोफ़े पर गिर गई। फिर सहसा सिर उठाकर उसने तेज़ी से कहा—"यह असम्भव है ! मैं हर्गिज़ वहाँ नहीं ...थी। मोशिये टेवर्नी, याद रखिये, वहाँ से जाने के बाद से आप ...द्धि लापर्वाह हो गये हैं, यह लापर्वाही अमरीका में अच्छी ...दी जा सकती है, वर्सेई में नहीं निभ सकती।"

"महारानी," एण्ड्री ने कहा—"शान्त हूजिये। अगर मेरा ...भाई कहता है, उसने आपको देखा, तो ज़रूर उसने देखा होगा।"

"तुम भी !" मेरी अण्टोइनेट चिल्ला उठी—"सिर्फ़ तुम्हीं ...रह गई थीं। हाय ! मेरे दुश्मनों ने कैसा षड्यन्त्र रचा है !"

"जब मैंने देखा, कि नीली नक़ाब में महाराज नहीं थे", आर्टुई ...ने कहा—"मैंने समझा—मोशिये सर्पी के भतीजे होंगे, उस दिन ...आपने जिनका हार्दिक स्वागत किया था !"

रानी के चेहरे पर रङ्ग आने-जाने लगा। एण्ड्री का चेहरा ...रा की तरह ज़र्द हो गया। दोनों ने एक-दूसरे का ताका, और ...नों, दोनों को पढ़कर काँप उठीं।

फ़िलिप भी परेशान हो गया। "मोशिये डि-चर्नी ?" वह ...बड़ाया।

"लेकिन शीघ्र ही मुझे मालूम हो गया, कि वह चर्नी ...
था। क्योंकि उसी समय संयोगवश वह ख़ुद मेरे सामने
पड़ा। जबकि नीली नक़ाबवाला बराबर आपके साथ था।"

"तो चर्नी ने भी मुझे देखा ?"

"ज़रूर।"

रानी ने फिर घण्टी बजाई।

"यह आप क्या कर रही हैं ?"

"उसे बुला रही हूँ। उससे भी पूछूँगी।"

"मैं नहीं समझता, कि वह आ सकेगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मेरा ख़याल है, वह स्वस्थ नहीं है।"

"नहीं जी, उसे आना ही चाहिये। मैं भी तो स्वस्थ नहीं हूँ। लेकिन मैं उस रहस्य की तह तक पहुँचने के लिये दुर्निवार ... .।"

सहसा खिड़की के पास खड़ी हुई एण्ड्रो ने हर्ष-ध्वनि की।

"क्या है ?" रानी ने पूछा।

"कुछ नहीं, मोशिये चर्नी स्वयं-ही आ रहे हैं।"

महारानी उत्तेजित भाव से खिड़की के पास दौड़ गईं, और चिल्ला उठीं—"मोशिये चर्नी !"

मोशिये चर्नी ने चकित होकर कमरे में प्रवेश किया।

१५

मासिये चना ने भीतर आकर उपस्थित लोगों को देखा, और शिष्टाचार और आदर से सिर झुकाया।

"समझ से काम लीजिये बहनजी", डि-आर्टुई ने कहा—"हर आदमी से पूछने से लाभ क्या ?"

"भाई, मैं तो सारे संसार से पूछते न थकूँगी, जब तक कि कोई यह बताने वाला न मिलेगा, कि तुम लोगों को धोखा हुआ है।

इधर फ़िलिप और चर्नी ने परस्पर अभिवादन किया, और पहले ने दूसरे से धीमे स्वर में कहा—"पागल हुए हो! घायल अवस्था में उठकर चले आये! कोई सुने, तो कहे, जान देने पर तुले हो।"

"एक मामूली खरोंच से कहीं जान जाती है!" मोशिये चर्नी अपने दुश्मन को कड़वी बात से मर्माहत करना चाहा।

सहसा रानी ने आगे बढ़कर इस वार्तालाप को समाप्त कर दिया। बोली—"मोशिये चर्नी, यह लोग कहते हैं, कि पिछली रात ऑपेरा के नाच में आप भी मौजूद थे!"

"जी हाँ, महारानी।"

"ज़रा बताइये तो, आपने वहाँ क्या देखा।"

"क्या आपका मतलब है, मैंने किसे देखा ?"

"हाँ, यही; और देखिये, ज़रा भी छिपाकर न बतावें।"

"जो आपकी आज्ञा है कह दूँ ?"

महारानी के चेहरे पर फिर वही मुर्दनी छा गई, जिसे का सुबह से अनेक बार देखा गया था। पूछा—"तो क्या आपने मुझे देखा था ?"

"जी, हाँ, उस समय जब कि असावधानी से आपकी नक़ा गिर पड़ी थी।"

मेरी अण्टोइनेट हाथ मलने लगी। फिर बोली— "मोशिये, मेरी तरफ़ ध्यान से देखो, और बताओ, क्या वास्तव में वह मैं ही थी।"

"महारानी, आपकी सूरत आपके दासों के हृदय में खुदी रहती है; जो आपको एक बार देख लेता है, फिर नहीं भूल सकता।"

"लेकिन मोशिये," रानी बोली—"मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, मैं ऑपरा के नाच में नहीं थी।"

"ओह ! मैडम," नवयुवक चर्नी ने सिर झुकाये हुए कहा—"क्या महारानी हर जगह जाने के लिये स्वतन्त्र नहीं हैं ?"

"मैं अपनी रक्षा के लिये आपसे तर्क नहीं सुनना चाहती; मैं चाहती हूँ कि आप मेरी बात का विश्वास करें।"

"जो-कुछ आप कहती हैं, मैं सच्चे दिल से उस पर विश्वास करता हूँ," पर्नी ने आदर पूर्वक कहा।

"बहन, बहन, बात हद से ज्यादे बढ़ गई!", आदुंई ने हड़बड़ाकर कहा।

"हाय! कोई विश्वास नहीं करता!" कहकर रानी आँखों में आँसू भरे हुए सोफे पर दुलक गई।

जो लोग मौजूद थे, सब के हृदय विभिन्न भावनाओं से भर गये।

"सब को विश्वास है! सब को विश्वास है!" चिल्लाकर रानी आराम-कुर्सी पर जा पड़ी, फिर आँख का आँसू पोंछकर ट खड़ी हो गई।

"बहन, क्षमा करना," आदुंई ने नरमी से कहा—"हम लोग आपके भक्त हैं; जो भेद आपको इतना क्लेश पहुँचा है, उसे सिर्फ हमीं लोग जानते हैं. और वह हमारे आठों बाहर न होगा।"

"यह भेद! ओह! भाई, मैं तो सच्ची बात का प्रचार ती हूँ।"

सहसा महाराज के आने की खबर मिली।

रानी आगे बढ़ी, और भावावेश में कहने लगी—"देखिये, र एक ओर लांछन लगाया जा रहा है, और मेरे द्वारा।"

मित्रों-द्वारा!"

"जी हाँ, ये लोग कहते हैं कि उन्होंने मुझे ऑपिरा-भव
नाच में देखा था।"

"ऑपिरा-भवन के नाच में ?"

भयानक निस्तब्धता छागई।

जीन ने रानी की विकृत चेष्टा देखी, महाराज का विरक्त
भाव देखा, और सब की चिन्ता और विहलता अनुभव की। इ
समय उसका एक शब्द अब और आइन्दा महारानी को इ...
बचा सकता था। लेकिन उसने सोचा. अगर अब कहेगी, तो
सब गुड़ गोबर हो जायगा, और इस बात के कारण वह अनायास
ही सब की अप्रीति-भाजन बन जायगी, कि अगर मालूम थी, तो
यह बात उसने पहले क्यों नहीं कही।

लुई ने फिर कहा—"ऑपिरा-भवन के नाच में! क्या प्रो
ठीक कहता था ?"

"लेकिन, देखिये," रानी ने कहा—"डि-आर्टुई को
हुआ है, मोशिये टेवर्नी ने भूल खाई है, मोशिये चर्नी ने
की है।"

सब ने सिर झुका लिये।

"देखिये," वह फिर बोली—"सारी प्रजा को बुलाइये, औ
पूछिये। हाँ, तुम कहते हो, उस दिन शनिवार था ?"

"हाँ, बहन।"

"अच्छा, शनिवार को मैंने क्या-क्या किया था ? अरे, को
मुझे बतलाओ, मैं तो पागल हुई जा रही हूँ, कहीं ऐसा न हो,

मैं ही इस बात पर विश्वास करने लग जाऊँ, कि मैं ऑपेरा-भवन के नाच में गई। लेकिन महानुभावो, वास्तव में अगर मैं गई होती, तो अवश्य मान लेती।"

सहसा महाराज उसकी तरफ बढ़े। अब उनके चेहरे पर किसी मनोविकार को छाप न थी। बोले—"अच्छा, मैरी, अगर वह दिन शनिवार था, तो तुम्हें अपनी दासियों को बुलाकर पूछने की जरूरत नहीं है। मुझे याद है, ग्यारह बजे बाद मैं आया था।"

"ओह!" रानी ने खुशी से चिल्लाकर कहा—"आप ठीक कहते हैं!" कहकर वह महाराज से लिपट गई। फिर तुरन्त-ही शर्माकर अलग हुई, और उसके कन्धे में मुँह छिपा लिया।

"बस," डी-आर्टुई ने हर्ष और आश्चर्य से कहा—"अब मुझे अवश्य-ही ऐनक खरीद लेनी होगी। आश्चर्य!"

निर्लिप्त खिड़की पर झुका खड़ा था; चेहरा लाश की तरह जर्द था। वर्नी माथे का पसीना पोंछ रहा था।

"इसलिये, सज्जनो!" महाराज ने उपस्थित लोगों की तरफ घूमकर कहा—"मैं समझता हूँ, उस रात रानी का ऑपेरा-भवन में होना हर्गिज़ सम्भव नहीं है। आप विश्वास करें या न करें, आपकी इच्छा है। लेकिन मैं समझता हूँ, रानी को सन्तोष हो गया होगा, कि मैं उसकी निर्दोषिता पर विश्वास करता हूँ।" कहकर वह चलने को तैयार हुए।

"ठीक है महाराज, क्षमा करें, अब हम जाते हैं," कहकर

आर्टुई ने रानी का कर-चुम्बन किया, और महाराज के साथ कमरे से बाहर निकल गया।

फ़िलिप अपनी जगह से नहीं हिला।

"मोशिये डि-स्टेयर्नी," जब वे चले गये, तो रानी ने ज़रा सख़्ती से कहा—"आप मोशिये आर्टुई के साथ नहीं गये?"

फ़िलिप एक-दम चल दिया। शरीर का सारा रक्त मानो एक-बारगी दिमाग़ में चढ़ गया, और महारानी के सामने झुकने या उनका कर-चुम्बन करने की शक्ति भी उसमें न रही।

एण्ड्री की अवस्था दयनीय थी। वह समझती थी कि फ़िलिप चर्नी को महारानी के पास अकेली छोड़ने की जगह बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हो सकता था। यहाँ तक कि रहस्यमयी जीन के साथ महारानी का छोड़ना भी उसे निरापद नहीं जान पड़ता था। यही भाव उसके मन में भी उदय हो रहा था, पर वह महारानी को छोड़कर फ़िलिप को तसल्ली देने के लिये न जा नहीं सकी।

चर्नी के विषय में उसका मन बिखरा पड़ता था। उसने अपने आप ही एकाध बार कहा—"मैं चर्नी को प्यार नहीं कर सकती, मैंने तो किसी को प्यार न करने की क़सम खाई है।" लेकिन जब चर्नी महारानी के प्रति सम्मान-पूर्ण शब्दों का प्रयोग कर रहा था, उसके हृदय में यह आग-सी क्यों जल उठी? या यह ईर्ष्या नहीं थी?

एण्ड्री इसी भाव में डूब गई।

उधर महारानी कई मिनट तक चुप रहीं, फिर क़रीब-क़रीब
े-भाव से बोलीं—"क्या कोई इस गोरखधन्धे पर विश्वास
ा ?" तब चर्नी की तरफ़ घूमकर उसने कहा—"महाशय,
िक आपत्तियों और तूफ़ानी उपद्रवों की बहुत-सी कहानियाँ
सुनी हैं, लेकिन आपने उन सब पर विजय पाई है।"
"मैडम......!"

"आपने दुश्मनों से मुक़ाबला किया, और जान हथेली पर
र श्रैम का मस्तक ऊँचा किया। आज सब लोग आपको
द करते हैं। इसलिए मेरी समझ में वे दुश्मन आशीर्वाद के
हैं, जो जान लेने के इच्छुक हैं। पर मेरे दुश्मन इस तरह के
हैं; वे मुझे लज्जित करते हैं, मेरी बदनामी फैलाते हैं, और मुझ
पूर का समाज में मुँह दिखाने लायक़ नहीं रखना चाहते।
ाय, शायद आप जानते नहीं, कि सर्व-साधारण की घृणा का
बनकर जीना कितना कठिन है!"

एएड्री चर्नी का जवाब सुनने को उत्सुक हो उठी, लेकिन उसने
न कहा, और दीवार का सहारा लेकर खड़ा रह गया। चेहरे
अकस्मात् ज़र्दी छा गई।

रानी ने उसके भाव पर लक्ष्य दिया, और कहा—"बड़ी गर्मी
एएड्री! खिड़कियाँ खोल दो। मोशिये तो समुद्र की खुली और
ड हवा के अभ्यस्त हैं न, यहाँ उन्हें कुछ तकलीफ़ हुई है।"
"ना, मैडम, यह बात नहीं; मैं दो बजे से जागा हुआ हूँ, अब
र महारानी आज्ञा दें......"

"अच्छा! अच्छा! अब आप जा सकते हैं!" रानी ने
से कहा।

चर्नी ने अभिवादन किया, और शीघ्रतापूर्वक बाहर हो।
पर क्षण-भर बाद ही बाहर से चीख की आवाज सुनाई
और ऐसा जान पड़ा, मानो बहुत-से आदमी दौड़कर गये।
रानी दर्वाजे के पास-ही थी, उसने झाँककर देखा, और
चिल्लाकर वह बाहर जाना ही चाहती थी कि लपककर एण्ड्री
रोक दिया। कहा—"ना, मैडम!"

तब उन्होंने देखा—कई पहरेदार बेहोश चर्नी को उठाकर
जा रहे हैं।

रानी ने देखकर दर्वाजा बन्द कर लिया, और वापस
बैठ गईं। कुछ देर विचार-मग्न रहकर बोलीं—"मेरा क्या
महाराज के कथन पर किसी ने विश्वास नहीं किया! मुझे
स्थिति स्पष्ट करने के लिए और कुछ करना चाहिए।"

एण्ड्री ने कहा—"ठीक है! आपको इस मामले में पूरी
करनी चाहिए। क्यों मैडम जीन?"

जीन एक-बारगी चौंक पड़ी, और कुछ जवाब न दे सकी
अकस्मात् महारानी बोल उठीं—"मैंने असल बात पा
जरा बुलाओ तो मोशिये क्रोन को!"

रानी का चेहरा खुशी से खिल उठा।

———

१६

महाराज और महारानी में भेंट होने के बाद क्रोन अजब
शानी में पड़ गया था। राज-परिवार की इज्ज़त का ख़याल
ना साधारण उत्तरदायित्व नहीं था। उसे ऐसा अनुभव हुआ
महारानी का सारा क्रोध एक-बारगी उस पर आ पड़ा है।
फिर इस बात का उसे सन्तोष था कि उसने जो-कुछ किया,
ठीक समझकर किया। बस इस दूसरे बुलावे पर जब उसने
नी के कमरे में प्रवेश किया, तो उसके मुख पर शान्ति और
न्तोष की मुस्कराहट थी।

"देखिये, मोशिये क्रोन!" महारानी ने देखते-ही कहा—"अब
कैफ़ियत देने की बारी है।"

"जो महारानी की आज्ञा।"

"पुलिस के सब से बड़े अफ़सर होने की हैसियत से आपको
कारण मालूम होना चाहिये, जिससे मेरे साथ ऐसी घटना
टित हुई।"

क्रोन ने कुछ भयभीत होकर चारों तरफ़ देखा।

"इन महिलाओं की चिन्ता न करो," रानी ने कहा—"तुम
दोनों को जानते हो; सभी को जानते हो।"

"जी हाँ, क़रीब-क़रीब," फ्रोन बोला—"पर आपके माम...
मुझे असल कारण मालूम न हो सका।"

"अच्छा, तो मैं इस विषय में प्रकाश डालती हूँ; यद्यपि
काम मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ था। यह बात मुझे कहनी चाहिए
में, मगर मेरा दिल बिलकुल साफ़ रहता है, इसलिये मैं उसे
दुनियाँ के सामने खोल रखना चाहती हूँ। देखो, मैं समझती
यह सब शरारत किसी ऐसी औरत की है, जो शक्ल-सूरत में
जैसी है, और सब जगह उसका आना-जाना है।"

"ओहो!" इस ख़याल ने फ्रोन को इतना चौंकाया, कि
एण्ड्री और जीन के भाव-परिवर्तन पर लक्ष्य न दे सका।

"हाँ, मोशिये, तुम्हारे ख़याल में, क्या यह सम्भव ना
या मैं तुम्हें धोखा दे रही हूँ?"

"ना, यह नहीं मैडम, मैं यह सोचता हूँ, कि दो आ...
की सूरतों में चाहे-जितना साम्य हो, कुछ-न-कुछ भिन्नता ...
ही होगी।"

"लेकिन यहाँ ऐसा नहीं हुआ, मोशिये, लोगों को ...
धोका हुआ है।"

"आ हां! मुझे याद आया!" एण्ड्री ने चीख़कर कहा-
मैं देश में रहती थी, तो हमारी एक दासी थी........."

"मेरी शक्ल की?"

"जी हाँ, बिल्कुल आपकी।"

"तो उसका क्या हुआ?"

आप तो ख़ुद समझ सकती हैं, कि आदमियों से ग़लती है सम्भव ही है।"

"लेकिन फिर भी, जिनके पास सब-कुछ जानने के साधन और सब-कुछ समझने लायक़ बुद्धि है, जो मेरी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण कर सकते है, उनका ऐसी महत्व-पूर्ण बात अनभिज्ञ रहना क्षम्य नहीं कहा जा सकता।"

"मैडम, क्षमा कीजियेगा; जब ख़ुद आपके नज़दीकी रिश्ते ने आपको समझने मे ग़लती खाई, तो मेरे आदमी भी वही ग़लती कर सकते हैं। वैसे मेरे आदमी राज्य की प्रत्येक महत्व-पूर्ण घटना की ख़बर रखते हैं। जैसे, उसी पाजी अख़बारनवीस का मामला है, मोशिये चर्नी ने जिसकी अच्छी तरह मरम्मत की है।"

"मोशिये चर्नी ने ?"

"जी हाँ, मेरे आदमियों को सब पता लग गया। इतना ही नहीं, द्वन्द्व-युद्ध की रिपोर्ट भी मुझे मिल चुकी है।"

"पत्रकार के साथ द्वन्द्व-युद्ध ?" एण्ड्री ने चौंककर पूछा।

"जी नहीं, पत्रकार-महाशय तो पिट-पिटाकर बेहाल हो गये, और चर्नी तलवार का कारी ज़ख्म खाने के लिये रह गये।"

"तलवार का ज़ख्म ?" महारानी ने चौंककर कहा—और कैसे ? अभी तो वह यहाँ था।"

"ओहो !" एण्ड्री चिल्लाई—"मुझे याद पड़ता है, हालत अच्छी नहीं थी।"

सुनते-ही महारानी झपटकर एण्ड्री की तरफ़ घूमीं।

"अभी तक नहीं मैडम।"

"आखिर यह लड़ाई हुई क्यों ?"

"यह बात तो हमें मोशिये चर्नी से-ही पूछनी
एण्ड्री ने भावापन्न होकर कहा।

"मैं मोशिये चर्नी की बात नहीं पूछती, मेरा म
फिलिप टेवर्नी से है।"

"अगर मेरा भाई लड़ा भी होगा," एण्ड्री ने
"तो महारानी के-ही पक्ष-समर्थन में।"

"यानी चर्नी मेरे विपक्ष में लड़ा ?"

"जो, मैंने तो सिर्फ अपने भाई की बात कही
की नहीं।"

महारानी ने शान्त रहने की भरपूर कोशिश की
वह स्तब्ध भाव से कमरे में इधर-उधर घूमीं, और
"मोशिये क्रोन, निस्सन्देह तुम्हारे आदमी बहुत
लेकिन अब मुझसे साम्य रखनेवाली इस लड़की
तुम्हें करनी चाहिये। जाओ!"—कहकर उसने
हाथ फैला दिया।

क्रोन के जाने पर एण्ड्री ने भी चलने का
महारानी ने उसे भी विदा दी।

औन भी चलने को हुई, कि दासी ने प्रवेश कि

"जी, इतना सुन्दर," पांसेज्ञ ने पद्य लगाई—"कि आप उसे पहनने योग्य थीं।"

"मुश्किल यह है !" रानी ने ऐसी लम्बी साँस लेकर जिस पर जान ने लक्ष्य दिया—"कि उनका दाम एकदम लाख है। क्यों—यही दाम था न ?"

"जी हाँ।"

"और इस जमाने में," रानी बोली—"किसी राज-परिवार की ऐसी अवस्था नहीं है कि इकट्ठा पन्द्रह लाख एक हार के लिये खर्च दे। बस, ता न मैं ही उसे पहन सकती हूँ, न कोई और।"

"यह महारानी का भ्रम है; हार बिक चुका।"

"बिक चुका ?" रानी चौंक पड़ी—"किस के हाथ ?"

"ओह ! मैडम, यह भेद की बात है !"

"ओह ! भेद की बात है, तो मत बताओ, पर ...

जगह......।"

"मैडम, पुर्तगाल के राजदूत आये हैं ! उन्हीं ने खरीदा है।"

बॉहमर ने धीरे से कहा, ताकि जीन न सुन सके।

रानी ने क्षण-भर चुप रहकर कहा—"खैर, मुबारक पुर्तगाल की महारानी को ! अब इस विषय की बातें खतम ...... मिले !" ...

"लेकिन मैडम एक बात कहने की आज्ञा मिले !"

बोला।

"तुमने कभी उस हार को देखा है।" रानी ने जीन से

"न, महारानी !"

"बहुत ही सुन्दर है। अफ़सोस, ये लोग उसे साथ भी तो लाये।"

"जी हाँ, लाये हैं।" वॉहमर ने बक्स खोलते हुए कहा। "देखो काऊण्टेस, देखो; तुम भी स्त्री हो, यह हार देखकर जरूर ख़ुश होगी।"

[illegible] खोला गया तो उसने तारिका के पुञ्ज बाँध दिये। [illegible] मे चीज थी भी तारिका के क़ाबिल। लाल—और सब्ज हीरे [illegible] की लपटें-सी मालूम होते थे। जैसे-ही वॉहमर ने उसे [illegible] सरकाया, कमरे में बिजली-सी कौंधने लगी।

"अद्भुत! अद्भुत!" [illegible] उन्मत्त-सी होकर चिल्ला उठी।

"पन्द्रह लाख को रकम तुम्हारी हथेली पर है। समझीं?" [illegible]नी ने मुस्कराकर कहा।

"जौहरी-महाशय सच कहते हैं," यह देखकर कि महारानी [illegible]से अभी तक हार का मोह दूर नहीं हुआ है, और फिर [illegible] पहनने के लिये तक़ाज़ा करने का समय अभी नहीं गया है, [illegible] कहा—"वास्तव में यह हार आपही के गले के [illegible] है।"

"[illegible]र, मैं तो इसे पहन नहीं सकूँगी।"

[illegible]मर ने कहा—"इस बेशक़ीमती चीज के फ़रान्स से [illegible]ने के पहले हमने यह अपना कर्त्तव्य समझा, कि हम [illegible] पेश-प्रचार कर जायें। यह हार युरोप-भर में प्रसिद्ध है,

और हम अन्तिम बार यह जान लेना चाहते थे, कि क्या वास्तव में इसे वापस करना चाहती हैं ?"

"मेरे इरादे की बात सर्व-साधारण में प्रकट हो चुकी लोगों ने इसके लिये मेरी प्रशंसा भी की है।"

"ओह मैडम !" बॉहमर ने कहा—"बेशक, लोगों ने आ इस ख़याल की तारीफ़ की है कि आपने हार की जगह जङ्गी जहाज़ को प्रधानता दी। लेकिन अगर अब आप ख़रीद लेंगी, तो भी लोग इसे बुरा नहीं कह सकते।"

"अब इस विषय मे और कुछ मत कहो।" मैरी अण्टोनि ने कहा, पर साथ-ही हार पर एक ललचाई हुई नज़र भी डाली।

जीन ने लम्बी साँस ली।

"अरे ! तुम लम्बी साँस लेती हो काऊण्टेस, मेरी जगह तीं, तो शायद ऐसा न करतीं।"

"कह नहीं सकती मैडम।"

"अच्छा, ख़ूब मन भरकर देख लिया ?"

"जी नहीं, इसे तो जीवन-भर देखूँ, तो भी मन न भरे

"तो थोड़ी देर देखने दीजिये मोशिये, इससे आपके क़ीमत नहीं घट जायगी। यह अफ़सोस की बात है, कि इसकी क़ीमत पन्द्रह लाख ही है।"

"ओह !" जीन ने मन-ही-मन कहा—"रानी को अ है।" तब बोली—"मैडम, अगर यह हार आपके ग जाय, तो सारे जगत की सुन्दरियाँ ईर्ष्या से भस्म हो

' रानी के गले में पहनाकर कहा—"ओह ! महारानी कैसी ती दिखती हैं !"

रानी शीशे की तरफ घूमीं। सचमुच विचित्र दृश्य था ! हीरों जगमग ने सुन्दरी रानी को चार चाँद लगा दिये। खुद रानी ग-भर के लिये अपने-आपको भूल गई। तब हठात् उसने हार गले से उतारने का उपक्रम किया।

"इस हार ने महारानी के गले से स्पर्श करने का सौभाग्य कर लिया, अब यह और कहीं न जायगा।" बॉहमर ने कहा।

"असम्भव !" महारानी ने दृढ़तापूर्वक कहा—"महाशय, इन से मैंने अपना मनोरञ्जन कर लिया। अब इससे आगे बढ़ना व हो जायगा।"

"जी, हम लोग कल उपस्थित होंगे।" बॉहमर बोला।

ना ! ना ! हार को वापस ले जाओ !" रानी ने कहा—"इस से मेरी आँखों-आगे से हटा लो।"

ाखिरी बॉहमर और बॉसिञ्ज ने बहुतेरी ज़िद की, पर रानी ने मानी। आखिर उन्होंने कहा—"तो महारानी बिलकुल करती हैं ?"

हाँ......हाँ।"—सुनते ही दोनों आदमी बाहर हो गये।

नी अप्रतिभ हो उठी, कुछ देर चुप रहकर जीन से बोली—

ट्रेस, महाराज अब आते दिखाई नहीं देते। विश्वास रक्खो, भूलूँगी नहीं।"

न झुककर चल पड़ी।

१७

रानी न होने पर भी जीन एक स्त्री तो थी ही। जब
से विदा होकर गाड़ी में बैठी वह अपने घर जा रही थी,
हठात उसकी आँखों-आगे राज-प्रासाद और अपने क्षुद्र मकान
चित्र एक-बारगी खिंच गया। फिर अपने उस नये मकान
चित्र उसने मन के नेत्रों के सम्मुख रक्खा, जो अमीर ने
उसे दिया था। इस नये घर के ठाठ और आज्ञाकारी
चाकरों की तुलना जब उसने राज-प्रासाद से की, तो
उसके ओठों पर एक अद्भुत मुस्कान दौड़ गई।

वह सीधी इसी घर में पहुँची। क़लम उठाकर उसने
पर कुछ लिखा, और इत्र से बसे हुए लिफ़ाफ़े में बन्द करके
को हुक्म दिया—"इस पत्र को अमीर को दे आओ।"

पाँच मिनट बाद ही नौकर वापस लौट आया।

"क्यों?" जीन ने व्यग्र होकर कहा—"गये क्यों नहीं?"

"मैडम, ज्यों-ही मैं घर से बाहर निकला, सरकार हुज़ूर
नज़र पड़े। मैंने उनसे कहा, कि मैं आपका एक पत्र लेकर
के पास जा रहा था। उन्होंने उसे पढ़ा, और अब बाहर खड़े

कुछ क्षण रुककर काउण्टेस ने कहा—"उन्हें लिया लाओ।" वह रुकी क्यों? इतने बड़े आदमी से मिलने योग्य मनोभाव लाना चाहती थी, या किसी लच्छेदार वार्तालाप का ढङ्ग सोच ही थी?

अमीर को इस समय बुलाने से उसका अभिप्राय क्या था? ष बात यह थी, कि रानी का हार तरह-तरह के रूप धारण रके उसकी आँखों-आगे नाच रहा था। वर्सेई से पेरिस काफ़ी र है। रास्ते-भर उसके मन में लालच, छल, कपट और ईर्ष्या के न्हें भाव उत्पन्न होते रहे। अमीर ही उसकी इस लालसा को रा कर सकता था। यही कारण था कि उसने आते-ही उसे लाने की जल्दी की।

"आहा! प्यारी जीन!" आते-ही उसने कहा—"तुमने तो इतना मोह लिया, कि तुम्हारे बिना कहीं कुछ दीखता ही ! तो वर्सेई से लौट आई ?"

"आप देख तो रहे हैं।"

"रही, सन्तुष्ट होकर आई ?"

"खूब!"

"तो रानी ने तुम्हारा स्वागत किया ?"

"हाँ, जाते ही मुझे पेश होने की अनुमति मिल गई।"

तुम भाग्यशालिनी हो। तुम्हारे प्रसन्न मुख से यह प्रकट , कि उसने तुमसे वार्तालाप भी किया।"

मैं तीन घण्टे तक महारानी के पास रही।"

"तीन घण्टे ! ओह, तुममें सचमुच अद्भुत आकर्षण है !
लेकिन मज़ाक़ तो नहीं करती हो ! तीन घण्टे !" उसने कहा-
"तुम्हारे-जैसी चतुर स्त्री ने तो तीन घण्टे में न-जाने क्या-
दिया होगा !"

"मोशिये, विश्वास रक्खो, मेरा समय व्यर्थ नहीं गया !"

"मेरा तो खयाल है, कि इन तीन घण्टों में तुम्हें मेरी
क बार भी न आई होगी !"

"छी: ! आप कैसे कृतघ्न हैं !"

"सचमुच !" अमीर चिल्ला उठा।

"आपको याद करने से ज्यादा मैंने किया; मैंने तो आप
जिक्र तक कर डाला !"

जिक्र कर डाला ? रानी से ? ओह प्यारी काउण्टेस,
हाल साफ़-साफ़ सुनाओ !" अमीर ने हठात् व्यग्र होकर कहा।

तब जीन ने अपने सौभाग्योदय का सब हाल सुनाया,
किस प्रकार वह एक अपरिचित की जगह रानी की दोस्त
राजदार बन गई।

नौकर ने भोजन तैयार होने की सूचना दी। दोनों हाथ
हाथ डाले खाने बैठे।

बातचीत बराबर जारी थी।

दो घण्टे बीत गये, और वार्त्तालाप में विघ्न न पड़ा।
समय अमीर मानों जीन का बेदाम-ग़ुलाम था, और जीन
इस भाव से मन-ही-मन प्रसन्न थी। सच बात यह थी, यह

"बुद्धिमती हैं, या नहीं—यह तो मैं नहीं जानती, मगर यह कहे देती हूँ, कि ज्यों-ही रानी ने हार लेना अस्वीकार किया, त्यों-ही उसके मन में उसे लेने की इच्छा बलवती हो उठी।"

"प्यारी काउण्टेस, क्षमा करना, कहीं ऐसा तो नहीं, कि यह अब तुम्हारा क़यास-ही क़यास हो। क्योंकि महारानी के मन में हीरे-जवाहरात का अधिक मोह नहीं है।"

"यह मैं नहीं जानती, मैं तो यही कह सकती हूँ, इस हार लिये रानी के मन में बड़ा मोह है।"

"कैसे ?"

"मैंने आज उस हार को देखा और स्पर्श किया था।"

"कहाँ ?"

"वर्सेई मे—जबकि जौहरी-लोग उसे अन्तिम बार रानी को ने और आकृष्ट करने के लिये आये थे।"

'हार कैसा है ?—सुन्दर ?"

'अत्यन्त सुन्दर ! मैं स्त्री हूँ, इसलिये कहती हूँ कि कोई भी सके लिये खाना और सोना भूल सकती है।"

हाय ! मेरे पास महाराज को देने के लिए एक जङ्गी जहाज हुआ !"

ङ्गी जहाज ?"

ाँ, उसके बदले में वह हार मुझे मिल जाता, और तब तुम खा-सो सकती थीं।"

ाप तो दिल्लगी करते हैं।"

"नहीं, सच कहता हूँ।"

"ख़ैर, आपको आश्चर्य होगा, कि मुझे इस हार की इच्छा नहीं है।"

"यह और भी अच्छी बात हुई काऊण्टेस, क्योंकि मेरी सामर्थ्य उसे तुमको देने की थी ही नहीं।"

"न आपकी, न किसी और की, यही महारानी का ख़याल है।"

"लेकिन मैं कहता हूँ न, महाराज ने उसे रानी को भेंट कि था।"

"और मैं कहती हूँ कि स्त्रियाँ उस भेंट को सब से पसन्द करती हैं, जिसे देने-वाला अपने भीतर अधिकार और का दम्भ अनुभव न करता हो।"

"मैं समझा नहीं।"

"जाने दीजिये, कोई बात नहीं; और आपका पूछना है, जबकि आप उसे ख़रीद ही नहीं सकते।"

"हाय! अगर मैं राजा होता, और तुम रानी तो मैं तुम्हें उस भेंट को स्वीकार करने के लिये करता।"

"ख़ैर, ख़ुद राजा न होकर रानी पर कृपा कीजिये उसे उसको भेंट कर दीजिये। फिर देखिये, आपके प्रति नाराज़ी कहाँ जाती है।"

अमीर ने चकित होकर उसे ताका।

"तुम्हें भरोसा है," उसने कहा—"तुम भूल नहीं कर रही हो—और रानी वास्तव में उस हार की इच्छुक है ?"

"बिलकुल ! सुनिये, प्यारे अमीर, मुझसे न-जाने किसने कहा कि आप मन्त्री बनने पर प्रसन्न होंगे।"

"शायद मैंने-ही खुद कहा हो।"

"ख़ैर, तो मेरा विश्वास है कि एक सप्ताह के भीतर जो आदमी रानी के गले में उस हार को पहुँचा देगा, वह अवश्य मन्त्री बन जायगा।"

"ओहो, काऊण्टेस !"

"मेरा जो ख़याल है, वह कहती हूँ। कहिये, तो चुप हो जाऊँ।"

"हर्गिज़ नहीं।"

"ख़ैर, कुछ भी हो, आपसे इस बात का कोई प्रयोजन नहीं। मेरा ख़याल है कि आप रानी की एक इच्छा-पूर्ति के लिये पन्द्रह लाख की रक़म गँवा देंगे।"

अमीर चुप था, विचार-मग्न था।

"अच्छा ! अब आप मुझ से घृणा करने लगे।" वह बोली—"आप सोचते हैं कि जैसी मैं ख़ुद हूँ, वैसी-ही महारानी को समझती हूँ। बेशक, यही बात है। जब उसने हार पर नज़र डालकर लम्बी साँस ली, तो मैंने यही नतीजा निकाला कि वह उस हार को पाने के लिये व्याकुल थी। फिर, अगर मैं उसकी जगह होती, तो मेरे मन में भी वैसा-ही भाव उदित होता। यही मेरे मन का पाप है।"

"काऊण्टेस, तुम बहुत ऊँचे हृदय की स्त्री हो। तुम कोमलता
र दृढ़ता की एक रहस्यमयी मूर्ति हो। खैर, अब इस मामले
बात-चीत खतम होनी चाहिये।"

"अच्छी बात है," जीन ने सोचा—"पर मेरा खयाल
चित पड़ा है।"

वास्तव में, अमीर ने कह तो दिया कि "अब इस मामले में
... बन्द होनी चाहिये।" पर कुछ-ही मिनट बाद उसने
पूछा—"बॉहमर जोहरी की दूकान तो पॉन्तनिड-मौहल्ले
निकट ही कहीं है न?"

"जी हाँ, एक बार मैं गाड़ी में बैठी उस मौहल्ले से गुजर रही
थी, तो दूकान के दर्वाजे पर बोर्ड में देखा था।"

जीन का अनुमान ठीक था। मछली जाल में फँस चुई
थी। क्योंकि दूसरे ही दिन अमीर गाड़ी में बैठकर बॉहमर
भेंट करने गया। वह अपने-आपको छिपाना चाहता था,
बॉहमर उसे पहिचानता था, इसलिये देखते-ही 'सरकार!' कहकर
अभिवादन किया।

"देखिये, महाशय!" इस पर अमीर ने कहा—"अगर आप
मुझे जानते हैं, तो मेरी इस भेंट को गुप्त ही रक्खें।"

"सरकार मेरा भरोसा करें। कहिये, क्या आज्ञा है?"

"मैं उस हार को खरीदने आया हूँ, जो आपने महारानी
दिखाया था।"

"यह तो बड़ी चिन्ता की बात है; आप देर से पहुँचे।"

"क्यों ?"

"वह तो बिक चुका।"

"असम्भव ! कल ही तो आपने उसे महारानी के रूबरू पेश
श था।"

"हाँ, उन्होंने इन्कार कर दिया। पर हमारा सौदा दूसरी
ह अच्छा बन गया।"

"किससे हुआ यह सौदा ?"

"पुर्तगाल के राज-दूत से।"

"मोशिये बॉहमर," अमीर ने कहा—"मेरा ख़याल था, कि
न्सीसी जौहरी इन क़ीमती हीरों को फ़्रान्स ही में रखना
ादे पसन्द करेगा। तुम पुर्तगाल भेजना चाहते हो। ख़ैर !"

"क्या करें सरकार, मजबूर हैं !"

"और अगर महारानी ले लेवें ?"

"तब तो पुर्तगाल के राज-दूत से वचन तोड़ने के लिये बहाना
ा जावा।"

अमीर ने क्षण-भर सोचकर कहा—"तो मोशिये, समझ लो,
हार महारानी के लिये ही ख़रीदा जा रहा है।"

"ओह ! तब तो हम सब-कुछ करने को तैयार हैं।"

"क्या दाम है इसका ?"

"पन्द्रह लाख फ़्राङ्क !"

"चुकायगी किस तरह चाहते हो ?"

"पुर्तगाल के राज-दूत महोदय से तो यह तय हुआ था कि

एक लाख नक़द मिलगा, और बाक़ी अपने देश में जाकर दूंगा।
मैं खुद हार को लेकर उनके साथ जाता।"

"और, एक लाख नक़द की बात तो ठीक है, पर बाक़ी के
लिये········"

"क्या सरकार कुछ मुद्दत चाहते हैं ? जब आप लेंगे,
" मुद्दत में क्या आपत्ति हो सकती है ? पर "
सूद·········"

"अच्छी बात है। क़ीमत पन्द्रह नहीं सोलह लाख मान
लो, और अदायगी चार-चार महीने की तीन किस्तों में होगी

"इसमें तो सरकार, हमें घाटा रहेगा।"

"छी: ! अगर सारा रुपया तुरन्त तुम्हें दे दिया जाय,
उसका बनाओगे क्या ?"

"सरकार, दो साझी हैं।"

"और, तुम्हें हर चार महीने के बाद पाँच लाख
मिलेगी; यह थोड़ी नहीं है।······लाओ, जरा देखें तो
को;—मैंने तो देखा तक नहीं है।"

"देखिये, यह रहा।"

"बहुत सुन्दर !" अमीर ने देखकर कहा—"अच्छा तो
तय हुआ !"

"जैसी सरकार की मर्जी ! तो किनके नाम लिखूँ ?"

"मेरे। और किसी से तुम्हें कोई मतलब नहीं। कल
लाख छोड़ दे जाऊँगा, और शर्त्तनामे पर दस्तख़त कर

, मोरिये बॉइमर, सब बातें गुप्त ही रहनी चाहियें।"
रकार इस विषय में निश्चिन्त रहें।"

ोर रोहन प्रसन्न होकर लौटा। वासना की आग में पतङ्ग
जलनेवाले सभी लोग इस तरह प्रसन्न हुआ करते हैं।

१८

लिया को खबर बहुत देर से नहीं ली। एक दिन वह
र्ग के बागों में सैर करने गई। वहाँ अकस्मात् उसको
ने उस अद्भुत मित्र से हागई, जा उसे श्रॉपेरा के नाच-
र मिला था।

ने को तैयार थी, कि वह मिल गया, और बोला—"कहाँ
हो?"

र, मोशिये।"

क है। वहाँ तो लोग आपका इन्तज़ार कर रहे हैं।"
ा इन्तज़ार कर रहे हैं? मेरे खयाल मे तो, वहाँ कोई
।"

जी, कोई कैसे, कम-से-कम एक दर्जन आदमी होंगे।"
जी, एक दर्जन क्यों—एक पल्टन कहो।" श्रोलिया ने
कहा।

ायद; अगर एक पल्टन भेजना सम्भव होता, तो उसमें
च न किया जाता।"

ाप तो मुझे हैरानी में डाल रहे हैं!"

"उसके लिये तो वेशक तुम अफसोस कर सकती हो, लेकिन र वह पकड़ा गया, तो यह जरूरी नहीं, कि तुम भी पकड़ी गो।"

"मेरी रक्षा करने में आपको क्या दिलचस्पी है ?" उसने —"आप-सरीखे आदमी की प्रकृति के अनुकूल तो यह बात जान पड़ती।"

"मैं तुम्हारी जगह होता, तो हर्गिज इस तरह समय नष्ट न ा। क्योंकि सम्भव है, वे लोग तुम्हें घर पर न पाकर खोजते-ते इधर चले आवें।"

"उन्हें मेरा पता कैसे लगेगा ?"

"तुम रोज ही तो इधर घूमने आती हो। अगर तुम मेरे साथ ना चाहो, तो मेरी गाड़ी पास ही खड़ी है। लेकिन देखता हूँ, अब भी पसो-पेश में हो।"

"बेशक।"

"खैर, तो इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई उपाय नहीं है, कि मेरी गाड़ी में बैठो, और हम तुम्हारे मकान के सामने से र गुजरें। जब तुम खुद उन महानुभावों के दर्शन कर लोगी, तारा है, मेरा आभार मानोगी।"

उसने उसे गाड़ी में सवार कराया, और गाड़ी हारन बाजार रक चली। रास्ते में एक जगह ब्यूसर खड़ा था। उसने ा और कमलाकर को देखा। ओलिवा की निगाह उस पर ी। अगर यह [illegible]

स्त्रियाँ अकसर अपने बालों में लगा लेती हैं। इस काँटे
उसने ओठों से स्पर्श किया, और उसकी आँखों में
भर आये। मुँह से वह बड़बड़ाया— "लोरेञ्जा !" यह
क्षण-भर ही रही, तब उसने खिड़की खोली, और काँटा
फेंक दिया, और कहा—"विदा ! आख़िरी निशानी थी,
मुझे पिघला दिया, मैं इस मकान का अनधिकार उपयोग
जा रहा हूँ; इसमें एक दूसरी रमणी निवास करेगी; और
इसी कमरे में—जिसमें लोरेञ्जा की अन्तिम श्वास अभी
मौजूद है। लेकिन अपनी उद्देश्य-पूर्त्ति के लिये मुझे यह
भी करना ही पड़ेगा। अब इसकी मरम्मत करा दूँ।"

तब उसने अपनी तख़्ती पर यह लिखा—

"मेरे मिस्तरी, मोशिये लिनोर ! सहन और जीने क
कर दो, अस्तबल को नया बना दो, और भीतरी क
सजा दो। समय—आठ दिन।"

"अब देखूँ," उसने आप-ही-आप कहा—"भला
की खिड़की साफ़-साफ़ दिखाई देती है, या नहीं।
दिखाई देगी, जरूर-ही दोनों औरतें एक-दूसरी को दे

अगले दिन पचास मजदूर मकान की मरम्मत में
... भीतर-भीतर अभीष्ट काम ख़त्म क

"यह—कि आप मुझे न-सिर्फ इस समय प्यार नहीं करते, बल्कि कभी भी नहीं करते थे।"

"वाह काऊण्टेस ! यह कैसे कहती हो ?"

"बस, अब उस विषय में चुप रहिये; व्यर्थ समय खोने से क्या लाभ ?"

"ओह ! काऊण्टेस........!"

"कोई पर्वाह नहीं, आप निश्चिन्त रहें; मैं अब उस विषय से बिलकुल विरक्त हो चुकी हूँ।"

"चाहे मैं तुम्हें प्यार करता होऊँ, या नहीं ?"

"बेशक; क्योंकि मैं आपको प्यार नहीं करती।"

"यह तो अच्छी बात नहीं है।"

"बेशक, मैं अच्छी बात नहीं कह रही हूँ; बल्कि आपके सम्मुख सत्य को उपस्थित कर रही हूँ। हमने कभी भी एक-दूसरे को प्यार नहीं किया था।"

"और, अपने विषय में तो मैं जानता हूँ, कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ।"

"देखिये मोरिये, अब हमें सच्ची-सच्ची बातें करनी चाहिएँ। वह यह कि, आपके हमारे बीच प्यार की तह में एक भाव बड़ी शक्ल में मौजूद है, और वह है—स्वार्थ !"

"ओह, काऊण्टेस, कैसी शर्मनाक बात कहती हो !"

"मोरिये, आप इसे चाहे-जैसी शर्मनाक समझें, मैं समझती।"

"अच्छा जोर, काउण्टेस, यह बताओ, अगर हम दोनों से एक-
ूसरे का स्वार्थ है, तो कैसे हम परस्पर लाभकर हो सकते हैं।"

"पहले तो, मोशिये, मुझे एक बात बताइये। वह यह, कि
ापने मुझ पर विश्वास क्यों नहीं किया ?"

"मैंने ? कैसे ?"

"क्या आप बतायेंगे, कि एक वस्तु-विशेष के प्रति एक
ान्य महिला के अनुराग की बात मुझसे जानकर आपने बिना
सूचित किये क्यों उस वस्तु को उस महिला के पास पहुँचाने
प्रयत्न किया ?"

"काउण्टेस, तुम तो एक जीती-जागती पहेली हो, साफ़-साफ़
ाना ही नहीं जानतीं।"

"जी नहीं, पहेली-वहेली कुछ नहीं। मेरा मतलब महारानी
हीरों के हार से था, जिसे कल आपने बॉहमर जौहरी से
ा है।"

'अरे!" अमीर का चेहरा फ़क़ पड़ गया!

डरिये नहीं," वह इत्मीनान के साथ बोली—"कहिये, आपने
ी सौदा तय किया है न ?"

मार ने कुछ जवाब न दिया। जब जोन ने देखा, कि वह
हो गया है, तो झट उसने उसका हाथ थाम लिया, और
"क्षमा कीजियेगा, मोशिये, मैं आपको भूल की ओर आप
न आकृष्ट करना चाहती थी। आप मुझे मूर्ख और अवि-
समझते हैं।"

"ओह, काउण्टेस ! मैंने अब तुम्हें पूरी तरह समझा ! पहले तो मैं तुम्हें केवल एक चतुर गृहिणी समझता था, लेकिन अब देखता हूँ, तुम उससे कहीं ज्यादा हो। अच्छा, अब सुनो, तुमने अभी कहा था, कि मुझे बिना प्यार किये भी तुम मेरी गृहिणी व मालकिन बन सकती हो।"

"मैं फिर कहती हूँ।"

"तब तो तुम्हारा भी कुछ स्वार्थ होगा ?"

"बेशक ! क्या आप सुनना चाहते हैं ?"

"नहीं; मैं समझता हूँ। तुमने मेरे उत्थान का प्रयत्न किया अगर तुम सफल हो गई, तो आशा रक्खोगी, कि मैं सब से पहले तुम्हारा-ही ख्याल रक्खूँ। क्यों ?"

"हाँ, मोशिये; पर मैंने किसी आन्तरिक उपेक्षा के साथ इस काम को हाथ में नहीं लिया था, मेरे लिये तो यह मार्ग बहुत ही आनन्द-पूर्ण था।"

"वास्तव में काउण्टेस, तुम बहुत बुद्धिमती स्त्री हो, तुम्हारे साथ बातें करके मन प्रसन्न होता है। यह तुमने ठीक ही समझा है, कि मैं एक व्यक्ति के प्रति विशेष अनुराग रखता हूँ।"

"मैंने ऑपेरा के नाच में इसे लक्ष्य किया था।"

"मैं अच्छी तरह जानता हूँ, कि मेरे इस अनुराग का कोई बदला कदापि न मिलेगा।"

"अजी, रानी भी आखिर स्त्री-ही होती है, आप रानी के प्रेमियों से बुरे थोड़े ही हैं !"

"मैं ज्यादे ख़ूबसूरत भी तो नहीं हूँ।"

"राजनीति-कुशल तो हैं।"

"काऊण्टेस, तुमसे तो बात करना तक कठिन है। सचमुच मैं प्रधान-मन्त्री बनना चाहता हूँ, तुमने ठीक ही कल्पना की है। मैं सब तरह से उस पद का मुस्तहिक़ हूँ; मेरा कुल, व्यावहारिक ज्ञान, विदेशों में मेरा सान्निध्य-परिचय, और मेरे प्रति फ्रांसीसियों का आदर-भाव—सभी मेरी योग्यता के प्रमाण हैं।"

"सिर्फ एक-ही बाधा है।" जीन बोली।

"नज़रे-इनायत?"

"हाँ; महारानी की। बात यह है, कि जिस वस्तु को महारानी पसन्द करती है, उसे-ही महाराज पसन्द करते हैं, और जिसे महारानी नहीं चाहती, उसे महाराज भी नहीं चाहते।"

"तो वह क्या मुझे पसन्द नहीं करती?"

"कम-से-कम प्यार तो नहीं-ही करती।"

"तब तो कोई आशा नहीं। हार ख़रीदना भी व्यर्थ हुआ।"

"नहीं, व्यर्थ नहीं हुआ; कम-से-कम इसमें उस पर यह तो प्रकट हो जायगा, कि आप उसे प्यार करते हैं।"

"तो क्या आपका ख़्याल है, मेरा प्रधान-मन्त्री बनना सम्भव है?"

"मेरा विश्वास है।"

"और तुम्हारी क्या आकांक्षाएँ हैं?"

"मोशिये, यह मैं तब बताऊँगी, जब आप उन्हें सन्तुष्ट कर सकने की स्थिति में आयेंगे।"

"हम उस समय की प्रतीक्षा करेंगे।"

"आइये, अब भोजन करें।"

"मुझे भूख नहीं है।"

"तो बात करें।"

"मुझे तो कुछ कहना नहीं है।"

"तो जाइये।"

"वाह! यही तुम्हारी दोस्ती है!—इस तरह सन्देह रही हो"

"हाँ, मोशिये।"

"और, मैं तुम्हें समझने में गलती न करूँगा। जाता हूँ।"

"हाँ, जाइये, अब मैं अपने हाथ दिखाऊँगी।"

ऐसा क़ीमती भेद उसके दिल में छिपा था, ऐसा उज्ज्वल भ उसके सामने था, और ऐसा जबर्दस्त मित्र उसकी सहायत था—इस कारण जीन ने एक बार तो सारे संसार को अपने हेय पाया। वैलुई-परिवार की एक सम्मान्य महिला की है से, एक लाख फ्राङ्क वज़ीफ़ा पाकर, रानी की विशेष कृपा-पात्री बनकर, और उसके द्वारा राजा पर शासन करती हुई जब वह राज-दरबार में उपस्थित होगी, तो उसके समान कौन दूसरी गौरवशीला होगी? उसके कल्पना के नेत्रों के सम्मुख भविष्य का यह उज्ज्वल चित्र था।

वह अगले दिन वर्सेई पहुँची। महारानी से भेंट का समय

निर्धारित नहीं था, पर उसे अपने भाग्य पर अटल विश्वास था, और पहली बार महारानी ने जैसी आव-भगत से उसका स्वागत किया था, उसे देखकर हरेक दास-दासी उसे सुविधा पहुँचाने के लिये उत्सुक था। अस्तु, जब जीन वहाँ पहुँची, तो एक दासी ने महारानी को सुनाते हुए अपनी एक साथिन से उच्च स्वर में कहा—"क्यों बहिन, अब क्या करूँ? श्रीमती काऊण्टेस वैलुई-महोदया पधारी हैं, और महारानी ने उनसे भेंट करने का समय निर्धारित नहीं किया है।"

महारानी ने सुन लिया, और पुछवाया—"क्या मैडम वैलुई आई हैं?"

जब महारानी को पता लगा, तो उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया—"उन्हें मेरे स्नान-घर में ले आओ।"

दासी ने जीन को सूचना दे दी। उसने कुछ इनाम देने के लिये जेब से बटुआ निकाला, लेकिन दासी ने कहा—"क्या श्रीमतीजी कृपा करके मेरे इस इनाम को अमानत में रख सकती हैं? कोई दिन आवेगा, जब मैं सूद-समेत इसे ले लूँगी।"

"अच्छी बात है, धन्यवाद।"

जब जीन स्नान-घर में पहुँची, तो महारानी गम्भीर-भाव से बैठी थीं।

"उसका अनुमान है, कि मैं कुछ माँगने आई हूँ।" जीन ने सोचा।

"मैडम," देखते-ही रानी बोली—"खेद है, कि आपको बाव

महाराज से कहने का अवसर मुझे अभी तक नहीं मिला।"

"आह ! महारानी ने मेरे लिये पहले ही बहुत-कुछ किया है। मुझे और-कुछ नहीं चाहिये। मैं तो आई हूँ......" कहते-कहते वह रुक गई।

"क्या कोई ऐसी आवश्यक बात थी, जिसे कहने के लिये आपने समय निर्धारित करने की प्रतीक्षा नहीं की ?"

"आवश्यक ! जीहाँ, श्रीमतीजी, मगर मेरे लिये नहीं..."

"तो मेरे लिये ?" कहकर महारानी ने आस-पास खड़ी दासियों को हटा दिया।

"हाँ, अब कहिये।"

"मैडम," वह बोली—"मैं बहुत परेशान हूँ।"

"वह क्यों ?"

"महारानी जानती हैं, कि अमीर रोहन ने मुझ पर कैसी कृपा की है।"

रानी ने भौंह चढ़ाकर कहा—"फिर ?"

"कल वे मुझसे भेंट करने आये, और महारानी की प्रशंसा करने लगे।"

"वह चाहता क्या है ?"

"मैंने भी उनसे आपकी उदारता का बखान किया। यह कहा, कि किस तरह आप ग़रीबों की मदद में अपना बटुआ ख़ाली किये रहती हैं, और अपनी इसी आदत के कारण एक सुन्दर हीरे के हार को प्राप्त न कर सकीं। जब यह बात मैंने

"खरीदना चाहते थे;—हाँ, कह दिया।"

"ओह, फाऊण्टेस, तुम बड़ी अच्छी हो! हाँ तो, उन्होंने ?"

"हाँ सुना तो—मगर इन्कार कर दिया।"

"आह! सर्वनाश!"

"भेंट की सूरत में इन्कार कर दिया, ऋण की सूरत हाँ।"

"मैं—महारानी का ऋण दूँगा! फाऊण्टेस, यह म्भव है।"

"अजी, यह भेंट देने से भी ज्यादे है। क्यों ?"

"हजार गुना ज्यादे।"

"बेशक!"

अमीर उठकर उसकी तरफ बढ़ा, और बोला—"मुझे र में मत रक्खो।"

"आप-जैसे आदमी को अँधेरे में रखना किसी की शक्ति में है।"

"तो यह बात सच है ?"

"बिल्कुल सच।"

अमीर ने जोन का हाथ दबाया, और उसे कृतज्ञता-पूर्ण नेत्रों खा।

"क्यों? पन्द्रह लाख का क़र्ज़ा देने से ही थक गये? उनाथ कुछ-कुछ पाने की आशा की थी।"

"हाँ।"

"अभी हाल में मैंने कुछ हिस्से खरीदे थे। उसमें चौथाई साझा तुम्हारा समझ लिया था। आज उस फर्म का मैनेजर ...के के एक लाख फ्राङ्क मुझे दे गया है, उसमें पचीस हजार ...हारे हैं।"

अमीर ने पचीस हजार फ्राङ्क गिनकर जोन को दे दिये।

"धन्यवाद, मारिये। मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है कि ...पने मेरा ख़्याल तो रक्खा।"

अमीर ने उसका कर-चुम्बन किया, और कहा—"प्यारी, मैं ...शा ऐसा ही करूँगा।"

"और मैं बर्सेई में, आपके लिये।"

डॉक्टर आया, और चर्नी का कोट-वास्कट खोलकर बोल
उ—"अरे! यह तो जख्म है।"

महाराज भी देखकर चौंके, और बोले—"बड़ा कारी
ख्म है।"

"जी हाँ," चर्नी ने बेहोशी में बड़बड़ाते हुए कहा—"एक
राना घाव था, वह खुल गया है।" कहते हुए उसने धीरे-से
क्टर का हाथ दबाया, ताकि वह उसका असली अभिप्राय
मझ जाय।

लेकिन यह डॉक्टर तो राज-चिकित्सक नहीं, जो सब तरह
इशारों को समझता हो, अस्तु अपना प्रकाण्ड पाण्डित्य
खाने के अभिप्राय से बोला—"पुराना! मोशिये, आप क्या
हते हैं, इस जख्म को लगे तो चौबीस घण्टे भी नहीं बीते!"

इस पर चर्नी सहारा लेकर उठ खड़ा हुआ, और बोला—
मोशिये, क्या आप मुझे सिखाना चाहते हैं कि जख्म कब
गा?" तब सहसा दूसरी तरफ़ घूमकर वह चिल्ला उठा—
अरे, महाराज!" कहकर उसने जल्दी-से अपनी वास्कट के
टन बन्द करने का उपक्रम किया।

"हाँ, मोशिये चर्नी, मैं ही हूँ। संयोगवश मैं यहाँ तुम्हारी
हायता के लिये आ पहुँचा।"

"जी, बहुत साधारण-सी खरोंच है; एक पुराना घाव था।"

"पुराना हो, या नया," महाराज बोले—"मैंने एक पुरुष के
का दर्शन किया!"

"जो दो घण्टे बिस्तर में रहकर बिलकुल स्वस्थ हो जायगा।" चर्नी ने उठने की कोशिश करते हुए कहा। लेकिन उसकी ताक़त ने जवाब दे दिया, सिर चक्कर खा गया, और वह उल्टा बिस्तर में गिर गया।

"सख्त बीमार हैं!" महाराज ने कहा।

"जी हाँ," डॉक्टर ने बड़े तपाक से कहा—"लेकिन मैं इन्हें बहुत जल्द अच्छा कर दूँगा।"

महाराज समझ गये थे कि चर्नी उनसे कुछ भेद छिपाने की कोशिश कर रहा है। इसलिये उन्होंने निश्चय कर लिया कि मैं उसे जानने की कोशिश न करूँगा। अस्तु उन्होंने कहा—"मोशिये चर्नी सख्त बीमार है। इन्हें यहाँ से हिलने भी न देना चाहिये। यहीं उनका इलाज होगा। मेरे ख़ास डॉक्टर को बुलाया जाय।"

डॉक्टर आया, और ज़ख्म को देख चुका, तो महाराज ने धीरे-से पूछा—"क्यों डॉक्टर क्या ज़ख्म कारी है?"

"बिल्कुल नहीं।" उसने जवाब दिया।

महाराज चले गये, और डॉक्टर वहीं रह गया। मूर्छित चर्नी को बुख़ार चढ़ आया, और जल्दी ही उसने बड़बड़ाना शुरू कर दिया। तब डॉक्टर ने एक नौकर को बुलाया, और आज्ञा दी, कि उसे गोद में लेकर वह उसके माथे पर हाथ फेरे।

नौकर ने कहा—"लेकिन यह तो इतने बे-क़ाबू हुए जा रहे हैं कि बिना सहायता के इन्हें थामे रखना मेरे लिये असम्भव

बड़ी मुश्किल-से चर्नी को क़ाबू में रक्खा गया।

उसकी चीख्-चिल्लाहट सुनकर बहुत-से लोग वहाँ दौड़ आये। यह देखकर डॉक्टर, ने कहा—"इस जगह इनका च्छा होना असम्भव है, मैं इन्हें अपने कमरे में ले जाऊँगा।"

"लेकिन मोशिये, यहाँ हम सब लोग इनकी देख-भाल रख कते हैं। इनके चाचा मोशिये सफ़ाँ हम सब के आदरणीय हैं।"

"अजी, मैं ख़ूब जानता हूँ, आप लोगों की देख-भाल का हाल! मार आदमी प्यासा हो, तो आप उसे तुरंत पानी दे दें, और की जान ले लें।"

इतने में महारानी की दासी आ पहुँची, और बोली–"आपको रानी याद करती हैं।"

डॉक्टर दासी के साथ चला।

रानी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। डॉक्टर ने भीतर घुसते ही —"महाराज और महारानी जिस रोगी के विषय में चिन्ता रहे हैं, वह अब सकुशल है।"

"ज़ख्म क्या मामूली है ?"

"मामूली हो, या न हो, अब वह जोखिम में नहीं है।"

"तुम्हारी बात तो डरानेवाली है, डॉक्टर! ऐसा जान पड़ता है तुम्हारे मन में कुछ गुप्त बात है।"

"जी हाँ, है तो।"

"रोगी के विषय में ?"

"जी हाँ।"

ार मेरी सहायता भी की थी। मैं भी उससे मित्रतापूर्ण व्यवहार रना चाहती हूँ। इसलिये उसके विषय में सभी बात मुझे ताओ।"

"मैडम, खेद है, कि मैं कुछ कहने में असमर्थ हूँ। सब से च्छा तरीक़ा तो यह है, कि उसके पास खड़े होकर उसको ड़बड़ाहट सुनी जाय।"

"ओहो! वह ऐसी अद्भुत बातें कहता है?"

"ऐसी अद्भुत, जिन्हें महारानी को अवश्य ही सुनना चाहिये।"

"लेकिन मैं तो यहाँ से एक क़दम हिली, कि जासूस लोगों की ाहियात रिपोर्टें तैयार हो जायँगी।"

"इस बात का जिम्मेदार और जवाबदेह मैं रहा। गुप्त मार्ग चलिये, और मैं अपने पीछे के दर्वाज़े में ताला बन्द करता लूँगा।"

"तो फिर तुम जानो।"

और वह कौतूहल के कारण धड़कते हुए हृदय से उसके ाथ चली।

जब वे अगले दर्वाज़े पर पहुँचे, तो डॉक्टर ने ताले के छेद कान लगाया।

"डॉक्टर, क्या तुम्हारा रोगी भीतर है?"

"जी नहीं, अगर यहाँ होता, तो उसकी आवाज़ बरामदे के किनारे से सुन पड़ती। यहाँ से भी उसकी आवाज़ साफ़ सुन ती है।"

मबले में सब चीजें भूल जाती हैं। खैर, मैं उससे कहूँगा. कि मारे-तुम्हारे लिये अभी मौज के कुछ दिन और बाक़ी हैं। आओ, मे प्यारो, हम दोनों अत्यन्त सुख-पूर्वक जीवन-यापन करेंगे। तब यु आयेगी, जो इस जीवन की अपेक्षा श्रयस्कर होगी। आओ, । दोनों परस्पर प्यार करें।' "

"यह तो रोगी की बड़बड़ाहट नहीं।' डॉक्टर ने आप-ही-प कहा।

"लेकिन उसके बच्चे!" सहसा चर्नी ने उत्तेजित होकर —"वह अपने बच्चों का त्याग तो करेगी नहीं। ओह! हम भी साथ लेते जायेंगे। सचमुच में उसे ले जाऊँगा—वह ही हल्की है; और उसके बच्चे भी।" तब सहसा उसने एक नक चीख मारी, और कहा—"लेकिन वे तो बादशाह के हैं!"

डॉक्टर वहाँ से हटकर महारानी के पास पहुँचा।
'तुम ठीक कहते थे, डॉक्टर," वह बोली—"अगर और उसकी बातें सुन लेता, तो भयानक दुर्घटना हो जाती।"
फिर सुनिये" डॉक्टर ने कहा।
र, और नहीं।"

केन उसी समय चर्नी ने कुछ नरम स्वर में कहना शुरू "मैरी, मैं अनुभव करता हूँ, कि तुम मुझे चाहती हो। मैं इस विषय में कुछ नहीं कहूँगा। मैरी, मैंने तुम्हारा सरी गाड़ी में बैठे हुए किया था, तुम्हारे हाथ से मेरा हाथ

छू गया था, लेकिन मैं यह बात हर्गिज न कहूँगा। मैं इस भेद
हमेशा अपने दिल में छिपाये रहूँगा। मेरा समस्त रक्त चाहे
से बाहर हो जाय, मैरी, लेकिन यह भेद इस दिल से बाह
जायगा! मेरे दुश्मन ने अपनी तलवार को मेरे रक्त में डुबाया
लेकिन तुम्हारा भेद अब तक सुरक्षित है। डरो मत मैरी, मैं
पूछूँगा भी नहीं, कि तुम मुझे प्यार करती हो, या नहीं। तुम
देखकर एक बार रोमाञ्चित हो उठी थीं; मेरे लिये यही काफ़ी

"ओहो!" डॉक्टर ने सोचा—"यह तो बड़बड़ाहट
पूर्व-स्मरण है।"

"मैं काफ़ी सुन चुकी," कहकर रानी ज़ोर-ज़ोर से काँप
, और चलने का उपक्रम किया।

डॉक्टर ने उसे रोका। "मैडम," उसने कहा—"
इच्छा है?"

"कुछ नहीं डॉक्टर, कुछ नहीं।"

"लेकिन अगर महाराज मेरे रोगी को देखना चाहें?"

"ओह! तब तो भयानक समस्या होगी!"

"तो मैं क्या कह दूँ?"

"डॉक्टर, मैं कुछ नहीं कह सकती, इस समय मैं
नहीं हूँ।"

"मालूम होता है, इनके रोग ने आप पर भी कुछ
डाला," डॉक्टर ने रानी की नब्ज़ देखकर कहा।

रानी ने अपना हाथ खींच लिया, और चल दी।

२१

डॉक्टर कुछ देर सोच में पड़ा रहा, फिर आप-ही-आप
ा—"यहाँ तो ऐसा रोग है, जिसके निदान में मेरी डॉक्टरी
रह जायगी।" उसने रोगी के माथे पर पानी का कपड़ा फेरा।
रोगी की दशा धीरे-धीरे सुधरती जा रही थी।

हसा डॉक्टर ने दर्वाजे पर कपड़ों की सरसराहट सुनी। "क्या
ानी फिर लौटकर आई हैं ?" उसने सोचा; और धीरे-से
ा खोला, तो देखा—कोई स्त्री-मूर्त्ति अविचल भाव से सामने
है। क़रीब-क़रीब अँधेरा होगया था। वह बरामदे की राह
चला, जहाँ यह मूर्त्ति खड़ी थी। उसे पहचानकर उसके
एक चीख निकल गई।

कौन है ?" उसने आवाज़ दी।

ैं हूँ, डॉक्टर," एक दुखी, पर मीठी, आवाज़ ने उत्तर
"मैं—एएड्री डि-टेवर्नी।"

भगवान् ! क्या मामला है।" डॉक्टर ने कहा—"क्या
ार है ?"

ह ! कौन ?"

र से आते हो, तो कहो। फिर हम दोनों चलेंगे।"

"ना, डॉक्टर साहब, न तो मैं महारानी के पास से आती हूँ, र न मुझे यह मालूम था, कि उन्हें कुछ शिकायत है। लेकिन ा कीजियेगा, मेरी मनोदशा इस समय ऐसी है, कि मैं क्या बक हूँ,इसका मुझे होश नहीं।" कहते-कहते वह प्राय अचेत होगई। डॉक्टर ने सहारा देकर उसे सम्हाला। वह बहुत कोशिश के बोली—"डॉक्टर, मैं अन्धकार में भटककर व्यग्र हो उठी ।खुद मेरी समझ में नहीं आता, कि मैं क्या कह रही हूँ। तिलस्मी रास्तों में मैं सीधा रास्ता भूलकर भयभीत और हत- र बन गई हूँ।"

"मगर यह तो बताओ, तुमसे कहा किस बेवकूफ ने इन सी रास्तों भटकने के लिये, जबकि यहाँ तुम्हारा कुछ काम हीं है।"

मैंने यह थोड़ा ही कहा कि मैं यहाँ बे-मतलब आई हूँ, मैंने तो हा कि मैं किसी की भेजी हुई नहीं आई हूँ।"

अच्छी बात है, अगर तुम मुझसे कुछ कहना चाहती हो तो रफ चलें, क्योंकि मैं खड़ा-खड़ा थक गया हूँ।"

रजी, मैं तो दस मिनट से अधिक समय न लूँगी। यहाँ र तो नहीं लेगा ?"

ई नहीं।"

पका रोगी भी नहीं ?"

ह, उसके तो कुछ भी सुनने की आशङ्का नहीं है।"

"कोई स्त्री !"

"शायद तुम्हीं।"

एण्ड्री ने लम्बी साँस ली।

"ओह डॉक्टर ! उन्होंने मेरे कारण युद्ध नहीं किया।"

"तब डॉक्टर ने कहा—"क्या तुम्हारे भाई ने मोरिाये पर्नो खबर लेने के लिये तुम्हें भेजा है ?"

"हाँ, हाँ, मेरे भाई ने ही भेजा है, डॉक्टर साहब।"

डॉक्टर लुई ने चुभती निगाहें उस पर डालीं।

"मैं सत्य को खोज लूँगा," उसने सोचा, तब मुँह से कहा—र, मैं असल बात बता दूँगा, और तुम्हारा भाई उसके पूर्व सब-कुछ स्थिर कर ले। समझीं ?"

"जी नहीं।"

"देखो, महाराज को यह 'भलेमानसों का द्वन्द्व-युद्ध' पसन्द, अगर उन्हें ऐसी किसी घटना का पता लगता है, तो काम करनेवालों को या तो क़ैद में डाल देते हैं, या वध कर देते हैं। और अगर दोनों में-से किसी की मौत तो वे भयानक हो जाते हैं। इसलिये अपने भाई से कि वह कुछ दिन के लिये कहीं इधर-उधर चल दे।"

"तो," एण्ड्री ने व्यग्र होकर पूछा—"मोरिाये पर्नो की जान खतरा है ?"

सुनो बच्चो, इस समय चाहे उसकी जान का खतरा है, लेकिन अगर कल तक उसके बुखार को मैं हटा न

नहीं कर पाया, तो फिर उसे कोई नहीं बचा

एएड्री ने इतने जोर से ओंठ काटा, कि खून नि
और इतने जोर से दोनों हाथों की मुट्ठी बाँधी कि नाखून
धँस गये। इस तरह उस भयङ्कर चीख, को वह रोक र
उसका कलेजा फाड़कर निकला चाहती थी। जब थोड़ी
वह स्वस्थ हुई तो बोली—"मेरा भाई भागेगा हर्गिज़ नहीं,
एक न्याय-युद्ध में मोशिये चर्नी को ज़ख्मी किया है, और
उसके कारण उनकी जान चली जाय, तो वह उसका
भोगने को तैयार रहेगा।"

डॉक्टर घपले में पड़ गया। उसने समझा, वह ब
से यहाँ नहीं आई है।

"अच्छा, भला महारानी इस घटना के विषय
सोचती है?" उसने पूछा।

"मैं नहीं जानती। महारानी से इसका क्या ताल्लुक़!

"लेकिन उन्हें तुम्हारे भाई पर स्नेह तो है ही।"

ख़ैर, मेरा भाई सुरक्षित है, अगर वह अपराधी भी
ो महारानी उसे बचा देंगी।"

"तो लड़की, तुम्हें जो-कुछ जानना था, वह जान
...र भाई भागे, या न भागे; उसकी मर्ज़ी है; तुम जान
जाने। मेरा काम तो यह है कि आज रात-भर रोगी की
से युद्ध करूँ। ऐसा नहीं करूँगा, तो अभागे को मौत अवश्य
उठा ले जायगी। सलाम।"

रसद्दो अपने कमरे में दौड़ गई, दर्वाजा भोतर से बन्द कर
; और बिछौने के पास ज़मीन पर लोट गई। "हे भगवान्!"
रे आँसू बहाती हुई वह रोकर बोली—"तुम इस निर्दोष
से दुनियाँ से मत उठाना। वह बड़ा अच्छा है, और
में बहुत-से उसके प्यारे हैं। हे भगवान्! उसे बचाना;
यासिन्धु हो, दया करो!" कहते-कहते उसकी शक्ति ने
दे दिया, और वह अचेत होकर गिर पड़ी। जब वह
होश में आई तो पहले शब्द जो उसके मुँह से निकले,
—"मैं उसे प्यार करती हूँ, ओह! मैं उसे प्यार करती हूँ।"

२२

ाये चर्नी का बुखार उतर गया। अगले दिन उसकी
बहुत सुधर गई। एक बार ख़तरे से पार पाने के बाद
ई को रोगी के विषय में अधिक दिलचस्पी न रही।
ह याद ही उसने पिछली घटना को याद करके, यह
े, कि मोशिये चर्नी तुरन्त राज-भवन से विदा हो जायँ।
ाँ को जब इसका ज्ञान हुआ, तो वह उत्तेजित हो
बोला, कि जब ख़ुद महाराज ने उसे यहाँ आश्रय
. किसी को यह अधिकार नहीं है कि उसे यहाँ

र एक-ही ढटा हुआ था। वह उसकी इस धमकी से
हीं हुआ, और उसी-दम चार आदमियों को बुलाकर

"मैं डॉक्टर ! क्या उसके पागलपन का कारण मैं हूँ ?"

"अगर अब नहीं हैं, तो शीघ्र-ही हो जायँगी।

"तो मुझे क्या करना चाहिये ? बताओ डॉक्टर।"

"इस युवक का इलाज या तो कृपा से होना चाहिये, या घृणा से। जिन महिला का नाम वह बार-बार मुँह से निकालता वही उसे मार या जिला सकती है।"

"डॉक्टर, तुम बात को बढ़ाकर कह रहे हो। भला एक सख्त शब्द कहकर क्या तुम किसी को मार सकते हो?—या एक मुस्कराहट से क्या किसी को जिला सकते हो ?"

"अगर महारानी मेरी बात से अप्रसन्न हुई हों, तो सेवक विनय-पूर्वक क्षमा-याचना करता है, और विदा माँगता है।"

"नहीं डॉक्टर, तुम क्या चाहते हो—यह मुझे बताओ।"

"मैडम, अगर आप उसको ऊल-जलूल बकवाद से और ऐसी अज्ञात दुर्घटना से इस राज-भवन की रक्षा करना चाहती हैं, तो आपको कुछ करना चाहिये।"

"तुम चाहते हो, कि मैं जाकर उससे भेंट करूँ ?"

"जी हाँ।"

"अच्छी बात है, मैं अपने साथ के लिये किसी को बुला लाती हूँ, और वहाँ आती हूँ। तुम हमारे आने का सब प्रबन्ध कर रखो। लेकिन किसी के जीवन-मरण का उत्तरदायित्व लेना ही खतरनाक बात है।"

"मजो, मुझे तो रोज ही यह करना पड़ता है। —
सब प्रबन्ध ठीक है।"

साथ ले चलने के लिये महारानी ने एण्ड्री को बुला
पर वह कहीं नहीं मिली, इसलिये वह अकेली-ही डॉक्टर
पीछे-पीछे चल दी।

सुबह के ग्यारह बजे थे। चर्नी सोया हुआ था। महारानी
सुबह की खुशनुमा पोशाक पहने हुए उसके कमरे में प्रवे
किया। डॉक्टर ने सलाह दी थी, कि रानी अकस्मात् उसके सामने
खड़ी हो, जिससे एक-बारगी रोगी की सुप्त मानसिक शक्ति
जागरित हो उठें। लेकिन ये लोग अभी द्वार पर ही पहुँचे थे,
था—एक स्त्री सामने खड़ी हुई काँप रही है।

"एण्ड्री!" रानी चीख उठी।

"जीहाँ, महारानी! आप भी यहाँ!"

"मैंने तुम्हें बुलवाया था; पर तुम मिलीं नहीं।"

एण्ड्री ने अपने मनोभाव छिपाने के लिये झूठ बोला
—"जब मैंने सुना, कि महारानी ने मुझे याद किया है,
यहाँ दौड़ी आई।"

लेकिन तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ, कि मैं यहाँ हूँ?"

मुझे पता लगा, कि आप डॉक्टर लुई के साथ आई है,
मैं दूसरी तरफ़ से यहाँ आ पहुँची।"

"ठीक!" कहकर सरला महारानी सन्तुष्ट हो गई,
उसका पहला सन्देह और आश्चर्य तुरन्त नष्ट हो गया।

एग्डी को डॉक्टर के पास छोड़कर वह भीतर पहुँची।

उसके जाने के बाद एग्डी की आँखों में क्लेश और क्रोध का व दिखाई दिया। डॉक्टर ने उससे कहा—"क्या तुम्हारा ख्याल , वह सफल होगी ?"

"काहे में ?"

"इस ग़रीब को यहाँ से हटाने में,—जो अगर यहाँ रहेगा, मर जायगा।"

"अगर और कहीं चला गया, तो क्या बच जायगा ?" एग्डी चकित होकर पूछा।

"मेरा तो ऐसा-ही ख़याल है।"

"ओहो ! तब तो, भगवान् करे, वे सफल हों।"

उधर महारानी उस कोच के पास पहुँचीं, जिस पर मरहम-ते किया हुआ चर्नी पड़ा हुआ था। उसके भीतर घुसने की हट से भी जाग उठा।

"अरे ! महारानी !" उसने उठने की चेष्टा करते हुए ा।

"जीहाँ, मोशियो, महारानी !" रानी ने कहा—"जो जानती है, तुम भक्त और ज्ञान के दुश्मन बने हुए हो; महारानी— तुम सोते-जागते गुस्सा दिलाते हो; महारानी—जो तुम्हारी ा और प्राण-रक्षा के लिये व्याकुल होकर तुम्हारे पास आई क्या यह सम्भव है," उसने उसी सिलसिले में कहा—"कि रे जैसा आदमी, जिसने अपनी राज-भक्ति और प्रतिष्ठा के

"ओह !" कहकर चर्नी ने चीख मारी, और मूर्च्छित होने को था।

इस चीख ने रानी का दिल हिला दिया। उसने समझा, चर्नी रने के क़रीब है। यह सोचकर वह सहायता के लिये आवाज़ ने ही वाली थी, कि कुछ विचारकर ठहर गई, और कहने लगी —"हमको शान्ति से बातें करनी चाहियें, और तुम आदमी बनो। डॉक्टर लुई का तुम्हें बचाने का प्रयत्न व्यर्थ ही गया। तुम्हारा ज़ख्म, जो बिल्कुल मामूली था, तुम्हारी उच्छृंखलता के कारण ख़तरनाक हो गया है। समझे ? अब यह बताओ, कि अपनी मूर्खता का प्रदर्शन कब तक इस डॉक्टर के सामने करते रहोगे ? कब तुम राज-भवन को त्यागकर जाओगे ?"

"मैडम !" चर्नी ने कहा—"अगर महारानी मुझे भेजना चाहती हैं, तो लीजिये, मैं चला ! मैं चला !" कहते-कहते वह ज़ोर से उठा, मानो अभी दौड़कर निकल जायगा, पर शरीर अशक्त होने के कारण लगभग महारानी के बाहुपाश में आगया, उसे रोकने के लिये हठात् आगे बढ़ आई थी।

रानी ने उसे फिर कोच पर लिटा दिया। चर्नी के ओठों पर गुलाबी आभा दौड़ गई। "ओह ! यह भी अच्छा है !" वह बड़बड़ाया—"मैं मरता हूँ; तुम मुझे मारती हो !" रानी तो उसकी व्यथा के अतिरिक्त और सब-कुछ भूल गई। उसने उसके झुके हुए सिर से अपना कन्धा भिड़ा दिया और ठण्डे हाथों से उसका माथा और सीना दबाने लगी। उसके कर-स्पर्श से जादू

का-सा असर हुआ—मानों उसमें नवजीवन का सञ्चार होगया।
तब रानी ने वहाँ से भाग जाने का इरादा किया, लेकिन उ
यह कहते हुए उसका पल्ला पकड़ लिया—"मैडम, उस इश्क
नाम पर, जो मैं तुम्हारे लिये रखता हूँ……।"

"विदा! विदा!" रानी ने कहा।

"ओह, मैडम! मुझे माफ़ करना!"

"माफ़ करती हूँ।"

"मैडम, एक बार और देखने दो।"

"मोशिये डि-वर्नी," रानी ने काँपते हुए कहा—
तुममें कुछ भी भलमनसाहत का लेश है, तो तुम या तो क
जान दे देना, या इस स्थान को छोड़ देना।"

वह रानी के चरणों पर गिर पड़ा; रानी ने द्वार खोला,
तेज़ी से बाहर हो गई।

एक क्षण के लिये एण्ड्रो ने वर्नी को ज़मीन पर पड़ा देखा
देखते-ही उसके हृदय में घृणा और दयमता का धक्का लगा। ज
रानी बाहर आई, तो उसने सोचा, इस रमणी को वर्नी के स
रखकर भगवान् ने उसे प्रभुत्व और सौन्दर्य के अतिरि
बहुत-कुछ दे दिया।

डॉक्टर, जो इस वार्तालाप की सफलता का अनुमान
रहा था, बोला—"कहिये मैडम, उसने क्या कहा?"

"वह चला जायगा" महारानी ने उत्तर दिया, और जल्दी
गुज़रकर वह अपने कमरे में चली गई।

डॉक्टर अपने रोगी के पास पहुँचा, और एरड़ी गई अपने कमरे में।

अब की बार डॉक्टर ने चर्नी को बिल्कुल परिवर्तित अवस्था में पाया। देखते ही बोला—"डॉक्टर, मैं अब बिल्कुल चङ्गा हूँ, और यहाँ से जाना चाहता हूँ।"

डॉक्टर ने कहा—"कहाँ जाओगे?"

"कहीं भी—दुनियाँ के उस पार।"

"न, बीमारी से उठकर इतनी लम्बी यात्रा ठीक नहीं। फिलहाल तो तुम्हें वर्सेई पर ही सब्र करना चाहिये। वहाँ मेरा एक मकान है; आज रात मे आपको वहीं आराम करना होगा।"

ऐसा ही हुआ। सन्ध्या-समय चर्नी गाड़ी में बैठकर वर्सेई को रवाना हुआ। महाराज उस दिन शिकार खेलने गये थे; उनसे भेंट किये बिना चले जाना, चर्नी को जरा अखरा, पर डॉक्टर ने कहा, कि उसकी तरफ से वह महाराज से कह देगा।

खिड़की के पर्दे की आड़ में छिपी हुई एरड़ी ने गाड़ी को जाते हुए देखा।

उस मकान में पहुँचकर अगले ही दिन चर्नी पूर्ण स्वस्थ हो गया। एक हफ्ते बाद वह घोड़े पर चढ़ने के क़ाबिल भी हो गया। तब डॉक्टर ने उसे सलाह दी, कि हवा-बदलने के लिये वह देहात चला जाय। उसने इस सलाह को स्वीकार किया।

२३

जब रानी ने मोशिये चर्नी से भेंट की थी, उससे
दिन की बात है। सुबह के वक़्त नित्य-नियमानुसार एण्ड्री
के कमरे में प्रवेश किया। कोई पत्र पढ़ती-पढ़ती रानी उस
हँस रही थी। यह पत्र जीन ने भेजा था। एण्ड्री का चेहरा
समय ज़र्द हो रहा था, और भाव-भङ्गी पर दुःख और गम्
की गहरी छाप थी। रानी उस समय दूसरे ध्यान में थी, इ
उसके उस भाव पर लक्ष्य न दे सकी; पत्र पढ़ती-पढ़ती
अभ्यासानुसार सिर हिलाकर बोली—"आओ, प्रातः वन्दन!
आख़िर जब एण्ड्री काफ़ी देर तक स्तब्ध खड़ी रही, तो उस
ध्यान बटा, और उधर देखकर बोली—"अरे! क्यों एण्
हुआ? तबियत तो ठीक है?"

"जी, मैंने एक निश्चय किया है।"

"क्या?"

"मैं आपको छोड़कर जा रही हूँ।"

"मुझे छोड़कर?"

"जी हाँ, मैडम!"

"कहाँ जा रही हो, और क्यों ?"

"मैडम, मुझे सच्चा प्यार नहीं.........मेरा मतलब है, पर-
ले मुझे सच्चे दिल से प्यार नहीं करते।" एण्ड्री ने शर्मा-
र कहा।

"साफ-साफ कहो।"

"वह बड़ी लम्बी कहानी है महारानी, और महारानी के
मुख उसका विस्तृत वर्णन करना भी उचित नहीं है। बस,
ना-ही कहना काफी है कि मुझे अपने परिवारों-वालों से सुख
ी है। न इस दुनियाँ में मेरे लिये आनन्द की कोई सामग्री
र रही है। इसी कारण मैंने किसी आश्रम में जाकर रहने
निश्चय किया है, और मैं आपसे आज्ञा लेने आई हूँ।

महारानी ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया, और
ा—"इस मूर्खता-पूर्ण निश्चय का क्या कारण है ? कल की
ह क्या आज तुम्हारे पिता और भाई सही-सलामत मौजूद
ी हैं ? या कल और आज में उनमें कोई अन्तर आ गया ?
र अपनी परेशानी का कारण मुझे बताओ। क्या तुम मुझे अब
पनी रक्षा करनेवाली नहीं समझती हो ?"

एण्ड्री ने काँपते हुए झुककर कहा—"मैडम, आपकी दयालुता
ने हृदय में घर कर लिया है, पर मैं अपने निश्चय पर अटल
। मैं राज-भवन को छोड़ देना तय कर चुकी हूँ। मुझे एकान्त
र शान्ति की आवश्यकता है। आप मुझे उस मुहिम पर जाने
रोकिये मत, जिस पर जाने की प्रेरणा मेरे मन में हुई है।"

"ठीक, फिलिप, तुम्हारे ये शब्द मुझे जँचते हैं।"

"तब तो," उसने कहा—"भाई-बहन का जीवन एक-ही-सा रहा है। दोनों-ही एक बार सुखी थे, और दोनों ही दुःखी हुए।"

[ज़]्यादा विचार करना व्यर्थ समझकर उसने पूछा—"तो कब [जा]ने का इरादा किया ?"

"कल; अगर हो सके, तो आज-ही।"

"जब तुम चाहो, मैं तैयार हूँ।"

[व]ह अपनी तैयारी में लगी। थोड़ी देर बाद उसे फिलिप को [चिट्]ठी मिली—

"शाम को पाँच बजे पिताजी से मिलने के लिये तैयार रहना। [क]ष्ट हो, तो सह लेना, पर प्रस्थान अनिवार्य होगा।"

उसने उत्तर दे दिया—

"पाँच बजे, जब मैं पिताजी से भेंट करूँगी, तो प्रस्थान के [लिये] तैयार रहूँगी। और अगर अपने सन्ध्या के समय का [निश्चय क]रो, तो सात बजे हम सेण्ट हेनी के आश्रम में पहुँच [सकते] हैं।"

२४

हम कह आये हैं, कि जब एण्ड्री ने रानी के कमरे मे
ा, तो वह जीन का कोई पत्र पढ़ती-पढ़ती हँस रही थ
में केवल निम्न-लिखित कुछ वाक्य लिखे हुए थे—
"महारानी विश्वास रक्खें, कि आपका सौदा उधार
ागा, और चीज़ आपके पास गुप्त-रूप से पहुँचा दी ज
पढ़ने के बाद रानी ने इस पत्र को जला डाला।
एण्ड्री के साथ जो बातचीत हुई, उसने उसे गम्भीर
। ज्यों-ही वह गई, कि दासी ने आकर सूचना दी-
ज़ोन आये हैं। मोशिये कोलोन राज्य का अर्थ-मन्त्री
ाराज लुई इस पर पूर्ण विश्वास रखते थे। बड़ा मेधा
त का सुन्दर, और प्रकृति का सरल था। वह अ
नता था, कि रानी को किस तरह प्रसन्न किया जात
मेशा माथे पर हँसी की लहर मौजूद रखता था।
रानी ने आदरपूर्वक उसे लिया, और कहा—"मो

"आप बड़े बुद्धिमान् व्यक्ति हैं; रुपये के उपयोग में बहुत सावधानी से काम लेते हैं। क्योंकि हमें जब रुपये की जरूरत होती है, आप हमेशा मुस्तैद पाये जाते हैं।"

"महारानी को कितने रुपये की आवश्यकता है ?"

"क्या इस समय उतने······की व्यवस्था हो सकती है······ मुझे भय है, कि वह बहुत-ज्यादे होगा।"

कोलोन उत्साहपूर्वक हँसा।

"पाँच लाख फ्राङ्क।" रानी ने कहा।

"ओहो! आपने तो मुझे डरा ही दिया था। मैं तो समझा— कोई बहुत-बड़ी रकम है।"

"तो कर सकते हो ?"

"अवश्यमेव।"

"बिना महाराज के जाने ?"

"ओह मैडम! यह तो असम्भव है। हर महीने सब जमा-खर्च महाराज के सामने पहुँचता है; लेकिन हाँ, वह जाँच-पड़ताल ज्यादे नहीं करते हैं।"

"तो कब मुझे मिल जायगा ?"

"आपको कब चाहिये ?"

"अगले महीने की पाँच तारीख को।"

"महारानी तीन तारीख को रुपया पा जायँगी।"

"धन्यवाद, मोशिये, धन्यवाद !"

आदरपूर्वक झुककर वह विदा हुआ।

"हँसी न उड़ाश्रो प्यारी काऊण्टेस, मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"अभी से ?"

"मेरी मदद करो, और देख लेना, तीन हफ़्ते में मन्त्री बन

जाऊँ तो।"

"छीः ! यह तो बहुत लम्बा समय है। अगली क़िस्त दे

पखवाड़े में देनी है।"

"अरे नहीं ! महारानी के पास रुपया है, मुझे ...

भावना का यह पुरस्कार मिला है। और बात ही क्या थी;

महान् सफलता के लिये तो मैं अपना सर्वस्व दे सकता था।"

"धीरज रखिये," काऊण्टेस ने कहा—"अगर यही

होगी, तो ऐसा मौक़ा भी आ जायगा।"

"हाँ, तो मैं ऐसे मौक़े का स्वागत करता। उस दशा में

मेरे अहसान से दब जाती।"

"मानिये, कोई मुझसे कहता है, कि यह ख़्वाहिश आप...

होगी ही। तो आप इसके लिये तैयार हैं ?"

"अवश्य; इस बार की क़िस्त के लायक़ तो रुपया मेरे

है; आगे की नहीं जानता।"

"ओह, इस बार की क़िस्त के बाद आपको पूरे तीन

का मौक़ा मिलेगा, कौन जानता है, इन तीन महीनों में

हो जायगा।"

"यह तो सच है, पर रानी ने मुझसे कहा है, कि मे

यह इच्छा नहीं, कि मैं अपने ऊपर क़र्ज़ का बोझ लादूँ

"हाँ, मोशिये, वही बाल्सेमो आपके सामने जीता-ज...
खड़ा है।"

"लेकिन इस बार तो आपने नया नाम धारण कर लिया है

"जी हाँ, मोशिये, वह पहला बहुत-सी अप्रिय घटनाओं
याद दिला देता था। शायद ख़ुद आप ही जोज़ेफ बाल्सेमो
नाम सुनकर मुझे घर में न घुसने देते।"

"मैं ! हाँ, बेशक !"

"तब तो मोशिये की स्मृति और सचाई में सन्देह नहीं।

"ओह ! एक बार आपने मेरी मदद की थी।"

"अच्छा मोशिये, क्या आप देखते नहीं, मेरे र
रस ने मेरे जीवन पर कैसा असर किया है।"

"मानता हूँ मोशिये, पर आप मुझे अलौकिक आ
पड़ते हैं,—आप, जो ज़माने-भर को स्वास्थ्य और ध
फिरते हैं।"

"शायद स्वास्थ्य हो; धन नहीं।"

"अब तुम सोना नहीं बनाते ?"

"न, मोशिये।"

"क्यों ?"

"एक अनिवार्य पदार्थ का पार्सल मुझसे खो ग
अल्थोटस ने इसका आविष्कार किया था। मुझे इसका
मालूम करने का समय न मिला, और वह उसे अपने स
क़ब्र में ले गया।"

लड़कपन की याद दिला देते हैं। इधर तो दस बरस से मैंने आपको देखा नहीं।"

"हाँ; लेकिन अगर आप लड़के नहीं रहे, तो भी एक सुन्दर युवक हैं। क्या आपको यह दिन याद है, जब एक सुन्दरी लड़की के बालों को देखकर मैंने आपसे उसका प्रेम प्राप्त कराने का वादा किया था ?"

अमीर का चेहरा ज़र्द से सुर्ख़ हो गया। भय और ह... अकस्मात उसके दिल की धड़कन बन्द-सी कर दी।

"हाँ, याद है।" वह बोला।

"आह ! तो मैं देखूँ, मैं जादूगरी भूल तो नहीं गया... आपके वह स्वप्न-सुन्दरी......।ए

"इस समय वह क्या कर रही है ?"

"वाह, मेरा तो ख़याल है, ख़ुद आप आज सुबह मिले हैं।"

अमीर के लिये स्थिर रहना दूभर हो गया।

"ओह, मोशिये, मेरी प्रार्थना.........."मुँह से वह...

कगलस्तर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—"अब विषय पर बात करेंगे।"

—

"मोशिये," काऊण्ट कगलस्तर ने जवाब दिया—
वाल्सेमो का जीवन उसी प्रकार अविनाशी है, जैसे वह
जिस पर आपने रसीद लिखी थी।"

"मैं समझा नहीं।"

"अभी समझ जायेंगे," कहकर काऊण्ट ने एक
कागज अमीर को दिखाया।

उसे खोलने के पहले ही अमीर चिल्ला उठा—"मे

"हाँ, मोशिये, आपकी रसीद।"

"लेकिन मैंने तो तुम्हें इसको जलाते हुए देखा था

"वास्तव में मैंने इसे आग में फेंक दिया, पर संयो
आपने ऐसे कागज़ पर लिखी थी, जिस पर आग का
नहीं होता।"

अमीर ने कुछ झिझककर कहा—"मोशिये, विश्
अगर यह रसीद नष्ट हो जाती, तो भी मैं अपने क़र्ज़
करता।"

कगलस्तर ने कुछ जवाब न दिया।

"लेकिन मोशिये," अमीर ने कहा—"आपने
इस रुपये का तक़ाज़ा क्यों नहीं किया?"

"मैं जानता था, रुपया सुरक्षित है। कुछ दिनों
मे था, पर मैंने तब तक धीरज रक्खा, ज
नोय न हो गई।"

"अफ़सोस ! मोशिये, यही बात है।"

"तो इसका अर्थ है, तुम और कुछ दिन ठहर नहीं सकते ?"

"न, मोशिये।"

"तो तुम्हें फ़ौरन चाहिये ?"

"हाँ, अगर आपकी दया हो।"

अमीर पहले तो चुप हुआ, फिर भारी आवाज में बोला—
शिये, हम अभागे दरबारी-लोग इतनी आसानी से रुपये का
ध नहीं कर सकते, जितना आप जादूगर लोग।"

"अजी साहब, अगर आपके पास रुपया न होता तो मैं
ने नहीं आता।"

"मेरे पास पाँच लाख फ़्राङ्क हैं ?"

"तीस हजार का सोना, ग्यारह हजार की चाँदी, और बाक़ी
ट।"

अमीर ने उछलकर पूछा—"तुम जानते हो ?"

"जी, मुझे सब मालूम है; यह भी कि इस रुपये को इकट्ठा
में आपने बहुत त्याग किया है—और यह भी कि इसे मुझ
। से आपको बहुत कष्ट होगा।"

"ठीक है, सच कहते हो।"

"लेकिन देखिये, पिछले दस बरसों में अनेक बार मुझे दिक़्क़त
परेशानी का मुक़ाबला करना पड़ा है, लेकिन मैंने बराबर
और का उपयोग करने से परहेज किया। अतएव, मेरी
में आपको शिकायत का मौक़ा नहीं है।"

"शिकायत ! मोशिये, आपने ऐसे समय में मेर
की थी, कि मैं आजीवन आपके ऋण से उऋण नहीं
लेकिन दस बरसों में बीसों मौक़े ऐसे आ चुके हैं,
आसानी से आपका रुपया दे सकता था। मुझे विश्व
आप जो दिल की बात तक जान लेते हैं, जरूर इस
ज्ञान रखते होंगे कि यह रुपया किसलिये रक्खा हुआ

"न साहब," कगलस्तर ने रुखाई से कहा—"मैंने
मालूम किया कि रुपया आपके पास मौजूद है। अब
के दिली इरादों को जानने की आदत छोड़ दी है
इस बात से कोई ग़र्ज़ नहीं कि यह रुपया आप
इकट्ठा किया है, मुझे तो अपनी जरूरत से मतलब है

"ओह ! यह बात नहीं," अमीर ने कहा—
रुपया देने से इन्कार नहीं करता। आपके सामने
पहले अपना स्वार्थ होना चाहिये। आप विश्वास र
आपका एक-एक कौड़ी मिलेगा; हाँ, जहाँ तक मु
किसी खास समय का वादा मैंने नहीं किया था।"

"आप भूलते हैं;" और काग़ज़ खोलकर उसने

"मोशिये जोजेफ़ वाल्सेमो से मैंने पाँच लाख
पाये। इन्हें जब यह माँगेंगे, तभी मैं अदा कर
डि रोहन।"

"देखा आपने ? मेरी माँग अनुचित नहीं है।

"नहीं काऊण्ट," अमीर ने जवाब दिया—"मेरा फर्ज़ है, कि तुरन्त आपका रुपया दे दूँ। लाइये, रसीद दीजिये; मैं इसी ऋण से उऋण होना चाहता हूँ।"

अमीर का ज़र्द चेहरा देखकर एक बार तो फगलस्टर का हृदय द्रवार्द्र हो उठा, पर तुरन्त सख्त बनकर उसने रसीद अमीर को दे दी। अमीर उठकर दूसरे कमरे में गया, और रुपया लेकर लौटा। बोला—"यह लीजिये आपके पाँच लाख फ्राङ्क। लाख सूद के हुए;—अगर आप समय दें, तो थोड़े ही दिनों में इन्हें भी चुका दूँगा।"

"मोशिये, मैंने जो-कुछ दिया था, वह पा लिया; अब और कुछ मुझे नहीं चाहिये। धन्यवाद!" कहता हुआ वह झुककर कमरे से बाहर हो गया।

"ख़ैर," अमीर ने लम्बी साँस लेकर कहा—"यह भी अच्छा हुआ कि रानी के पास रुपया मौजूद है, और कोई आदमी उससे इस प्रकार छीन ले जानेवाला नहीं है।"

———

कौन्सिल में राजकोय व्यय का जो मसविदा पास हुआ
उसे महाराज के सामने पेश किया गया।

महाराज ने जोड़ पर नजर डाली, और चौंककर कहा
"क्या! ग्यारह लाख फ्राङ्क! बहुत ज्यादा!"

"लेकिन हुजूर, एक रक़म पाँच लाख की है!"

"कैसी?"

"महारानी के लिये।"

महारानी के लिये! महारानी के लिये पाँच लाख! असम्भव

"क्षमा कीजिये, महाराज, सेवक का कथन ठीक है।"

"लेकिन जरूर कुछ ग़लती हुई है। अभी, एक पखवा
बीता, महारानी को उनका हाथ-खर्च दिया गया है।"

"महाराज, सम्भव है, महारानी को कुछ खास जरूरत
पड़ी हो;—दुनियाँ जानती है, उनकी दान-शीलता कितनी ब
बढ़ी है।"

"नहीं," महाराज ने कहा—"महारानी को हर्गिज रुपये
जरूरत नहीं है। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था, कि वे हीरों
हार की जगह एक जङ्गी जहाज को अधिक आवश्यक समझ
है। महारानी का हर समय देश के हित का ध्यान है, अ
उसे इस रक़म की जरूरत भी होगी, तो मेरे कहते ही वे
समझ जायँगी।"
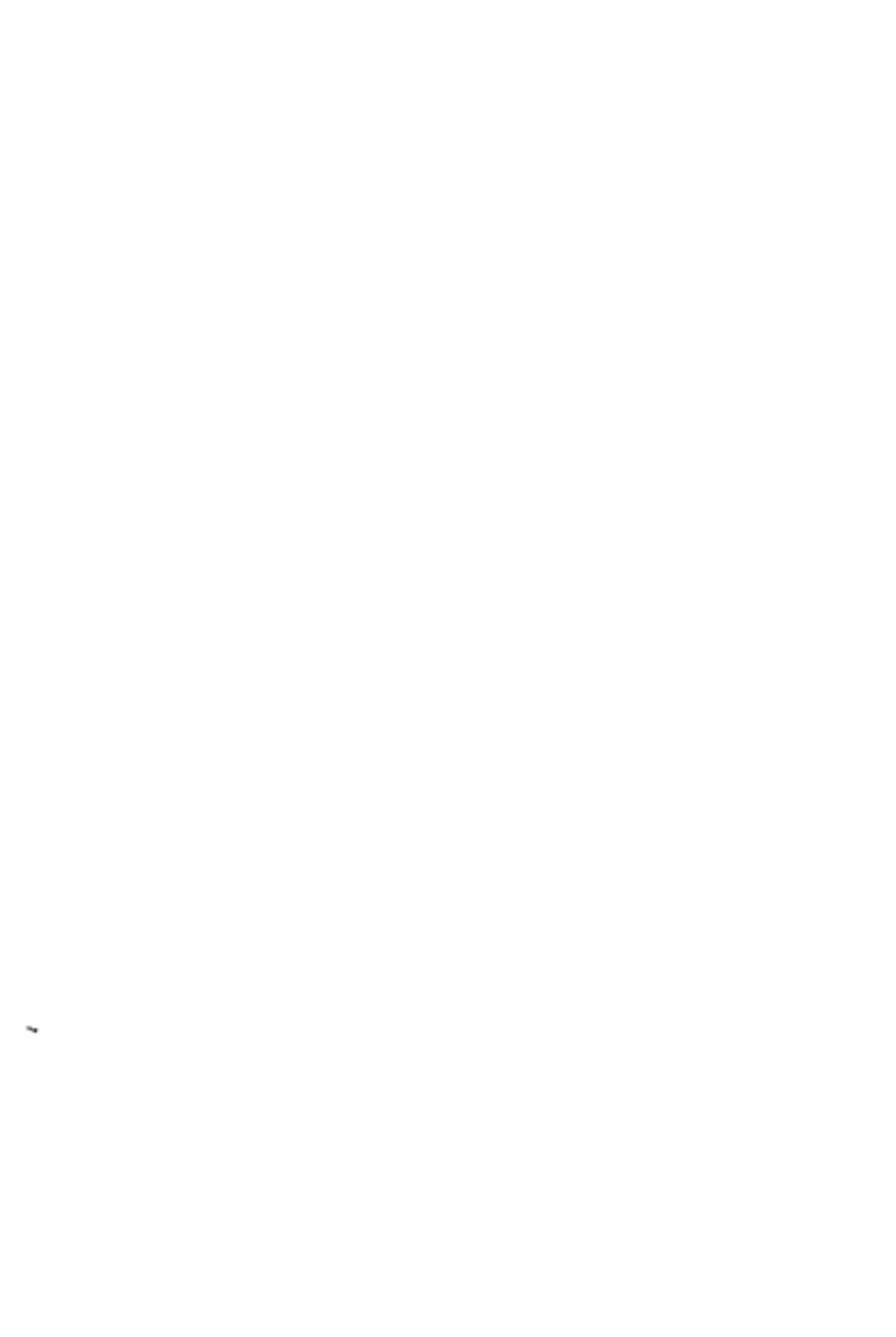
"बहुत अच्छा, मञ्जूर; अरे! ख़ुद रानी ही आ पहुँचीं!"
"मैं हाथ जोड़कर महारानी से माफ़ी माँगता हूँ।" कहकर
िन चल दिया।

महाराज रानी के पास पहुँचे। रानी डि-आर्टुई के कन्धे पर
ह दिये खड़ी थीं, और चेहरा उनका उत्फुल्ल था।

"मैडम," महाराज ने कहा—"क्या धारा में घूमकर आ
हो?"

"जी हाँ, आप शायद कौंसिल से निबट गये?"

"हाँ मैडम, मैंने तुम्हारे पाँच लाख फ्रांक बचा लिये।"

"मालूम होता है, मोशिये कैलोन ने अपना वचन पूरा
।" रानी ने सोचा।

"देखिये मैडम," महाराज ने कहा—"मोशिये कैलोन ने
रे नाम पाँच लाख की रक़म लिखी थी, मैंने उसे काट दिया।
होगई न बचत?"

'काट दिया!" रानी ने आशङ्का से बदरङ्ग होकर धीमे स्वर
ा—"लेकिन, देखिये......"

"भूख बहुत तेज़ लग रही है!" कहकर महाराज अपने
पर ख़ुश होते हुए चल दिये।

'भाई," रानी ने आर्टुई से कहा—"ज़रा कैलोन को तो
करो।"

सी समय कैलोन का एक पत्र उसे दिया गया। उसमें लिखा
"महारानी को पता लग ही गया होगा, कि महाराज ने

"मैं उस रक़म को उनके हरजाने की सूरत में छोड़ती हूँ।"

"लेकिन अमीर रोहन ?"

"उनके सद्भाव के लिये मेरे मन में आदर है। मुझे ... है, वे भी मेरे त्याग की प्रशंसा करेंगे।" कहते-कहते रानी ने ... का बक्स जीन को पकड़ा दिया।

जीन ने कहा—"मैडम, क्यों न कुछ समय की मोहलत ले ... जाय ?"

"न काउण्टेस, यह बदनामी की बात है। उसे तुरन्त ... कर दो।"

जीन ने बक्स को इस प्रकार छुपा लिया, कि कोई ... कर सके, और जाकर गाड़ी में बैठ गई।

सब से पहले तो वह कपड़े बदलने घर पहुँची। इतने ... उसने बहुत-सी बातों पर भिन्न-भिन्न ढङ्ग से विचार किया। ... उसे महारानी की आज्ञा-पालन करनी चाहिये ? क्या अमीर ... खबर न मिलने से गिला नहीं होगा ? एक बार उसने सोचा ... उसको सलाह लेनी चाहिये, पर तुरन्त ही उसके मन में आ... हुआ।—कि उसके पास रुपया तो है नहीं, सलाह लेकर ही ... होगा ! तब उसने अन्तिम बार आँखें ठण्डी करने के ... हार को बक्स से निकाला। मन-ही-मन कहा—...

र लेना चाहिये। पहले अमीर के पास जाऊँ, या महारानी की
आज्ञानुसार सीधी जौहरियों की दूकान पर? इस हार को नोटों
में बदला जा सकता है, पर इस देश के नोट तो इसी देश में
चल सकते हैं, अलबत्ता ये हीरे दुनियाँ-भर में उपयोगी सिद्ध हो
सकते हैं। हरेक देश के आदमी इन हीरों की क़ीमत समझते हैं।
ह! हीरे कितने सुन्दर हैं!" हार को हाथ में लिये-लिये ही
उसके विचारों ने फिर पलटा खाया—"अगर मैं जौहरी के पास
जाऊँगी, तो वह इन्हें साफ़ करके बक्स में बन्द कर लेगा। जो
र मैंगी अएटोइनेट के गले को सुशोभित करता, वह न-जाने
ब तक के लिये क़ैद में पड़ जायगा! यह हीरे इस समय मेरे
थ में हैं। मैं अगर अमीर के पास जाऊँ······!······अगर इस
र को मैं रक्खूँ, तो······तो रसीद? महारानी के पास मोशिये
मर की रसीद पहुँचनी चाहिये। बड़ी परेशानी है! क्या करूँ?
किसे सलाह लूँ?"
सोचती-सोचती सोफ़े पर पड़ गई। जितना वह हार की तरफ़
ती थी, उसका लालच बढ़ता जाता था। हठात् वह शान्त हो
। इस अवस्था में उसने अपने दिमाग़ की सारी शक्तियाँ इधर
दीं। समय उड़ता हुआ मालूम भी न हुआ। न-जाने कहाँ-कहाँ
विचारों ने उसके मन में चक्कर लगाया। इसी तरह एक घण्टा बीत
। तब वह उठी, और घण्टी बजाई। रात के दो बजे थे।
नौकरानी के आने पर उसने एक किराये की गाड़ी मंगाई,
उसमें बैठकर पत्रकार ··· पर पहुँची।

२६

मोशिये रित्यू के घर जीन के जाने का फल अगले दि[illegible]
हुआ। सुबह सात बजे उसने एक पुर्जा महारानी के पास
जिसमें लिखा था—

'हमने जो हीरों का हार पन्द्रह लाख साठ हजा[illegible]
महारानी को बेचा था, आज वापस पालिया; क्योंकि वह
को पसन्द नहीं आया। हमारी हानि और हर्जाने के स्वरू[illegible]
रानी के ढाई लाख फ्रांक हमें स्वीकार हैं।

"बॉहमर और बा[illegible]

इस रसीद को महारानी ने बक्स में बन्द कर दिया, [illegible]
मामले में वह अब बिल्कुल निश्चिन्त हो गई।

लेकिन इस रसीद के विरोध में एक बात देखी गई। [illegible]
बार अमीर रोहन, जो क़िस्त के विषय में बहुत ही परेशान
बॉहमर की दूकान पर पहुँचा।

क्यों," आज ही का दिन तो था, पहली क़िस्त निपटाने का ? न होता है, क़िस्त महारानी ने भेज दी ?" उसने पूछा।
"न मोंशिये, महारानी रुपये का प्रबन्ध न कर सकीं, क्योंकि राज ने उनके नाम लिखी हुई रक़म नामन्ज़ूर करदी है। न महारानी ने हमें इत्मीनान दिला दिया है।"

"ओह! चलो, अच्छा ही हुआ! लेकिन कैसे ? क्या काउण्टेस दिया ?"

"न, मोंशिये, काउण्टेस का इस मामले में कुछ भी दख़ल है।"

"दख़ल नहीं है ? काउण्टेस का इस मामले में कुछ भी दख़ल है! यह तो बड़े ताज्जुब की बात है। मेरा तो विश्वास है, है काउण्टेस के द्वारा ही होना चाहिये था।"

"अब यह तो आप ही जान सकते हैं। हमें तो ख़ुद महारानी पत्र मिल चुका है।"

"ऐसा भला !"

"हम बड़ी ख़ुशी से दिखा देते, मगर महारानी की ताकीद है, इसे गुप्त ही रक्खा जाय।"

"ख़ैर, यह दूसरी बात है। पर आप लोग हैं बड़े भाग्यवान्! आपको ख़ुद महारानी पत्र लिखती हैं। मगर यह विश्वास रखिये, [illegible] करने का सारा श्रेय काउण्टेस को ही है।"

"जी, हम भी यही समझते हैं। अब [illegible]

जायगा, तो हम भी काउण्टेस के प्रति अपनी कृतज्ञता का परि
देंगे।"

"छीः ! छीः !" अमीर ने कहा—"मेरा यह मतलब नहीं
तब अमीर गाड़ी में बैठकर अपने डेरे को चलता हुआ।

हमारे पाठक समझ गये होंगे, कि पत्रकार रित्यू की क़लम
ही यह राज़ब ढाया था। जीन ने सोचा था, तीन मही
समय काफ़ी से ज्यादा है। इतने समय में एकाध हीरा
किसी दूसरे देश में भाग जाऊँगी। उसने दो-चार जगह को
भी की, पर उन हीरों को जिसने देखा, वही उछल पड़ा,
बोला—"मोरिये बॉहमर के अतिरिक्त और कहीं उसने ऐसे
नहीं देखे।"

इन टिप्पणियों ने जीन को डरा दिया। उसने हार को
रक्खा दबाकर, और मौक़े की राह देखने लगी। पर अब
एक और भय सताने लगा। कहीं ऐसा न हो, अमीर की
महारानी में इस विषय पर ज़िक्र छिड़ जाय, और सारा भण्डा
फूट जाय। फिर उसने सोचकर धैर्य धारण किया, कि अमी
पर उसका पूरा क़ब्ज़ा है, और वह उसे जिधर चाहेगी, इ
घुमा सकेगी।

अब उसके मन में सिर्फ़ एक ख़याल रह गया किसी त
दोनों की भेंट न होने दी जाय। यह बड़ समझती थी।
अधिक दिन भेंट किये-बिना अमीर का मन नहीं मान सकता

क्या करना चाहिये? कुछ भी हो, एकदम तो वह भागेगी नहीं; ...गी, उसकी धूर्तता कहाँ तक उसे सहायता देती है!

फिर जीन ने हिसाब लगाया कि अगर दो बरस तक वह ...रानी और अमीर रोहन की स्नेह-पात्री बने रहे, तो उसे ...से सात-आठ हजार फ्राङ्क की प्राप्ति होगी। उसके बाद ...निश्चय-रूप से उसके हिस्से सब तरफ की उपेक्षा और विरक्ति ...पड़ेगी। "और इस हार की मदद से" उसने मन-ही-मन ...हा—"सात-आठ लाख तक वसूल हो सकते हैं।"

इस पापी मन का अध्ययन बड़ा ही मनोरञ्जक और ...द्भुत है!

"जब तक बनेगा," फिर उसने आप-ही-कहा—"यहीं रहूँगी, और जो कुछ हो सकेगा, लूटूँ-खसोटूँगी; फिर जैसे ही रङ्ग कुरङ्ग देखूँगी, चल दूँगी। अब मुझे कोई ऐसा उपाय निकालना होगा, जिससे मैं अमीर और रानी दोनों पर कब्जा गाँठ सकूँ, और समय आने पर उन्हें अपनी उँगलियों पर नचा सकूँ।"

जायगा, तो हम भी काऊण्टेस के प्रति अपनी कृतज्ञता का परि
देंगे।"

"छीः! छीः!" अमीर ने कहा—"मेरा यह मतलब न
तब अमीर गाड़ी में बैठकर अपने डेरे को चलता हुआ

हमारे पाठक समझ गये होंगे, कि पत्रकार रित्यू की क
ही यह ग़ज़ब ढाया था। जीन ने सोचा था, तीन महीने
समय काफ़ी से ज्यादा है। इतने समय में एकाध हीरा बे
किसी दूसरे देश में भाग जाऊँगी। उसने दो-चार जगह कोशि
भी की, पर उन हीरों को जिसने देखा, वही उछल पड़ा,
बोला—"मोशिये बॉहमर के अतिरिक्त और कहीं उसने
नहीं देखे।"

इन टिप्पणियों ने जीन को डरा दिया। उसने हार
रक्खा दबाकर, और मौक़े की राह देखने लगी। पर अब
एक और भय सताने लगा। कहीं ऐसा न हो, अमीर
महारानी में इस विषय पर ज़िक्र छिड़ जाय, और सारा भ
फूट जाय। फिर उसने सोचकर धैर्य धारण किया, कि अ
पर उसका पूरा क़ब्ज़ा है, और यह उसे जिधर चाहेगी,
घुमा सकेगी।

अब उसके मन में सिर्फ़ एक ख़याल रह गया। किसी
दोनों की भेंट न होने दी जाय। यह वह समझती थी
अधिक दिन भेंट किये-बिना अमीर का मन नहीं मान

र क्या करना चाहिये ? कुछ भी हो, एकदम तो वह भागेगी नहीं;
लेगी, इसकी धूर्तता कहाँ तक उसे सहायता देती है !

फिर जोन ने हिसाब लगाया कि अगर दो बरस तक वह
रानी और अमीर रोहन की स्नेह-पात्री बने रहे, तो उसे
निकल से सात-आठ हजार फ़्राङ्क की प्राप्ति होगी। उसके बाद
भवच-रूप से उसके हिस्से सब तरफ़ की उपेक्षा और विरक्ति
पड़ेगी। "और इस हार की मदद से" उसने मन-ही-मन
हा—"सात-आठ लाख तक वसूल हो सकते हैं।"

इस पापी मन का अध्ययन बड़ा ही मनोरञ्जक और
द्भुत है !

"जब तक बनेगा," फिर उसने आप-ही-कहा—"यहीं रहूँगी,
रे जो कुछ हो सकेगा, लूटूँ-खसोटूँगी; फिर जैसे ही रङ्ग कुरङ्ग
खूँगी, चल दूँगी। अब मुझे कोई ऐसा उपाय निकालना होगा,
जससे मैं अमीर और रानी दोनों पर क़ब्ज़ा गाँठ सकूँ, और
मय आने पर उन्हें अपनी उँगलियों पर नचा सकूँ।"

२७

इसी समय सेण्ट-क्रॉइ बाजार के एक मकान में दूसरा था, जहाँ पर कगलस्तर ओलिवा को छोड़ गया था। मकान में वह आनन्दपूर्वक रहती थी। कगलस्तर बराबर उस देख-रेख रखता था।

एक दिन वह अपनी परिस्थिति पर विचार कर रही थी। सहसा कगलस्तर आगया। कुछ दिन से वह यहाँ र घबरा उठी थी, इसलिये उसका हाथ पकड़कर बोली—" मैं तो यहाँ रहते-रहते ऊब गई।"

"प्यारी बच्ची, मुझे इससे बड़ा अफसोस है।"

"मैं तो यहाँ मर जाऊँगी।"

"वास्तव में ?"

"सचमुच।"

"खैर," उसने कहा—"इसमें तो मेरा दोष नहीं है; दोष पुलिस-कमिश्नर का है, जो तुम्हें गिरफ़्तार करने को में है।"

"सोचिये, आपको पता नहीं, इस अकेले घर में सारा

कितना कठिन है। और आप यह भी जानते होंगे, कि
करनेवाला भी दुनियाँ में कोई है।"
ािये म्यूसर ?"
, म्यूसर! मैं उसे चाहती हूँ। मैंने पहले भी आपसे
। आप क्या यह समझते हैं, कि मैं उसे भूल गई हूँ?"
जी, मैं तो उसकी ख़बर लाया हूँ।"
चमुच ?"
, मैंने आज ही उसे देखा है। और मैं तुम्हें उसी के पास
ा चाहता हूँ।"
च? तो अभी चलिये।—आप उसे यहाँ क्यों नहीं
ये ?"
भी, उसका आना ख़तरे से ख़ाली नहीं था। तुम्हें मालूम
ह शहर के छटे हुए बदमाशों में से है; और खुफ़िया-
कई चोरी के मामलों में उसकी खोज कर रहा है। और
तुम भी उसके साथ रहो तो ख़तरा दुगुना हो जाय।"
ओहो! ऐसा है, तब तो अवश्य ही सतर्क रहना चाहिये।
सतर्क रहूँगी। बल्कि मुझे तो तुरन्त [illegible] देख
ये। क्योंकि कहीं ऐसा न हो, मैं कुछ असावधानी कर बैठूँ
पकड़ी जाऊँ।"
"कैसी असावधानी?"
"सम्भव है, ताज़ी हवा के लिये कहीं [illegible] स्टेशन पर
[illegible] जाऊँ।"

"ओह ! इसकी चिन्ता नहीं। डरो मत; चाहे ि खिड़की खोलकर झाँको; कोई तुम्हारा बाल बाँका सकता।"

ओलिवा के नेत्रों में कृतज्ञता झलक आई।

कगलस्तर बोला—"आज से तुम्हें सब कमरों में घूम खिड़कियाँ खोलकर बाहर झाँकने की स्वतन्त्रता है। पास के लोग सब भले आदमी हैं, उनसे डरने की कोई बात नहीं जरा इस बात का खयाल रखना कि गली में आने-जाने कोई आदमी तुम्हें न देख ले।"

ओलिवा प्रसन्न हुई।

जब कगलस्तर चला गया, तो ओलिवा बिछौने पर आप-ही-आप बोली—"मेरी समझ में कुछ नहीं आता।"

अगले दिन वह बहुत देर से सोकर उठी। कमरे में धूप गई था, गली में गाड़ियों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी, घण्टों की गम्भीर निद्रा से उसका मन प्रफुल्लित हो उठा। झट उठकर उसने कमरे की खिड़कियाँ खोल डालीं, और पा के मकानों पर नजर डालने लगी। एक मकान के बरामदे तरह-तरह की चिड़ियों के पिंजरे लटके हुए थे, एक के दर्वाजे पर क़ीमती पर्दे लटके हुए थे, एक के सामने का दर्वाजा फ़ से सजा हुआ था, और उसके पास ही एक स्त्री-मूर्ति दिखाई दी।

यह स्त्री एक खुले हुए कमरे में आराम कुर्सी पर बैठी थी

उसके पीछे खड़ी हुई एक दासी उसके केश सँवार रही थी। डेढ़ घण्टा बीत गया। ओलिवा ने अपनी एक-मात्र दासी को बुलाकर इस स्त्री का परिचय जानना चाहा, लेकिन यह गरीब कुछ न बता सकी। तब दासी को भेजकर उसने फिर उधर देखना शुरू किया। केश सँवारना समाप्त हो चुका था। ओलिवा उस स्त्री के विषय में तरह-तरह की कल्पनायें करने लगी।

वह स्त्री ज्यों-की-त्यों कुर्सी पर बैठी कुछ सोचती रही। जितनी देर होती थी, उसके विषय में कुछ जानने के लिये ओलिवा उतनी उत्सुक होती जाती थी। अब उसने इधर-उधर देखना शुरू किया। तब दस-पन्द्रह बार खिड़की के पल्ले खोले और बन्द किये। ऐसा करने से इतनी आवाज पैदा हुई, कि अगर गली में से कोई गुप्तचर गुजरता होता तो जरूर इधर आकर्षित हो जाता।

सामने बैठी हुई स्त्री का मुँह इधर ही था। ओलिवा को निश्चय हो गया कि उसने उसकी प्रत्येक गति-विधि पर लक्ष्य किया है, पर वह इसके विषय में कुछ जानने के लिये जरा भी उत्सुक नहीं है। तब वह इस परिणाम पर पहुँची कि यह स्त्री बहुत अभिमानिनी है। यह सोचकर उसने उसे अपनी ओर आकृष्ट करने का सब प्रयत्न छोड़ दिया।

ओलिवा के मन में यह कल्पना भी न थी कि जिस स्त्री को उसने देखा है, वह और कोई नहीं, जान है। हमारे पाठक भूले न होंगे, कि कार्डिनल रोहन ने एक मकान उसे रहने के लिये दे दिया था। यही वह मकान था, जिसमें बैठे हुए उसे ओलिवा ने दूर से

देखा था। पिछली शाम से जीन सिर्फ़ एक ही विच
मग्न थी; और वह यह कि किस प्रकार अमीर और महा
की भेंट न होने दी जाय। किसी ऐसे उपाय का आविष्कार क
वह चाहती थी, जिससे वास्तव में महारानी से भेंट न होने
भी अमीर यह समझ ले—कि वह महारानी से मिल चुका, औ
उसकी मनोकामना पूर्ण हो गई।' दूसरे शब्दों मे, वह किसी ऐसं
स्त्री की तलाश में थी, जो महारानी का वेप बनाकर अमीर से
मिले। इसी महत्त्व-पूर्ण विचार मे निमग्न होने के कारण उसका
ध्यान ओलिवा की तरफ़ आकृष्ट न हुआ।

उधर ओलिवा उसकी इस उपेक्षा से अत्यन्त क्रोधित
और ज्योंही चमककर पीछे हटी, कि एक बड़े फूलदान से टक
गई, जो एकदम फ़र्श पर आपड़ा, और बड़े ज़ोर की आवा
करता हुआ टुकड़े-टुकड़े होगया। यह आवाज़ सुनकर जीन चौं
पड़ी, और उसनें नज़र उठाकर इस तरफ़ देखा। अब उसका पूर
चेहरा दिखाई दिया, और उसकी नज़र ओलिवा पर पड़ी।।
उसके मुँह से निकला—"महारानी !" फिर तुरन्त ही उसने
पड़ाकर कहा—"ओह ! मैं जिस उपाय की खोज में थी, आ
वह मिल गया !"

जैसे ही दोनों ने एक-दूसरी को देखा, ओलिवा का मो
काफ़ूर हो गया। और दोनों भिन्न-भिन्न भाव से मुस्करा पड़ीं।
उधर ओलिवा ने अपने पीछे कुछ आहट सुनी, और मुँह
फिराकर देखा—तो कगलस्टर को खड़ा पाया।

'दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया !" काउण्ट मन-ही-मन बड़बड़ाया।

फिर कगलस्तर ने उसे ताकीद की, कि पड़ोसियों की नजर उस पर अपने ऊपर न पड़ने दे। उससे तो उसने वादा कर लिया, लेकिन जैसे-ही वह गया, वैसे-ही वह फिर खिड़की पर आ मौजूद हुई। अब की बार जीन ने उसकी तरफ देखकर सिर हिलाया और अपना हाथ चूमकर उसका अभिवादन किया। दो दिन इसी तरह बीते; सुबह जीन सिर झुकाकर उसे प्रातः-वन्दन करती और शाम को विदा लेती।

ऐसा मालूम होता था, कि ओलिवा का आकृष्ट करने में जीन कोई कसर उठा नहीं रख रही है। सम्बन्ध बढ़ाने के लिये इस प्रकार की अवस्था अधिक देर तक नहीं रह सकती थी। फलस्वरूप जो कुछ हुआ, वह सुनिये।

अगली बार जब कगलस्तर आया, तो बोला—"कोई अपरिचित स्त्री तुम से भेंट करने आई थी।"

ओलिवा ने चौंककर पूछा—"क्या मतलब ?"

"कोई अत्यन्त सुन्दरी स्त्री यहाँ आई थी, और तुम्हारी दासी से तुम्हारे विषय में पूछ-ताछ की। मुझे भय है, तुम्हारे विषय की बात फैल गई; तुम्हें सावधान रहना चाहिये। पुलिस ने [illegible] आ गुप्त-चरों का काम करता है। मैं यह जो तुम्हें बताये देता हूँ, कि अगर [illegible] ने [illegible] तुम्हें आ पकड़ा, तो तुम्हें बचाना मेरी ताकत के बाहर है।"

ओलिवा भयभीत नहीं हुई। उसने समझ लिया,
उसकी सामनेवाली पड़ौसिन होगी। उसके इस अनुर
मन-ही-मन प्रसन्न हुई, पर काऊण्ट से मन की बात
बोली—"अजी, यह आपका भ्रम है। मुझे किसी ने
वह स्त्री कदापि मुझ पर सन्देह न करती होगी।"

"लेकिन उसके ढँग से तो सुनता हूँ ऐसा ही प्रकट

"खैर, अब मैं अधिक सावधान रहूँगी। और
मकान भी तो काफ़ी सुरक्षित है; एकदम कोई घुस भी
सकता।"

"हाँ, सिवा दीवार पर चढ़े, कोई यहाँ नहीं आ
फिर चोर-दर्वाजे की राह आया जा सकता है; सो उस
हमेशा मेरे पास रहती है। इसलिये तुम बिलकुल सुरक्षि

ओलिवा ने काऊण्ट को कृपा के लिये बहुत-बहुत
दिया। पर अगले दिन सुबह होते ही वह फिर खिड़की
थी। ज़रा देर बाद ही सामने जोन दिखाई दी। उसने
को देख.कर इधर-उधर ताक झाँक की, कि कोई है तो
सब खिड़की-दर्वाजे बन्द पाये, और कोई आता-जाता न
दिया, तो आवाज़ दबाकर बोली—"मैडम, मैं एक बात
पास आना चाहती हूँ।"

"चुप!" ओलिवा ने भयभीत होकर पीछे हटते और
को ओठों पर रखते हुए कहा।

जोन एकदम पर्दे के पीछे छिप गई। उसने समझा,

हो गई। जब ओलिवा उसी जगह खड़ी हँसती रही, तो फिर ...और बोली—"क्या आपसे मिलना असम्भव है ?"

"हाँ।" ओलिवा ने कहा।

"चिट्ठी भेज सकती हूँ ?"

"ना !"

जीन कुछ क्षण सोचती रही।

तब उसने उसकी तरफ़ देखकर अपना हाथ चूमा। जीन ने हँसकर उसका धन्यवाद ग्रहण किया। फिर उसने दर्वाजा बन्द कर लिया। उसने सोचा—इस महरबान पड़ौसिन ने जरूर कोई तर्कीब सोच ली है; उसके चेहरे से ऐसा ही प्रकट होता था।

सचमुच, दो घण्टे बाद ही जीन फिर कमरे में लौटी। सूरज ...बीच आ गया था, और गली में चिलचिलाती धूप फैली हुई थी।

ओलिवा ने देखा—इस बार उसके हाथ में तीर-कमान है। उसने हँसते हुए ओलिवा के खिड़की से हट जाने का संकेत किया। ओलिवा भी हँसते हुए हट गई।

जीन ने निशाना साधकर एक तीर खिड़की की तरफ़ फेंका, जिसमें एक छोटी सी पुड़िया बँधी हुई थी। पर दुर्भाग्यवश तीर कमरे में आने की जगह खिड़की के छड़ों से टकराकर गली में गिर पड़ा।

ओलिवा के मुँह से निराशा की एक चीख निकल पड़ी। जीन

भी खवे हिलाकर गली की तरफ़ झाँकने लगी, औ
लिये कमरे से ग़ायब हो गई।

ओलिवा खिड़की से सिर निकालकर नीचे की
लगी। एक ग़रीब भल्लीवाला इधर-उधर ताकता
चला जा रहा था। ओलिवा यह न देख सकी, कि
बँधा हुआ तीर उठाया, या नहीं, क्योंकि वह पहचा
से तुरन्त पीछे हट गई।

जीन का दूसरा प्रयत्न पूर्ण सफल हुआ। कार
के साथ उसका तीर सीधा ओलिवा के कमरे में
उसने झपटकर उसे उठा लिया, और पुड़िया
काग़ज़ निकालकर यह पढ़ने लगीः—

"बहन, मैं तुम्हारे प्रति आकर्षित हुई हूँ।
अच्छी लगती हो। मैं तो देखते ही तुम्हें प्यार क
क्या तुम इस घर में क़ैदी बनकर रहती हो? मैंने तु
की कोशिश की थी, पर सफल न हो सकी। जो
रखवाली करती है, क्या वह किसी को भीतर नहीं
क्या तुम मेरी मित्रता स्वीकार करोगी? अगर तु
निकल सकती, तो कम-से-कम लिख तो सकती हो,
मैं बाहर निकलूँ, पुड़िया बनाकर फेंक सकती हो
मैं पुड़िया बाँधकर नीचे लटकाओ, मैं उसे पकड़कर
वहीं मैं बाँध दूँगी। अँधेरा होने पर हमारे काम
नज़र न पड़ सकेगी। अगर मेरी आँखें धोखा नहीं

सकती हूँ, कि तुम मेरी सद्भावना की क़द्र करोगी, और मेरा कहा मानोगी।"

"तुम्हारी बहन"

"पुनश्च। क्या तुमने किसी को मेरी पहली चिट्ठी उठाते देखा था?"

इस चिट्ठी को पढ़कर ओलिवा ख़ुशी से काँप गई। उसने यह जवाब लिखा:—

'मैं भी तुम्हें उतना ही प्यार करती हूँ, जितना तुम मुझे। मैं पुरुषों की क्रूरता और दुष्टता की शिकार हूँ। लेकिन जिस आदमी ने मुझे यहाँ रक्खा है, वह दुष्ट नहीं, मेरा रक्षक है। वह लगभग मुझे रोज देखने आता है। किसी दिन मैं सब बातें आपको सुनाऊँगी। लेकिन अफ़सोस! मैं घर से बाहर नहीं निकल सकती! बाहर से ताला बन्द है। हाय! मैं किसी तरह तुमसे मिल सकती! बहुत-सी ऐसी बातें हैं, जो लिखी नहीं जासकतीं।

"तुम्हारी पहली चिट्ठी किसी ने नहीं उठाई। हाँ, एक मछली-वाला जरूर उस समय गली में से गुजरकर गया था; लेकिन ये लोग पढ़ना-लिखना तो जानते नहीं, इसलिये अगर चिट्ठी उनके हाथ लग भी गई हो, तो कोई भय की बात नहीं है।"

"प्यारी बहन,

ओलिवा निरेड!"

जब सन्ध्या आई, और अँधेरा हुआ, तो उसने धागे में बाँधकर चिट्ठी गली में लटका दी। नीचे खड़े हुए जॉन ने चिट्ठी

माँग लो, और आध घण्टे बाद यह उपाय लिखकर भेज दिय

"तुम अक्सर अकेली दिखाई देती हो। तुम्हारे मकान दर्वाजे पर क्या ताला लगा हुआ है? ताली किसके पास रह है? क्या तुम ताली को माँग या चुरा नहीं सकती हो? ड नहीं, तुम्हारा कुछ बिगड़ेगा नहीं, सिर्फ एक बहन के साथ घर दो घण्टे स्वतन्त्रतापूर्वक दिल बहलाने का मौक़ा मिल जायगा फिर दोनों मिलकर तुम्हारी मुक्ति का उपाय सोचेंगी।"

ओलिवा ने तदनुसार उत्तर दिया। तब जीन ने लिखा—कि जब काउण्ट आवे, तो वह मौक़ा पाकर मोम पर ताली की छाप ले ले। ऐसा ही हुआ। कगलस्तर के आने पर उसने चुपके से ताली की छाप ले ली। कगलस्तर ने एक बार भी ऊपर दृष्टि-पात न किया, और ओलिवा का काम आसानी से बन गया। काउण्ट के जाते ही उसने एक छोटे बक्स में छपा हुआ मोम और एक चिट्ठी रखकर नीचे लटका दिया।

अगले दिन जीन की यह चिट्ठी ओलिवा को मिली—

"प्यारी बहन, आज रात को सात बजे, तुम नीचे उतर आना। दर्वाजा खुला मिलेगा, और तब तुम अपनी बहन के गले मिलकर प्रसन्न होना।"

इस चिट्ठी को पढ़कर ओलिवा के हर्ष की सीमा न रही। नियत समय पर वह नीचे गई, और जीन से मिली। जीन ने बड़े प्रेम से उसे लिया, और दोनों एक गाड़ी में बैठकर चलीं। दो घण्टे तक वे लोग बाहर रहीं, और प्यार के चुम्बन और वाक्यों

आदान-प्रदान के बाद एक-दू-रे से विदा हुईं। ओलिवा के और सहायक का नाम जीन को उसी की जबानी मालूम गया। वह तो इस आदमी से थर-थर काँपती थी। इसलिये ने अपने कामों में सब तरह की सतर्कता बर्तने का निश्चय । ओलिवा ने ब्यूसर और पुलिस के झमेले की सब बात साफ उसे बता दी।

अब तो चिट्ठी-पत्री भेजने की भी जरूरत न रही। जीन के ताली मौजूद थी; जब चाहती, ताला खोलकर ओलिवा को साथ ले आती। ओलिवा भी जब जी चाहता, उसके पास आती।

"तोशिये कगलस्तर का कुछ सन्देह-सा नहीं है?" अकसर ओलिवा से पूछ लेती।

"कभी नहीं!" ओलिवा जवाब देती—"मेरा तो खयाल है, कोई उससे कहे, तो भी वह विश्वास न करेगा।"

इस तरह एक हफ्ता बीत गया, और ओलिवा के मुँह से ब्यू- [illegible] अधिक निकलने लगा।

२८

थोड़े दिन देहात में रहकर मोशिये चर्नो फिर वर्सेई
आया। इस बार उसने एक अपरिचित बाज़ार में मकान
और चारदीवारी के अन्दर आठों पहर चुपचाप रहने लगा

दो हफ़्ते में उसे पास-पड़ोसियों की गति-विधि का
मिल गया। कब, कौन, किधर जाता है, कब क्या करता
क्या होता है। मौसम सुहावना था, शाम होते ही वह खि
सामने बैठकर सुनसान सड़क की रौनक़ देखने लगता,
राजमहल की रोशनियाँ दिखाई पड़तीं, तरह-तरह की
सुनाई देतीं।

धीरे-धीरे उसका मन बे-क़ाबू होने लगा। अँधेरा होते
अपने मकान की चारदीवारी से निकल कर राज-भवन
हुए बग़ीचे में जा पहुँचता, और जिस तरफ़ महारानी क
था, उधर जाकर खड़ा हो जाता। अकसर कपड़े बदलते
कमरे में इधर-उधर टहलती हुई महारानी मैरी अण्टो
दिखाई दे जाती। महारानी की नज़र उस पर पड़ने
...ई सम्भावना ही न थी।

[illegible] देर देखने के बाद चर्नी अपनी खिड़की में आ बैठता, घण्टों बैठा हुआ, रानी की खिड़की की रोशनी देखता रहता। रोशनी बुझ जाती, तो उसके बाद भी चर्नी घण्टों वहीं बैठा तरह-तरह के विचारों में निमग्न रहता।

एक दिन जब रोशनी बुझ गई, और चर्नी को वहीं बैठे-बैठे दो बज गये, तो हठात् थोड़ी दूर से खटके की आवाज़ आई। चौंककर सिर उठाया। राज-उद्यान के फाटक से यह आवाज़ थी, जो चर्नी के मकान से कुल पच्चीस क़दम दूर था। [illegible]र पड़ना था, कि उसके मुँह से ख़ुशी की एक हल्की चीख [illegible] पड़ी। स्वच्छ चाँदनी में उसने पहचाना कि हाथ में एक सुन्दर फूल लिये एक दूसरी रमणी के साथ स्वयं महारानी है। चर्नी एकबारगी भावावेश में भरकर खड़ा होगया, और [illegible]कर एक तरफ़ छिप गया। "हाय !" उसने मन ही मन —"अगर वह अकेली होती, तो मैं मृत्यु की भी परवाह न कर-[illegible] एक बार उसके चरणों पर जा पड़ता, और कहता—[illegible]। मैं चाहता हूँ !" सहसा दोनों [illegible] और दूसरी महारानी से कुछ कहकर एक तरफ़ चली गई। [illegible]

अगले दिन ठीक उसी वक्त दर्वाजा खुला, और दोनो स्त्रियाँ दिखाई दीं। घर्नी ने इरादा कर लिया—कि वह आज इस प्रेमी का परिचय अवश्य प्राप्त कर लेगा। लेकिन जब वह बाहर गली में आया, तो वहाँ कोई न था; दोनों स्त्रियाँ बाग के नुक्कड़वाली इमारत में घुस गई थीं। महारानी की साथिन इमारत के दर्वाजे पर उपस्थित थी। तो क्या रानी अपने प्रेमी के साथ अकेली अन्दर है? बस, अब हद हो चुकी थी। इस स्त्री को पकड़कर ज़बर्दस्ती सब कुछ जान लेने की इच्छा घर्नी के मन में बलवती हो उठी। इस समय वह इस क़दर उत्तेजित हुआ कि उसके शरीर का रक्त खौल उठा, माथे की नसें फटने लगीं, और वह बेहोश हो गया। जब वह पुनः होश में आया, तो दो का घण्टा-बज रहा था। सब तरफ़ स्वच्छता फैली हुई थी, और वहाँ किसी घटना का अवशेष बाक़ी नहीं था। वह भयानक काल्पनिक दृश्य मिट चुका था, और किसी प्रकार की आवाज़ सुनाई न देती थी। रानी, प्रेमी और साथिन तीनों ही चप निकले। घर्नी को इस बात का विश्वास इसलिये भी हो गया, कि दीवार के दूसरी तरफ़ घोड़े के टापों के निशान मिले। वह घर चला गया, और बाक़ी रात उन्माद की-सी अवस्था में बिताई। अगले दिन उठा, तो उसका चेहरा लाश की तरह ज़र्द था। उठकर वह सीधा राज-महल की तरफ़ चल दिया। महारानी सखी-सहेलियों के साथ हौज़ में ... थीं। जैसे ही वह चली, आस-पास के सब लोग सम्मान से ... समय वह अत्यन्त सुन्दर दिखाई पड़ रही थी,

रानी ने फिर विस्मित होकर पूछा—"आजकल आप कहाँ
हैं ?"

"वर्सेई में ही मैडम ।"

"कब से ?"

"तीन रात से ।" चर्ना ने एक खास अन्दाज से जवाब दिया,
के मुँह पर कोई परिवर्त्तन दिखाई न दिया, मगर जोन
र रही ।

"मुझसे आप कुछ कहना तो नहीं चाहते हैं ?" महारानी ने
न भाव से पूछा ।

"ओह मैडम, मुझे आपसे बहुत कुछ कहना है ।"

"आओ," कहकर वह अपने कमरे की तरफ चल पड़ी ।
टीका-टिप्पणी से बचने के लिये उसने कुछ दासियों, और
लियों को भी साथ ले लिया । जोन भी साथ हो ली । पर जब
र कमरे में पहुँची, तो उसने दासियों को जाने की आज्ञा दी ।
न्य महिलायें भी, यह समझकर कि रानी एकान्त चाहती है,
राँ से हट गईं । चर्नी क्रोध और अधीरता से भरा हुआ वहाँ
ड़ा रहा ।

"बोलो," रानी ने कहा—"मोशिये, तुम तो बहुत परेशान
मालूम होते हो ।"

"क्या बोलूँ ?" चर्नी ने आप ही आप ज़ोर से कहा—"कैसे मैं
महारानी के कलङ्क की बात कहूँ ?"

"मोशिये !" बिजली की तरह तड़पकर महारानी बोलीं ।

- "बस, मैंने जो-कुछ देखा है, वही कहूँगा।"

महारानी खड़ी हो गई। "मोशिये," उसने कहा—"कहने मेरा मन तो नहीं करता, लेकिन लक्षण ऐसे हैं, कि तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है।"

– वर्नी ने अविचलित भाव से कहा—"राजरानी आख़िर क्या है? एक स्त्री। और मैं भी तो प्रजा होने के साथ ही-साथ मर्द का दावा करता हूँ।"

"मोशिये!"

"मैडम, आपका क्रोध व्यर्थ है। मुझे याद है, मैं आप एक बार कहचुका हूँ, कि आपकी उदारता के लिये मेरे मन में अतुल सम्मान है। मुझे भय है, कि एक बार यह भी प्रकट हो चुका है, कि आपके प्रति मेरे मन में आसक्ति का भाव है। अब आप ही बताइये, मैं किस भाव को मन में रखकर आपसे बातें करूँ। अप्रतिष्ठा और लज्जा की एक बात है—उसे मैं महारानी से कहूँ, या एक स्त्री से?"

"मोशिये डि वर्नी!" महारानी ने आवेश में आकर कहा—"अगर तुम तुरन्त इस कमरे से बाहर नहीं निकल जाओगे, तो मुझे सिपाहियों की मदद से तुम्हें निकलवाना पड़ेगा।"

"लेकिन मैं यह बता देना चाहता हूँ," वर्नी ने ... भरकर कहा—"कि मैं क्यों तुम्हें एक निकृष्ट ... और ... समझता हूँ। [illegible] तीन रातों का मैं बराबर बाग़ में था।"

वर्नी ने आशा की थी, महारानी यह बात सुनकर ...

चीख उठेगी, पर इसकी बजाय वह आगे बढ़कर उसके पास पहुँचा, और बोला—"मोशिये चर्नो, तुम्हारी अवस्था देखकर मेरा हृदय बरबस दयार्द्र हो उठा है। तुम्हारे हाथ काँप रहे हैं, तुम्हारा चेहरा जर्द पड़ गया है, मालूम होता है, तुम्हारी हालत अच्छी नहीं है। कहो, तो किसी को मदद के लिये बुलाऊँ ?"

"मैंने तुम्हें देख लिया।" वह उसी जोश में फिर बोला—"उस आदमी के साथ देखा, जिसे तुमने फूल दिया था; उसे तुम्हारा [illegible] घूमते देखा; तुम्हें उसके साथ चारा के दर्वाजे की इमारत में घुसते देखा।"

महारानी ने आँखों पर हाथ फेरा—मानो निश्चय किया, कि स्वप्न तो नहीं देख रही है।

'बैठ जाओ।" फिर बोली—"नहीं तो गिर पड़ोगे।'

वास्तव में चर्नो अशक्त होकर सोफे पर गिर पड़ा।

वह उसके पास बैठ गई। "शान्त होओ," [illegible]—

[illegible]-पूर्ण भाव कहा, उसे फिर दोहरा जाओ।"

"क्या तुम मेरी हत्या करना चाहते हो ?" वह [illegible]

"अच्छा, तो मैं सवाल करती [illegible]

"हाँ"

"कब ?"

"आधी रात को।"

"कहाँ ?"

"बाग में। मङ्गलवार के दिन; तुम थीं, और तुम्हारी साथिन।

"ओह ! कोई साथिन भी ? उसे जानते हो ?"

"अभी-अभी पहचाना है।......लेकिन निश्चय नहीं, क्योंकि रात में साफ दिखाई नहीं पड़ा। और वह तो सभी पापियों की तरह बराबर अपना मुँह छिपाये हुए थी।"

"अच्छा," महारानी ने शान्त भाव से कहा—"तो तुम मेरी साथिन के विषय में निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते। फिर मेरे.........।"

"ओह ! निश्चय पूर्वक मैंने आपको देखा।"

"और किसी आदमी को मैंने फूल दिया ?"

"हाँ।"

"उसे जानते हो ?"

"नहीं।"

महारानी ने पैर जमाकर कहा—"बोलो ! बोलो ! बोलो ! मङ्गलवार को मैंने फूल दिया.........।"

"बुधवार को हाथ चूमने दिये, और कल रात को उसके साथ

"और तुमने मुझे देखा ?"

उसने ऊपर हाथ उठाकर कहा—"क़सम खाता हूँ।"

"ओह ! क़सम खाते हो !"

"हाँ, हाँ, मैडम, मैं दोहराते हुए शर्म और हया से मरा जाता मगर क्या करूँ—बात सच है, मैंने तुम्हें देखा।"

महारानी कमरे से बाहर निकलकर छज्जे पर टहलने लगी। वे हॉल में जो लोग खड़े हुए उत्सुकतापूर्वक उसकी तरफ ताक थे, उनसे उसने अपना मानसिक उद्वेग छुपाने की कोशिश की।

"अब मैं क्या कहूँ !" महारानी बोली—"अगर मैं क़सम भी डूँ, तो वह क्यों विश्वास करने लगा !"

बर्नी ने सिर हिलाया।

"पागल !" वह फिर बोली—"इस तरह अपनी महारानी बदनाम करना—एक निर्दोष स्त्री को अपराधी ठहराना ! अगर अपनी सब से पवित्र वस्तु की क़सम खाकर कहूँ, कि मैं इन ों में से किसी भी दिन बाग़ में नहीं गई, तो क्या तुम मुझ विश्वास करोगे ? क्या तुम मेरी दासियों और साथियों से कर इसका निर्णय करना चाहते हो ?—या फिर मुर महाराज ! हाय ! उसका विश्वास नहीं हो रहा !"

"मैंने आपको देखा था।" उसने फिर यही कहा।

"ओह ! समझ गई !" अब वह बोली—"कुछ लोगों ने मुझे रानी मेम्बर के घर प और आफिस-भवन में भी देखा था !

तुम तो जानते हो—,खुद तुमने उसके लिये मेरा पत्त लिया था क्यों ?"

"मैडम, उस समय मैंने इसलिये पत्त लिया था, कि मुझे उ पर विश्वास नहीं था। अब भी पत्त लूँगा, पर मुझे इस बात प विश्वास है।"

महारानी ने अपने हाथ ऊपर उठाये, और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

"मेरे भगवान् !" उसने रोते हुए कहा—"कोई ऐसा विचार मेरे मस्तिष्क में पैदा करो, जो इस समय मुझ निर्दोष की रक्षा कर ले। मैं नहीं चाहती कि यह व्यक्ति मुझसे घृणा करे !"

चर्नी का दिल हिल गया, और उसने हाथों में मुँह छिपा लिया।

तब एक क्षण रुककर महारानी ने फिर कहना शुरू किया—

"मोशिये, तुमने मेरा दिल दुखाया है। किसी दिन तुम इसके लिये पछताओगे। तुम कहते हो, तुमने लगातार तीन रात मुझे या मेरी सूरत की किसी रमणी को बाग में देखा। अब मेरे पास अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करने का इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं रह गया है कि आज रात को।मैं खुद तुम्हारे साथ बाग में चलकर देखूँ। शायद आज रात को भी वे दोनों आवें। तब सारा भेद खुल जायगा।"

चर्नी से हाथ से दिल दबाकर कहा—"ओह ! मैडम, आपकी दयाशीलता ने मेरा दिल हिला दिया।"

"मैं प्रमाणों से तुम्हारा दिल हिलाना चाहती हूँ। [illegible]

इस कहना मत। रात को दस बजे बाग के दर्वाजे पर मेरी प्रतीक्षा करना। बस मोशिये, अब जाओ।"

चर्नी से घुटने टेककर अभिवादन किया, और बिना एक शब्द कहे कमरे से बाहर हो गया।

जीन बाहर के बरामदे में खड़ी थी। चर्नी बाहर आया, तो उसने ध्यानपूर्वक उसकी भाव-भङ्गी पर दृष्टि-पात किया। कुछ देर बाद ही रानी के पास उसकी बुलाहट हुई।

जीन और ओलिवा की भेंट और मित्रता के विषय में हम जो-कुछ लिख आये हैं, उसे पढ़ने के बाद हमारे पाठकों को यह समझते देर न लगी होगी, कि यह सारा फरेब जीन का ही रचा हुआ था। उसी ने ओलिवा को महारानी के वेश में अमीर रोहन के समक्ष में उपस्थित किया था। वह जो चाहती थी, और जिस भयानक षड्यन्त्र का आयोजन किया था, इसका परिचय पाठकों को पीछे मिल चुका है।

महारानी के पास से जब वह लौटी, तो आप-ही-आप 'सब बात साफ है; अगर मैं न समझूँ, तो मेरे बराबर मू नहीं होगा। मामला उलझता जा रहा है। अब मुझे तुरन्त गोमान को बदलना होगा। अमीर [illegible] जाती हूँ, और [illegible] के चलाकर उसे गिरफ्तार करती [illegible] किसी [illegible] ओलिवा से अमीर की भेंट न [illegible]। मेरा काम बन चुका।"

र उसके मुँह से खुशी की एक चीख निकल गई। वह दौड़-
र उसके पास पहुँचा, और उसके पैरों पर गिर पड़ा।

"ओहो! आप आगये मोशिये? बड़ी अच्छी बात है।"

"मैडम, मैंने तो आपके आने की आशा ही त्याग दी थी।"

"तुम्हारे पास तलवार है?"

"जोहाँ, है।"

"किस जगह से तुम कहते थे वे लोग भीतर घुसे?"

"इसी दर्वाजे से।"

"किस वक्त?"

"हर रोज आधी-रात को!"

"कोई कारण नहीं, कि वे लोग आज न आयें। तुमने किसी
से कहा तो नहीं है?"

"किसी से नहीं।"

"ओहो, इस घनी झाड़ी में छुपकर बचें। मैंने इस मामले का
जिक्र मोशिये क्रोन से भी नहीं किया है। इस मेरी हम-शक्ल
लड़की की बात अलबत्ता क्रोन के कानों में पड़ गई है। और
अगर शीघ्र ही वह लड़की पकड़ी न गई, तो या तो मोशिये क्रोन
मुझे बेकाम समझेंगे, या फिर अपने दुश्मनों से मिला हुआ।
यह बात बड़ी ही भयानक है, कि ठीक मेरी खिड़की के नीचे लोग
ऐसा कर्म करते रहें। इसलिये मुझे यही ठीक जँचा, कि अपने
मान-रक्षा का प्रयत्न स्वयं मुझे ही करना चाहिये। आपका काम

"तुम !" रानी ने एक ज़हरीली हँसी हँसकर कहा—"तु
प्यार करते हो ! और मुझे बदकार समझते हो !"

"ओह मैडम !"

"तुम मुझे फूल, चुम्बन और प्रेम प्रदान करने की
ठहराते हो। नहीं मोशिये, झूठ न बोलो, तुम हर्गिज़ मेरे
प्यासे नहीं हो।"

"मैडम, मेरी पापिनी आँखों ने वे दृश्य देखे। मुझ पर
करो; मैं इस समय मर्मान्तिक यन्त्रणा का अनुभव कर रहा

रानी ने उसके हाथ पकड़ लिये। "हाँ, तुमने देखा। और
विश्वास है, कि वह मैं थी। ख़ैर, अगर ठीक इसी जगह,
पैरों पड़ने की अवस्था में, मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर कहूँ—'मैं
चर्नी, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, मैं तुम्हें प्यार करती रही,
दुनियाँ में तुम्हारे अतिरिक्त मैं और किसी को प्यार न करूँ
भगवान् मुझे क्षमा करें,'—तो तुम्हें विश्वास हो जायगा ?
तुम्हारा सन्देह दूर हो जायगा ?" यह कहते-कहते वह
इतने निकट आगई, कि उसको साँस उसके ओठों का स्पर्श
लगी। इस पर चर्नी विह्वल होकर बोला—"अब मैं जान दे
भी तैयार हूँ।"

"अपना हाथ मुझे दो।" वह बोली—"और बताओ, वे
किस प्रकार कहाँ गये, और किस जगह उसने फूल उसे दिया
—और उसने अपनी छाती पर लगा हुआ एक फूल हाथ में ले
उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। चर्नी ने फूल लेकर छाती से लगा लिया

"तब," वह बोली— 'उसने अपना हाथ उसे चूमने के लिये
?!"

"दोनों हाथ।" घर्नी ने एकदम आवेश में आकर रानी के
दोनों हाथों पर जलते हुए ओठ रख दिये।

"तब वे अकेले इमारत में गये।—यही हम भी करेंगे। चलोगे,
साथ।" वह उसके साथ चला, ठीक उस तरह मानों कोई
सुन्दर, मधुर स्वप्न देख रहा हो। उन्होंने पहले इधर-उधर देखा,
दरवाज़ा खोलकर भीतर घुसे। दो बजे वे लोग बाहर आये।
"बस," वह बोली—"सुबह तक के लिये घर जाओ।" और वह
उसके साथ राजमहल की तरफ चल दी।

जब दोनों चले गये, तो वह शाम-वाला घुड़सवार झाड़ियों
के पीछे से निकला। उसने सब-कुछ देख-सुन लिया था।
वह घुड़सवार और कोई नहीं, सिर्फ डि-टैवर्नी था।

३०

जब से जीन ने आकर अमीर का डराया, और भ
हर्गिज महारानी से भेंट न करने को प्रेरणा की, अमीर
पर जो बीत रही थी, वही जानता था। तीन दिन बीत
पर यह तीन दिन उसने मछली की तरह तड़प-तड़पकर का
किसी की कोई खबर नहीं, महारानी से भेंट होने की कोई
नहीं, और उस तृप्ति के बाद यह निराशा-पूर्ण अन्धकार!
का मन-प्राण एक-बारगी व्याकुल हो उठा। उसने ज
बुलाने के लिए दस बार आदमी भेजा, तब उसके दर्शन
उसे देखते ही वह चिल्ला उठा—"तुम किस प्रकार शान्
रह रही हो? तुम मेरी मनस्थिति की कल्पना कर सक
और मेरी प्यारी, तुम मेरे पास आतीं तक नहीं।"

"ओह, मोशिये, कृपा करके धीरज रखिये। यहाँ की
मैं वर्सेई में आपके लिये अधिक हितकर सिद्ध हो सकती थी

"वर्साई," यह बोला—"यह क्या कहती है? उसके म
क्या रखा है?"

"बिछुड़न तो दोनों तरफ ही दर्द करती है।"

"ओह, धन्यवाद, लेकिन प्रमाण ।"

"प्रमाण ! मोरिये, तुम होश में हो या नहीं ? भला किसी से स्त्री के विश्वासघात का प्रमाण माँगा जा सकता है ?"

"नहीं, मुझे क़ानूनी प्रमाण नहीं चाहिये, मैं तो यही पूछता क्या कुछ प्रेम का चिन्ह दिखाई दिया था ?"

"मुझे ऐसा लगता है कि आप या तो इस समय बेहद उत्तेजित या बेहद भुलक्कड़ हैं।"

"ओह, मैं जानता हूँ कि तुम्हारी बातें मुझे सन्तुष्ट कर देंगी, काउन्टेस, तुम्हीं सोचो, एक बार महती कृपा प्राप्त करने के बाद क्या तुम इस प्रकार तिरस्कृत होना पसन्द करोगी ?"

"मैं आपके अनुचित असन्तोष को दूर करने में असमर्थ हूँ।"

"काउन्टेस, तुम्हारा व्यवहार अच्छा नहीं है। मेरे पास तेरा लिये मुझे बुरा-भला कहने की जगह तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिये।"

"मैं आपकी क्या मदद करूँ ? कोई बात भी तो नहीं है।"

"कोई बात नहीं ?"

"नहीं।"

"खैर मैडम, वक्त आने पर मैं तुम्हारे लिये यह नहीं कहूँगा।"

"मोरिये, आप करने से कुछ न बनेगा। और इसके अतिरिक्त, आप अन्याय भी कर रहे हैं।"

"नहीं काउन्टेस, अगर तुम मेरी मदद नहीं कर सकतीं, तो न सही, बस, मुझे एक बात सच-सच बता दो।"

"क्या बात ?"

"यह कि क्या महारानी उन महा-व्यभिचारिणी स्त्रियों
नहीं है, जो पहले तो पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करत
और फिर सूँघा हुआ फूल समझकर दूर फेंक देती हैं ?"

जीन ने विस्मय का प्रदर्शन करते हुए अमोर पर दृष्टि
किया। कहा—"क्या मतलब ?"

"सच बताओ, क्या स्वयं रानी ने मुझसे मिलने से इ
कर दिया है ?"

"मैं तो यह नहीं कह रही हूँ, मोशिये।"

"वह मुझे अपने से पृथक् रखना चाहती है कि कहीं ऐ
हो, मैं उसके किसी नये प्रेमी के मन में सन्देह पैदा कर दूँ

"आह! मोशिये......" जीन ने अप्रत्यक्ष भाव से अमोर
सन्देह को पुष्टि दी।

"सुनो," वह कहता रहा—"पिछली बार जब मैं उससे
था, तो मुझे एक बार ऐसा सन्देह हुआ था, कि पास की भा
कोई छुपा हुआ है।"

"पागलपन !"

"और मेरा खयाल है......।"

"और कुछ न कहो, मोशिये। यह महारानी का अपमान
और मुझ पर कलङ्क।"

"तब काउण्टेस, प्रमाण लाओ। क्या वह मुझे अब भी
करती है ?"

"यह तो आसान बात है," जीन ने कहा—"लिखकर पूछ लीजिये।"

"तुम मेरी चिट्ठी उस तक पहुँचा दोगी ?"

"क्यों नहीं !"

"और उत्तर भी लाओगी ?"

"अगर ला सकी तो।"

"आह ! काउण्टेस, तुम बहुत अच्छी हो, धन्यवाद।"

वह लिखने बैठ गया, और दस बार काग़ज़ फाड़ने के बाद चिट्ठी तैयार की।

जीन ने उस चिट्ठी को पढ़ा, तो मन-ही-मन बोली—"ठीक मन-माफ़िक़ लिखा है !"

"यह ठीक रहेगा ?" उसने पूछा।

"अगर वह आपको प्यार करती हो। और कल सब मालूम हो जायगा; तब तक धीरज रखिये।"

घर लौटकर जीन विचारों में डूब गई। अमीर का जो पत्र उसके हाथ लग गया था, वह मानों एक नियामत थी। अब रानी और अमीर दोनों ही उसकी मुट्ठी में थे। अगर हार की बात खुली, और रानी और अमीर उसके विरुद्ध कुछ करना चाहेंगे, तो भी उस पत्र के होते हुए उसका बाल बाँका न कर सकेंगे। बस, उस पन्द्रह लाख की रक़म के साथ शान्तिपूर्वक उसे चले जाने देने के अतिरिक्त उनके पास कोई चारा न रह जायगा। या ... जाय, कि हार जीन ने उड़ाया, लेकिन

दोनों में से कोई उस बात को प्रकाशित करने का साहस न
और अगर एक पत्र काफ़ी न होगा, तो वह दर्जनों प्र
सकती है। बात जब फूटेगी, तो वह उन पत्रों को प्रकट क
भय देकर अमीर की ज़बान बन्द कर देगी। इस तरह के
के पश्चात् वह सीधी ऊपर के कमरे में पहुँची, और ओलि
तरफ़ देखा। वह भी अपने छज्जे पर खड़ी इधर ही देख र
जीन ने नित्य की तरह उसे सङ्केत से नीचे आने के लिये कहा
जीन को यह चिन्ता थी, कि किसी प्रकार ओलिवा को
कर दे। चोरी के बाद सेंध के औज़ार को छुपाना सब से
ज़रूरी है, और लोग अकसर इसी में भूल करते हैं।
सोचा, कि जब तक कोई ख़ास कारण न होगा, ओलिवा
होना पसन्द न करेगी। ओलिवा से वार्त्तालाप के बाद व
भी समझ गई थी, कि वह ब्यूसर से मिलने, और इस
छूटने के लिये बेचैन है। अतएव उसने इसी उपाय का उ
करना स्थिर किया।

रात आई, और दोनों साथ-साथ बाहर निकलीं; ओलि
शरीर पर लम्बा ओवर-कोट और चुग़ा था, और जीन ने
का-सा वेश बना रक्खा था।

अब ओलिवा बोली—"अजी मैं तो परेशान हो रही
आपको देखे बहुत देर हो गई थी।"

"आना बहुत ही मुश्किल हो गया था। आती तो मेरे
तुम्हारे दोनों के लिये ख़तरे की बात होती।"

"देखो बोबी, बात यह है, कि तुमने मुझसे जो क
तो उस पर ही विश्वास करके रहना पड़ा। तुमने यह व
भीतर जाकर उस अफ़सर ने कुछ देर तुमसे बातें कीं, अ
तुम्हारे हाथ चूमे। क्यों ?"

"हाँ……फिर……?" ओलिवा ने भय-विह्वल होकर

"मगर उस पाजी अफ़सर ने सर्व-साधारण में यह प्र
दिया, कि रानी ने उसे……सर्वस्व दे दिया।"

"क्या मतलब ?"

"ऐसा जान पड़ता है, कि उसने शेखी में भरकर य
उड़ाई है। कम्बख्त ! पागल हो गया है !"

"हे भगवान् ! हे भगवान् !"

"पागल हो गया है—पागल ! झूठा कहीं का ! क्यों ?

"सचमुच। झूठा !"

"हाँ, मेरा भी यही विश्वास है। मैं तुमसे यह आशा
नहीं करती, कि इस बात को मुझे न बताकर तुम मुझे और
आप को खतरे में डाल सकतीं थीं। क्यों ?"

ओलिवा सिर से पैर तक काँप उठी।

जीन ने फिर कहना शुरू किया—"और मैं तुमसे
आशा करती भी नहीं हूँ। क्योंकि तुम तो कहती ही थ
तुमने कगलस्तर के प्रेम को ठुकरा दिया, और तुम ब्यूस
अतिरिक्त किसी को प्यार नहीं करतीं।"

"लेकिन अब तो बताओ, खतरे की क्या बात है ?"

कहा—"मोशिये रित्यू, आधा घण्टा ठहरो, मैं अभी उस र
को लेकर आती हूँ।"

मोशिये रित्यू ने काऊण्टेस का हाथ चूमकर कहा—"
अच्छा, मैडम।"

जीन आगे बढ़ी, और ओलिवा के मकान के पास पहुँ
यहाँ उसने दियासलाई जलाकर रोशनी की; यह ओलिवा के
उतरने का सङ्केत था। पर कोई प्रत्युत्तर न मिला। तब वह
बढ़कर जीने के पास जा खड़ी हुई। पर जीने का दर्वाजा
था। जीन ने सोचा—शायद वह अपना सामान ला रही होग
मन में कहा—"मूर्ख ! व्यर्थ समय नष्ट कर रही है !" पाव
तक इन्तजार करती रही, पर कोई नहीं आया। क्रमशः
ग्यारह बजे। "कहीं बीमार तो नहीं हो गई" अकस्मात उ
मन में विचार आया। यह सोचकर उसने अपनी ताली द
के सूराख में लगाई। ताली घूमी और दर्वाजा खुल गया।

जीन को मकान का सारा नक्शा मालूम था। इसलिये
बेखटके ऊपर चढ़ गई। सब तरफ़ घोर निस्तब्धता थी। आ
वह ओलिवा के कमरे के पास पहुँची। दूर से ही प्रकाश की
क्षीण रेखा उसे दिखाई दी और किसी की हल्की पद-ध्वनि
कान में पड़ी।

जीन ठिठक गई, और साँस रोककर सुनने लगी। किसी
बोलने की आवाज न सुन पड़ी। ओलिवा अकेली हो
शाय[illegible] सामान बाँध-बूँध रही है। जीन ने नाथ

धीरे से किवाड़ पर आवाज पैदा की, और दबे स्वर से पुकारा—"मोलिवा, दर्वाजा खोलो।" दर्वाजा तुरन्त खुल गया, और जीन ने हाथ में मशाल लिये एक आदमी को सामने खड़े देखा।

"कौन, मोलिवा?" उस आदमी ने कहा फिर तुरन्त ही चौंककर बोला—"अरे! मैडम डि-ला मोट!"

जीन ने इसकी कल्पना भी न की थी। एक बार तो यह घटना उसे अधिक भयानक न लगी, पर दूसरे ही क्षण भविष्य का एक भयावना चित्र उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"मोशिये डि-कगलस्तर!" उसने व्यग्र भाव से कहा, और एकदम दाँने की तरफ दौड़ जाने का उपक्रम किया। पर उसने झट उसका हाथ पकड़ लिया, और उससे बैठ जाने को कहकर बोला—"मैडम, आपने किसकी खोज में यहाँ आने की कृपा की है?"

"मोशिये," उसने लड़खड़ाती जबान से कहा—"मैं आई··· मैं इस ख्याल से आई······"

"काउण्टेस, कृपया यह बताइये, कि······"

जीन ने साहस संचय करके कहा—"मोशिये मैं कुछ खबरों के विषय में आपसे सलाह करने आई थी।"

"क्या खबरें?"

"ऐसे बेताब न हूजिये मोशिये, बात बहुत नाजुक है।"

"अच्छा! बात बताने के लिये समय बहुत है।"

[illegible]

"आप अमीर रोहन के मित्र हैं ?"

"हाँ, मैं उनसे परिचित हूँ।"

"खैर, मैं आपसे यह पूछने आई हूँ..."

"क्या ?"

"ओह मोशिये, आप जानते होंगे, कि उसने मुझ पर
कृपा प्रदर्शित की है। मैं आपसे यही पूछने आई हूँ, कि मुझे
र विश्वास करना चाहिये, या नहीं; क्योंकि आप तो हरेक
ल की बात जानते हैं न।"

"मैडम, आप जरा और साफ़-साफ़ कहें, तो मैं आपकी कु
कर सकता हूँ।"

"मोशिये, लोग कहते हैं, कि अमीर राज्य-कुल की फिर
में पड़ा हुआ है।"

मैडम, सब से पहले तो मुझे एक प्रश्न करने का अ
। मैं यहाँ रहता तो हूँ नहीं, फिर मेरी तलाश में आप
आईं ?" जीन काँप उठी। "आप भीतर कैसे आईं
हाँ कोई नौकर है, और न दरवान। आप मेरी खोज
पि नहीं आईं। फिर किसकी तलाश थी ? आप जवा
तो मैं आपको सहायता दूँगा। आप एक ताली क
आईं, जो इस समय आपकी जेब में है। आप एक
ी तलाश में आईं, जिसे मैंने केवल दया-भाव से यहाँ
रखा था।"

सरोहन् काँपते हुए जवाब दिया- "—

सच भी हो, तो भी मैंने कोई पाप नहीं किया। एक स्त्री
दूसरी स्त्री से मिलती ही है। उसे बुलाइये, यह खुद ही कह देगी,
मेरी मित्रता उसे कैसी लगती है।"

"मैडम, आप यह जानकर भी कि वह यहाँ नहीं है, ऐसी
बातें कह रही हैं।"

"नहीं है! ओलिवा यहाँ नहीं है!"

"अच्छा! जैसे तुम जानतीं ही नहीं,—तुमने ही तो उसे
भगाने में मदद दी है।"

"मैं!" जीन ने बदहवास होकर कहा—"आप मुझे अपमा-
नित कर रहे हैं।

"हाँ, सब तुम्हारी ही कारस्तानी है।" कगलस्तर ने जवाब
दिया;और उसने मेज की दराज से एक पुर्जा निकालकर जीन
को दिखाया, जिसमें लिखा था :—

"मोशिये, मेरे उदार रक्षक, आपको छोड़ने के लिये आप
मुझे क्षमा करें। बात यह है, कि ब्यूसर को मैं जान से ज्यादे
चाहती हूँ। वह यहाँ आया, और मैं उसके साथ जाती हूँ। विदा!
मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिये।"

"ब्यूसर!" जीन ने मानों आकाश से गिरकर कहा—"वह
तो इसका पता भी नहीं जानता था।"

"ओह मैडम, यह एक दूसरा कागज है, जो शायद ब्यूसर से
छूट गया है।"

काउंटेस ने काँपते हुए कागज पढ़ा:—

"मोशिये ब्यूसर सेण्टक्लाड मोहल्ले के कोने-वाले मकान
अपनी प्रेयसी ओलिवा को पा सकते हैं। अभी समय है, च
तुरन्त उसकी खोज करनी चाहिये। यह एक सच्चे मित्र
सम्मति है।"

"ओह !" काऊण्टेस ने कहा।

कगलस्तर बोला—"और वह उसे लेकर चल दिया।"

"लेकिन यह चिट्ठी किसने लिखी ?"

"निस्सन्देह तुमने।

"लेकिन वह भीतर कैसे आया ?"

"तुम्हारी ताली की मदद से।"

"लेकिन ताली तो मेरे पास है।"

"अजी,जिसके पास एक है,उसके पास क्या दो नहीं हो सकत

"तो आपको इसका विश्वास है ?"

"विश्वास तो नहीं, पर सन्देह पूरा है।" कगलस्तर ने ध्यान
पूर्वक उसे ताकते हुए छोड़ दिया।

वह जीने की तरफ़ चली, पर जीना आलोकित हो रहा थ
और उसमें बहुत-से नौकर-लोग खड़े थे।

कगलस्तर ने ज़ोर से पुकारा।—"मैडम डि-ला मोट !"

वह क्रोध और निराशा की प्रतिमूर्ति बनकर बाह
निकल गई।

३२

पहली क़िस्त का दिन आया। जौहरी-बन्धुओं ने एक रसीद
ार कर रक्खी, पर कोई उसे लेने न आया। वह दिन और
व उन्होंने भयानक उत्सुकता में काटा। अगले दिन मोशिये
हिमर वर्सेई को चल दिया, और राजभवन के द्वार पर पहुँचकर
हारानी से मिलने की इच्छा प्रकट की। जवाब मिला, बिना
हले ख़बर किये इस समय उससे भेंट नहीं की जा सकती। पर
ह पहरेदारों के आगे इतना गिड़गिड़ाया, और अपनी ज़रूरत
ी ऐसी दुहाई दी, कि उन्होंने उसे यह आश्वासन दिया, कि जब
महारानी बाहर निकलेंगी, तो वे उसे उनके सामने पेश कर देंगे।
मैरी अण्टोइनेट, चर्च की भेंट से अब तक प्रसन्न होती हुई
ज्योंही बाहर निकली, त्योंही मोशिये बोहमर पर उसकी नज़र
पड़ी। देखते-ही रानी मुस्करा पड़ी। बोहमर समझा—इस पर
रानी की कृपा-दृष्टि है; इसलिये उसने विनयपूर्वक भेंट के लिये
समय माँगा। रानी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की, और दो बजे
का समय दिया। बोहमर अब लौटकर बासेंज के पास आया,
... दोनों ने ... किया, रुपया ... में नहीं है, शायद महारानी

पहले दिन भेज सकने में असमर्थ रही। दो बजे बॉहमर वर्सेई में आ-वारिद हुआ।

"अब क्या इरादा है, मोशिये वॉहमर," उसके सामने पर महारानी ने कहा—"क्या कुछ ज़ेवर वगैरह के विषय कहना है? कोई गोपनीय बात है क्या?"

वॉहमर ने इस प्रकार चारों तरफ़ देखा, कि कहीं कोई सु तो नहीं रहा है।

"क्या कोई भेद को बात है?" रानी ने विस्मित होकर पूछा—"वही पहले की बात—शायद कुछ ज़ेवर बेचना होग क्यों? मगर समझ रक्खो, इस समय मैं वैसी कोई बात न सुनूँगी।"

"ऐं!" रानी के व्यवहार से चकित होकर बॉहमर ने कहा। "क्यों, क्या हुआ?"

"तो क्या मैं महारानी से साफ़-साफ़ कह दूँ?"

"हाँ, बिल्कुल; पर जल्दी कहो।"

"मुझे यही कहना है, कि शायद महारानी कल हम लोग को भूल गईं।"

"भूल गई! क्या मतलब?"

"कल रुपया मिलना था न……"

"कैसा रुपया?"

"गुस्ताख़ी माफ़ कीजियेगा मैडम, शायद महारानी इस समय और ख़याल में हैं। दुर्भाग्य की बात है; लेकिन तो भी…"

"तो क्या सचमुच आप यह कहती हैं, कि आप
कर दिया ?"

"अजी कहूँ क्या—मैं तुम्हें प्रमाण दिये देती
महारानी ने बक्स में-से रसीद निकालकर दिखाई,
"मैं समझती हूँ, यह काफ़ी है।"

रसीद देखकर बॉहमर का माथा घूम गया
बोला—"मैडम, यह मेरे हस्ताक्षर हर्गिज़ नहीं हैं।"

"झूठ बोलते हो !" महारानी ने जलती आँखों
"हर्गिज़ नहीं, चाहे आप मुझे जान से मार
वापिस नहीं मिला, न मैंने रसीद भेजी। चाहे आप
पर लटका दें, पर मैं यही कहूँगा।"

"तो मोशिये," रानी ने कहा—"क्या तुम्हारा
तुम्हें लूट लिया ?—मेरे पास तुम्हारा हार है ?"

अब बॉहमर ने अपनी पॉकेटबुक निकाली, औ
निकालकर रानी के सामने पेश की। "मेरा ख़याल है
—"अगर महारानी हार वापिस भेजतीं, तो
लिखतीं।"

"मैंने पत्र लिखा ! मैंने कभी कोई पत्र नहीं लिख
अक्षर नहीं हैं।"

"आपका दस्तख़त मौजूद है।"

"हाँ, 'मेरी अण्टोइनेट ऑफ़ फ़्रान्स।' तुम पाग
तुम्हारा ख़याल है, मैं इसी तरह दस्तख़त करती हूँ ?

थे हैं। समझे ? जाओ मोरिये बॉइमर तुम इस खेल में जरा चूक गये; तुम्हारे जालसाज भूल खा गये।"

"मेरे जालसाज !" बेचारे बॉइमर ने चीखकर कहा—
"आप मुझ पर ऐसा सन्देह करती हैं ?"

"तुम भी तो मुझ पर अपराध मढ़ते हो।"

"लेकिन यह चिट्ठी ?"

"और यह रसीद ? उसे मुझे देदो, और अपनी चिट्ठी ले लो; पर किसी वकील से सलाह लो।"

और रसीद उसके हाथ से छीनकर चिट्ठी उसके आगे फेंकती हुई, वह कमरे से बाहर हो गई।

अभागा बॉइमर यह भयानक खबर अपने साथी को सुनाने गया, जो गाड़ी में बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब दोनों गाड़ी में बैठे, रोते-चिल्लाते लौट रहे थे, तो रास्ते-चलते लोग खड़े होकर उनकी तरफ ताकने लगे। थोड़ी देर बाद ही दोनों बदनसीब रोते-पीटते फिर वर्सेई आये।

इस बार उनके आने की खबर पाते ही महारानी ने उन्हें बुला भेजा।

जैसे ही उन्होंने प्रवेश किया, महारानी बोल उठीं—"ओहो, तुम फिर शोर मचाने आये हो मोरिये बॉइमर ! खैर, कोई बात नहीं।"

बॉइमर घुटने टेककर बैठ गया। बासेंज ने भी वैसा ही किया।
"महाराज !" राजा बोला—"इस समय मैं खुश हूँ, और

मेरे मन में एक नया खयाल पैदा हुआ है, जिसके का
लोगों के विषय में मेरा मत परिवर्तित है। मुझे ऐसा
कि हम दोनों को ही धोखा दिया गया है।"

"आह मैडम, अब मुझे जालसाज न कहना। यह
निकट बहुत भयानक है।"

"नहीं, अब तुम पर मेरा सन्देह नहीं है।"

"तो क्या महारानी का सन्देह और किसी पर है ?"

"पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। तुम कहते हो, हार
पास नहीं है ?"

"न मैडम, हमारे पास कहाँ से आया ?"

"तब मैंने भेजा, या न भेजा—इससे तुम्हें मतलब
अच्छा, तुम मैडम ला मोट से मिले थे ?"

"जी हाँ।"

"और उसने मुझसे ले जाकर तुम्हें कुछ नहीं दिया ?"

"जी नहीं, उन्होंने तो सिर्फ यह कहा, कि—ठहरो।"

"और यह चिट्ठी,—इसे कौन ले गया था ?"

"एक अपरिचित व्यक्ति—रात के वक्त।"

रानी ने घण्टी बजाई, और एक दासी आ मौजूद हुई।

"मैडम ला मोट को बुलवाओ," उसने कहा—"क्यों मां
बॉहमर, क्या तुम्हें अमीर रोहन मिले थे ?"

"जी हाँ, कुछ पूछने के लिये वे एक बार दूकान पर गये थे

"ठीक !" रानी ने कहा—"अब मैं अधिक कुछ सुनना न

रहो। अगर वह भी इस मामले में है, तो मेरा ख़याल है, [illegible] के लिये घबराने की बात नहीं है। मैडम ला मोट के 'ठहरो' का क्या अर्थ था—इसका मैं अनुमान कर चुकी हूँ। तब तक तुम [illegible] अमीर के पास जाओ, और सारा माजरा उन्हें सुना दो।"

जौहरियों को आशा की रेख दिखाई दी। जब वे दोनों चले [illegible] तो महारानी विचलित-सी हो उठी, और जीन को बुलाने के लिये आदमी-पर-आदमी रवाना करने लगी।

हम उसे इसी अवस्था में छोड़ते हैं, और असलियत की तलाश में जौहरियों के साथ चलते हैं।

अमीर अपने डेरे पर था। मैडम ला मोट का भेजा हुआ एक पत्र पढ़ता जाता था, और क्रोध से काँपता जाता था। वह पुर्जा [illegible] रानी द्वारा वर्सई से लिखा बताया गया था, और उसकी [illegible] आशाओं को मिट्टी में मिलाता था। उसने लिखा था—कि वह बीती हुई बातों को भूल जाय, और कभी वर्सई आने का साहस न करे, और न ही उस सम्बन्ध को नये सिरे से उत्पन्न करने की कोशिश करे, जो बिल्कुल असाध्य हो गये थे।

"दुष्टा! राक्षसी! डिनाल!" उसने [illegible] कहा—"यह [illegible] चार चिट्ठियाँ हैं, एक से एक [illegible] और [illegible] [illegible] एक स्वार्थ-पूर्ति के लिये [illegible] [illegible] आशाओं को [illegible] कर दिया!" [illegible]

[illegible]

पढ़ा, उसका हृदय विदीर्ण होता गया। लेकिन इस तरह का उसक स्नेह था, कि इन कठोर पत्रों को ही बार-बार पढ़े-बिना उसका मन नहीं मानता था।

ठीक इसी समय जौहरियों के आने की ख़बर मिली। तीन दफ़ा उसने उनसे मिलना अस्वीकार किया, पर तीनों ही बार नौकर लौट आया। तब हारकर उसने अनुमति देदी।

"इस ज़बर्दस्ती का क्या मतलब है महाशय," उनके आ उसने कहा—"मुझे इस समय तुम लोगों की जरूरत नहीं है

"क्या हमें फिर वही पहले जैसा दृश्य देखना पड़ेगा बॉहमर ने अपने साथी की तरफ़ देखकर कहा।

"नहीं, मैं लड़ मरूँगा," कहकर कम-अक्ल बॉसेंज असभ्य पूर्वक आगे बढ़ा, पर बॉहमर ने उसे रोक दिया।

अमीर ने विस्मित होकर कहा—"क्या तुम पागल गये हो ?"

"सरकार," बॉहमर ने लम्बी साँस लेकर कहा—"आ इन्साफ़ कीजिये, और हमें आप-सरीखे महानुभाव के प्रति ज़रा-स गुस्ताख़ी करने का मौक़ा न दीजिये।"

"या तो तुम पागल हो गये हो, या फिर तुम्हारी शामत तुम्हें खींच लाई है।"

"सरकार हम पागल नहीं होगये, हम लुट गये हैं।"

"तो मैं क्या करूँ ?—मैं कोई पुलीस-अफ़सर तो हूँ नहीं।"

"लेकिन हार तो आपके हाथ में है और न्याय से……"

"हार! क्या हार चोरी हो गया है?"

तब बॉहमर ने रो-रोकर सारा क़िस्सा सुनाया।

अमीर एक-एक बात सुनता, और स्तम्भित रह जाता था। आख़िर जब बॉहमर ने सारा क़िस्सा सुनाकर रानी के हस्ताक्षर का पुर्ज़ा उसे दिया, तो देखते ही अमीर बोला—"'मैरी अण्टोइनेट ऑफ़ फ्रान्स'! महाशय आप ठगे गये! यह रानी के हस्ताक्षर नहीं, वह तो 'हाउस ऑफ़ ऑस्ट्रिया' लिखती है।"

"तो, जौहरी ने चीख़कर कहा—"मैडम ला मोट हार को पुरनेवाले से और इस जालसाज़ से परिचित होंगी।"

यह सुनकर तो अमीर काठ हो गया। उसने [illegible] हाई, और नौकर से कहा—"मैडम ला मोट को तुरन्त बुलाओ।" फिर जीन की गाड़ी के पीछे गया, जो अभी थोड़ी देर पहले वहाँ [illegible] गई थी।

इधर मोशिये बॉहमर ने पूछा—"लेकिन हार कहाँ है?"

"मुझे क्या मालूम?" अमीर ने कहा—"मैंने तो उसे [illegible] रानी के पास भिजवा दिया था। और मैं कुछ नहीं जानता।"

"हमें या तो अपनी चीज़ या उसका [illegible] [illegible] [illegible]," जौहरियों ने रोते हुए कहा।

"महाशय, मेरा तो इससे कुछ मतलब नहीं।"

"मैडम ला मोट ने हमें तबाह कर दिया" [illegible] [illegible] कहा।

"मेरे सामने ऐसे [illegible] न लो।"

"तो [illegible] तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है?"

"तो मैंने किया ?" अमीर ने क्रुद्ध होकर पूछा।

"सरकार, हम तो यह नहीं कहते।"

"तब फिर कौन ?"

"अजी, हम तो साफ़ बात चाहते हैं।"

"ख़ैर, तो धीरज रक्खो, मैं छान-बीन कर लूँ।"

"लेकिन यह तो बताइये, महारानी से हम जाकर
वे तो हमीं पर दोष मढ़ती हैं।"

"क्या कहती हैं ?"

"वे कहती हैं, कि हार या तो हमारे पास है, या
मोट के पास।"

"ख़ैर," अमीर ने क्रोध और शर्म से पीला पड़
"जाकर उससे कहो—नहीं, उससे कुछ न कहो; बा
चुकी है। कल वर्सेई में राजमहल पर मेरी ड्यूटी
महारानी के पास पहुँचूँ, आप लोग आजायें। मैं दि
कि हार उसके पास है, या नहीं। तब तुम सुन लेन
कहती है। अगर मेरे सामने भी उसने इन्कार किय
विश्वास रक्खें, मैं भी रोहन हूँ, मैं पूरा दाम भरा
कहकर उसने बड़े दर्प के साथ उन्हें विदा दी।

"और" महारानी ने अपनी स्वभाविक दृढ़ता से
मोशिये... ...ख़ैर, लोगों को अगर ऐसी बात कह
मिलता है, तो कहने दो। मैं अगर सच्ची हूँ, तो मेरी
शीघ्र ही सिद्ध हो जायगी।"

इस अनपेक्षित उत्तर ने चर्नी को चक्कर में डाल
वह विचार में पड़ गया। इस प्रकार जब उसे उत्तर दे
हुआ, तो महारानी ने बेतरह व्यग्र होकर कहा—"हाँ
तुम क्या कह रहे थे? मेरी समझ में पूरी बात नहीं आ
लोगों का मतलब क्या है?"

"मैडम, कृपया मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनिये,
मामला बहुत ही भयानक है। कल मैं अपने चचा के स
बॉहमर के यहाँ कुछ जवाहरात बेचने गया था। य
भयानक कहानी सुनी, जो हम इस समय सारे शह
की तरह उड़ रही है। मैडम, मैं तो परेशान होगया
आपने हार लिया है, तो बता दीजिये; अगर दाम नह
हैं, तो भी बता दीजिये, लेकिन मुझे यह सुनने का
दीजिये, कि आपकी रक़म मोशिये रोहन ने अदा की है।

"मोशिये रोहन?"

"जी हाँ, मोशिये रोहन, जिसे लोग आपका प्रेमी
और जिसने आपको रुपया क़र्ज़ दिया, और जिसे य
एक अभागे आदमी ने वर्सई के राज-उद्यान में महारानी

"सेवायें—तुम्हारी ?—जो एक दुश्मन से भी
उस आदमी की सेवायें, जो मुझे घृणा करता है !
कभी नहीं।"

पत्नी ने आगे बढ़कर उसका हाथ अपने हाथों
"आज की रात बीती, कि पात हाथ से निक
सके, तो मुझे परेशानी और ख़ुद को शर्म से बचा

"मोशिये !"

"इन्कार मत करो—बताओ, इस हार के लि
जरूरत है ?"

"मुझे ? न, अभी तो बताया……!"

"मुझसे यह न कहिये, कि हार आपके पास न

"क़सम खाती हूँ !"

"अगर आप मेरा प्यार चाहती हैं तो क़सम
आपकी प्रतिष्ठा और मेरे प्यार की रक्षा का केवल ए
बचता है। वह यह है कि पन्द्रह लाख फ़्राङ्क मुझसे
अदा कर दीजिये।"

"अरे ! क्या तुमने अपना सर्वस्व स्वाहा कर
लिये सब-कुछ बेच दिया। धन्य ! मैं तुम्हें प्यार करती

"तो स्वीकार है ?"

"नहीं, पर मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।"

"और रुपया दिलवाओगी, अमीर से ? याद रखि
आपका यह व्यवहार मेरे प्रति उदारता का द्योतक नहीं

"बराबर के कमरे में चले जाओ, और दर्वाजे
रखकर हम दोनों की बातचीत सुनो। जल्दी करो, व
चर्नी गया, और गम्भीर मुद्रा बनाये हुए अमीर
आते ही बोला—"मैडम, मुझे बहुत-सी जरूरी
कहनी हैं, यद्यपि आप मेरी उपस्थिति से नफ़रत ख
"नफ़रत !—नफ़रत तो ऐसी मोशिये, कि मैं
ही चाहती थी।"

"क्या यहाँ पूर्ण एकान्त है ?" अमीर ने दर्
क़हा—"क्या मैं आजादी से बात कर सकता हूँ ?"

"क़तई, मोशिये, सब बातें साफ़-साफ़ कहिये।"
जोर से कहा, कि चर्नी सुन ले।

"महाराज तो नहीं आजायेंगे ?"

"महाराज का, या और किसी का भय न कीजि

"ओह, मैं तो ख़ुद आप-ही के लिये डरता हूँ।"

"और, मैं निर्भय हूँ। जो-कुछ कहना हो, साफ़-
कतापूर्वक कह डालिये। मैं सफ़ाई चाहती हूँ। लोग
आप मेरे विषय में तरह-तरह की बातें कहते हैं। आ
बातें क्या हैं।"

अमीर के मुँह से 'आह' निकल पड़ी।

तब वह बोला—"मैडम, आप सुनती हैं, हार
शहर-भर में क्या चर्चा हो रहा है ?"

"नहीं मोशिये, वह मैं आपके मुँह से सुनना चाह

"पहले तो यह बतलाइये, कि इतने दिन तक आप दूसरे व्यक्ति के मार्फत क्यों मुझसे बात करती रहीं ? अगर किसी कारणवश आप मुझसे घृणा करती थीं, तो क्यों नहीं मुझे सामने बुलाकर कह दिया ?"

"पता नहीं, आपका मतलब क्या है । मैं तो आपसे घृणा नहीं करती, पर मैं समझती हूँ, हमारे वर्तमान वार्तालाप का विषय यह नहीं है। मैं तो इस कम्बख्त हार के विषय में सब कुछ जानना चाहती हूँ; और पहले तो यह बताइये, कि मैडम ला मोट कहाँ है ?"

"मैं स्वयं महारानी से यही प्रश्न पूछने वाला था।"

"मोशिये, इस विषय में आपके सिवा और कौन बता सकता है ?"

"मैं, मैडम ! क्यों ?"

"अजी, मैंने दस दफा आदमी भेजा, मगर उसका कहीं पता नहीं है।"

"जी, मैं खुद उसके विषय में विस्मित हूँ, न जाने वह कहाँ शायद गई। मैंने भी उसे बुलाने के लिये कई बार आदमी भेजे, मगर उसका कहीं पता नहीं।"

"अच्छा, तो उसकी बात न चलाकर हम अपनी बात करें।"

"जी नहीं, पहले उसी की बात होनी चाहिए; क्योंकि आपके कुछ शब्दों ने मुझे संशय में डाल दिया है। ... कि

"मेरे क्रोध से बचाने के लिये आपने उसे छिपा रक्खा है?"

"जी नहीं।"

"तब आपने ऐसा क्यों प्रकट किया था, मानो उसके ग होने में आपका हाथ है?"

"मैंने तो ऐसा प्रकट कभी नहीं किया। तभी तो मैं कहत कि आपने पहले भी मुझे समझने में भूल खाई है।"

"कैसे?"

"कृपया मेरे पत्रों का मजमून स्मरण कीजिये।"

"आपके पत्र!—आपने मुझे पत्र लिखे थे?"

"अनेक। मैं अपने मनोभाव आप पर प्रकट करना चाह था।"

महारानी ने उत्तेजित होकर कहा—"इस दिल्लगी को ख़त्म कीजिये मोशिये। किन पत्रों की बात आप कहते हैं? ऐसी बा कहने की हिम्मत आपने कैसे की?"

"ओह मैडम! जान पड़ता है, मैंने अपनी आत्मा का भेद बताने में जल्दबाजी की।"

"कैसा भेद? आप होश में भी हैं मोशिये?"

"मैडम!"

"ऊंह! बोलो। तुम इस तरह की बात कहते हो, जिससे कोई दुनियाँ की नज़रों में मुंह दिखाने लायक न रहे।"

"मैडम! क्या यहाँ कोई हमारी बात सुन रहा है?"

"नहीं मोरिये, साफ़ साफ़ बोलो, और यह सिद्ध करो कि म अपने होश में हो।"

"हाय! न हुई इस समय मैडम ला मोट यहाँ! वह अगर रे प्रति आप की आसक्ति को न चिता सकती, तो कम-से-कम मरण-शक्ति को तो ठीक रखती।"

"मेरी आसक्ति!—मेरी स्मरण-शक्ति!"

"आह, मैडम!" उसने उत्तेजित होकर कहा—"कृपा करके े पकड़ा दो। प्रेम आप चाहे-जिसे करें, लेकिन मेरा अपमान र कीजिये।"

"हे भगवान्!" रानी ने ज़र्द पड़कर कहा—"लो सुनो, यह आदमी क्या कहने लगा!"

"देखिये मैडम," उसने अधिक उत्तेजित भाव से कहा—"मेरा ख़याल है, कि मेरा हद से ज्यादा अपमान हो चुका है, और मैंने अब तक अपने को क़ाबू में रक्खा है। अफ़सोस, मुझे यह पता नहीं था, कि जब एक रानी कहती है, कि मैंने ऐसा नहीं किया, तो यह बात उतनी ही धोखे से भरी हुई है, जितनी कि कभी एक साधारण बाज़ारू स्त्री का यह कहना, कि 'हाँ, मैं ऐसा ही करूँगी।'"

"लेकिन मोरिये, मैंने कौन-सी बात किससे कही!"

"दोनों मुझी से!"

"तुमसे! तुम झूठे हो और बेरहम! साथ ही तुम कायर भी हो, क्योंकि तुम एक अबला पर दोषारोपण करते हो! और तुम राजद्रोही भी हो, क्योंकि तुम राज-रानी का अपमान करते हो।"

"और तुम एक हृदय-हीन स्त्री, और एक धोखेबाज रा[illegible] हो! तुमने एक बार तो मुझे अपनी मुहब्बत की राह पर भट[illegible] काया, मेरी आशा-लताओं को पल्लवित किया......।"

"तुम्हारी आशा-लताओं को! हे भगवान! मैं पागल होग[illegible] हूँ, या यह?"

"क्या मैं आपको आधी रात की उन मुलाक़ातों की याद दिलाऊँ"

महारानी के मुँह से एक हृदय-वेधी चीख़ निकल गई, क्योंकि उसने पास के कमरे में किसी की उसाँस सुनी।

"अगर आप मैडम ला मोट के हाथ मेरे पास सन्देश न भेजतीं, तो क्या मैं आप-ही-आप बाग़ में आ सकता था?"

"हे भगवान्!"

"क्या मैं चाबी चुरा सकता था? क्या मैं इस फूल को माँगने का साहस कर सकता था, जो अभी तक मेरे सीने पर सुरक्षित है,—और जो मेरे चुम्बनों की उष्णता से झुलस गया है? क्या मैं तुम्हारे हाथ चूमने की गुस्ताख़ी कर सकता था? और अन्त में क्या मैं मधुर और स्वर्गीय प्रेम की कल्पना कर सकता था?"

"मोशिये," रानी ने चीख़कर कहा—"तुम चरित्र हीन हो!"

"हे भगवान्!" अमीर ने कहा—"ईश्वर जानता है, कि इस धोखेबाज औरत का प्यार पाने के लिये मैं अपना सर्वस्व त्याग करने को तैयार था!"

"मोशिये, अगर तुम अपने सर्वस्व की रक्षा करना चाहते हो, तो तुरन्त स्वीकार करो, कि यह सब बीभत्स बातें तुम्हारे मन-

पन्न थी। कहो, कि तुम रात के वक्त कभी भी बाग में नहीं आये।"

"मैं आया था।"

"अगर तुम यही कहे जाओगे, तो अपनी जान से हाथ धो दोगे।"

"एक रोहन कभी झूठ नहीं बोलता मैडम, मैं आया था।"

"मोरिये रोहन, परमात्मा के लिये कहो, वहाँ मैं तुमसे नहीं रही। कहो!"

"अगर तुम चाहो, तो मैं मर सकता हूँ, जैसा कि तुम चाहती हो, लेकिन सच बोलूँगा। मैं आया रात का राज-उद्यान में गया था, और मैडम का कोट मुझे लाई थी।"

"यह अन्तिम चेतावनी है। स्वीकार करो, कि यह सब कुछ एक भयानक षड्यन्त्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं।"

"नहीं।"

"तो विश्वास रक्खो, तुमको धोखा दिया गया।"

"नहीं।"

"तब तुम महाराज पर अपना फैसला छोड़ दो।"

कार्डिनल चुप रहा।

महारानी ने [illegible]

[illegible]

[illegible]

"श्रीमान् ! अगर महारानी चाहें, तो दोनों जालों का अपराध मुझ पर मढ़ सकती हैं।"

"मोशिये," महाराज बोले—"अपनी कैफ़ियत देने की बजाय तुम तो जबर्दस्ती अपराधी बने जा रहे हो।"

एक क्षण रुककर अमीर एक-दम बोल उठा—"अपनी कैफ़ियत दूँ ?—असम्भव !"

"लोग कहते हैं, हार......"

"महाराज, लोग कुछ भी कहते हों," अमीर ने बीच ही कहा—"मुझे तो सिर्फ़ यही कहना है, कि हार मेरे पास नहीं है जिसके पास है, वह बतायेगा नहीं। और मेरी समझ में तो इ अपराध की शर्म उसी आदमी पर डाल दी जाय, जो अपने-आ को दोषी क़बूल करता है।"

"मैडम, सवाल आप दोनों के बीच में है," महाराज ने कह —"एक बार फिर; क्या हार तुम्हारे पास है ?"

"नहीं, अपनी माँ की इज्ज़त की क़सम, अपने बच्चे की जान की क़सम।"

महाराज प्रसन्न-वदन अमीर की तरफ़ मुड़े। "तब मोशिये, बात तुम्हारे और इन्साफ़ के बीच में आ पड़ती है। बोलो, अब मेरी करुणा की शरण लेते हो ?"

"राजाओं की करुणा अपराधियों के लिये होती है, महाराज, मुझे मनुष्यों का न्याय चाहिये।"

"तो तुम स्वीकार नहीं करोगे

"मोरिये," महाराज बोले--"तुम महारानी से इस प्रकार बोलने की हिम्मत करते हो !"

"जी हाँ," मैरी अण्टोइनेट ने कहा--"इसी तरह यह मुझसे बोलता है, और समझता है, कि ऐसा उसका अधिकार है।"

"क्यों मोरिये ?" महाराज ने भयानक रूप से क्रोधित होकर कहा।

"अजी ! वह कहता है, उसके पास पत्र हैं......"

"उनको हमें दिखाओ मोरिये।" महाराज ने कहा।

"हाँ, निकालो।" रानी बोली।

अमीर ने जलती हुई आँखों पर हाथ लगाया, और मन-ही-मन कहा--"भगवान् ने ऐसे छली और निकृष्ट प्राणी की सृष्टि कैसे की !" मुँह से उसने कोई जवाब न दिया।

"यही नहीं," महारानी ने फिर कहा--"वह कहता है, कि उसने मुझसे भेंट की है।"

"मैडम, बस, चुप रहो।" महाराज ने कहा।

"मैडम, कुछ शर्म करो।" अमीर ने कहा।

"बस, एक शब्द मोरिये," महारानी बोली--"अगर तुम संसार के निकृष्टतम प्राणी नहीं हो, अगर दुनिया में कोई वस्तु तुम्हारे लिये पवित्र है, तो तुम्हें उसी की कसम, तुम्हारे पास जो प्रमाण हों, उन्हें पेश करो।"

"नहीं मैडम," आखिर उसने जवाब दिया--"मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है।"

मैंने कहा था, एक गवाह है।"

"कौन ?" महाराज ने पूछा।

"हेम ला मोट।"

"आह !" महाराज बोले—"इस औरत को बुलवाओ।"

"जी, वह तो ग़ायब है," रानी बोली—"मोशिये से पूछिये, इन्होंने क्या बताया।"

"जिनका उसके ग़ायब होने से अधिक स्वार्थ समझता होगा, उन्होंने ऐसा किया होगा।"

"लेकिन मोशिये, अगर तुम निर्दोष हो, तो असल अपराधी खोजने में हमारी मदद करो।"

कमीर ने हाथों की मुट्ठियाँ कसकर पीठ फेर ली।

"मोशिये," महाराज ने झल्लाकर कहा—"तुम्हें जेल की हवा खानी पड़ेगी।"

"लेकिन यह अन्याय होगा महाराज !"

"बस, यही होगा," महाराज किसी की तलाश में इधर-उधर देखने लगे, जो उनकी आज्ञा का पालन करे। पास-ही एक दरबारी खड़ा था, महाराज का संकेत पाते ही वह चिल्ला उठा—

"सिपाहियो, मोशिये गेहन को गिरफ्तार करो।"

कमीर धैर्यपूर्वक रानी के सामने से हट गया, और महाराज के सम्मुख घुटना टेककर सिपाहियों के आने के पूर्व पहुँचा। बोला—"हाँ, महाराज, मुझे गिरफ्तार करने का हुक्म हुआ है।"

"जब तक मैं आज्ञा-पत्र न लिखकर भेजूँ, अमीर को उस कमरे में रक्खो।"

जब दोनों अकेले रह गये, तो महाराज ने रानी से कहा-"मैडम, जानती हो, इसका फ़ैसला खुले-आम होगा, और अपराध के सिर पर बदनामी का टोकरा आ पड़ेगा।"

"धन्यवाद; आपने बिल्कुल ठीक मार्ग ग्रहण किया है।"

"मेरा धन्यवाद करती हो?"

"पूरे हृदय से; विश्वास रखिये, आपने ठीक एक बादशाह की तरह काम किया है, और मैंने एक रानी की तरह।"

"ठीक," महाराज ने प्रसन्न होकर कहा—"अन्त में हमें सच बात का पता चल ही जायगा।" कहकर उन्होंने महारानी का चुम्बन किया, और कमरे से बाहर हो गये।

जब अमीर सिपाहियों के साथ महल की सीढ़ियों से उतर रहा था, तो उसने देखा—सामने ही उसका ख़िदमतगार खड़ा हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

"मोशिये," अमीर ने सिपाहियों के नायक से कहा—"क्या मैं एक पुर्ज़ा घर भेज सकता हूँ?"

"अगर कोई देखे नहीं।"

अमीर ने अपनी नोट-बुक के एक पन्ने पर कुछ शब्द लिखे और पुर्ज़ा ख़िदमतगार को दिया। वह तुरन्त अपने घोड़े की तरफ़ दौड़ा, और देखते-देखते आँखों से ओझल हो गया।

"उसने मुझे बर्बाद कर दिया," अमीर ने उधर से नज़र हटा-

इस बार हाँ-भाव कहा—"लेकिन तुम्हारे लिये, मेरे बादशाह, मैं सबको क्षमा करूँगा; क्योंकि उसे क्षमा करना मेरा कर्त्तव्य है।"

ज्योंही जैसे ही महाराज कमरे से बाहर हुए, रानी बरामदेवाले दरवाजे की तरफ दौड़ पड़ी, और दर्वाजा खोल दिया। तब निढाल होकर कुर्सी पर गिर पड़ी, और अपने अन्तिम और प्रधान विधाता के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगी।

वह पहले से भी अधिक हतप्रभ और दुःखित भाव बनाये हुए निकला।

"क्यों?" वह बोली।

"मैडम," उसने जवाब दिया—"आप देख रही हैं, हरेक बात हमारी मित्रता में बाधक हो रही है। मेरा अपना विश्वास तो एक तरह रहा, जब सर्व-साधारण में भी ऐसी ही खबरें उड़ रही हैं, तो मुझे कैसे सन्तोष हो सकता है?"

"तो मेरा यह स्वार्थ-त्याग और कठोर भाव तुम्हारे सन्तोष के लिये काफी नहीं है?"

"ओह!" वह बोला—"मैं जानता हूँ, आप बहुत महान और उदार हैं!"

"लेकिन तुम मुझे दोषी समझते हो—अमीर पर तुम्हें विश्वास है? मैं तुम्हें हुक्म देती हूँ, सब साफ-साफ कहो।"

"तो मैडम, सुनिये, मेरी समझ में वह न तो पागल है, और न बदचलन हो, जैसाकि आपने उसे कहा। वह जो-कुछ कहता था, उस पर पूरा विश्वास करता था। अब आपको दिल में प्यार

करने के कारण वह तो बर्बाद हो जायगा, और आप......"

"हाँ --?"

"बदनाम हो जायँगी।"

"हे भगवान् !"

"यह रहस्यमयी रमणी, यह मैडम ला मोट, जो ठीक जरूरत के वक्त गायब हो गई है, उसी की सब कारस्तानी मालूम पड़ती है। इस पाजी औरत को आपने अपने सब भेद बता दिये, इसी का यह विषमय फल है।"

"ओह मोशिये !"

"जी हाँ, यह साफ़ है कि आप इस हार को ख़रीदने के लिये अमीर और मैडम ला मोट से मिल गई थीं। गुस्ताख़ी माफ़ कीजियेगा।"

"मोशिये, याद रक्खो, मैं ज़माने-भर के लिये रानी हूँ, पर तुम्हें प्यार करती हूँ। और प्यार में शासन के लिये गुञ्जाइश नहीं है, यह भी तुम्हें मालूम होना चाहिये। पर अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये मुझे शासन-दण्ड हाथ में लेना ही होगा। एक बार पहले भी अपनी मान-रक्षा के लिये तुम्हें यह स्थान परित्याग करने की आज्ञा दी थी। अब भी वैसी-ही परिस्थिति है, और मैं अपनी आज्ञा को दोहराती हूँ।"

"आपकी कठोरता मुझ पर कैसा भयानक आघात कर रही है, यह मैं बयान नहीं कर सकता।"

"मोशिये, तुम्हारी अनुपस्थिति आवश्यक है। मेरा मन बहुत

है कि शीघ्र ही तुम्हारा नाम भी इस झमेले में लिया जाने लगेगा।'

"असम्भव !"

"असम्भव ? नहीं, मेरे दुश्मनों की कमी नहीं, जो लोग तथ्य-हीन बातों का आविष्कार कर लेते हैं, उनके लिये तिल का ताड़ बना लेना बिलकुल सम्भव है। मेरी तो जो कुछ बदनामी होनी है, वह होगी ही, पर तुम तबाह हो जाओगे। इसीलिये मैं कहती हूँ, मोरिये—जाओ, और फ्रान्स की रानी जो आशा और प्रसन्नता तुम्हें नहीं दे सकी, उसकी तलाश और किसी जगह करो। हाय ! मुझ अभागिन के कारण मेरे मित्र भी विपत्ति में पड़ते हैं। ... जाओ।"

कहकर महारानी ने चर्नी को विदाई देने का उपक्रम किया।

वह तेजी से आगे बढ़ा, और आदर-पूर्ण स्वर में बोला—"महारानी ने मेरा कर्त्तव्य मुझे सुझा दिया। असली खतरा तो यहीं है, यहीं मेरे रहने की ज़रूरत है, यहीं कम-से कम एक पक्ष के गवाह का रहना चाहिये। इसलिये मैं यहीं रहूँगा। सम्भव है, मैं आपके दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दूँ, और आपकी प्रतिष्ठा और एक निर्दोष व्यक्ति की जान बेदाग बचालूं। हाँ, अगर आपकी इच्छा हो तो मैं छुपकर रहूँगा, किसी को मेरा पता न लगेगा, पर मैं आपकी प्रत्येक गतिविधि पर दृष्टि रक्खूँगा।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा," रानी ने जवाब दिया—"मारिये चर्नी, याद रक्खो, मैं कोई रखानगी नहीं है, मैंने जो-कुछ कहा, एक प्रतिष्ठित महारानी की हैसियत से कहा था। जिस दिन मैंने तुम्हें रुपया दिया था, उस दिन समझा था, तुम उसके

क़द्र करोगे, लेकिन अब देखती हूँ, तुम मेरा कहा मानना भी अपना कर्त्तव्य नहीं समझते।"

"ओह मैडम," चर्नी ने कहा—"मैं यह नहीं कहता कि आ अपना दिल मुझ से वापस ले लें। जब एक दफ़ा आपने उसे दें की दया की है, तो मैं उसे खोऊँगा नहीं। आपने मेरे प्रेम के लि मुझ पर सन्देह किया—ना, सन्देह न कीजिये।"

"हाय!" रानी बोली—"तुम भी कमज़ोर हो, और मैं भी!"

"जो कुछ तुम में है, मैं उस सब को प्यार करता हूँ,"

"क्या!" रानी ने उत्तेजित भाव से कहा—"यह बदनाम औरत, यह सन्दिग्ध रानी, जिसके विषय में सरे-आम मुक़द्दमा चलेगा, जिसे सारी दुनियाँ बुरा समझती है,—क्या उसे प्यार करनेवाला भी कोई दिल है?"

"एक ग़ुलाम, जो उसके इशारे पर जान दे सकता है, और उसका ज़रा-सा दुख दूर करने के लिये अपने हृदय का रक्त अर्पित करने को तैयार है।"

"तब," वह चिल्ला उठी—"यह औरत प्रसन्न और धन्य है। उसे दुनियाँ से कोई शिकायत नहीं।"

चर्नी उसके पैरों पर गिर पड़ा, और उन्मत्त भाव से उसके हाथों को चूमने लगा। ठीक इसी समय दर्वाजा खुल गया, और महाराज ने विस्मित होकर यह दृश्य देखा। उन्होंने देखा—जिस आदमी की बात सुनकर चले आए हैं, वही महारानी का कर-चुम्बन कर रहा।

वशीभूत हो रहे हैं। मैं आपको सतर्क करती हूँ, आप गलती में हैं। अगर इन महाशय की ज़बान इनके बड़प्पन के कारण बन्द होगई है, तो मैं उन पर यह अनुचित दोषारोपण न होने दूँगी।" कहती-कहती वह रुक गई। जैसा भयानक असत्य वह कह चाहती थी, उसके भावावेश से उसका गला रुँध गया।

लेकिन उसके इन शब्दों ने ही महाराज को नरम कर दिया उन्होंने मृदु कण्ठ से कहा—"मैडम, मैं समझता हूँ, मैंने य देखने में तो भूल नहीं की, कि मोशिये चर्नो तुम्हारे क़दमों प झुके हुए थे, और तुम ऊपर उठाने का उपक्रम कर रही थीं।"

"इससे आपको अनुमान करना चाहिये," वह बोली—"कि वह मुझसे कुछ याचना कर रहे थे।"

"याचना ?"

"जी हाँ, ऐसी याचना—जिसे मैं आसानी से स्वीकार नहीं कर सकती थी, नहीं तो उन्हें ऐसी विनय करने की ज़रूरत क्यों पड़ती ?"

चर्नो ने गहरी साँस ली और महाराज की दृष्टि नरम होगई। मैरी अण्टोइनेट कुछ कहने का अवसर खोज रही थी। उसके मन में इस बात का अत्यन्त क्षोभ था, कि उसे सरासर झूठ बोलने पर विवश होना पड़ रहा है। वह मन-ही-मन तड़पती थी, पर इस समय झूठ बोलने के अतिरिक्त अपनी मान-रक्षा का कोई उपाय उसे न सूझता था। मन में भय और उत्सुकता से काँपती हुई वह महाराज के प्रश्न की प्रतीक्षा करने लगी।

"कहो मैडम, वह क्या याचना थी, जिसके लिये मोशिये को तुम्हारे सम्मुख घुटने टेकने पड़े। उसे स्वीकार करके सम्भव है, मुझे तुमसे भी अधिक आनन्द हो।"

वह झिझकी। अपने आदरणीय पति के सामने झूठ बोलना इसके लिये मौत के समान था।

"महाराज, मैंने आपसे कहा न था, कि वह एक अनहोनी याचना थी।"

"वह क्या ?"

"किसी के पैरों पर पड़कर क्या याचना की जाती है ?"

"सुनूँ तो सही।"

"महाराज, वह एक पारिवारिक भेद है।"

"राजा के लिये कोई बात भेद नहीं है। जैसे बाप बच्चों की सब बात जानने का अधिकारी होता है, इसी तरह राजा भी प्रजा-जन के समस्त भेद जानने का हक़ रखता है।"

इस बात से रानी काँप गई।

"मोशिये बर्ना" वह बोली—"शादी करने की आज्ञा माँग रहे थे।"

"अच्छा! खूब!" महाराज बोले—"यह तो बड़ी अच्छी बात है। मोशिये बर्ना सब प्रकार योग्य हैं। उन्हें अवश्य ही शादी करनी चाहिये। यह अनहोनी बात कैसे है ?"

रानी को अपना मिथ्या-भाषण जारी रखना पड़ा—"जी नहीं, इसमें एक बड़ी भारी अड़चन है।"

"तो भी—सुनूँ तो सही !"

चर्नी ने रानी की तरफ देखा। वह अचेत हुआ चाहत
वह एक क़दम उसकी तरफ बढ़ा, फिर पीछे हट गया। म
की उपस्थिति में कैसे उसके निकट जाने का साहस करे ?

हठात् महारानी का स्वर फूट निकला—"महाराज,
जिससे शादी करना चाहते हैं, वह आश्रम में चली गई है
एण्ड्री ! एण्ड्री टेवर्नी !"

चर्नी ने दोनों हाथों से चेहरा ढक लिया। महारानी ने
से दिल दबाकर अपने को सम्हाला।

"एण्ड्री टेवर्नी !" महाराज बोले—"वह तो सेण्ट डेनिस
आश्रम में चली गई है !"

"जी हाँ।"

"अभी उसने कोई व्रत तो नहीं लिया है ?"

"नहीं, मगर लेने-ही वाली है।"

"देखो, अगर हो सका, तो कोशिश करूँगा। मेरा विश्वास
वह भी मोशिये चर्नी से प्रेम करती है। अगर दोनों का विवा
हुआ, तो मैं पाँच लाख की रक़म उसे दहेज में दूँगा। मोशिये चर्
रानी को धन्यवाद दो कि उन्होंने मुझे समय पर सूचित क
दिया।"

चर्नी एक यन्त्र-चालित प्रस्तर-मूर्ति की तरह झुक गया।

"अब," महाराज बोले—"मेरे साथ आओ।"

मोशिये चर्नी ने एक बार रानी की तरफ देखने का प्रयत्न

किया, पर दर्वाजा बन्द हो गया। बस, इसके बाद एक अलङ्घनीय पर्दा उन दोनों के स्नेह के बीच में पड़ गया।

रानी कमरे में अकेली तड़पती हुई रह गई। इतने सदमे इस समय उसे लगे थे, कि उसको समझ ही में न आता था, कि सब से ज्यादा क्लेश उसे किससे हुआ है। हाय! जो शब्द उसके मुँह से निकल गये, वे किसी प्रकार वापिस आजायँ! सम्भव है, एएड्री इन्कार कर दे। अगर वह इन्कार कर देगी, तो महाराज को सन्देह हो जायगा, और उसका झूठ खुल जायगा। मैरी अएटोइनेट ने अनुभव किया, कि इन विचारों में उसकी सारी विवेक-बुद्धि नष्ट हुई जा रही है। उसने अपना तमतमाया हुआ मुँह हाथों में छिपा लिया, और इन्तज़ार करने लगी। इस वक़ उसे किसी विश्वसनीय मित्र की जरूरत थी। सरे-दस्त कौन उसकी ऐसी मित्र है? मैडम डि-लम्बेल। वह उसकी सारी परेशानियों को अपने धीर-गम्भीर स्वर से शान्त कर देगी। या फिर एएड्री थी! उसका हृदय मोती की तरह साफ़ है। उसकी गहन राज-भक्ति और सहानुभूति अवश्य इस चिन्ता से महारानी का उद्धार कर सकती थी। वह तुरन्त उसकी तलाश करेगी, और उस पर अपने सारे भेद खोलकर उससे कहेगी, कि वह अपनी रानी पर अपने आपको .कुरबान कर दे। शायद वह इन्कार करे; क्योंकि सांसारिक मोह-माया से वह छुटकारा ले चुकी है। लेकिन आग्रह-अनुनय से शायद मान जायगी। फिर सगाई के बाद, महाराज पर अगर यह प्रकट कर दिया जायगा, कि चर्नी और

एण्ड्री ने अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया, तो वे उस वि
में कुछ दिलचस्पी न लेंगे, और किसी को न मालूम होगा,
ऐसा करने के लिये शुरू से-ही उन पर जोर डाला गया था।

यह सोचकर उसने जल्दी-से-जल्दी एण्ड्री की तलाश क
का निश्चय किया। पहले उसका विचार हुआ, कि चर्नी
मिलकर उसे अपना विचार बता दे, और उससे उनके अनुस
ही चलने की प्रेरणा करे। लेकिन इस भय से, कि कोई देख
ले, और लोगों के सन्देह को व्यर्थ पुष्टि मिले, उसे रह जा
पड़ा। फिर उसे यह भी आशा थी, कि चर्नी का सच्चा प्रेम औ
बुद्धिमान् मस्तिष्क, खुद ही उसे सीधे रास्ते पर डाल देगा।

खाने से निबटते-ही रानी ने कपड़े बदले, और बिना पह
दार के, सिर्फ एक सहेली को साथ लिये हुए सेण्ट-डेनिस
आश्रम की तरफ चली। एण्ड्री उस समय शुक्ल वसन धारण
किये, घुटने टेककर भगवान् की प्रार्थना कर रही थी। उस
जान-बूझकर दरबार छोड़ा था, और जो पदार्थ उसके प्रेम व
आग भड़का सकते थे, उन सब से किनारा-कशी कर ली थी
लेकिन उसके मन से विषाद और दुःख के बादल अभी नष्ट नहीं
हुए थे। हाय! चर्नी ने उसके प्रति विरक्ति प्रकट की, और पूरी
तरह रानी के प्रति आकृष्ट हो गया। इसी आग ने तो उसे यहाँ से
निकलने पर मजबूर किया! वह वहाँ रह कैसे सकती थी!
महारानी के सौभाग्य पर जलती-फुंकती वह कै दिन तक जीवित
रह सकती थी? "नहीं, नहीं," उसने आप-ही-आप कहा—"मैंने

इसे प्यार किया, वह मेरे लिये स्वर्ग की एक विभूति है, आदर्श प्रेम की एक प्रतिमूर्ति है, प्रेम की एक स्मृति-मात्र है, जिससे कभी मुझे क्लेश नहीं पहुँचना चाहिये।"

इसी तरह के विचारों में उसकी रातें बीतती थीं। जब कभी उसका मन ज़्यादे भर आता था, तो वह रो पड़ती थी। यहाँ रह-कर एएड्री के मन में एक अजीब तरह का सन्तोष था। इस जगह उसके दिल का मालिक नहीं आयगा, और उसे कष्ट न देगा। फिर इस एकान्त स्थान में अपनी प्रेममयी घड़ियों की स्मृति उसे अधिक सुख देती थीं, रानी के सामने अपने प्रेमी को उसके क़ब्ज़े में देखकर तो प्रति-क्षण उसके आत्माभिमान को चोट लगती, और उसके हृदय में हर समय वृश्चिक-दंशन की-सी पीड़ा होती रहती।

जब वह इसी तरह के विचारों में निमग्न थी, तो उसे रानी के आने की सूचना मिली। जब उसने यह सुना—कि रानी उससे मिलना चाहती है, तो आनन्दातिरेक से उसका शरीर काँप उठा। उसने कन्धे पर एक शाल डाल लिया, और महारानी से भेंट करने के लिये शीघ्रता पूर्वक आगे बढ़ी।

जब उसने देखा—रानी एक आरामकुर्सी पर बैठी है, और आश्रम की सब-पदाधिकारिणी महिलायें उसके चारों तरफ़ जमा होकर उसका स्वागत कर रही हैं, और हरेक की ज़बान पर रानी का नाम है, तो ख़ुशी के कारण उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा।

"आह ! यहाँ आओ एण्ड्री," महारानी ने अर्द्ध-स्मित भाव से कहा—"मैं तुमसे बात करना चाहती हूँ।"

एण्ड्री आगे बढ़ी, और आनन्द पूर्वक झुक गई।

"अनुमति दीजिये, मैडम," रानी ने आश्रम की आचार्या की तरफ़ देखकर कहा।

आचार्या ने नरमी से सिर हिलाया, और सब के साथ कमरे से बाहर होगई।

रानी एण्ड्री के साथ अकेली रह गई, जिसके दिल की धड़कन साफ़ सुनाई दे जाती, अगर कमरे में रक्खी हुई पुरानी टाइमपीस बाधक न बनती।

"एण्ड्री !" आखिर महारानी ने शुरू किया—"इस वेश में तुम्हें देखना अजीब-सा लगता है। तुम्हारा यह वैराग्य तो हमारे लिये एक सबक़ है।"

"मैडम, महारानी को सबक़ देना किसी का अधिकार नहीं है"

"क्या मतलब ?"

"मेरा मतलब यह है, मैडम, कि महारानी का भाग्य बहुत जबर्दस्त होता है, उसे इच्छा करने-मात्र से सब-कुछ प्राप्त हो सकता है।"

महारानी ने आश्चर्य-पूर्ण मुद्रा बना ली।

एण्ड्री ने जल्दी से फिर शुरू किया—"और यह उसका हक़ है। रानी के गिर्द उसके प्रजा-जन होते हैं। प्रत्येक प्रजा-जन का धर्म है, कि वह रानी पर अपनी जान न्योछावर करने को तैयार

है यही नहीं, बल्कि अपनी इज्जत, हुर्मत और अपनी इच्छाएँ भी क़ुरबान करने को तैयार रहे।"

"तुम्हारी बातों से मुझे आश्चर्य होता है," महारानी ने कहा—"तुम तो एक तर्क-हीन रानी की व्याख्या कर रही हो। मेरी समझ में तो रानी का यह धर्म है, कि उसके द्वारा प्रजा-जन को सुख मिले। मेरा ख़याल है, जितने दिन तुम महल में रहीं, तुमने इसके विरुद्ध मुझमें कोई बात नहीं पाई होगी।"

"जब मैं आपसे जुदा हुई थी, तब भी आपने यही प्रश्न पूछने की दया की थी, और मैंने जवाब दिया था—'जी नहीं।'"

"लेकिन," रानी ने कहा—"अकसर ऐसा दुःख खड़ा हो जाता है, जो व्यक्तिगत नहीं होता। क्या मैंने तुमसे सम्बन्ध रखने-वाले किसी व्यक्ति को दुःख पहुँचाया है? एरही, जो रास्ता तुमने इख्तियार किया है, वहाँ दुर्भावनाओं का प्रतिरोध करना होता है। वहाँ भगवान् की ओर से नम्रता, दयालुता, और क्षमा-शीलता की प्रेरणा मिलती है। मैं एक मित्र की हैसियत से यहाँ आई हूँ, और आशा करती हूँ, कि तुम भी मुझे इसी भाव से ग्रहण करोगी। क्या मुझे अब भी शत्रुता-पूर्ण [illegible] मुझको पड़ेगी?"

एरही का दिल पिघल गया। "महारानी जानती हैं," वह बोली—"एक [illegible] कभी आपका दुश्मन नहीं हो सकता।'

[illegible]," रानी ने कहा—"तुम्हारे [illegible]

[illegible] जब तक तुम मुझे क्षमा न करोगी। और तब तक मुझे अपमानित-सी समझना होगा।"

"मेरा भाई बड़ा राज-भक्त है, वह कदापि महारानी के विरुद्ध अपमानपूर्ण शब्द प्रयोग में नहीं ला सकता।"

रानी का निश्चय हो गया, कि इस विषय में चर्चा को बढ़ाना व्यर्थ है। अतएव बोली—"ख़ैर, कम-से-कम मैं हमेशा तुम्हारी मित्र हूँ।"

"महारानी की भलाई ने मुझे अपने बराबरी कर दिया है।"

"यह न कहो; क्या रानी के मित्र नहीं होते?"

"मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, मैडम, कि मैं आपको इतना प्यार करती थी, जितना कोई किसी को कर सकता है।"

"प्यार करती थी! यानी अब नहीं करती?"

"मेरा दिल न दुखाइये, वह मर चुका है।"

"तुम्हारा दिल मर चुका है! पगली, तुम्हारी अभी उम्र ही क्या है?"

"क्षमा कीजिये मैडम, मैंने सच-ही कहा था।"

"तो यह आश्रम-प्रवास तुम्हें पसन्द है?"

"मुझे एकान्त जीवन बहुत तुष्टि-दायक लगा।"

"कोई वस्तु ऐसी नहीं, जो तुम्हें दुनियाँ की तरफ आकृष्ट करे?"

"कोई नहीं।"

"हे भगवान्!" महारानी ने सोचा—"क्या मैं असफल

रहूँगी ? अगर और किसी बात से काम नहीं चलेगा, तो मैं उससे प्रार्थना करूँगी, कि वह दुनियाँदारी में पड़े, और मोशिये चर्नी से विवाह करे। भगवान् ! मैं कितनी दुःखी हूँ !"

"एरही !" फिर उसने कहा—"तुम्हारी बात सुनकर मेरी आशा नष्ट हो गई।"

"क्या आशा ?"

"ओह ! अगर तुम वास्तव में इतनी दृढ़ हो, जितना अभी प्रकट हुआ, तो वह बात बतानी बेकार है।"

"आप बतायें तो ……"

"तुमने जो-कुछ किया, उसपर तुम्हें अफसोस हुआ ?"

"कभी नहीं।"

"तब बात करना बेकार है; मैं तो इधर तुम्हें सुखी बनाने के प्रयत्न में लगी थी।"

"मुझे ?"

"हाँ तुम्हें—कृतघ्न ! लेकिन मुझसे ज्यादा तो तुम अपनी भावनाओं को समझती हो।"

"फिर भी अगर आप कृपया बता दें…… "

"अच्छी, साधारण बात है, मैं तुम्हें फिर [illegible] में ले चलना चाहती थी।"

"कभी नहीं ! कभी नहीं ! मैडम, मैं [illegible] में वापस चलूँ ! आपकी आज्ञा का पालन न करना [illegible] है, पर मैं मजबूर हूँ।"

रानी सिहर उठी। अमत्कारप उत्सुकता से उसका हृदय भर उठा। बड़बड़ाकर बोली—"इन्कार करती हो?" और उसने अपना मुँह हाथों में छिपा लिया। एण्ड्री ने समझा—वह नाराज हो गई है, इसलिये झट उसके सामने घुटने टेक दिये; बोली—"मैडम, आपको मेरी याद कैसे आगई?—मैं दुःखिता, अपमानिता और तिरस्कृता हूँ। आह मैडम, मेरी प्यारी स्वामिनी, मुझे यहीं रहने दीजिये। इस समय भगवान् की शरण में जाना ही मेरे लिये श्रेयस्कर है।"

"लेकिन," रानी बोलीं—"मैं तुमसे जो प्रस्ताव करना चाहती थी, उसे मानने पर तुम्हारा यह सब दुःख दूर हो जायगा। वह प्रस्ताव है, शादी का, जो एकदम तुम्हारी मान-प्रतिष्ठा बढ़ा देगी।"

"शादी?" एण्ड्री ने चिहुँककर कहा।

"हाँ।"

"ओह! नहीं, नहीं।"

"एण्ड्री!" रानी ने काँपते हुए कहा।

"जी नहीं, हर्गिज नहीं।"

मैरी अण्टोइनेट ने धड़कते दिल से अपनी अन्तिम बात कहने की तैयारी की। पर जरा रुक गई। उसी समय एण्ड्री ने टेककर कहा—"लेकिन मैडम, मुझे उस आदमी का नाम तो बताइये, जो मुझ अभागिन को अपनी जीवन सङ्गिनी बनाने को तैयार है। मुझे दुनियाँ ने इतना अपमानित और तिरस्कृत किया है, कि इस

[illegible]र आदमी का नाम·······" वह ताने के साथ मुस्कराई—"मेरे [illegible]ये घावों के लिये मरहम का काम देगा।"

महारानी ने अब भी पसो-पेश किया। पर एण्ड्री के आग्रह [illegible]र कहना पड़ा—"मोरिये चर्नी!"

"मोरिये चर्नी?"

"हाँ, मोरिये सर्फ़ाँ का भतीजा।"

"वह हैं!" एण्ड्री चमकती आँखों से कहा—"उन्होंने स्वीकार [illegible]र लिया?"

"उसने तुमसे विवाह करने की प्रार्थना की है।"

"ओह! मन्जूर है—मुझे मन्जूर है; क्योंकि मैं उसे प्यार करती हूँ।"

महारानी निढाल होकर कुर्सी के पीछे को ढलक गई। इधर एण्ड्री ने उसके हाथ चूम लिये, और उन्हें अपने आँसुओं से भिगोने लगी। बोली—"मैं तैयार हूँ।"

"तो चलो।" महारानी ने पूरा ज़ोर लगाकर मुँह से आवाज़ निकाली, और अनुभव किया, मानो शरीर की सारी ताक़त निकली जा रही है।

तैयारी करने के लिये एण्ड्री कमरे से बाहर हो गई। बैठी [illegible] [illegible] लेकर रोने लगी। "हे भगवान! इतना [illegible] किस प्रकार सह सकता है! और, मैं [illegible] रहा हूँ, क्योंकि मेरी और मेरी सन्तान की प्रतिष्ठा का [illegible] और इसी [illegible] के साथ मरना मेरे लिये [illegible]।"

३६

उधर फ़िलिप प्रस्थान की तैयारियाँ कर रहा था। वह ...
का अपमान देखना नहीं चाहता था, जो सर्व-साधारण में मुक...
होने की दशा में उसे बर्दाश्त करना पड़ता। जब सब तैयारी...
गईं, तो उसने अपने पिता से एक बार भेंट करनी चाही। मो...
टेवर्नी पिछले कुछ दिनों से बेहद मोटा होता जा रहा था। ...
की प्रेम-कथा की जो तरह-तरह की चर्चायें सर्व-साधारण में ...
रही थीं, उन्हें सुन-सुनकर ही उसका शरीर फूल रहा था। ...
उसे बेटे का सन्देश मिला, तो पास बुलाने की आज्ञा देने ...
जगह वह ख़ुद उसके कमरे में जा पहुँचा।

फ़िलिप सामान-वग़ैरा बाँधकर अभी निपटा था। एण्ड्री...
याद करके इस समय उसका मन भारी हो रहा था। अपने पि...
के विषय में फ़िलिप अच्छे विचार नहीं रखता था। वह जान...
था कि उसके घर छोड़ने की बात पिता को अच्छी नहीं लगे...
तो भी उन्हें सूचित कर देना वह अपना धर्म समझता था।

अकस्मात् बाहर से किसी के खिलखिलाकर हँसने की आवा...
आई। फ़िलिप ने पलटकर देखा—मोशिये टेवर्नी। बुड्ढा हँस...

[illegible] बोला—"हे भगवान् ! यह तो चल दिया ! मैं तो पहले ही जानता था। बल्कि मैं तो खुद ही कहनेवाला था। खैर, खूब किया, फिलिप, खूब किया !"

"क्या खूब किया, मोशिये !"

'बहुत ठीक !" बुड्ढे ने फिर कहा।

"मोशिये, आप मेरी ऐसी प्रशंसा कर रहे हैं, जो न तो मेरी समझ में आती है, और न मैं उससे प्रसन्न होता हूँ। क्या आप मेरे प्रस्थान पर प्रसन्न हैं, और मुझसे छुटकारा पाना चाहते हैं ?"

'हा ! हा !" बुड्ढे ने पुनः दाँत फाड़कर कहा—"मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ। क्या तुम समझते हो, मैं तुम्हारे प्रस्थान की असलियत नहीं समझता हूँ ?"

"असलियत समझते हैं ! आपकी बात से मुझे बड़ा अचरज होता है।"

"बेशक, यह आश्चर्य की बात है, कि मैंने बिना कहे-ही कैसे समझ लिया ! प्रस्थान का बहाना करके तो तुमने बहुत-ही अच्छा किया। बिना इस चालाकी के तो सभी-कुछ प्रकट हो जाता।"

"मोशिये, मैं आपका प्रतिवाद करता हूँ। आपका एक शब्द भी मेरी समझ में नहीं आता।"

बुड्ढा बढ़कर उसके पास गया, और उसकी [illegible] उसको बातों में घुमाकर बोला—"अब स्वीकार करता हूँ, [illegible] इस प्रस्थान-आशय के सब-कुछ चौपट हो जाता। [illegible] जाओ, [illegible] जाओ।"

"मोशिये," फ़िलिप ने ...

समझ में बिल्कुल नहीं आती।"

"तुमने अपने घोड़े कहाँ छुपा रक्खे हैं ?" जवाब की बाट देखे बिना ही बुड्ढे ने कहा—"तुम्हारी घोड़ी ऐसी है, जो हज़ारों में पहिचान ली जा सकती है। इस बात का ध्यान रखना, कि यहाँ तुम्हें कोई देख न ले। क्योंकि लोग साधारणतया तुम्हें... अच्छा, यह तो बताओ, तुमने कहाँ जाने का बहाना करने का निश्चय किया है ?"

"बहाना ! मोशिये, आपकी पहेलियाँ मेरी समझ में नहीं आतीं।"

"शाबाश ! तुम बिल्कुल गुप्त रखना चाहते हो—मुझसे भी अपना भेद कहना नहीं चाहते ! ख़ैर, तुम्हारी मर्ज़ी। मगर भाई मेरे, वह ख़बर सारे शहर में फैल रही है। राज-उद्यान में रात की मुलाक़ातें, फूल का लेना, चुम्बन करना, इत्यादि।"

"मोशिये !" फ़िलिप ने क्रोध और क्षोभ से बिलबिलाकर कहा—"बस, ज़बान बन्द कीजिये।"

"ख़ैर, मुझे सब मालूम है। रानी के साथ तुम्हारा सौहार्द और रात को राज-उद्यान की इमारत में एकान्त की भेंट... हे भगवान् ! आख़िर इतने दिन बाद इस परिवार का सौभाग्य-सूर्य उदय हुआ !"

"मोशिये ! आपने तो मुझे नर्क में ढकेल दिया !" फ़िलिप ... में रानी औ...

दोनों हा...

अमीर रोहन की कहानी पर जो चर्चा हो रही थी, उसे अपने साथ जुड़ती देखकर फ़िलिप के क्लेश का ठिकाना न रहा। वास्तव में बुड्ढे टेवर्नी ने जो-कुछ सुना, अपने पुत्र को ही सब से संलग्न समझा था। उसका ख़याल था, कि महारानी फ़िलिप के अतिरिक्त किसी को प्यार कर ही नहीं सकती। यही उसके सन्तोष और आह्लाद का कारण था।

"हाँ," बुड्ढा उसी प्रवाह में कहता रहा—"कुछ लोग कहते हैं, यह मोशिये रोहन था, कुछ कहते हैं, चर्नी था; यह कौन जाने, कि टैवर्नी था? ख़ूब! तुमने ख़ूब सफ़ाई दिखाई।"

इसी समय बाहर से गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनाई दी। एक नौकर ने भीतर आकर ख़बर दी—"बीबीजी आई हैं!"

"कौन—बहन एण्ड्री?"

तभी दूसरा नौकर आ पहुँचा, और बोला—"बीबीजी आप-से अलग कमरे में बात करना चाहती हैं।"

इसी समय कोई दूसरी गाड़ी दर्वाज़े के पास आकर रुकी।

"अब कौन शैतान आया?" बुड्ढा बड़बड़ाया—"यह रात तो विचित्रताओं में बीतती दिखती है।"

"मोशिये लि—कॉम—डि चर्नी!" दरबान ने उच्च स्वर से सूचना दी।

"मोशिये चर्नी को ड्राइङ्ग-रूम लेजाकर बैठाओ। पिताजी उनसे मिलेंगे। मैं जाता हूँ, बहन के पास। वह भला यहाँ क्यों आया है?" यह सोचता हुआ फ़िलिप नीचे उतरा।

[illegible] के कमरे की तरफ़ [illegible]। इतने ही में वह उसके [illegible] सामने आ खड़ी हुई। फिलिप ने चकित होकर पूछा—"तुम यहाँ कैसे, पगड़ी!"

"एक अद्भुत कारण से, जिसने मुझे मुग्ध कर रखा है। सुनते हो, भाई!"

"तो क्या आपको मुझे बताने आई हो!"

"मैं हमेशा के लिये वापस आ गई हूँ!"

"पगड़ी, धीरे से बोलो। पास के कमरे में एक अपरिचित सज्जन हैं।"

"कौन?"

"सुनो।"

"मोशिये लि काम डि चर्नी!" नौकर कह रहा था।

"वह! ओह, मैं जानती हूँ, वह किस लिये आये हैं!"

"तुम जानती हो?"

"हाँ;" और शीघ्र ही मुझे यह बात मालूम हो जायगी, जो उसे कहनी है।

"क्या तुम गम्भीरतापूर्वक कह रही हो पगड़ी?"

"सुनो, फ़िलिप। महारानी आश्रम से मुझे अकस्मात् ही ले आई थीं। मैं ज़रा जाकर कपड़े-वपड़े बदल लूँ।" कहते-कहते फ़िलिप का एक चुम्बन लेकर वह भीतर दौड़ गई।

फ़िलिप अकेला रह गया; पास के कमरे में जो-कुछ हो रहा था, सब उसे सुनाई देता था। बुड्ढे टेवर्नी ने उस कमरे में घुसकर मोशिये चर्नी का अभिवादन किया।

"मोरिये" धर्नी बोला—"मैं एक प्रार्थना करने आया हूँ। मैं अपने चचाओं को साथ नहीं लाया, इसके लिये माफी चाहता हूँ; यद्यपि मैं जानता हूँ, कि उनका आना अधिक ठीक होता।"

"प्रार्थना ?"

"मैं आपकी कन्या का पाणि-ग्रहण करने की आज्ञा माँगने आया हूँ।"

बुड्ढे ने विस्मित होकर आँखें फैला दीं, और कहा—"मेरी कन्या ?"

"जी हाँ, अगर आपको कुछ आपत्ति न हो तो।"

"वाह !" बुड्ढे ने मन ही मन सोचा—"फ़िलिप के सौभाग्य की खबर ने इतनी जल्दी असर किया—कि उसका एक प्रतिस्पर्द्धी उसकी बहन के सङ्ग विवाह करने में अपना गौरव मानता है।" तब ज़ोर से बोला—"आपका अनुरोध मेरे लिये सौभाग्य का विषय है, मोरिये। मैं चाहता हूँ कि आपको बिल्कुल निश्चयात्मक उत्तर देदूँ; इसलिये मैं एण्ड्री को बुलाता हूँ।"

"मोरिये," धर्नी ने टोककर रुखाई से कहा—"स्वयं महारानी ने कृपा करके एण्ड्री की सम्मति लेली है।"

"ओहो !" बुड्ढे ने अधिक विस्मित होकर कहा—"तो यह महारानी की करतूत है !"

"जी हाँ, उन्होंने स्वयं सेण्ट-डेनिस तक आने का कष्ट किया।"

"तब मोरिये, अपनी कन्या के विषय में कुछ बता देना हो

भाग्ये रह आया है। उसके पास दौलत नहीं है, और समाप्त करने के पहले......"

"यह बेकार है मोरिये; मेरे पास दोनों के भरण-पोषण लायक रुपया है। फिर आपकी कन्या ऐसी नहीं है, जिनके साथ रुपये-पैसे का ख्याल रक्खा जाय।"

ठीक उसी समय दरवाज़ा खुला, और उदास सूरत बनाये फिलिप ने कमरे में प्रवेश किया।

"मोरिये," उसने कहा—"पिताजी इस विषय में सब बातें कहना चाहते हैं; यह ठीक ही है। जब तक वे ऊपर से शराब लायें, तब तक मैं आपसे दो बातें करना चाहता हूँ।"

जब दोनों अकेले रह गये, तो फिलिप बोला—"मोरिये चर्नी, कैसे तुमने मेरी बहन के पाणि-ग्रहण का साहस किया?" (चर्नी का रंग फ़क़ हो गया)—"एक दूसरी स्त्री के साथ तुम्हारा जो अनुचित सम्बन्ध है, क्या उसे छुपाने के लिये? क्या इसलिये कि जिससे तुम विवाह करना चाहते हो, वह हमेशा तुम्हारी प्रेमिका के पास रहेगी, और इस बहाने से तुम्हें उसके साथ मिलने-जुलने में आसानी रहेगी?"

"मोरिये, आप सब-कुछ भूले जा रहे हैं।"

"शायद ऐसा ही हो। यही मेरा विश्वास है। अगर मैं तुम्हारा साला हो जाऊँ, तो तुम्हारे पिछले दुष्कर्मों के विषय में जीभ न हिला पाऊँगा। क्यों?"

"तुम क्या जानते हो?"

३७

र जब ओलिवा भागने की तैयारी कर [illegible] व्यक्ति का पत्र पाकर सहसा ब्यूसर वहाँ आ पहुँचा, और उसे अपने साथ ले गया। उन दोनों का पता लगाने में जीन ने कोई कसर न उठा रक्खी। जब उसके सारे जासूस वापस लौट आये, और कोई पता नहीं लगा, तो उसको निराशा का ठिकाना न रहा। इतने अरसे में महारानी के बुलावे उसे उस स्थान पर मिल चुके थे, जहाँ वह छिपी हुई थी।

तब कुछ निश्चय करके वह एक दिन महारानी के सम्मुख जाकर उपस्थित होगई।

देखते ही महारानी बोल उठी—"बारे, तुम दिखाई तो दीं! क्यों, अब तक कहाँ छुपी हुई थीं?"

"मैडम, मैं छुपी हुई नहीं थी।"

"भाग गई थी? खैर यही सही।"

"इसका अर्थ हुआ कि मैंने पेरिस छोड़ दिया था। नहीं, य आपका भ्रम था। असल बात यह थी, कि मुझे एक खास जग आठ-दस दिन के लिये जाना था, और मैंने अपने-आप को मा

रानी के लिये इतना ज़रूरी नहीं समझा, कि मैं आठ दिन के लिये भी आपसे अनुमति लेने आती।

"क्या तुम महाराज से मिलीं ?"

"नहीं, मैडम।"

"उनसे मिलो।"

"यह मेरे लिये सौभाग्य की बात होगी। लेकिन महारानी व्यवहार मेरे प्रति बहुत ही कड़ा है। मैं तो भय से काँप रही हूँ।

"अजी, यह तो अभी शुरू ही है। तुम्हें पता है, कि मोंशि रोहन गिरफ्तार हो गये हैं ?"

"सुना तो है, मैडम।"

"अनुमान कर सकती हो, क्यों ?"

"जी नहीं।"

"तुमने मुझसे अनुरोध किया था, कि मैं हीरे के हार की क़ीमत उससे दिलवाऊँ। मैंने स्वीकार किया था, या अस्वीकार ?"

"अस्वीकार।"

"आहा !" महरानी ने प्रसन्न होकर कहा।

"बल्कि महारानी को तो अपना निश्चय पूरा करने के लिये दो लाख फ़्राङ्क जुरमाना भुगतना पड़ा।"

"ठीक ! और इसके बाद ?"

"इसके बाद जब आप उसे ख़रीद न सकीं, तो मोंशिये बॉहमर के यहाँ वापस भिजवा दिया।"

"किस के हाथ ?"

"मेरे।"

"और तुमने उसका क्या किया ?"

"मैं उसे अमीर के पास ले गई।"

"अमीर के पास क्यों, जबकि मैंने जौहरियों के पास ले जाने कहा था।"

"क्योंकि मैंने सोचा, अगर बग़ैर उसके जाने हार वापस कर दूं, तो बाद में उसे क्लेश हो सकता है।"

"लेकिन जौहरी की दूकान से रसीद कैसे मिली ?"

"मोशिये रोहन ने दी थी।"

"लेकिन मेरे जाली दस्तख़तों की चिट्ठी तुम कहाँ से ले गईं?"

"क्योंकि उसने मुझे दी, और ऐसी प्रेरणा की।"

"तो, सब उसकी करतूत है ?"

"क्या मैडम !"

"रसीद और चिट्ठी दोनों ही जाली हैं।"

"जाली !" जीन ने अत्यन्त आश्चर्य का भाव प्रदर्शित करते हुए कहा।

"अब सचाई ज़ाहिर करने के लिये, तुम्हारा और उसका मुक़ाबला कराया जायगा।"

"क्यों भला ?"

"वह स्वयं भी यही चाहता है। वह कहता है, कि सब जगह तुम्हारी तलाश करता रहा, और सामना होने पर वह सिद्ध कर सकता है, कि तुमने उसे धोखा दिया।"

"अच्छा! तब तो मैडम, जरूर हमारा मुक़ाबला होना चाहिये।"

"जरूर होगा। तो तुम्हें बिल्कुल पता नहीं, हार कहां

"मुझे कैसे मालूम हो सकता है मैडम ?"

"तुमने अमीर के षड्यन्त्र में हिस्सा नहीं लिया ?"

"मैडम, याद रखिये मैं वैलुई-परिवार से सम्बन्ध रखती

"लेकिन मोशिये रोहन ने महाराज के सम्मुख बहुत-सी गन्दी बातें कही हैं. जिनके सम्बन्ध में वह कहता है, कि गवाह होगी।"

"मेरी समझ में नहीं आया।"

"वह कहता है, कि उसने मुझे पत्र लिखे।"

जोन ने कोई उत्तर न दिया।

"सुनती हो ?" महारानी ने पूछा।

"जी हाँ।"

"क्या जवाब है ?

"जब उससे मिलूँगी तो जवाब देलूँगी।"

"लेकिन असलियत क्या है—यह अभी बताओ।"

"आप तो मुझे मजबूर किये जा रही हैं।"

"यह कोई जवाब नहीं है।"

"इस जगह मैं और कुछ न कहूँगी।" उसने महारानी और उपस्थित दासियों की तरफ देखकर कहा। महारानी समझ लेकिन मानी नहीं। बोली—"देखो, मोशिये रोहन को तो

ज्यादा बोलने के कारण जेल में भेजा गया है, और तुम्हें भेजा जायगा, बहुत कम बोलने के लिये।"

जॉन ने मुस्कराकर कहा—"सच्चे आदमी मुसीबतों से नहीं घबराते। जेल का भय मुझ से ऐसे अपराध की स्वीकृति नहीं करा सकता, जो मैंने नहीं किया।"

"तो जवाब दोगी?"

"केवल आप को!"

"अब क्या मुझसे नहीं बोल रहो हो!"

"अकेली से नहीं।"

"अच्छा! मेरी तो यह दुर्दशा होगई है, और तुम अभी बदनामी से-ही डरती हो।"

"मैंने जो-कुछ किया," जॉन बोली—"सब आपकी खातिर।"

"छीः! कैसी बात!"

"मैं अपनी महारानी के अपमान का कारण बनना नहीं चाहती।"

"मैडम, याद रक्खो, तुम्हारी यह बात जेल को कठोरतम बनायेगी।"

"कोई परवाह नहीं, वहाँ आ सब से पहले मैं भगवान से प्रा[illegible] इज्जत पर धब्बा न लगे।"

र्थना करूँगी, कि महारानी की [illegible]

महारानी [illegible] होकर उठी, और पास के कमरे में पहुँची।

"[illegible] से [illegible] आने के बाद [illegible]

है," रानी ने ज़ोर से कहा।

"[illegible] मनोहर [illegible] है," [illegible] ने [illegible] कहा—

"और मेरा ख्याल है, मैं पहले ही [illegible] चुका हूँ।"

३८

रानी की धमकी के अनुसार जीन जेल में भेज दी
घटना ने फ्रांस में एक बार तहलका-सा मचा दिया
रोहन जेल में भी अमीरों की तरह ही शान-शौक़त से
और सिवा स्वतन्त्रता के उसे प्रत्येक वस्तु प्राप्य थी। प
तो उसके विरुद्ध किसी साधारण अपराध की कल्पना की
और इसीलिये उसके पद और सम्मान का पूरा ख़याल
गया। वास्तव में इस पर किसी को भी विश्वास न
कि रोहन-परिवार का एक व्यक्ति डकैती का अपराधी होग
के अधिकारियों और प्रधान सञ्चालक ने अमीर को
सुविधाएँ पहुँचाईं, जो उसके मुक़द्दमे से सम्बन्ध रख
उनकी दृष्टि में अमीर दोषी नहीं, राजदरबार का अकृपा-पा
जब यह ख़बर सर्व-साधारण में प्रचलित हुई, कि अमी
अपराध कुछ नहीं है, वह केवल राज-दरबार के किसी
असन्तोष का कारण है, तो उसके प्रति लोगों की सहा

भेंट की गिरफ़्तारी की खबर लगी, तो तुरन्त उससे मिलने की इच्छा प्रकट की। यह तुरन्त हुआ। जोन ने आते-ही उसके कान में कहा—"सब लोगों को हटा दीजिये, तब सारी बात कहूँगी।" उसने ऐसी इच्छा प्रकट की, पर अस्वीकार हुई। जेल-कर्मचारियों ने कहा, कि उसका वकील जीन से एकान्त में भेंट कर सकता है। वकील से जीन ने बताया, कि उसे पता नहीं, हार का क्या हुआ, पर उसने अमीर और महारानी की जो खिदमत की है, वह उसे उसके बदले में दिया जाना सम्भव है। अमीर ने वकील के मुँह से यह बात सुनी, तो फक् पड़ गया, और अब उसकी समझ में आया—कि वे दोनों किस तरह उसके पञ्जे में फँस गये हैं। उसने निश्चय कर लिया कि महारानी को दोष न लगने देगा। यद्यपि उसके मित्रों ने जोर देकर उसे समझाया, कि डकैती के इलजाम से छुटकारा पाने का उपाय इसके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। उधर जीन ने कहा, कि वह न तो महारानी की बदनामी करना चाहती है, और न अमीर की। पर अगर उन्होंने उसी के सिर अपराध देने का प्रयत्न किया, तो अपनी सम्मान-रक्षा के लिये वह सभी कुछ करेगी। यह जानकर मोरिये रोहन का हृदय घृणा से भर उठा, और वह बोला—जीन का असली चरित्र उसकी समझ में आ गया। हाँ, रानी के विषय में अभी तक वह किसी निश्चय पर न पहुँच सका था। इस सब घटना की रिपोर्ट मेरी अन्टोइनेट के पास पहुँची। उसने गुप्त रूप से फिर दोनों से पूछ-ताछ करने

की आशा थी, पर कुछ हाथ न लगा। रानी ने जिनको भे
था, उनके सामने जोन ने सब बातों के लिये साफ़ इन्कार क
दिया; पर जब वे चले गये, तो आप-ही-आप बोली—"अग
लोग मुझे ज़्यादे तङ्ग करेंगे, तो मैं सब-कुछ कह दूँगी।" मग
अमीर बिल्कुल चुप रहे, और न महारानी पर दोषारोपण किया
लेकिन तरह-तरह की अफ़वाहें तेज़ी से उड़ने लगीं, और अब
यह प्रश्न अकसर आपस में पूछा जाने लगा—"क्या सचमुच
महारानी ने हार उड़ाया है?" या "किसी तीसरे व्यक्ति के हाथ
तो रानी ने हार को नहीं चुरवा लिया है?" मैडम ला-मोट ने
अपने-आपको ऐसी उलझन में फँसा लिया था, जिसमें से इज़्ज़त
बचाकर निकलना असम्भव-सा दीखता था। पर उसने हिम्मत
न हारी। वह धीरे-धीरे इस नतीजे पर पहुँची, कि अमीर एक
ईमानदार व्यक्ति है, और उसका अहित करना उसे स्वीकार
नहीं है, बल्कि ख़ुद उसी तरह अपनी इज़्ज़त बचाने के प्रयत्न में
है। हार का पता लगाने के लिये कोई कोशिश उठा न रक्खी गई,
पर वह न मिलना था, न मिला। अब इधर जोन के पेट का
पानी पचना भी मुश्किल होगया। उसने सोचा—कहीं ऐसा न
हो, महारानी और अमीर को मुक़दमे घसीटने के बावजूद भी
उसे ही बलिदान की बकरी बनना पड़े। उसके पास कोई बड़ी
रक़म भी उस समय मौजूद न थी, जिसकी सहायता से वह जजों
की कृपा-पात्र बन जाती। अवस्था यह थी, जबकि एक नई
घटना ने सब-कुछ उलट-पलट दिया।

ओलिविया और ब्यूसर देहात में घर बनाकर आनन्दपूर्वक रहते थे। एक दिन ब्यूसर जब बाहर शिकार खेलने गया, तो मोशिये कोन के दो जासूसों ने उसे देख लिया। उन दिनों कोन के सैकड़ों जासूस देश-भर में फैले हुए थे। उन्होंने ब्यूसर को तुरन्त पहचान लिया, लेकिन असल जरूरत तो उन्हें ओलिविया की थी; ब्यूसर तो किसी साधारण चोरी के मामले में फरार था—इस-लिये उन्होंने देखते-ही उसे गिरफ़ार न किया, और उनका अनुसरण किया। जब ब्यूसर ने उन्हें अपने पीछे लगा देखा, तो उसने साथ आने वाले व्याध से उनका परिचय पूछा। उसने कहा—वह उन्हें नहीं पहचानता। ब्यूसर की आज्ञा पाकर व्याध उनके पास गया, और उनका परिचय पूछने लगा। उन्होंने जवाब दिया—"हम उन सज्जन के मित्र हैं।" तब व्याध उन्हें ब्यूसर के पास लाया, और बोला—"मोशिये [illegible], ये लोग अपने को आपका मित्र बताते हैं।"

"अच्छा, मोशिये ब्यूसर, अब आपने अपना नाम [illegible] रख लिया है!"

ब्यूसर कांप उठा। उसने बड़ी सतर्कता से अपना असली नाम छिपा रक्खा था। उसने व्याध को वहाँ से हटा दिया, और उनका परिचय पूछा।

"हमें अपने घर ले चलो, वहीं बतायेंगे।"

"घर?"

"हाँ, डरने की बात नहीं है।"

ब्यूसर डर तो गया था, पर अपना असली परिचय ज
वाले इन लोगों से इंकार करते और भी डर लगा।

जब घर पहुँचे, तो एक जासूस ने कहा—"वाह! बड़ा ए
स्थान है। कोई चाहे, तो यहाँ बरसों छुपा रह सकता है,
किसी को पता नहीं लग सकता।"

जासूस की इस टिप्पणी पर ब्यूसर काँप उठा, और
भीतर घुस गया। जासूस भी क्रमशः भीतर पहुँच गये।

इसके दो घण्टे बाद ब्यूसर और ओलिवा, दोनों जासूस
हिरासत में, एक बैलगाड़ी पर सवार होकर चले जा रहे थे।

—

३९

अगले दिन मोशिये क्रोन गाड़ी में बैठकर राज-महल
फाटक पर पहुँचा। उसके साथ एक बन्द गाड़ी और भी
उसने उसी समय महारानी से मिलने की इच्छा प्रकट की,
तुरन्त स्वीकार की गई। रानी ने उसका चेहरा देखकर अनु
किया, कि वह कोई खुशखबरी सुनाने आया है, और यह सो
ही उसके शरीर में हर्ष-पूर्ण रोमाञ्च हो आया।

"मैडम," मोशिये क्रोन ने कहा—"क्या यहाँ कोई ऐ
कमरा है, जो बिल्कुल एकान्त हो?"

"क्यों नहीं—मेरा पुस्तकालय।"

"देखिये, मैडम, नीचे एक गाड़ी खड़ी है। उसमें एक ऐ

व्यक्ति है, जिसे बिना किसी की नज़र-तले पड़े, राज-भवन में लाना चाहता हूँ।"

"कोई मुश्किल नहीं," कहकर रानी ने घण्टी बजाई।

उसने जैसा चाहा था, वैसा ही हो गया। तब वह पुस्तकालय के कमरे में पहुँची। थोड़ी देर बाद मोरिये क्रोन के साथ कमरे में प्रवेश करनेवाली एक स्त्री पर नज़र पड़ते ही महारानी के मुँह से एक चीख निकल गई। वह ओलिया थी। रानी के पसन्द के हरे रङ्ग के कपड़े उसने पहन रक्खे थे, और जिस तरह रानी बाल सँवारती थी, उसी तरह बाल सँवार रक्खे थे। रानी को एक बार भ्रम हुआ—कहीं वही तो अपने आपको शीशे में नहीं देख रही है!

"कहिये, है कुछ समानता ?" मोरिये क्रोन ने हर्ष से गद्गद् होकर कहा।

"अद्भुत !" महारानी ने कहा। तब वह मन-ही-मन बोली—"हाय ! चर्नी, इस समय तुम न हुए !"

"अब बोलिये।" मोरिये क्रोन ने कहा।

"कुछ नहीं, मोरिये, केवल महाराज को इसकी खबर मिल जानी चाहिये।"

"ठीक है, और आपके दुश्मनों को भी।"

"हाँ, मालूम होता है, तुमने सारे षड्यन्त्र का पता लगा लिया है ?"

"जी हाँ, करीब-करीब।"

"और मोशिये रोहन ?"

"उन्हें अभी तक कुछ पता नहीं है ।"

"ओहो !" महारानी ने कहा—"निस्सन्देह इसी औरत बदौलत सारा भ्रम हुआ है ।"

"सम्भव है, मैडम, लेकिन अगर अमीर को भ्रम हुआ है, किसी ने जरूर जान-बूझकर यह षड्यन्त्र रचा है ।"

"अच्छी तरह तलाश करो मोशिये, फ्रान्स की इज्जत इ समय तुम्हारे ही हाथ में है ।"

"आप विश्वास रक्खें, मैं तहे-दिल से अपने कर्तव्य क पालन करूँगा । इस समय दोनों अपराधी सब बातों से इंका करते हैं । मैं उन लोगों को एकदम चकित कर देने के इरादे इस जीते-जागते गवाह को अपने पास रखकर प्रतीक्षा करन चाहता हूँ ।"

"अच्छा, मैडम ला-मोट··· ?"

"इस खोज के विषय में कुछ नहीं जानती । वह तो सारा दोष मोशिये कगलस्तर पर रखती है, कि उसी के सिखाने पर अमीर सब बातें कह रहा है ।"

"और मोशिये कगलस्तर क्या कहता है ?"

"उसने आज सुबह मेरे पास आने का वचन दिया है । वह खतरनाक आदमी है, लेकिन साथ ही बहुत उपयोगी भी । चूँकि मैडम ला-मोट ने उस पर इल्जाम लगाया है, इसलिये सम्भव है, —— तेरी मदद करे ।"

"कुछ भेद मालूम होने की आशा है ?"

"जी हाँ।"

"किस तरह मोशिये ? सब बात विस्तारपूर्वक कहो, जिससे मुझे सन्तोष हो जाय।"

"सुनिये। मैडम ला-मोट सेण्ट-क्लॉड मोहल्ले में रहती थी। मोशिये कगलस्तर का मकान ठीक उसके सामने है। इसलिये मेरा ख़याल है, उसकी गति-विधि कगलस्तर से छुपी न रही होगी। लेकिन, मेरी गुस्ताख़ी माफ़ हो, उसने भेंट करने का जो समय दिया है, वह नजदीक हो है।"

"जाओ, मोशिये, जाओ। विश्वास रक्खो, तुम मेरी कृतज्ञता के पात्र हो।"

जब वह चला गया, तो महारानी रोने लगी। "मेरी निर्दो-षिता का प्रमाण मिलना आरम्भ हुआ," वह आप-ही-आप बोली—"शीघ्र ही मेरी निर्दोषिता जानकर सब के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठेंगे। लेकिन जिस व्यक्ति पर अपनी निर्दोषिता प्रकट करने के लिये मैं बेहद उत्सुक थी, उसे मैं नहीं देख सकूँगी।"

उधर मोशिये क्रोन सीधा पेरिस पहुँचा। वहाँ मोशिये कगलस्तर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह सब-कुछ जानता था; ब्यूसर की गिरफ़्तारी की खबर किसी अज्ञात शक्ति द्वारा उसे तुरन्त लग गई थी। ज्योंही खबर लगी, त्यों ही वह उससे मिलने चल दिया था। रास्ते में गाड़ी पर सवार ओलिवा और ब्यूसर उसे ... मिले। ब्यूसर ने उसे पहचान लिया, और सोचा—शायद वह

उसे कुछ सहायता दे सके। जासूस लोग तो वास्तव में ओलिवा की खोज में निकले थे, इसलिये कगलस्तर के थोड़े लालच पर ही फिसल पड़े, और उन्होंने ब्यूसर को छोड़ दिया। ब्यूसर के बिछुड़ने पर ओलिवा रोने लगी, लेकिन उसने यह कहकर दिलासा दिया—"मैं तुम्हें बचाने के लिये ही तुमसे विदा होता हूँ।" तब उसने कगलस्तर को सारी कथा सुनाई। कगलस्तर ने चुपचाप सब-कुछ सुनकर कहा—"वह तो बर्बाद हो गई।"

"कैसे ?"

इस पर कगलस्तर ने सारी कहानी उसे सुनाई, जो उसे मालूम न थी;—यानी बारा की घटना !

"हाय ! अजी, उसे बचाइये; इसके बदले में, अगर आप भी उसे चाहेंगे, तो मैं आपको ही दे दूँगा।"

"मेरे दोस्त, तुम भूल में हो; मैं श्रीमती ओलिवा पर कभी आसक्त नहीं था। मेरे सामने तो केवल एक ही उद्देश्य था। यह, कि तुम्हारे साथ रहकर उसे खानगियों का-सा जीवन बिताना पड़ता था, वह उससे बच जाय।"

"लेकिन......"

"तुम्हें इससे अचरज होता है ? याद रक्खो, मैं एक ऐसी संस्था से सम्बन्ध रखता हूँ, जिसका उद्देश्य ही नैतिक सुधार है। उससे पूछ लेना, अगर मेरे मुँह से कभी कोई ऐसी-वैसी बात निकली हो।"

"ओह ! मोशिये, क्या आप उसकी रक्षा कर सकेंगे ?"

"कोशिश करूँगा; पर निर्भर तो सब-कुछ तुम पर है।"

"मैं तो सब-कुछ करने को तैयार हूँ।"

"तो मेरे साथ पेरिस चलो। और अगर तुमने मेरी सब बातें मान लीं, तो हम उसे बचा सकते हैं। मैं सिर्फ एक शर्त लगाऊँगा, जो घर चलकर तुम्हें बताऊँगा।"

"मैं बिना सुने ही उसे स्वीकार करता हूँ। पर क्या वह मुझे फिर मिलेगी?"

"मेरा ऐसा ही खयाल है। जो-कुछ मैं तुम्हें बताऊँ, वह उससे कह देना।"

वे वापस लौटे। दो घण्टे बाद ओलिवा की गाड़ी जा पकड़ी, कुछ और दाम देकर ब्यूसर ने ओलिवा से बातें करलीं, और जैसा कगलस्त्र ने कहा, उसे समझा दिया।

अस्तु, अब मोशिये क्रोन की बात शुरू करें। यह व्यक्ति कगलस्त्र के विषय में बहुत-कुछ जानता था—उसका पहला नाम, उसकी असाधारण शक्ति, उसकी अमरता और सर्वज्ञता—सब की बात उसे मालूम थी।

"मोशिये," जाते ही उसने कगलस्त्र से कहा—"आपने मुझसे भेंट करने का समय दिया था। मैं आपसे मिलने वर्साई से आया हूँ।"

"मोशिये, मेरा खयाल था, कि आप आजकल की कुछ घटनाओं के विषय में पता पाने के उत्सुक हैं। इसीलिये मैंने आपको बुलाया है, कि आप मुझसे प्रश्न कर सकते हैं।"

"आपसे प्रश्न कर सकता हूँ!" क्रोन ने विस्मित होकर कहा "कैसे प्रश्न?"

"मोशिये," कगलस्तर ने जवाब दिया—"आप मैं
और खोये हुए हार के विषय में कुछ जानने को बहुत
"क्या आपको मिल गया है ?" क्रोन ने हँसते हुए
"नहीं मोशिये; पर बात यह थी, कि मैडम ला-मोट
मोहल्ले में रहती थी······"

"जानता हूँ, आपके मकान के सामने।"

"अरे ! अगर आपको ओलिवा का सारा क़िस्सा
है, तब तो मेरे बताने के लिये कुछ बाक़ी ही न रह गय

"ओलिवा कौन है ?"

"आप नहीं जानते ? तो मोशिये, एक सुन्दरी
कल्पना कीजिये। आँखें उसकी नीली हैं, और मुख
बिल्कुल महारानी-जैसी सुन्दरी है।"

"फिर ?"

"वह युवती बड़ा गन्दा जीवन व्यतीत करती थी
कर मुझे खेद हुआ। क्योंकि वह एक दफ़ा मेरे एक
मोशिये टैवर्नी के यहाँ नौकरी कर चुकी थी।······
बातों से आप ऊब तो नहीं उठे हैं ?"

"जी नहीं, कहिये, कहिये।"

"ख़ैर, तो ओलिवा का जीवन गन्दा ही नहीं, दुः
था। एक आदमी को वह अपना प्रेमी बताती थी। यह
बेचारी को मारता था, और उसका सब रुपया-पैसा छीन

"उसर ?" प्रान ने कहा।

"अरे! आप उसे भी जानते हैं। आप तो मुझसे भी बड़े-बड़े जादूगर हैं। ख़ैर, एक दिन जब ब्यूसर ने इस युवती को हमेशा से ज्यादे मारा, तो वह अपनी जान बचाने के लिये मेरे पास भाग आई। मुझे उस पर रहम आ गया, और मैंने उसे अपने मकान में आश्रय दे दिया।"

"अपने मकान में!" मोशिये क्रोन ने विस्मित होकर पूछा।

"हाँ! हर्ज क्या है? मैं तो पूर्ण ब्रह्मचारी हूँ।" कगलस्त्रो ने ऐसा मुँह बनाकर कहा—कि क्रोन भी धोखे में आगया।

"शायद इसीलिये मेरे जासूस उसका पता न लगा सके।"

"क्या! आप इस लड़की की तलाश करा रहे थे? तो क्या उसने कोई अपराध किया है?"

"नहीं, जी, नहीं, आगे कहिये।"

"मैं तो कह चुका। मैंने उसे अपने घर पर आश्रय दिया, बस हो चुका।"

"नहीं, हो नहीं चुका; क्योंकि अभी अभी आपने उसका नाम मैडम ला-मोट के नाम के साथ प्रयुक्त किया था।"

"हाँ, यही तो, कि दोनों पड़ोस में थीं।"

"लेकिन मोशिये, जिस ओलिवा के विषय में आप कहते हैं, आपने अपने घर में आश्रय दिया, मैंने उसे देहात से पकड़ मँगवाया है। वहाँ वह ब्यूसर के साथ रहती थी।"

"ब्यूसर के साथ! ओह! तब तो मैंने मैडम ला-मोट पर व्यर्थ ही सन्देह किया।"

"यह कैसे मोशिये ?"

"क्योंकि, मैंने सोचा था, मैं ओलिवा का सुधार कर सकूँ और उसका जीवन प्रतिष्ठित बना दूँगा। पर सहसा एक किसी ने उसे मेरे मकान से ग़ायब कर दिया।"

"अजीब बात है।"

"बेशक। और मेरा विश्वास था—कि यह काम मैडम ल मोट के अतिरिक्त किसी का नहीं हो सकता। लेकिन अब आ कहते हैं, कि वह ब्यूसर के साथ पाई गई तो उसके भागने में ल मोट का साथ नहीं हो सकता, और ओलिवा ने जो इशारेबाज और चिट्ठी-पत्री की, वह निरर्थक थी।"

"ओलिवा के साथ ?"

"हाँ।"

"क्या उनकी मुलाक़ात हुई थी ?"

"हाँ, मैडम ला-मोट ने एक ऐसे रास्ते का पता लगा लिया, जिसकी राह से हर रोज़ रात को वह उसे अपने साथ लेजाती थी।"

"क्या आपको उसका विश्वास है ?"

"मैंने ख़ुद अपनी आँखों से देखा था।"

"ओह मोशिये ! आप तो मुझे ऐसी बात बता रहे हैं, जिसके प्रत्येक शब्द के लिये हज़ार रुपया खर्च सकता था। पर आप शायद मोशिये रोहन के मित्र हैं ?"

"हाँ।"

"जानते हैं, इस मामले से कहाँ तक उसका सम्बन्ध है ?"

"मैं यह जानना नहीं चाहता।"

"लेकिन ओलिवा और मैडम ला-मोट के रात्रि-विचरण उद्देश्य तो आपको मालूम होगा?"

"इस विषय में भी मैं अज्ञात रहना चाहता हूँ।"

"मोशिये, मैं आपसे केवल एक प्रश्न और पूछूँगा। क्या आप पास मैडम ला-मोट और ओलिवा के पत्र-व्यवहार के प्रमाण हैं

"हाँ, हैं।"

"क्या हैं?"

"वे पुर्जे जो मैडम ला-मोट तीर-कमान की सहायता से ओ के कमरे में फेंका करती थी। उनमें से कुछ रास्ते में ही गिर पड़ थे, और उन्हें मैं या मेरे नौकर-चाकर उठा लेते थे।"

"मोशिये, अगर जरूरत पड़े, तो आप उन्हें पेश करने तैयार होंगे?"

"अवश्य; उनसे किसी निर्दोष को कष्ट नहीं हो सकता।"

"उनकी घनिष्ठता का और कोई प्रमाण भी आपके पास है?

"मैं यह जानता हूँ, कि वह एक उपाय से मेरे घर में पु आया करती थी। जब ओलिवा गायब हो गई, तो वह फिर मे घर आई थी, और मैंने और मेरे नौकरों ने उसे वहाँ देखा था।

"लेकिन गायब होगई थी, तो वह वहाँ क्या करने गई थी?

"मैं नहीं जानता। मैंने तो उसे गाड़ी में बैठे, गली के नुक्क पर आते देखा। मेरा यह खयाल हुआ, कि वह ओलिवा प अपना रङ्ग जमाकर उसे अपनी वश-वर्तिनी बनाना चाहती है।

...ऐसा करने दिया ?"

"क्यों नहीं ? वह प्रतिष्ठित महिला है, राज-दरबार में ...न है। अगर वह ओलिवा को अपनी छत्र-छाया में ...ती थी, तो मेरा इससे क्या बनता-बिगड़ता था ?"

"अच्छा, उसने देखा—ओलिवा गायब है, तो क्या बोली ...बड़ी परेशान-सी हो गई।"

...आपका खयाल है, उसे ब्यूसर ले गया ?"

...ब तो यही खयाल है, क्योंकि आप कहते हैं, कि वह ...के साथ पकड़ी गई है। अब से पहले मेरा ऐसा अनुमान ...क्योंकि मेरा खयाल था, उसे उसका पता नहीं।"

...द उसी ने सूचना दे दी हो।"

...सा भी अनुमान न किया था, क्योंकि उससे ऊबक... हो थी। मैं समझता हूँ, मैडम ला-मोट ने उसे च... ।"

...वह कौन दिन था ?"

...ई (तिथि-विशेष) की सन्ध्या।"

...आपने फ्रांस पर मुझ पर बड़ा उपकार किया है।"

...नय।"

...त में आपको कष्ट करना पड़ेगा।"

...जब क्रोन चला गया, तो कगलस्तर बड़बड़ाया ...स, तुमने मुझ पर दोषारोपण किया! अब

प्रेम था। अब कगलस्तर की सारी आई, और उसने ओलिवा के विषय में सारी बातें प्रकट कीं, तो जीन को लेने के देने पड़ गये, और वह अपनी बातों से फिर गई। उसकी इस बात से महारानी की सारी बदनामी दूर हो जाती, पर जन-साधारण के हृदय से जीन की बातों का विश्वास उठ चुका था, इसलिये यह बात भी सन्दिग्ध ही रही।

जब वह सब बात से साफ़ इन्कार कर गई, और कहने लगी, कि वह कभी बाग़ में गई ही नहीं, तो उसी समय ओलिवा को प्रकट किया गया, जो काऊण्टेस के तमाम फरेबों की जीती-जागती गवाह थी। जब ओलिवा को अमीर के सामने पेश किया गया, तो···········फूल देनेवाली, इमारत में एकान्त-सेवन करनेवाली को·········पहचानकर उसकी अजीब हालत हो गई। अब तो उसका मन होने लगा कि अपने शरीर का समस्त रक्त चढ़ाकर वह मैरी अण्टोइनेट के सम्मुख क्षमा-प्रार्थी हो। अब उसकी समझ में आया, कि किस प्रकार उसे भयानक धोखे में रखकर फ़्रांस की महारानी का अपमान करने पर प्रेरित किया गया ?—और उसे, जिसको वह दिल से चाहता था, और जो बिल्कुल निर्दोष थी। लेकिन अब एक अड़चन और आ पड़ी। अगर वह अपनी भूल स्वीकार करता है, तो उसे यह भी प्रकट करना पड़ेगा, कि वह महारानी के धोखे में उससे मिला, और महारानी को वह चाहता था। अर्थात् उसकी स्वीकृति भी अपराध होती। अतएव वह इस विषय में चुप ही रहा, और

जोन को सब बात से इन्कार करने दिया। ओलिवा ने
कुछ छिपाये, सब-कुछ स्वीकार कर लिया। आखिर, जब
तरह से लाचार हो गई, तो जोन को स्वीकार करना पड़ा,
उसने अमीर को धोखा दिया था। लेकिन कम्यज्त ने साथ
यह और कह दिया, कि, उसने जो-कुछ किया महारानी की
आज्ञानुसार किया; जिसने सारा दृश्य अपनी आँखों से देखा
था, और जिसने गुप्त स्थान में छिपे हुए यह सब-कुछ देखकर
मनोरञ्जन किया था। इसी बात पर वह जम गई; महारानी इससे
इन्कार नहीं कर सकती थी, और बहुत-से ऐसे आदमी निकल
आये, जिन्होंने इस बात की सत्यता पर विश्वास कर लिया।

यहाँ पहुँचकर बात रुक गई। जब जोन अपने ऊपर लग
हुए दोषों से पार न पा सकी, और महारानी की स्पष्टवादिता
आगे उसकी एक न चली, तो आखिर उसने अपना अपराध क़बूल
किया; फिर भी महारानी को साथ फँसाकर!

जो लोग उससे मिलते थे, उनमें से थूरिल-जैसे हजरतों ने
यह सलाह दी, कि वह महारानी का नाम न ले, और निर्दयता-
पूर्वक अमीर पर प्रहार करे। दूसरी तरफ़ अमीर के मित्रों और
हित-चिन्तकों ने, जो साम्राज्यवाद के विरोधी थे, उसे यही प्ररणा
की, कि वह निर्भय होकर सब साफ़-साफ़ कह दे, और राज्य-
परिवार के सारे गुप्त भेदों को सर्व-साधारण पर प्रकट कर दे,
और इन भयानक भेदों का इतना जबदस्त प्रभाव दुनियाँ पर
डाले, जो फ़्रान्स से साम्राज्यवाद का समूल नाश करने का कारण

ने। उन्होंने यह भी कहा—कि जजों का बहुमत अमीर के पक्ष ं है, और सब बात न कहने से उसे व्यर्थ ही दण्ड भोगना पड़ेगा। ाय ही भयङ्कर राज-द्रोह की अपेक्षा, हीरों की चोरी का अपराध ल्का था, यह भी उन्होंने उसे सुझाया।

हुआ भी ऐसा ही। जन-साधारण का बहुमत क्रमशः अमीर ं पक्ष में हो गया। पुरुषों ने तो उसके धैर्य्य की प्रशंसा की, और ्रियों ने एक महिला की मान-रक्षा के खयाल से उससे सहानुभूति ई। कुछ लोगों ने तो यह समझ लिया कि अमीर को धोखा ्या गया, और कुछ ने ओलिवा के आविष्कार पर ही विश्वास हीं किया। उन्होंने समझा—यह सब रानी की कारस्तानी है।

जॉन ने गहराई से परिस्थिति पर ग़ौर किया। उसके वकीलों ने उसे छोड़ दिया, हाकिम लोग उसके प्रति अपनी घृणा को छुपा ं सके, और अमीर के परिवारवालों ने उसकी बदनामी करने ं कोई कसर न उठा रक्खी। लोक-मत उसके विरुद्ध पहले से ही ा। सोच-विचारकर उसने एक अन्तिम उपाय स्थिर किया, जो ाकिमों को विचलित कर सकता था, अमीर के मित्रों को भय-ीत कर सकता था, और जन-साधारण को नये सिरे से महारानी े घृणा करने की गुञ्जाइश दे सकता था, वह उपाय यह था, कि ह यह प्रकट करे, कि वह महारानी के अपराध पर पर्दापोशी रना चाहती है; लेकिन अगर वह विवश की गई, तो वह सब ात प्रकट कर देगी। वास्तव में यह उसी उपाय का नवीन ंस्करण था, जिसका उपयोग उसने मुक़द्दमे के दौरान में किया

था, पर इस बार उसे ज्यादे अच्छे परिणाम की आशा थी।
आख़िर उसने यह चिट्ठी महारानी के नाम लिखी:—

"मैडम,—मुझ पर इतने घोर अत्याचार हो रहे हैं, लेकि
मैंने शिकायत का एक शब्द मुँह से नहीं निकाला है। सब बा
मेरे मुँह से निकलवाने के लिये लोगों ने कुछ उठा नहीं रक्खा है
लेकिन मैं अपने भरसक राज-परिवार की प्रतिष्ठा पर आँच न
आने दूँगी। यद्यपि मेरा अपना ख़याल यह है, कि अपनी दृढ़ता के
कारण अन्त में मैं साफ़ बच जाऊँगी। इतने दिन की क़ैद, तरह-
तरह के सवालों, और भयानक लज्जा, और मानसिक यन्त्रणा
के कारण क्रमशः मेरा साहस क्षीण होता जा रहा है, और मुझे
भय है, कि कहीं मेरी दृढ़ता नष्ट न हो जाय। आप अगर चाहें,
तो कुछ ही शब्द मोशिये ब्रटिल से कहकर मेरी रक्षा कर सकती
हैं, जो असल बात को महाराज के कानों तक पहुँचा देंगे, और
कोई ऐसी सूरत निकल आयगी, जिससे आपकी बेइज्ज़ती भी
न हो, और मैं भी बच जाऊँ। मैं डरती हूँ, कि कहीं असल बात
मेरे मुँह से न निकल जाय, इसीलिये इस पत्र द्वारा मैं महारा
से प्रार्थना करती हूँ, कि इस दुःखद स्थिति से आप मेरी रक्षा करें

अत्यन्त आदरपूर्वक,
आपकी आज्ञाकारिणी सेविका,
"जीन डि-ला मोट"

जीन ने सोचा, कि अव्वल तो यह चिट्ठी महारानी के हाथों तक
पहुँचेगी ही नहीं, और अगर पहुँच भी गई, तो वह ज़रूर ...

उठेगी। इसके बाद उसने एक चिट्ठी अमीर के नाम लिखीः—

"मोरिये,—मेरी समझ में नहीं आता, आप साफ़ बात कहते में डरते हैं। मुझे ऐसा जान पड़ता है, कि आप हाकिमों को न्याय-प्रियता में पूर्ण विश्वास करते हैं, और इसी भरोसे चुप रहना चाहते हैं। मेरे विषय में, बात यह है, कि जब तक आप मेरा समर्थन न करेंगे, मैं कुछ न बोलूँगी। लेकिन आप क्यों नहीं बोलते? इस रहस्य का उद्घाटन तुरन्त कीजिये; क्योंकि अगर पहले बोली, और आपने समर्थन न किया, तो मैं उसकी हिंसाग्नि की आहुति बनूँगी, जो मुझे बर्बाद करना चाहती है। लेकिन मैंने उसे एक पत्र लिखा है, जो शायद उसे हम निर्दोषों को बचाने के लिये तत्पर करे।"

जब अमीर से उसका आमना-सामना हुआ, तो वह पत्र उसने अमीर को दे दिया। वह उसकी अविवेक-बुद्धि पर क्रुद्ध होकर कमरे से बाहर निकल गया, तो जीन ने दूसरी चिट्ठी निकाली, और अमीर के प्राइवेट सेक्रेटरी को देकर उसे महारानी के हाथों तक पहुँचा देने की प्रार्थना की। जब उसने इससे इंकार किया, तो उसने धमकी दी, कि अगर वह उसका काम नहीं करेगा, तो वह रानी के नाम लिखी हुई चिट्ठियों का प्रकट कर देगी, और इसके बाद अमीर का सिर उसके धड़ पर रहना असम्भव हो जायगा।

इसी समय अमीर फिर लौटा।

"बला से मेरा सिर धड़ से जुदा हो जाय," उसने कहा—"मुझे इस बात का सन्तोष रहेगा, कि मुझे उस वध-स्थल के

देखने का मौक़ा मिला, जिस पर तुम चोरी और जालसाज़ अपराधिनी की हैसियत से चढ़ोगी। आओ जी, लिकिल !''
कहता हुआ वह अपने प्राइवेट सेक्रेटरी के साथ कमरे बाहर होगया, और जीन को हर तरफ़ की निराशा और लाञ्छन के समुद्र में ग़ोते खाते छोड़ गया।

× × × +

लम्बी छान-बीन के बाद आख़िर वह दिन आया, जबकि हाकिम लोग अपना निर्णय देनेवाले थे। सब अभियुक्त और गवाह कचहरी में भेज दिये गये थे। ओलिवा निर्भय-चित्त होकर सब कुछ साफ़-साफ़ कहने को तैयार थी; कगलस्तर का भाव शान्त और उदासीन था; रित्यू घबराकर कायरतापूर्वक रो रहा था, और जीन उत्तेजना, उपद्रव और उन्माद से पागल बन रही थी।
एक-एक क़ानूनी नुक्ते की व्याख्या अनावश्यक है। आख़िर अटर्नी-जनरल ने खड़े होकर अपना यह निर्णय दिया—
"रित्यू पत्रकार को प्राण-दण्ड; जीन ला-मोट को सरे-आम गरम सलाख़ों से दाग़ा जाय, और आजन्म कारावास में रक्खा जाय; कगलस्तर और ओलिवा को बरी किया जाय और अमीर रोहन यह स्वीकार करें, कि उन्होंने राज-परिवार की शान में अनुचित शब्दों का प्रयोग किया था, तब उन्हें राज-दरबार से निर्वासित किया जाय और उनकी समस्त उपाधियाँ वापस लेली जावें।"
इस निर्णय पर पार्लियामेण्ट में कुछ वाद-विवाद हुआ, पर अन्त में उसे ज्यों-का-त्यों स्वीकार कर लिया गया।

उसी दिन दोपहर को महाराज ने रानी के ड्राइङ्ग-रूम
प्रवेश किया। रानी पूरी पोशाक पहने वहाँ बैठी थी, और आस
पास बहुत-सी सखी-सहेलियाँ और राज्य के दरबारी और अमी
मौजूद थे। रानी का चेहरा बहुत उदास था। ज्यों-ही महाराज
कमरे में प्रवेश किया, दोनों की आँखें चार हुईं, और शीघ्रतापूर्व
आगे बढ़कर उसने अत्यन्त आदर से महाराज का कर-चुम्बन किय

"आज तो तुम बहुत सुन्दर दिखाई देती हो।" महाराज ने कह
यह खेद-पूर्ण मुद्रा के साथ मुस्कराकर, तथा किसी आशा
द्वार की ओर दृष्टि-पात करते हुए चुप रह गई।

"क्या वर-वधू अभी तक तैयार नहीं हुए? दोपहर तो बं
चुकी।" महाराज बोले।

"महाराज, मोशिये चर्नों बाहर बरामदे में आपकी प्रतीक्षा
रहे हैं।" महारानी ने बेहद ज़ोर लगा कर कहा।

"अरे, तो उसे भीतर बुलाओ न!"

रानी द्वार पर से हट गईं। महाराज बोले—"वधू को
आना चाहिए; समय होगया है।"

"महाराज, देरी के लिए उसे क्षमा करें," चर्नों ने कमरे
प्रवेश करते हुए कहा—"क्योंकि अपने पिता के देहान्त के
से अब तक वह बिस्तर पर पड़ी थी, और अब उसने उठने
प्रयत्न किया, तो वह अचेत हो गई।"

"ओहो ! यह बच्ची अपने पिता से इतना स्नेह करती थी !" महाराज ने विस्मित होकर कहा—"लेकिन हमें आशा है, योग्य धाय उसका मानसिक क्लेश दूर करने में सफल होगा। क्या, मांशिये थूटिल ?" उसकी ओर घूमते हुए महाराज बोले—"तुमने मांशिये कगलस्त्र के निर्वासन के लिए आज्ञा-पत्र तैयार कर दिया है ?"

"जी हाँ।"

"और मैडम ला-मोट ? आज ही तो उसे गरम सलाखों से दागा जाने वाला है ?"

महारानी की आँखें प्रतिहिंसाग्नि से जलने लगीं। पास ही से एक निन्दात्मक मर्मर-ध्वनि सुन पड़ी।

"इस बात से अमीर को बड़ा क्लेश होगा कि उसके दुश्मनों को साथिन को दागा जायगा।" एक [illegible] और करुणा का भाव मुँह पर लाकर लुई ने कहा, और [illegible] वह कमरे में इधर-उधर घूमने लगा।

ठीक इसी समय [illegible]

[illegible]

आदमी को—मैं दिल से जिसकी पूजा करती—मेरा जानी दुश्मन बना रहे हो ! नहीं, नहीं, इस दुनियाँ की बातें, और भगवान् के क़ायदे-क़ानून मेरे लिये नहीं बने। मैं अवश्य शाप-ग्रस्ता हूँ, और मुझे मनुष्यता के सामान्य नियमों से पृथक् रक्खा गया है! अद्भुत! अद्भुत ! यहाँ एक आदमी है, जिसका नाम सुनकर ही मैं ख़ुशी से मर जाती ! आज वह मुझसे शादी कर रहा है, और शीघ्र ही घुटने टेककर मुझ से क्षमा-प्रार्थना करेगा ! अद्भुत ! अद्भुत !!!"

इसी समय पादरी की आवाज़ उसके कान में पड़ी—"जैक्स ओलिवा डि-चर्नी, क्या आप मैरी एरड्री डि-टैवर्नी को पत्नी-रूप में ग्रहण करते हैं ?"

"हाँ।" उसने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

"और तुम, मैरी एरड्री डि-टैवर्नी, तुम जैक्स ओलिवर डि-चर्नी को पति-रूप में स्वीकार करती हो ?"

"हाँ।" एरड्री ने ऐसे भयानक स्वर में कहा, कि महारानी और बहुत-सी उपस्थित स्त्रियाँ दहल उठीं।

तब चर्नी ने अपनी सोने की अँगूठी एरड्री की उँगली में पहना दी। लेकिन एरड्री ने उसके कर-स्पर्श का अनुभव ही न किया।

जब रस्म अदा हो गई, तो महारानी ने एरड्री का माथा चूमकर कहा—"मैडम लि-काउण्टेस, महारानी के पास जाओ, वह तुम्हें कुछ विवाह-उपहार देना चाहती हैं।"

"हाय !" एरड्री ने धड़धड़ाकर क्षिप्ति से कहा—"बात बढ़ जायगी ! मैं अधिक सहन नहीं कर सकती। मैं यह न करूँगी !"

"हिम्मत करो बहन, ज़रा-सी बात रह गई है।"

"नहीं कर सकती फ़िलिप, अगर वह मुझसे बोलेगी, तो मैं मर जाऊँगी!"

"तो तुम बड़ी सौभाग्यवती होगी बहन, क्योंकि मुझ पापी के प्राण अभी नहीं निकलेंगे।"

एण्ड्री ने और कुछ नहीं कहा, और रानी के पास चली गई। वह अपनी कुर्सी पर बैठी थी। आँखें उसकी बन्द थीं, और हाथ जुड़े हुए थे। सिवा इसके कि रह-रहकर वह काँप उठती थी, उस में जीवन का कोई लक्षण शेष न था। एण्ड्री काँपती हुई खड़ी रहकर उसके बोलने की प्रतीक्षा करती रही। कोई एक मिनट बाद, मन का पूरा ज़ोर लगाकर, वह उठी, और मेज़ पर से एक चिट्ठी उठाकर उसने एण्ड्री को दे दी। एण्ड्री ने उसे खोलकर पढ़ा—

"एण्ड्री, तुमने मुझे उबार लिया। मेरी इज्ज़त तुमने बचाई। मेरा जीवन तुम्हारा है। तुम्हारे अतुल त्याग के बदले में शपथ-पूर्वक कहती हूँ, कि तुम निस्सङ्कोच भाव से मुझे बहन कह सकती हो। यह पुर्ज़ा मेरी कृतज्ञता का प्रमाण है, और इसी को मैं दहेज-रूप में तुम्हें देती हूँ। तुम्हारा उदार-हृदय अवश्य इस उपहार के लिये मुझे धन्यवाद देगा।

"मेरी अण्टोइनेट इ-लारेन डि'आस्ट्रिच।"

एण्ड्री ने महारानी पर दृष्टि-पात किया, और उसकी आँखों से आँसू ढरकते देखे; वह शायद किसी उत्तर की आशा कर रही एण्ड्री ने पुर्जे को अँगीठी में डाल दिया। मेरी अण्टोइनेट

ड़ी; मानों उसे रोकना चाहि... महारानी का अभिवा...
कुछ ध्यान न दे, आदरपूर्वक
स्थान का परित्याग कर दिया।
बाहर चर्नी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने उसका हाथ थाम
ा, और दोनों अप्रतिभ और स्तब्ध भाव से, चल दिये। बाह
न में दो गाड़ियाँ तैयार खड़ी थीं। एण्ड्री एक में सवार हो गई
र बोली—"मोशिये, मेरा ख़याल है, आप अपने घर जायेंगे!"

"हाँ; मैडम।"

"और मैं जाती हूँ वहाँ, जहाँ मेरी माँ आनन्द सुख-निद्रा में
सोई हुई है। विदा, मोशिये।"

चर्नी झुक गया, पर बोला कुछ नहीं। एण्ड्री की गाड़ी चल पड़ी

चर्नी भी फ़िलिप से हाथ मिलाकर, दूसरी गाड़ी में सवार हो
गया, और चल दिया।

तब फ़िलिप निराश स्वर में पुकार उठा—"मेरे भगवान्! जो
लोग इस दुनियाँ में अपना कर्त्तव्य-पालन करते हैं, क्या तुम उनके
लिये परलोक में थोड़ा सुख सुरक्षित रखते हो? नहीं, नहीं, सुख की
बात बेकार है। परलोक में भी उन्हीं को सुख मिल सकता है, जिन्हें
वहाँ अपने प्यारों के मिलने की आशा हो। और फिर मैं तो ऐसा
कम-हिम्मत हूँ, कि मौत में कुछ आकर्षण मुझे ... नहीं देता।"

तब वह भी न जाने कहाँ चल दिया!

समाप्त